वक्तृत्वकला के बीज, भाग ९

समन्वय-प्रकाशन

● प्रबंध संपादक

मोतीलाल पारख

● प्रकाशक

श्रीमती लक्ष्मी देवी बैंगानी
(धर्म पत्नी) श्री जतनलाल जी बैंगानी

● प्राप्तिस्थान

१ सदासुख जतनलाल बैंगानी,
बैंगानीयो की पिरोल, बीकानेर (राज०)

२ मालचद बैंगानी, दूगड निवास,
विराटनगर (नेपाल)

३. ज्योतिकुमार बैंगानी, दूगड निवास,
कान्ति पथ, काठमाडू

● प्रथम संस्करण
वि० स० २०३१ आषाढ
जुलाई १९७४
२१०० प्रतिया

मुद्रक
श्रीचन्द सुराना 'सरस' के लिए
श्री विष्णु प्रिंटिंग प्रेस, आगरा

मूल्य : छह रुपये पचास पैसे
Rs 8 - 00

उन जिज्ञासुओं को,

जिनकी उर्वर-मनोभूमि मे

ये बीज

अंकुरित

पुष्पित

फलित हो

अपना विराट्रूप प्राप्त कर सके !



मंगल-संदेश

मनुष्य विभिन्न शक्तियो का स्रोत है। नही, वह अनन्तशक्तियो का स्रोत है।

पर, जिन-जिन शक्तियो को अभिव्यक्त होने का समय और साधन मिल पाता है वही हमारे सामने विकसित रूप से प्रकट होती हैं, शेप अनभिव्यक्त रूप मे अपना काम करती रहती है।

सग्राहक शक्ति भी उन्ही मे से एक है, जो अन्वेपण-प्रधान है और दूसरो के लिए वहुत उपयोगी वन जाती है।

मक्खन का आस्वादन करना एक वात है, पर उसे दही मे से मथकर निकालकर सग्रहीत करना एक विशिप्ट शक्ति है।

मुनि श्री धनराजजी (सिरसा) मे यह शक्ति अच्छी विकसित हुई है। शुरू से ही उनकी यह धुन रही है, आदत रही है, वे वरावर किसी न किसी रूप मे खोज करते रहते है और फिर उसको सग्रहीत कर एक आकार दे देते है। वह साहित्य वन जाता है, जन-जन की खुराक वन जाता है।

"वक्तृत्वकला के वीज" एक ऐसी ही कृति हमारे समक्ष प्रस्तुत है जो मुनि धनराजजी की सग्राहकशक्ति का एक विशिप्ट उदाहरण है। उसमें प्राचीन, अर्वाचीन अनेक ग्रन्थो का मन्थन है, अनेक भापाओ का प्रयोग है। मूल उद्धरण के साथ हिन्दी अनुवाद देकर भी और सरसता उसमे लाई गई है। वडा सुन्दर प्रयास है। अपनी वक्तृत्वकला का विकास चाहनेवाले वक्ता के लिए वहुत उपयोगी है यह ग्रन्थ, जो अनेक भागो मे विभक्त है। मेरा विश्वास है—यह प्रयत्न वहुजन हिताय—वहुजन सुखाय सिद्ध होगा।

चूरू —आचार्य तुलसी

११ सितम्वर १९७२

प्राक्कथन

मानव-जीवन मे वाचा की उपलब्धि एक बहुत बडी उपलब्धि है। हमारे प्राचीन आचार्यों की दृष्टि मे वाचा ही सरस्वती का अधिष्ठान है, वाचा सरस्वती भिषग्[1]—वाचा ज्ञान की अधिष्ठात्री होने से स्वय सरस्वती रूप है, और समाज के विकृत आचार-विचाररूप रोगो को दूर करने के कारण यह कुशल वैद्य भी है।

अन्तर के भावो को एक दूसरे तक पहुँचाने का एक बहुत बडा माध्यम वाचा ही है। यदि मानव के पास वाचा न होती तो, उसकी क्या दशा होती ? क्या वह भी मूकपशुओ की तरह भीतर-ही-भीतर घुटकर समाप्त नही हो जाता ? मनुष्य, जो गूगा होता है, वह अपने भावो की अभिव्यक्ति के लिए कितने हाथ-पैर मारता है, कितना छट-पटाता है फिर भी अपना सही आशय कहा समझा पाता है दूसरो को ?

बोलना वाचा का एक गुण है, किन्तु बोलना एक अलग चीज है, और वक्ता होना वस्तुत एक अलग चीज है। बोलने को हर कोई बोलता है, पर वह कोई कला नहीं है, किन्तु वक्तृत्व एक कला है। वक्ता साधारण से विषय को भी कितने सुन्दर और मनोहारी रूप से प्रस्तुत करता है कि श्रोता मत्रमुग्ध हो जाते है। वक्ता के बोल श्रोता के हृदय मे ऐसे उतर जाते हैं कि वह उन्हे जीवन भर नही भूलता।

कर्मयोगी श्रीकृष्ण, भगवान् महावीर, तथागत बुद्ध व्यास और भद्र-बाहु आदि भारतीय प्रवचन-परम्परा के ऐसे महान प्रवक्ता थे, जिनकी

---

१ यजुर्वेद १६।१२

वाणी का नाद आज भी हजारो-लाखो लोगो के हृदयो को आप्यायित कर रहा है। महाकाल की तूफानी हवाओ मे भी उनकी वाणी की दिव्य ज्योति न बुझी है और न बुझेगी।

हर कोई वाचा का धारक, वाचा का स्वामी नही बन सकता। वाचा का स्वामी ही वाग्मी या वक्ता कहलाता है। वक्ता होने के लिए ज्ञान एवं अनुभव का आयाम बहुत ही विस्तृत होना चाहिए। विशाल अध्ययन, मनन-चिंतन एव अनुभव का परिपाक वाणी को तेजस्वी एव चिरस्थायी बनाता है। बिना अध्ययन और विषय को व्यापक जानकारी के भाषण केवल भषण (भोकना) मात्र रह जाता है, वक्ता कितना ही चीखे-चिल्लाये, उछले-कूदे, यदि प्रस्तावित विषय पर उसका सक्षम अधिकार नही है, तो वह सभा मे हास्यास्पद हो जाता है, उसके व्यक्तित्व की गरिमा लुप्त हो जाती है। इसलिए बहुत प्राचीनयुग मे एक ऋषि ने कहा था – वक्ता शतसहस्रेषु', अर्थात् लाखो मे कोई एक वक्ता होता है।

शतावधानी मुनिश्री धनराजजी जैनजगत के यशस्वी प्रवक्ता है। उनका प्रवचन, वस्तुत प्रवचन होता है। श्रोताओ को अपने प्रस्तावित विषय पर केन्द्रित एव मन्त्र-मुग्ध कर देना उनका सहज कर्म है। और यह उनका वक्तृत्व—एक बहुत बडे व्यापक एव गम्भीर अध्ययन पर आधारित है। उनका सस्कृत-प्राकृत आदि प्राचीन भाषाओ का ज्ञान विस्तृत है, साथ ही तलस्पर्शी भी। मालूम होता है, उन्होने पाडित्य को केवल छुआ भर नही है, किन्तु समग्रशक्ति के साथ उसे गहराई से अधिग्रहण किया है। उनकी प्रस्तुत पुस्तक 'वक्तृत्वकला के बीज' मे यह स्पष्ट परिलक्षित होता है।

प्रस्तुत कृति मे जैन आगम, बौद्धवाङ्मय, वेदो से लेकर उपनिषद

ब्राह्मण, पुराण, स्मृति आदि वैदिक साहित्य तथा लोककथानक, कहावतें, रूपक, ऐतिहासिक घटनाएँ, ज्ञान-विज्ञान की उपयोगी चर्चाएं—इस प्रकार शृंखलाबद्धरूप मे सकलित हैं कि किसी भी विषय पर हम बहुत कुछ विचार-सामग्री प्राप्त कर सकते है। सचमुच वक्तृत्वकला के अगणित बीज इसमे सन्निहित हैं। सूक्तियो का तो एक प्रकार से यह रत्नाकार ही है। अग्रेजी साहित्य व अन्य धर्मग्रथो के उद्धरण भी काफी महत्वपूर्ण हैं। कुछ प्रसंग और स्थल तो ऐसे है, जो केवल सूक्ति और सुभाषित ही नही है,उनमे विषय की तलस्पर्शी गहराई भी है और उसपर से कोई भी अध्येता अपने ज्ञान के आयाम को और अधिक व्यापक बना सकता है। लगता है जैसे मुनिश्री जी वाङ्मय के रूप मे विराट् पुरुष हो गए हैं। जहाँ पर भी दृष्टि पडती है, कोई-न-कोई वचन ऐसा मिल ही जाता है, जो हृदय को छू जाता है और यदि प्रवक्ता प्रसगत अपने भाषण मे उपयोग करे, तो अवश्य ही श्रोताओ के मस्तक झूम उठेंगे।

प्रश्न हो सकता है—'वक्तृत्वकला के बीज' मे मुनिश्री का अपना क्या है ? यह एक सग्रह है और सग्रह केवल पुरानी निधि होती है, परन्तु मैं कहूंगा—कि फूलो की माला का निर्माता माली जब विभिन्न जाति एव विभिन्न रंगो के मोहक पुष्पो की माला बनाता है तो उसमे उसका अपना क्या है ? बिखरे फूल है, माला नही। माला का अपना एक अलग ही विलक्षण सौन्दर्य है। रग-बिरगे फूलो का उपयुक्त चुनाव करना और उनका कलात्मक रूप मे सयोजन करना—यही तो मालाकार का काम है, जो स्वय मे एक विलक्षण एवं विशिष्ट कलाकर्म है। मुनिश्री जी वक्तृत्वकला के बीज मे ऐसे ही विलक्षण मालाकार हैं। विषयो का उपयुक्त चयन एवं तत्सम्बन्धित सूक्तियो आदि का सकलन इतना शानदार हुआ है कि इस प्रकार का सकलन अन्यत्र इस रूप मे नही देखा गया।

एक वात और—श्री चन्दनमुनिजी की सस्कृत-प्राकृत रचनाओ ने मुझे यथावसर काफी प्रभावित किया है। मैं उनकी विद्वत्ता का प्रशसक रहा हूँ। श्री घनमुनि जी उनके बडे भाई है—जब यह मुझे ज्ञात हुआ तो मेरे हर्ष की सीमाओ का और भी अधिक विस्तार हो गया। अब कैसे कहूँ कि इन दोनो मे कौन बडा है और कौन छोटा ? अच्छा यही होगा कि एक को दूसरे से उपमित कर दूँ। उनकी बहुश्रुतता एव इनकी सग्रह-कुशलता से मेरा मन मुग्ध हो गया है।

मैं मुनिश्री जी, और उनकी इस महत्वपूर्णकृति का हृदय से अभिनन्दन करता हूँ। विभिन्न भागो मे प्रकाशित होनेवाली इस विराट् कृति से प्रवचनकार, लेखक एव स्वाध्यायप्रेमीजन मुनि श्री के प्रति ऋणी रहेगे। वे जब भी चाहेगे, वक्तृत्व के वीज मे से उन्हे कुछ मिलेगा ही, वे रिक्तहस्त नही रहेगे—ऐसा मेरा विश्वास है।

प्रवक्तृ-समाज—मुनिश्रीजी का एतदर्थ आभारी है और आभारी रहेगा।

जैन भवन
आश्विन शुक्ला-३
आगरा।

—उपाध्याय अमरमुनि



सम्पादकीय

वक्तृत्वगुण एक कला है, और वह बहुत बडी साधना की अपेक्षा करता है। आगम का ज्ञान, लोकव्यवहार का ज्ञान, लोकमानस का ज्ञान और समय एव परिस्थितियो का ज्ञान तथा इन सबके साथ निस्पृहता, निर्भयता, स्वर की मधुरता, ओजस्विता आदि गुणो की साधना एव विकास से ही वक्तृत्वकला का विकास हो सकता है, और ऐसे वक्ता वस्तुत॰ हजारो लाखो मे कोई एकाध ही मिलते है।

तेरापथ के अधिशास्ता युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी मे वक्तृत्वकला के ये विशिष्ट गुण चमत्कारी ढग से विकसित हुए हैं। उनकी वाणी का जादू श्रोताओ के मन-मस्तिष्क को आन्दोलित कर देता है। भारतवर्ष की सुदीर्घ पदयात्राओ के मध्य लाखो नर-नारियो ने उनकी ओजस्विनी वाणी सुनी है और उनके मधुर प्रभाव को जीवन मे अनुभव किया है।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक मुनिश्री धनराजजी भी वास्तव मे वक्तृत्व-कला के महान गुणो के घनी एक कुशल प्रवक्ता संत है। वे कवि भी है, गायक भी है, और तेरापथ शासन मे सर्वप्रथम अवधानकार भी हैं; इन सबके साथ-साथ बहुत बडे विद्वान् तो हैं ही। उनके प्रवचन जहाँ भी होते है, श्रोताओ की अपार भीड उमड आती है। आपके विहार करने के बाद भी श्रोता आपको याद करते रहते हैं।

आपकी भावना है कि प्रत्येक मनुष्य अपनी वक्तृत्वकला का विकास करे और उसका सदुपयोग करे, अत॰ जनसमाज के लाभार्थ आपने वक्तृत्व के योग्य विभिन्न सामग्रियो का यह विशाल सग्रह प्रस्तुत किया है।

बहुत समय से जनता की, विद्वानो की और वक्तृत्वकला के अभ्यासियो की माँग थी कि इस दुर्लभ सामग्री का जनहिताय प्रकाशन किया जाय तो बहुत लोगो को लाभ मिलेगा । जनता की भावना के अनुसार हमने मुनिश्री की इस सामग्री को धारना प्रारंभ किया । इस कार्य को सम्पन्न करने मे श्री डूंगरगढ, मोमासर, भादरा, हिसार, टोहाना, उकलाना, कैथल, हाँसी, भिवानी, तोसाम, ऊमरा, सिसाय, जमालपुर, सिरसा और भटिंडा आदि के विद्यार्थियो एव युवको ने अथक परिश्रम किया है । फलस्वरूप लगभग सौ कापियो मे यह सामग्री संकलित हुई है । हम इस विशाल सग्रह को विभिन्न भागो मे प्रकाशित करने का सकल्प लेकर पाठको के समक्ष प्रस्तुत हुए है ।

परमश्रद्धेय आचार्य प्रवर ने पुस्तक के लिए अपना मगल सदेश देकर इस प्रयत्न को प्रोत्साहित किया—उनके प्रति मैं हृदय की असीम श्रद्धा व्यक्त करता हूँ । तथा पुस्तक की महत्ता और उपयोगिता के अनुसार ही इसकी भूमिका लिखी है जैनसमाज के बहुश्रुत विद्वान् तटस्थ विचारक उपाध्याय श्री अमरमुनि जी ने । उनके इस अनुग्रह का मैं हृदय से आभारी हूँ ।

इस पुस्तक के प्रकाशन का समस्त अर्थभार श्रीमती लक्ष्मीबाई बैगानी, धर्मपत्नी श्री जतनलाल जी बैगानी ने वहन कर मुझे प्रोत्साहित किया है । श्रीमती लक्ष्मीबाई बडी ही विनम्र, सेवाभावी और धर्म-परायण प्रवृत्ति की है । उन्होंने दो वर्षीतप किये हैं, तीसरा चल रहा है । तप और त्याग की भावना उनके हृदय मे ओत-प्रोत है । उनके इस सहयोग के लिए मैं हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ । प्रूफ सशोधन-मुद्रण आदि की समस्त व्यवस्था 'संजय-साहित्य-सगम' के सचालक श्री श्रीचन्द जी सुराना 'सरस' ने की है—उनके प्रति भी हम हृदय से कृतज्ञता-ज्ञापित करते है । आशा है कि यह पुस्तक जन-जन के लिए, वक्ताओ और लेखको के लिए एक सदर्भग्रथ (बिब्लोग्राफी) का काम देगी और युग-युग तक इसका लाभ मिलता रहेगा ।

आ त्म नि वे द न

'मनुष्य की प्रकृति का बदलना अत्यन्त कठिन है'—यह सूक्ति मेरे लिए सवा सोलह आना ठीक साबित हुई। बचपन मे जब मैं कलकत्ता—श्री जैनश्वेताम्बर तेरापंथी-विद्यालय मे पढता था, जहाँ तक याद है, मुझे जलपान के लिए प्राय प्रति-दिन एक आना मिलता था। प्रकृति मे सग्रह करने की भावना अधिक थी, अत मैं खर्च करके भी उसमे से कुछ न कुछ बचा ही लेता था। इस प्रकार मेरे पास कई रुपये इकट्ठे हो गये थे और मैं उनको एक डिब्बी मे रखा करता था।

विक्रम संवत् १९७९ मे अचानक माताजी की मृत्यु होने से विरक्त होकर हम (पिता श्री केवलचन्द जी, मैं, छोटी बहन दीपाजी और छोटे भाई चन्दनमल जी) परमकृपालु श्री कालुगणीजी के पास दीक्षित हो गए। यद्यपि दीक्षित होकर रुपये-पैसो का सग्रह छोड़ दिया, फिर भी सग्रहवृत्ति नही छूट सकी। वह धनसग्रह से हटकर ज्ञानसग्रह की ओर झुक गई। श्री कालुगणी के चरणो मे हम अनेक बालक मुनि आगम-व्याकरण-काव्य-कोष आदि पढ रहे थे। लेकिन मेरी प्रकृति इस प्रकार की बन गई थी कि जो भी दोहा-छन्द-श्लोक-ढाल-व्याख्यान-कथा आदि सुनने या पढने मे अच्छे लगते, मैं तत्काल उन्हे लिख लेता या संसार-पक्षीय पिताजी से लिखवा लेता। फलस्वरूप उपरोक्त सामग्री का काफी अच्छा सग्रह हो गया। उसे देखकर अनेक मुनि विनोद की भाषा मे कह दिया करते थे कि 'धन्नू तो न्यारा मे जाने की [अलग विहार करने की] तैयारी कर रहा है।" उत्तर मे मैं कहा करता—क्या आप गारटी दे सकते है कि इतने (१० या १५) साल तक आचार्य श्री हमे अपने साथ ही रखेंगे ? क्या पता, कल ही अलग विहार करने का फर-

मान करदें । व्याख्यानादि का सग्रह होगा तो धर्मोपदेश या धर्म-प्रचार करने मे सफलता मिलेगी ।

समय-समय पर उपरोक्त साथी मुनियो का हास्य विनोद चल ही रहा था कि वि० स० १९८६ मे श्रीकालुगणी ने अचानक ही श्रीकेवलमुनि को अग्रगण्य बनाकर रतननगर (थेलासर) चातुर्मास करने का हुक्म दे दिया । हम दोनो भाई (मैं और चन्दन मुनि) उनके साथ थे । व्याख्यान आदि का किया हुआ सग्रह उस चातुर्मास मे बहुत काम आया एव भविष्य के लिए उत्तमोत्तम ज्ञानसंग्रह करने की भावना बलवती बनी । हम कुछ वर्ष तक पिताजी के साथ विचरते रहे । उनके दिवंगत होने के पश्चात् दोनो भाई अग्रगण्य के रूप मे पृथक्-पृथक् विहार करने लगे ।

विशेष प्रेरणा—एक बार मैंने 'वक्ता बनो' नाम की पुस्तक पढी । उसमे वक्ता बनने के विषय मे खासी अच्छी बातें बताई हुई थी । पढते-पढते यह पक्ति दृष्टिगोचर हुई कि "कोई भी ग्रन्थ या शास्त्र पढो, उसमे जो भी बात अपने काम की लगे, उसे तत्काल लिख लो ।" इस पंक्ति ने मेरी सग्रह करने की प्रवृत्ति को पूर्वापेक्षया अत्यधिक तेज बना दिया । मुझे कोई भी नई युक्ति, सूक्ति या कहानी मिलती, उसे तुरन्त लिख लेता । फिर जो उनमे विशेष उपयोगी लगती, उसे औपदेशिक भजन, स्तवन या व्याख्यान के रूप मे गूंथ लेता । इस प्रवृत्ति के कारण मेरे पास अनेक भाषाओ मे निबद्ध स्वरचित सैकडों भजन और सैकडो व्याख्यान इकट्ठे हो गए । फिर जैन-कथासाहित्य एव तात्त्विक साहित्य की ओर रुचि बढी । फलस्वरूप दोनो ही विषयो पर अनेक पुस्तको की रचना हुई । उनमे छोटी-बडी लगभग २० पुस्तकें तो प्रकाश मे आ चुकी, शेष ३०-३२ अप्रकाशित ही हैं ।

एक बार संगृहीत-सामग्री के विषय मे यह सुझाव आया कि यदि प्राचीन सग्रह को व्यवस्थित करके एक ग्रन्थ का रूप दे दिया जाए, तो यह उत्कृष्ट उपयोगी चीज बन जाए । मैंने इस सुझाव को स्वीकार किया और अपने प्राचीन-संग्रह को व्यवस्थित करने मे जुट गया । लेकिन

पुराने सग्रह मे कौन-सी सूक्ति, श्लोक या हेतु किस ग्रन्थ या शास्त्र के हैं अथवा किस कवि, वक्ता या लेखक के है—यह प्राय लिखा हुआ नही था। अत ग्रन्थो या शास्त्रो आदि की साक्षियाँ प्राप्त करने के लिए—इन आठ-नौ वर्षों मे वेद, उपनिषद्, इतिहास, स्मृति, पुराण, कुरान, बाइबिल, जैनशास्त्र, बौद्धशास्त्र, नीतिशास्त्र, वैद्यकशास्त्र, स्वप्नशास्त्र, शकुनशास्त्र, दर्शनशास्त्र, सगीतशास्त्र तथा अनेक हिन्दी, अंग्रेजी, सस्कृत, राजस्थानी, गुजराती, मराठी एव पजाबी सूक्तिसग्रहो का ध्यानपूर्वक यथासम्भव अध्ययन किया। उससे काफी नया सग्रह बना और प्राचीन सग्रह को साक्षी सम्पन्न बनाने मे सहायता मिली। फिर भी खेद है कि अनेक सूक्तिया एव श्लोक आदि बिना साक्षी के ही रह गए। प्रयत्न करने पर भी उनकी साक्षिया नही मिल सकी। जिन-जिन की साक्षिया मिली हैं, उन-उनके आगे वे लगा दी गई हैं। जिनकी साक्षिया उपलब्ध नही हो सकी, उनके आगे स्थान रिक्त छोड दिया गया है। कई जगह प्राचीन-सग्रह के आधार पर केवल महाभारत, वाल्मीकिरामायण, योग-शास्त्र आदि महान् ग्रन्थो के नाममात्र लगाए है, अस्तु !

इस ग्रन्थ के सकलन मे किसी भी मत या सम्प्रदाय विशेप का खण्डन-मण्डन करने की दृष्टि नही है, केवल यही दिखलाने का प्रयत्न किया गया है कि कौन क्या कहता है या क्या मानता है ? यद्यपि विश्व के विभिन्न देशनिवासी मनीषियो के मतो का सकलन होने से ग्रन्थ मे भाषा की एकरूपता नही रह सकी है। कही प्राकृत, सस्कृत, पारसी, उर्दू एव अग्रेजी भाषा है तो कही हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती, मराठी, पजाबी और बगाली भाषा के प्रयोग है, फिर भी कठिन भाषाओ के श्लोक, वाक्य आदि का अर्थ हिन्दी भापा मे कर दिया गया है। दूसरे प्रकार से भी इस ग्रन्थ मे भापा की विविधता है। कई ग्रन्थो, कवियो, लेखको एव विचारको ने अपने सिद्धान्त निरवद्यभाषा मे व्यक्त किए है तो कई साफ-साफ सावद्यभापा मे ही बोले हैं। मुझे जिस रूप मे जिसके जो विचार मिले है, उन्हे मैंने उसी रूप मे अकित किया है लेकिन मेरा अनुमोदन केवल निरवद्य-सिद्धान्तो के साथ है।

ग्रन्थ की सर्वोपयोगिता—इस ग्रन्थ मे उच्चस्तरीय विद्वानो के लिए जहाँ जैन-बौद्ध आगमो के गम्भीर पद्य है, वेदो, उपनिषदो के अद्भुत मन्त्र हैं, स्मृति एव नीति के हृदयग्राही श्लोक है, वहाँ सर्वसाधारण के लिए सीधी-सादी भाषा के दोहे, छन्द, सूक्तिया, लोकोक्तिया, हेतु, दृष्टान्त एव छोटी-छोटी कहानियाँ भी हैं। अत यह ग्रंथ नि सदेह हर एक व्यक्ति के लिए उपयोगी सिद्ध होगा—ऐसी मेरी मान्यता है। वक्ता, कवि और लेखक इस ग्रन्थ से विशेष लाभ उठा सकेंगे, क्योकि इसके सहारे वे अपने भाषण, काव्य और लेख को ठोस, सजीव, एव हृदयग्राही बना सकेंगे एव अद्भुत विचारो का विचित्र चित्रण करके उनमे निखार ला सकेंगे, अस्तु।

ग्रथ का नामकरण—इस ग्रन्थ का नाम 'वक्तृत्वकला के वीज' रखा गया है। वक्तृत्वकला की उपज के निमित्त यहाँ केवल वीज इकट्ठे किए गए है। वीजो का वपन किसलिए, कैसे, कव और कहा करना—यह वप्ता [बीज बोनेवालो] की भावना एव बुद्धिमत्ता पर निर्भर करेगा। फिर भी मेरी मनोकामना तो यही है कि वप्ता परमात्मपद-प्राप्तिरूप फलो के लिए शास्त्रोक्तविधि से अच्छे अवसर पर उत्तम क्षेत्रो मे इन वीजो का वपन करेंगे।

यहा मैं इस वात को भी कहे विना नही रह सकता कि जिन ग्रन्थो, लेखो, समाचार पत्रो एव व्यक्तियो से इस ग्रन्थ के सकलन में सहयोग मिला है—वे सभी सहायकरूप से मेरे लिए चिरस्मरणीय रहेगे।

यह ग्रन्थ कई भागो मे विभक्त है एव उनमे सैकडो विपयो का सकलन है। उक्त संग्रह वालोतरा मर्यादा-महोत्सव के समय मैंने आचार्यश्री तुलसी को भेट किया। उन्होंने देखकर वहुत प्रसन्नता व्यक्त की एव फरमाया कि इसमे छोटी-छोटी कहानिया एवं घटनाएँ भी लगा देनी चाहिये ताकि विशेप उपयोगी वन जाए। आचार्यश्री का आदेश स्वीकार करके इसे संक्षिप्त कहानियाँ तथा घटनाओ से सम्पन्न किया गया।

मुनि श्री चन्दनमलजी, डूंगरमलजी, नथमलजी, नगराजजी, मधुकर जी, राकेशजी, रूपचन्दजी आदि अनेक साधु एवं साध्वियो ने भी इस ग्रन्थ को विशेष उपयोगी माना। बीदासर महोत्सव पर कई सतो का यह अनुरोध रहा कि इस सग्रह को अवश्य धरा दिया जाए।

सर्व प्रथम वि० स० २०२३ मे श्री डूंगरगढ के श्रावको ने इसे धारना शुरू किया। फिर थली, हरियाणा एवं पजाब के अनेक ग्रामो-नगरो के उत्साही युवको ने तीन वर्षों के अथक परिश्रम से धारकर इसे प्रकाशन के योग्य बनाया।

मुझे दृढ विश्वास है कि पाठकगण इसके अध्ययन, चिन्तन एव मनन से अपने बुद्धि वैभव को क्रमश बढाते जायेंगे—

वि० स० २०२७ मृगसरवदि ७ —घनमुनि 'प्रथम'
मगलवार, रामामंडी (पंजाब)

वक्तृत्वकला के बीज

[भाग ६]

अकारादि क्रम-विषयानुक्रमणिका

भाग ६

वक्तृत्वकला के बीज



पहला कोष्ठक

ब्राह्मण

१

१ न जात्या ब्राह्मणो लोके, वृत्तेन तु विधीयते।
वृत्तस्थितस्तु शूद्रोऽपि, ब्राह्मणत्वं नियच्छति।
—महाभारत—अनुशासनपर्व अ० १४३ श्लोक ५१

वास्तव मे जाति (जन्म) से कोई भी ब्राह्मण नही होता, आचरण-चरित्र से होता है। सदाचार मे रहा हुआ शूद्र भी ब्राह्मणत्व को प्राप्त हो जाता है।

२ न जटाहि न गोत्तेहि, न जच्चा होति ब्राह्मणो।
यम्हि सच्च च धम्मो च, सो सुची सो च ब्राह्मणो।
—धम्मपद २६।३

न जटा से, न गोत्र से और न जाति से ही ब्राह्मण होता है। जिसमे सत्य और धर्म है वही पवित्र है एव वही ब्राह्मण है।

३ न वि मु डिएण समणो, न ओंकारेण बभणो।
न मुणी रन्नवासेणं, कुसचीरेण न तावसो ।।३१।।
समयाए समणो होइ, बभचेरेण बभणो।
णाणेण य मुणी होइ, तवेण होइ तावसो ।।३२।।
कम्मुणा बभणो होइ, कम्मुणा होइ खत्तिओ।
वइसो कम्मुणा होइ, सुद्दो हवइ कम्मुणा ।।३३।।
—उत्तराध्ययन २५

• केवल सिर मुडवाने से श्रमण नही होता, ओंकार का उच्चारण करने से ब्राह्मण नही होता, वन मे निवास करने से मुनि नहीं होता और वल्कल-वस्त्र पहनने से तपस्वी नही होता ।।३१।।

समता से श्रमण होता है, ब्रह्मचर्य से ब्राह्मण होता है, ज्ञान से मुनि होता है और तप करने से तपस्वी होता है ॥३२॥

कर्म से (ब्राह्मण के योग्य काम करने से) ब्राह्मण होता है, और कर्म से क्षत्रिय, वैश्य एव शूद्र होता है ॥३३॥

४ हरिणीगर्भसभूत, ऋष्यशृङ्गो महामुनि ।
तपसा ब्राह्मणो जात सस्कारस्तेन कारणम् ॥२६॥
श्वपाकीगर्भसभूत, पिता व्यासस्य पार्थिव ।
तपसा ब्राह्मणो जात, सस्कारस्तेन कारणम् ॥२७॥
उलूकीगर्भसभूत, कणादाख्यो महामुनि ।
तपसा ब्राह्मणो जात, सस्कारस्तेन कारणम् ॥२८॥
गणिकागर्भसंभूतो, वशिष्ठश्च महामुनि ।
तपसा ब्राह्मणो जात, सस्कारस्तेन कारणम् ॥२९॥
नाविकागर्भसभूतो, मन्दपालो महामुनि ।
तपसा ब्राह्मणो जात, सस्कारस्तेन कारणम् ॥३०॥

—भविष्यपुराण, ब्राह्मपर्व १, अ ४२

ऋष्यशृग महामुनि हरिणी के गर्भ से पैदा हुए थे, किन्तु तपस्या से ब्राह्मण हो गये अत ब्राह्मणत्व का कारण सस्कार ही है, जाति नहीं। इसी प्रकार व्यास जी के पिता चाण्डालिनी के गर्भ मे, कणाद महामुनि उलूकी के गर्भ मे, वशिष्ट ऋषि वेश्या के गर्भ मे एव मन्दपाल महामुनि नाविका के गर्भ से उत्पन्न हुए थे किन्तु ये सभी तपस्या के कारण ब्राह्मण बन गए। अत सस्कार ही ब्राह्मणत्व का कारण है, जाति—जन्म नहीं।

५ सभी जातियो मे ब्राह्मण और चाण्डाल—

ब्रह्मचर्य—तपोयुक्ता, समकाञ्चनलोष्ठव ।
सर्वभूतदयायुक्ता, ब्राह्मणा सर्वजातिषु ।१।
सर्वजातिषु चाण्डाला, सर्वजातिषु ब्राह्मणा ।
ब्राह्मणेष्वपि चाण्डाला—श्चाण्डालेष्वपि ब्राह्मणा ।२।
अहिंसा सत्यमस्तेय, ब्रह्मचर्योऽपरिग्रह ।
काम-क्रोध निवृत्तश्च, ब्राह्मण स युधिष्ठिर ।३।

सत्य नास्ति तपो नास्ति, नास्ति चेन्द्रियनिग्रह ।
सर्वभूतदया नास्ति, ह्येतच्चाण्डाललक्षणम् ।४।
वार्द्धका सेवकाश्चैव, नक्षत्रतिथिसूचका ।
एते शूद्रसमा विप्रा, मनुना परिकीर्तिता ।५।

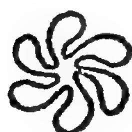
— प्राचीन सग्रह से

जो ब्रह्मचर्य एव तप से युक्त हैं, काचन और मिट्टी को समान मानते हैं, सब जीवो पर दया रखनेवाले हैं—ऐसे गुणी ब्राह्मण मब जातियो मे हो सकते हैं ।

सब जातियो मे चाण्डाल हैं एव मब जातियो में ब्राह्मण हैं । ब्राह्मणो मे चाण्डाल हैं और चाण्डालो में ब्राह्मण हैं ।

हे युधिष्ठिर ! जो अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह से युक्त है और काम-क्रोध से निवृत्त है । वही ब्राह्मण है ।

जिसमे सत्य, तप, इन्द्रिय निग्रह और दया नही है, वह चाण्डाल है। व्याज कमाने वाले, सेवावृत्ति से जीने वाले तथा नक्षत्र-तिथि की सूचना देने वाले ब्राह्मण भी महर्षि मनु ने शूद्र तुल्य कहे हैं ।



१ सम्यग्दर्शनसपन्ना, समाविस्था हतक्रुधा ।
स्वाध्याय-भक्तहृदया-स्त्यक्तसङ्गा विमत्सरा ।।३।।
विशोका विमदा शान्ता, सर्वप्राणिहितैपिण ।
सुख-दु खसमा लोके, विविक्तस्थानवासिन ।।४।।
व्रतोपयुक्तसर्वाङ्गा, धार्मिका पापभीरव ।
निर्ममा निरहकारा, दानशूरा दयापरा ।५।।
वागीश्वरेण देवेन, नाभेयेन भवच्छिदा ।
ब्राह्मणा कृतमर्यादा-स्तएव ब्राह्मणा स्मृता ।।७।।

—भविष्यपुराण ब्राह्म पर्व-१ अध्याय-४४

जो सम्यग्दर्शन युक्त हैं, समाधि मे रहते हैं, क्रोध को नष्ट कर चुके हैं, स्वाध्याय द्वारा जिनका हृदय भक्त हो गया है, जो सग के त्यागी हैं, मत्सरभाव से रहित हैं ।।३।।

शोक एव मद से दूर हैं, शात हैं, सब जीवो के हितैषी हैं, सुख-दुख मे समान हैं, एकान्त स्थान मे रहने वाले हैं ।।४।।

जिनके सब अग सयमयुक्त हैं, जो धार्मिक हैं, पाप-भीरु हैं, निर्मम हैं, निरहकार हैं, दानी हैं, दयालु हैं ।।५।।

इस प्रकार मर्यादित जीवन वाले ब्राह्मणो को ही भवच्छेदी भगवान् नाभेय (ब्रह्मा) ने ब्राह्मण कहा है ।।७।।

२ जायरूवं जहामट्ठ, निद्धंत मलपावग ।
रागद्दोस-भयाईय, तं वय बूम माहण ।।२१।।
तसपाणे वियाणेत्ता, संगहणे य थावरे ।
जो न हिंसइ तिविहेण, त वय बूम माहण ।।२२।।

कोहा वा जइवा हासा, लोहा वा जइवा भया ।
मुस न वयई जो उ, त वय वूम माहण ।।२३।।
चित्तमन्तमचित्त वा, अप्पं वा जइ वा बहु ।
न गेण्हइ अदत्त जो, त वय वूम माहणं ।।२४।।
दिव्वमाणुसतेरिच्छ, जो न सेवइ मेहुण ।
मणसा कायवक्केण, त वय वूम माहण ।।२५।।
जहा पोम जले जाय, नोवलिप्पइ वारिणा ।
एव अलित्तो कामेहि, त वय वूम माहण ।।२६।।
अलोलुय मुहाजीवी, अणगार अकिचण ।
असंसत्तं गिहत्थेसु, त वय वूम माहण ।।२७।।

—उत्तराध्ययन-२५

• अग्नि मे तपाकर शुद्ध किये हुए और घिसे हुए सोने की तरह जो विशुद्ध है तथा राग-द्वेप और भय से रहित है, उसे हम ब्राह्मण कहते हैं ।।२१।।

जो त्रस और स्थावर जीवो को भली भाति जानकर मन, वाणी और शरीर मे उनकी हिंसा नही करता, उसे हम ब्राह्मण कहते हैं ।।२२।।

जो क्रोध, हास्य, लोभ या भय के कारण असत्य नही वोलता, उसे हम ब्राह्मण कहते हैं ।।२३।।

जो सचित या अचित कोई भी पदार्थ, थोडा या अधिक कितना ही क्यो न हो, उसके अधिकारी के दिए विना नही लेता, उसे हम ब्राह्मण कहते हैं ।।२४।।

जो देव, मनुष्य और तिर्यञ्च-सम्वन्धी मैथुन का मन, वचन और काय से सेवन नही करता, उसे हम ब्राह्मण कहते हैं ।।२५।।

जिस प्रकार जल मे उत्पन्न हुआ कमल जल में लिप्त नही होता, इसी प्रकार काम-भोग के वातावरण में उत्पन्न हुआ जो मनुष्य उसमे लिप्त नही होता, उसे हम ब्राह्मण कहते हैं ।।२६।।

जो लोलुप नही है, निर्दोप भिक्षा से जीवन का निर्वाह करता है, गृह-त्यागी है, अकिंचन है और गृहस्थो मे अनासक्त है, उसे हम ब्राह्मण कहते हैं ।।२७।।

★

३ ब्राह्मण के अनेक रूप

१ एकाहारेण सन्तुष्ट, षट्कर्मनिरत सदा ।
ऋतुकालाभिगामी च, स विप्रो द्विज उच्यते ॥११॥

लौकिके कर्मणि रत', पशूना परिपालक. ।
वाणिज्य-कृषिकर्मा य., स विप्रो वैश्य उच्यते ॥१२॥

लाक्षादि-तैल-नीलीना, कौसुम्भ-मधु-सर्पिषाम् ।
विक्रेता मद्यमासाना, स विप्र शूद्र उच्यते ॥१३॥

परकार्यविहन्ता च, दाम्भिक स्वार्थसाधक' ।
छली द्वेषी मृदु क्रूरो, विप्रो मार्जार उच्यते ॥१४॥

वापी-कूप-ताडागाना - माराम - सुरवेश्मनाम् ।
उच्छेदने निराशङ्क, स विप्रो म्लेच्छ उच्यते ॥१५॥

देवद्रव्य गुरुद्रव्यं, परदाराभिदर्शनम ।
निर्वाह' सर्वभूतेषु, विप्रश्चाण्डाल उच्यते ॥१६॥

— चाणक्यनीति ११

एक बार खाकर अध्ययन-यज्ञ-दान आदि षटकर्म मे अनुरक्त रहने वाला, एव केवल ऋतुकाल मे स्त्री-प्रसग करने वाला ब्राह्मण द्विज कहलाता है ॥११॥

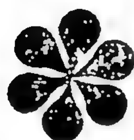
सामाजिक कार्यों से प्रेम, पशुपालन, व्यापार एव खेती करने वाला ब्राह्मण वैश्य कहलाता है ॥१२॥

लाक्षादि पदार्थ, तेल, नील, कुसुम्भा, मधु, घी, मद्य एव मास को बेचने वाला ब्राह्मण शूद्र कहलाता है ॥१३॥

दूसरो का काम बिगाडने वाला, पाखण्डी, मतलबी, छली द्वेषी, ऊपर मीठा और हृदय से क्रूर-ऐसा ब्राह्मण मार्जार कहलाता है ॥१४॥

वापी, कुआं, तालाव, बगीचा और देव स्थान आदि को नष्ट करने वाला ब्राह्मण म्लेच्छ कहलाता है ॥१५॥

देवद्रव्य, गुरुद्रव्य का हरण करने वाला, परस्त्री-गामी एवं धर्म-कर्म की परवाह न करके हर एक के साथ मिल जाने वाला ब्राह्मण चाण्डाल कहलाता है ॥१६॥



४ ब्राह्मण के विषय में विशेष ज्ञातव्य

१ ब्राह्मणस्य हि देहोऽय, क्षुद्रकामाय नेष्यते ।
कृच्छ्राय तपसे चेह, प्रेत्यानन्तसुखाय च ॥

—श्रीमद्भागवत ११।१७।४२

ब्राह्मण का यह शरीर क्षुद्र-कामवासनाओ के लिए नही है। वह तो इस लोक मे घोरतप के लिए और परलोक मे शाश्वतकल्याण के लिए है।

२ लशुन गृंञ्जन चैव, पलाण्डु कवकानि च ।
अभक्ष्याणि द्विजातीना-ममेध्यप्रभवानि च ॥

—मनुस्मृति ५।५

लशुन, गाजर, प्याज, धरती के फूल और अशुचि (विष्टा आदि) मे उत्पन्न चौलाई आदि शाक ब्राह्मणो के लिए अभक्ष्य हैं।

३ अनधीत्य द्विजो वेदा-ननुत्पाद्य तथा सुतान् ।
अनिष्ट्वा चैव यज्ञैश्च, मोक्षमिच्छन् व्रजत्यध· ॥

—मनुस्मृति ६।३७

जो ब्राह्मण वेद पढे विना, पुत्र पैदा किए विना एव यज्ञ किए विना अर्थात् ऋषिऋण, पितृऋण एव देवऋण से उऋण हुए विना सन्यास धारण की इच्छा करता है, वह नीचगति को प्राप्त होता है। (उत्तराध्ययन अ १४ मे भृगु के पुत्रो ने तथा महाभारत शातिपर्व अ १७५ मे एक ऋषि-पुत्र ने इस वैदिक मान्यता का विरोध किया है।)

४ ब्राह्मण के कर्म—

अध्यापनमध्ययनं, यजन याजन तथा ।
दान प्रतिग्रह चैव, ब्राह्मणानामकल्पयत् ॥

—मनुस्मृति ३।८८

ब्राह्मणो के लिए पढना, पढाना, यज्ञ करना, यज्ञ कराना, दान देना, दान लेना, ये छः कर्म निश्चित किये गये है।

५ वैदिक-संस्कृति में ब्राह्मण और शूद्र

१ अविद्वाश्चैव विद्वाश्च, ब्राह्मणो दैवत महत् ।

—मनुस्मृति ९।३१७

ब्राह्मण पण्डित हो या मूर्ख हो, महान् देवता है ।

२ चाहे जैसे अनिष्टकार्य मे सलग्न रहने पर भी ब्राह्मण सर्वथा पूज्य है ।

—मनुस्मृति ९।३१९

३ हत्वा लोकानपीमाम्त्री-नश्नन्न-मपि यतस्तत. ।
ऋग्वेद धारयन् विप्रो, नैन प्राप्नोति किंचन ।।

-- मनुस्मृति ११।२६१

तीनो लोको की हत्या करके और इधर-उधर भोजन करके भी ऋग्वेद को धारण करनेवाला ब्राह्मण कुछ भी पाप का भागी नही बनता ।

४ पडा धन ब्राह्मण को मिल जाय तो सब लेले, क्योकि वह सबका प्रभु है ।

—मनुस्मृति ८।३७

५ ब्राह्मण मारने आवे तो अपना शिर उसके पैरो मे रख देना उचित है ।

—श्रीमद्भागवत १०।६४

६ न जातु ब्राह्मणं हन्यात्, सर्वपापेष्वपि स्थितम् ।

—मनुस्मृति ८।३८०

ब्राह्मण को कभी न मारना चाहिए, चाहे वह सब पापो मे लीन हो जाय ।

७ दुःशीलोऽपि द्विजः पूज्यो न तु शूद्रो जितेन्द्रियः।

—पराशरसंहिता ८।३३

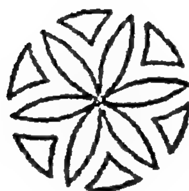
दुराचारी हो तो भी ब्राह्मण पूज्य है, शूद्र जितेन्द्रिय भी पूज्य नहीं।

८ पूजिये विप्र शील-गुण हीना,
शूद्र न गुण-गण ज्ञान-प्रवीना।

—रामचरित मानस

९ ब्राह्मण शूद्र की स्त्री से समागम करे तो उसे देश से निकाल दें और शूद्र ब्राह्मण की स्त्री से समागम करे तो उसे प्राणदण्ड दें।

—आपस्तम्ब-धर्मसूत्र, प्रश्न-२, पटल १०, खंड २७, सूत्र—८-९



६ शूद्र के विषय में विशेष

१ तपसे शूद्रम् ।

—यजुर्वेद ३०।५

परिश्रम से होनेवाले कार्यों के लिए शूद्र है।

२ न शूद्राय मतिं दद्या-नोच्छिष्ट न हविष्कृतम् ।
न चास्योपदिशेद्धर्मं, न चास्य व्रतमादिशेत् ॥८०॥
यो ह्यस्य धर्ममाचष्टे, यश्चैवादिशति व्रतम् ।
सोऽसवृत नाम तम, सह तेनैव मज्जति ॥८१॥

—मनुस्मृति ४

शूद्र को बुद्धि मत दो। उच्छिष्ट और हवि का शेपाश मत दो। उसे धर्म और व्रत का उपदेश भी मत दो।॥८०॥

जो शूद्र को धर्म का उपदेश और व्रत का आदेश करता है, वह उस शूद्र के साथ असवृत नामक अन्धकारमय नरक मे जा गिरता है ॥८१॥

३ उच्छिष्टमन्नं दातव्य, जीर्णानि वसनानि च ।
पुलाकाश्चैव धान्याना, जीर्णाश्चैव परिच्छदा ॥

—मनुस्मृति १०।१२५

शूद्रो को जूठा-अन्न, पुराने कपडे, पुराना धान्य और पुराने बिछौने देने चाहिएँ।

४ यदि शूद्र जप-होम आदि शुभकार्यों मे लगा है, तो वह राजा से दण्ड पाने योग्य है, क्योकि जप-होम मे तत्पर होने के कारण वह राजा के देश का नाश करने वाला है, जैसे—अग्नि का नाशक जल है।

—अत्रिस्मृति ६

५ दण्डक वन मे तपस्या करते हुए निरपराध शबुक-राक्षस को राम ने मारा।

—वाल्मीकिरामायण, उत्तरकाड, सर्ग ७३ से ७६ तक

स्नान

१ श्रमस्वेदालस्यविगम· स्नानस्य फलम् ।

—नीतिवाक्यामृत २५।२५

स्नान करने से शरीर की थकावट, पसीना और आलस्य दूर हो जाता है।

२ स्नान नाम मन·प्रसादजनन दु स्वप्न-विध्वसन,
शौचस्यायतन मलापहरण सवर्धन तेजस ।
रूपोद्योतकर गदप्रशमन कामाग्निसदीपन,
नारीणा च मनोहर श्रमहर स्नाने दशैते गुणा· ।

—सुभाषितरत्न भाडागार पृष्ठ १५०

स्नान मे ये दश गुण है—

(१) स्नान मन को प्रसन्न करने वाला है।
(२) दु स्वप्न को विध्वस करने वाला है।
(३) शुद्धि का स्थान है।
(४) मल का अपहरण करने वाला है।
(५) तेज को बढाने वाला है।
(६) रूप को चमकाने वाला है।
(७) रोग को उपशात करने वाला है।
(८) कामाग्नि को उद्दीप्त करने वाला है।
(९) स्त्रियो के मन को आकृष्ट करने वाला है।
(१०) श्रम को दूर करने वाला है।

३ स्नान के भेद—

आग्नेयं वारुण ब्राह्म्य, वायव्य दिव्यमेव च ।
पार्थिव मानस चैव, स्नान सप्तविध स्मृतम् ॥

—स्थानांग ५।३ टीका

स्नान सात प्रकार का कहा है—

(१) आग्नेय—भस्म लगाना,

(२) वारुण—जल मे नहाना

(३) ब्राह्म—ज्ञान पढना

(४) वायव्य—गोरज कणो से नहाना

(५) दिव्य—सूर्य के ताप से नहाना

(६) पार्थिव—मिट्टी से शुद्धि करना,

(७) मानस—मन की शुद्धि करना।

४ स्नान मनोमल त्यागो, योगश्चेन्द्रियरोधनम् ।
अभेददर्शनं ज्ञान ध्यान, निर्विषय मन ॥

—प्राचीनसग्रह से

वास्तव मे मन के मैल को धोना स्नान है, इन्द्रियजन्य विकारों को रोकना योग है, अभेद बुद्धि से देखना ज्ञान है और मन का निर्विषय होना ध्यान है।



स्नान-निषेध

१ नैव स्नायादनुव्रज्य, वन्धून् कृत्वा च मङ्गलम् ।

—विवेक विलास

वन्धुजनो को विदा करके और मङ्गलकार्य करके स्नान नही करना चाहिए ।

२ न स्नानमाचरेद् भुक्त्वा, नातुरो न महानिशि ।
न वासोभि सहाजस्रं, नाविज्ञाते जलाशये ॥

—मनुस्मृति ४।१२६

भोजन के वाद, रोग अवस्था मे, मध्य रात्रि के समय, वस्त्रो सहित और अजाने जलाशय-नदी आदि मे स्नान नही करना चाहिए ।

३ कूपे ह्रदेऽधम स्नानं, नद्यामेव च मध्यमम् ।
गृहे चैवोत्तम स्नान, जल चैव तु शोधितम् ।
वाप्या च वर्जयेत् स्नान, तटाके नैव कर्हिचित् ।

—प्राचीन सग्रह मे

कूप और द्रह मे नहाना अधम स्नान है, नदी मे नहाना मध्यम स्नान है और छाने हुए पानी से घर मे नहाना उत्तम स्नान है । वापी और तालाव मे स्नान नही करना चाहिए ।

४ परकीयनिपानेषु, न स्नायाच्च कदाचन ।
निपानकर्तु स्नात्वा तु,दुष्कृतांशेन लिप्यते ॥२०१॥
यानशय्यासनान्यस्य, कूपोद्यानगृहाणि च ।
अदत्तान्युपभुञ्जान, एनस स्यात्तुरीयभाक् ॥२०२॥

—मनुस्मृति ४

दूसरो के तालाव आदि मे कभी न नहाना चाहिए । नहानेवाला जला-शय वनाने वाले के पाप मे लिप्त होता है ॥२०१॥

किसी के रथ, शय्या आसन, कुआ, बगीचा और गृह, दाता के दिए विना इन सबका उपभोग करने वाला उसके पाप के चतुर्थांश का भागी होता है ।।२०२।।

५ स्नान मद-दर्पकर, कामाङ्ग प्रथम स्मृतम् ।
तस्मात् काम परित्यज्य, नैव स्नान्ति दमेरता ।

—धर्मरत्न प्रकरण, अधिकार १ गुण १०

स्नान मद और दर्प का करने वाला है एव काम का पहला अङ्ग है अत काम का परित्याग करने वाले इन्द्रिय दमन मे अनुरक्त मुनि स्नान नही करते ।

६ **जीवन भर नहीं नहाने वाले स्पीतियन :—**

हिमालय की गोद मे बसा एक वडा ही रमणीक अचल है स्पीति । यह भारत का एक अत्यन्त अगम छोर है । चन्द्रा घाटी मे १३,५०० फुट राह तग और १४,९०० फुट कुजुम दर्रों को पार कर स्पीति की भूमि मे प्रवेश मिलता है । यहाँ के निवासी स्पीतियन जीवन मे केवल दो ही वार स्नान करते है—जन्म के समय और मृत्यु के वाद । इन दोनो के वीच के समय मे वे अपने-अपने शरीर और वालो मे याक का मक्खन लपेटे रहते है । इनके शरीर से इतनी दुर्गन्ध निकलती है कि अगर हम मे से कोई भर-पेट भोजन कर दो-चार स्पीतियन के वीच किसी कमरे मे वैठकर वातें करें तो निश्चित ही वमन हो जाएगी । दुर्गन्ध के कारण हमारा सिर चकराने लगेगा ।

—'देश-विदेश की अनोखी प्रथाएँ' पुस्तक मे

तीर्थ

१ तीर्यतेऽनेनेति तीर्थम् ।

जिसके द्वारा तरा जाय, उसे तीर्थ कहते हैं । वह द्रव्य और भाव के भेद से दो प्रकार का है । नदी आदि का घाट । तथा वह भूभाग जो सम हो और अपाय से रहित हो । अथवा भूतवादियो (पच भूतवादी या चार भूतवादी) का प्रवचन द्रव्यतीर्थ है । इसी प्रकार ज्ञान-दर्शन चारित्र का सघात (पिंड) होने से साधु-साध्वी-श्रावक श्राविका रूप सघ भाव तीर्थ है । तथा प्रवचन (वीतराग वाणी) भी श्रुत ज्ञान रूप है अत भाव तीर्थ ही है ।

—स्थानाग १ टीका तथा विशेषावश्यक भाष्य गाथा १३८० के आधार से

२ वह पवित्र या पुण्यस्थान तीर्थ है, जहाँ धर्म भाव से श्रद्धा सहित लोग यात्रा, पूजा या स्नान के लिये जाते हैं ।

हिंदुशास्त्र मे तीर्थ तीन प्रकार के माने गये हैं—

(१) जगम, (२) मानस, (३) स्थावर ।

(१) जगम—साधु-ब्राह्मणादि

(२) मानस—सत्य-क्षमा दया-दान-सतोप आदि ।

(३) स्थावर—काशी, प्रयाग, गया आदि ।

—नालन्दा-विशाल-शब्द सागर पृष्ठ ५२५

१० मानस तीर्थ

१ सत्यं तीर्थं क्षमा तीर्थं, तीर्थमिन्द्रियनिग्रहः।
सर्वभूतदया तीर्थं, तीर्थमार्जवमेव च ॥
दान तीर्थं दमस्तीर्थं, सतोषस्तीर्थमुच्यते।
ब्रह्मचर्यं पर तीर्थं, तीर्थं च प्रियवादिता ॥
ज्ञान तीर्थं धृतिस्तीर्थं, तपस्तीर्थमुदाहृतम्।
तीर्थानामपि तत्तीर्थं, विशुद्धिमनस परा ॥

—स्कन्दपुराण, काशीखण्ड अध्याय ६

सत्य क्षमा, इन्द्रियनिग्रह, जीवदया, सरलता, दान, दम, सन्तोष, ब्रह्मचर्य मीठी वाणी, ज्ञान, धृति और तप—ये सब तीर्थ हैं किंतु मन की विशुद्धि सब तीर्थों मे उत्कृष्टतीर्थ मानी गई है।

२ तीर्थं पर किं ? स्वमनो विशुद्धम्।

—शकर प्रश्नोत्तरी ६

उत्कृष्ट तीर्थ कौन-सा है ? अपना विशुद्ध मन।

३ यस्य हस्तौ च पादौ च, मनश्चैव सुसयतम्।
विद्या तपश्च कीर्तिश्च, स तीर्थफलमश्नुते ॥

—पद्मपुराण पातालखण्ड १९।२४

जिसके हाथ, पैर एव मन सयमित है तथा जो विद्या [ज्ञान] तप और कीर्तिमान हैं, उसी को तीर्थ का फल मिलता है।

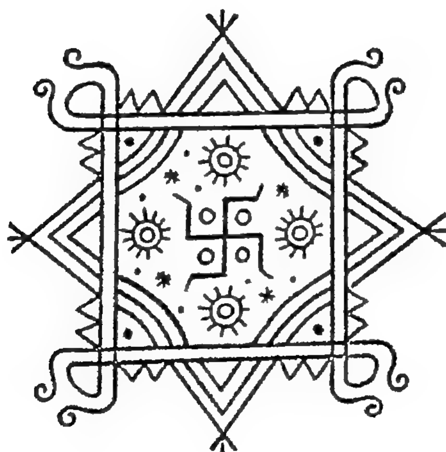
४ निगृहीतेन्द्रियग्रामो, यत्रैव निवसेन्नरः।
तत्र तस्य कुरुक्षेत्र, नैमिष पुष्कराणि च ॥४॥
२

ध्यानपूते ज्ञानजले, राग-द्वेषमलापहे।
यः स्नाति मानसे तीर्थे, स याति परमा गतिम् ॥५॥

—स्कन्दपुराण, काशीखंड अध्याय ६

इन्द्रिय दमन करने वाला जहाँ भी निवास करता है, उसके वहीं पर नैमिषारण्य कुरुक्षेत्र एव पुष्कर है ॥४॥

राग-द्वेष को धोने वाले, ध्यान से पवित्र किये हुए ज्ञान जल वाले, मानस तीर्थ मे जो स्नान करता है, वह परम गति को प्राप्त होता है ॥५॥



११ जंगमतीर्थ की प्रतीक्षा में गंगा

१ चित्त शमादिभि शुद्ध, वदन सत्यभाषणै ।
ब्रह्मचर्यादिभि काय., शुद्धो गगा विनाऽप्यसौ ॥
परदारेष्वनासक्त, परद्रव्यपराङ्मुख ।
गगाप्याह कदागत्य, मामय पावयिष्यति ॥

—स्कन्दपुराण, काशीखड अध्याय ६

जिसका चित्त शम दम आदि से, मुख सत्य भाषणो से और शरीर ब्रह्मचर्य आदि से शुद्ध है, वह गगा के विना भी शुद्ध है। गगा कह रही है कि वह महात्मा आकर मुझे कब पवित्र करेगा, जो पर-स्त्री मे अनासक्त एव पर-धन से विमुख है।

२ साधवो न्यासिन शान्ता, ब्रह्मिष्ठा लोकपावना ।
हरन्त्यघ तेऽङ्गसगात्, तेष्वास्ते ह्यघभिद्धरि ॥

—श्रीमद्भागवत ९।९।६

सब मेरे मे पाप धोएगे, फिर मैं उन पापो का क्या करूगी ऐसे गगा के पूछने पर भगीरथ ने कहा—जगत को पवित्र करने वाले शान्त एव ब्रह्मनिष्ठ साधु-सन्यासी तेरे जल मे स्नान करके अपने शरीर के स्पर्श से तेरा सारा पाप हर लेंगे। क्योकि उनके हृदय मे पापो को नष्ट करने वाले हरि-भगवान विराजते हैं।

३ चित्त कामादिभि॰ क्लिष्ट-मलीकवचनैर्मुखम् ।
जीवहिंसादिभिः कायो, गङ्गा तस्य पराङ्मुखी ॥

—स्कन्दपुराण, काशी खड अध्याय ६

जिसका चित्त काम आदि से, मुख असत्य वचन से तथा शरीर जीवहिंसा आदि पापो से अशुद्ध हैं, उस व्यक्ति से गगा सदैव विमुख रहती है।

४ छार ही मे ख्वार खर न्हात जात जलचर,
घरत जटा को वड वरत पतंग है।
ध्यान वक धरत रटत राम-राम शुक,
गाडर मुंडावे पशु अवश निहंग है॥
सहे तरु ताप घर करके ना रहे सांप,
"किसन" दुराप आप अनभो अभग है।
रग वहिरग सवे मोक्ष को न अग पर,
यह मन चग तो कठौत ही मे गग है॥

५ सत रेदास और गगा—रैदास चर्मकार थे। वे अपना धन्धा करते हुए भी प्रभुभजन मे लीन रहते थे अत सत कहलाते थे। एक ब्राह्मण रघुवशी क्षत्रिय की ओर से प्रतिदिन गगा माता को फूल चढाया करता था। वह एक दिन जूतियाँ खरीदने उनकी दूकान पर आया। बात करते-करते गगा माता की पूजा की चर्चा चल पडी।

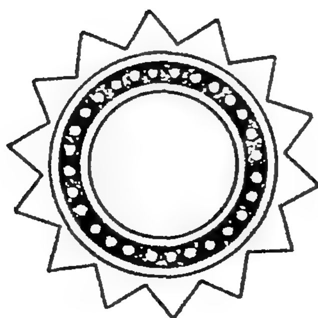
सत ने कहा—पडित जी! मैं तो मन चगा तो कठोती मे गगा के सिद्धात को मानने वाला हू, पूजा आदि करने आज तक कभी नही गया। यही पर जो कुछ भजन-स्मरण होता है, कर लेता हू और गगा माता यही से मेरी सेवा स्वीकार कर लेती है। ब्राह्मण नही माना एव बोला—ऐसा कैसे हो सकता है? तव सत ने एक सुपारी देकर कहा—आप जाइए एव गगा माता से कहिये कि सत रैदास ने यह भेंट भेजी है। आप इसे ले लीजिये। इतना कहने पर यदि माता अपना हाथ फैला दे तो आप यह सुपारी दे देना अन्यथा वापस ले आना।

आश्चर्यचकित ब्राह्मण गगाजी पहुचा और कहने के साथ मे ही गगा ने दोनो हाथ बाहर निकाले। एक हाथ मे सुपारी ली एव दूसरे हाथ मे एक रत्नजडित ककण देते हुए कहा—यह भक्त रैदास को मेरी भेंट देना। ब्राह्मण उसे लेकर चला। पर लोभवश नीयत विगड गई। वह ककण लेकर घर तो आ गया पर हजम न होता देखकर राजा को भेंट कर दिया। राजा ने उसे बहुत धन व सम्मान दिया। ज्योही ककण रानी को दिया गया, वह दूसरा फिर मांगने लगी। समझाने पर भी नहीं मानी और

मरने पर तुल गई। राजा ने ब्राह्मण से कहा—एक ककण पुन लाओ। ब्राह्मण ने असमर्थता प्रकट की। राजा ने क्रुद्ध होकर मार देने की धमकी दी, ब्राह्मण गगा के पास गया। रुष्टमना गगा ने कहा—नालायक ! तूने मेरा ककण रैदास को क्यो नही दिया ? चल भाग जा, अन्यथा मार दूगी जान से। भयभीत ब्राह्मण रैदास के पास जाकर रोया और माफी मागने लगा तथा साथ-साथ दूसरा ककण भी।

दयालु सत ने चमडा धोये हुए पानी से भरी एक कुडी के सामने सुपारी रखकर कहा—गगामाता ! मेरी भेंट लो और कृपया इस ब्राह्मण के लिए एक ककण दो ! बस, तत्काल कुडी से गगा के दोनो हाथ बाहर निकल आए और सुपारी लेकर ककण दे गये। इस आश्चर्यजनक घटना को देखकर ब्राह्मण को ज्ञान हो गया एव वह मान गया कि वास्तव मे मन-शुद्धि ही सच्चा गगास्नान है, ऊपर के क्रियाकाड नही।

—श्रुति के आधार पर



१२ मनःशुद्धि के बिना जलादि से आत्मशुद्धि नहीं

१ जलादिशौच यत्रेद, मूढविस्मापन हि तत् ।

—उमास्वाति

इस ससार मे केवल जलादि द्वारा आत्मशुद्धि कहना मूर्खो को विस्मय मे डालना है ।

२ न जलाप्लुतदेहस्य, स्नानमित्यभिधीयते ।
स स्नातो यो दमस्नात, शुचि शुद्धमनोमल ॥१॥
यो लुब्ध पिशुन. क्रूरो, दम्भिको विषयात्मक ।
सर्वतीर्थेष्वपि स्नात, पापो मलिन एव स ॥२॥
चित्तमन्तर्गत दुष्टं, तीर्थस्नानान्न शुद्ध्यति ।
शतशोऽपि जले धौत, सुराभाण्डमिवाशुचि ॥३॥

— स्कन्दपुराण, काशी खड अ० ६

शरीर को जल से भिगोने मात्र से स्नान नही कहा जाता वस्तुत इन्द्रिय-दमन करनेवाला ही नहाया हुआ, पवित्र एव निर्मल मनवाला होता है ॥१॥

जो लोभी, चुगल, क्रूर, कपटी एव विषयी है, वह चाहे सभी तीर्थों मे नहाले, पापी एव मैला ही है ॥२॥

अन्दर का दुष्टमन तीर्थ मे नहा लेने मात्र से शुद्ध नहीं होता । जैसे—मद्य का वर्तन सैकडो बार धोने पर भी अपवित्र ही रहता है ॥३॥

३ उदगेण जे सिद्धिमुदाहरन्ति, साय च पाय उदग फुसता ।
उदगस्स फासेण सिया य सिद्धी, सिज्भिसु पाणा बहवे दगसि ।

—सूत्रकृतांग ७।१४

सुबह-शाम स्नान करने वाले जल स्पर्श से ही मुक्ति मानते हैं। किन्तु यदि जल स्पर्श से ही मुक्ति मिलती हो तो बहुत से मच्छ-कच्छ आदि जलचर प्राणियो को भी मुक्ति मिल जानी चाहिए।

४ जायन्ते च म्रियन्ते च जलेष्वेव जलौकस ।
न च गच्छन्ति ते स्वर्ग-मविशुद्धमनोमला ॥

—स्कन्दपुराण, काशीखड, अध्याय ६

जोकें पानी ही मे जन्मती हैं और मरती हैं लेकिन मन का मैल धोए विना स्वर्ग मे नही जाती।

५ मक्का जाकर इट्टा पूजें, गगा जा के पानी।
बुल्लेशाह ऐसी करनी कर चल्लो, मिट जाए आवण-जाणी।
नहाते-धोते जो रब मिले, पहले मिले डड्डा-मच्छिया।
बुल्शेशाह रब उन्हानु मिलदा, जिन्हादी किस्मत अच्छिया ॥

—पजावी पद्य



१३ आध्यात्मिक तीर्थ

१ धम्मे हरए वम्भे सन्तितित्थे, अणाविले अत्तपसन्नलेसे ।
जहिंसि ण्हाओ विमलो विसुद्धो, सुसीइभूओ पजहामि दोस ॥४६॥
एय सिणाण कुसलेहि दिट्ठ, महासिणाण इसिण पमत्थं ।
जहिंसि ण्हाया विमला विसुद्धा, महारिसी उत्तमठाण पत्ते ॥४७॥

—उत्तराध्ययन १२

सोमदेव ब्राह्मण के पूछने पर हरिकेशवल मुनि ने कहा—अकलुपित एव आत्मा का प्रसन्न-लेश्यावाला धर्म मेरा नद (जलाशय) है । ब्रह्मचर्य मेरा शान्ति तीर्थ है। जहाँ नहाकर मैं विमल, विशुद्ध और सुशीतल होकर कर्म-रज का त्याग करता हू ॥४६॥

यह स्नान, कुशल पुरुपो द्वारा दृष्ट है । यह महास्नान है अत ऋपियो के लिए यही प्रशस्त है । इस धर्म नद मे नहाए हुए महर्पि विमल और विशुद्ध होकर उत्तम स्थान (मुक्ति) को प्राप्त हुए 'ऐसा मैं कहता हू ।" ॥४७॥

३ अगाधे विमले शुद्धे, सत्यतोये धृतिह्रदे ।
स्नातव्यं मानसे तीर्थे, सत्त्वमालम्ब्य शाश्वतम् ॥३॥
नोदकक्लिन्नगात्रस्तु, स्नात इत्यभिधीयते ।
स स्नातो यो दमस्नात, स बाह्याभ्यन्तर शुचि ॥९॥

—महाभारत, अनुशासन पर्व, अध्याय १०८

भीष्मपितामह युधिष्ठिर से कह रहे हैं कि—जिसमें धैर्यरूप कुण्ड और सत्यरूप जल भरा हुआ है तथा जो अगाध, निर्मल एव अत्यन्त शुद्ध है, उस मानस तीर्थ मे सदा परमात्मा का आश्रय लेकर स्नान करना चाहिए ॥३॥

शरीर को केवल पानी से भिगो लेना ही स्नान नही कहलाता । सच्चा

स्नान तो उसी ने किया है, जिसने मन-इन्द्रिय के सयम रूपी जल मे गोता लगाया है। वही वाहर और भीतर से पवित्र माना गया है ॥९॥

४ पांडवो की तीर्थयात्रा—

कहा जाता है कि गोत्रहत्या के पाप को धोने के लिए श्री कृष्ण की अनुमति लेकर पाडव सपरिवार तीर्थ करने गए। कृष्ण ने उन्हे अपनी तु वी देते हुए कहा – जिस तीर्थ मे तुम एक वार नहाओ उस तीर्थ मे इसे दो वार नहला देना। अस्तु ! कहकर पाडव पुष्कर-कुरुक्षेत्र आदि अनेक तीर्थों मे घूमे एव स्वय नहाकर तु वी को भी नहलाया। लौटते समय उसे गगाजल से भर लाए। तुम्वी ज्यो ही कृष्ण के चरणो मे उपस्थित की गई, उन्होंने उसका एक टुकडा तोड कर मु ह मे लेते हुए कहा—

एरे तु वडी कडवी रे भाई ! सव तीरथ फिर आई।
गगा भी न्हाई गोमती भी न्हाई, अजु न गई कडवाई।
जिया ! माजता क्यो न मना रे ! जामे अतर मैल घना रे।

भाइयो ! तुमने इस तुम्वी को पूरे तीर्थ नहीं करवाये। अन्यथा यह अवश्य मीठी हो जाती। चौंककर पाडवो ने उत्तर दिया—भगवन् ! क्या पानी से धोने पर कडवी वस्तु कभी मीठी हो सकती है ?

श्रीकृष्ण मुस्कराकर वोले—यदि नही होती तो फिर तुम्हारी आत्मा कैसे शुद्ध हुई ? विस्मित युधिष्ठिर ने पूछा—तो फिर पापशुद्धि के लिए हमे क्या करना चाहिए ? उत्तर मे श्री कृष्ण ने कहा—

आत्मा नदी सयमपुण्यतीर्था, सत्योदका शीलतटा दयोर्मि।
तत्राभिषेक कुरु पाण्डुपुत्र ! न वारिणा शुद्ध्यति चान्तरात्मा।

—हितोपदेश ५।८६

इन्द्रियो का सयम ही जिसका पुण्य तीर्थ है, सत्य जिसका जल है, शील जिसका किनारा है और दया जिसमे लहरियो की माला है। हे युधिष्ठिर ! ऐसी आत्मारूपी नदी मे स्नान करो। केवल पानी से स्नान करने पर अन्दर की आत्मा शुद्ध नहीं हो सकती।

—श्री कालूगणी से श्रुत

शुद्धि-शौच

१ पचविहे सोए पन्नत्ते, त जहा—
पुढविसोए, आउसोए, तेउसोए, मंतसोए, बभसोए।

—स्थानाग ५।३

शुद्धि पांच प्रकार से कही है—(१) मिट्टी से (२) पानी से (३) अग्नि से (४) मत्र से (५) ब्रह्मचर्य से।

२ सत्य शोच तपः शौच, शौचमिन्द्रियनिग्रह ।
सर्वभूतदया शौच, जलशौच तु पञ्चमम् ॥

—स्कन्दपुराण, काशी खड अध्याय ६

शौच (शुद्धि) के पांच कारण हैं—
(१) सत्य (२) तप (३) इन्द्रियनिग्रह (४) सब जीवो की दया और (५) जल। प्रथम चार आत्म-शुद्धि के कारण हैं और पाचवा जल शरीर शुद्धि की अपेक्षा से है।

३ वृत्त शौच मन शौच, तीर्थशौचमतः परम् ।
ज्ञानोत्पन्न च यच्छौच, तच्छौच परम स्मृतम् ॥

—महाभारत, अनुशासन पर्व, अध्याय १०८।१२

शुद्धि चार प्रकार की मानी है— आचार शुद्धि, मन शुद्धि, तीर्थ शुद्धि और ज्ञानशुद्धि। इनमें ज्ञान से प्राप्त होने वाली शुद्धि ही सबसे श्रेष्ठ मानी गयी है।

४ दस विहा विसोही पन्नत्ता, त जहा—
-उग्गमविसोही, उप्पायणविसोही जाव सारक्खणविसोही ॥

—स्थानाग १०।७३९

दस प्रकार की विशुद्धियां कही हैं—(१) उद्गम विशुद्धि (२) उत्पादन विशुद्धि (३) एषणा विशुद्धि (४) परिकर्म विशुद्धि (५) परिहरण विशुद्धि (६) ज्ञानविशुद्धि (७) दर्शनविशुद्धि (८) चारित्र विशुद्धि (९) अप्रीतिक विशुद्धि (१०) सरक्षण विशुद्धि।

१५ व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से वस्तुओं की शुद्धि

१ धान्य-दार्वस्थि-तन्तूना, रस-तेजस-चर्मणाम् ।
कालवाय्वग्निमृत्तोयै, पार्थिवाना युतायुतै ॥१२॥
अमेध्यलिप्त यद् येन, गन्धलेप व्यपोहति ।
भजते प्रकृति तस्य, तच्छौच तावदिष्यते ॥१३॥

—श्रीमद् भागवत ११।२१

अनाज, लकडी, हाथी दात आदि हड्डी, सूत, मधु, नमक, तेल-घी आदि रस, सोना—पारा आदि तैजस पदार्थ, चाम और घडा आदि मिट्टी के बने पदार्थ, समय बीतने पर, हवा लगने से, आग मे जलाने से, मिट्टी लगाने से अथवा जल मे धोने से शुद्ध हो जाते है। देश, काल और अवस्था के अनुसार, कही जल-मिट्टी आदि शोधक सामग्री के सयोग से शुद्धि करनी पडती है तो कही-कही एक-एक द्रव्य से भी शुद्धि हो जाती है ॥१२॥

यदि किसी वस्तु मे कोई अशुद्ध पदार्थ लग गया हो तो छीलने से या मिटी आदि मलने से जब उस पदार्थ की गध एव लेप न रहे और वह वस्तु अपने पूर्वरूप मे आ जाय, तब उसको शुद्ध समझना चाहिए ॥१३॥

२ भस्मना शुद्ध्यते कास्य, ताम्रमम्लेन शुद्ध्यति ।

—चाणक्यनीति ६।३

कासी का पात्र राख से और ताबे का पात्र खटाई से शुद्ध होता है।

३ क्षान्त्या शुद्ध्यन्ति विद्वासो, दानेनाकार्यकारिण ।
प्रच्छन्नपाप्पो जप्येन, तपसा वेदवित्तमा ॥१०७॥
मृत्तोयै: शुद्ध्यते शोध्य, नदी वेगेन शुद्ध्यति ।
रजसा स्त्री मनोदुष्टा, सन्यासेन द्विजोत्तम ॥१०८॥

अद्भिर्गात्राणि शुद्ध्यन्ति, मनः सत्येन शुद्ध्यति ।
विद्यातपोभ्या भूतात्मा, बुद्धिर्ज्ञानेन शुद्ध्यति ॥१०९॥

—मनुस्मृति ५

विद्वान क्षमा से, अकार्यकारी दान से, प्रच्छन्न पाप करने वाले जाप से, वेदवेत्ता तपस्या से, शोधनीय वस्तु मिट्टी पानी से, दूषित मन वाली स्त्री रजस्वला होने से, ब्राह्मण सन्यास से, शरीर पानी से, मन सत्य से, जीवात्मा विद्या और तप से तथा बुद्धि ज्ञान से शुद्ध होती है ।

४ पुत्र-पुत्री के जन्म मे माता दस दिन के वाद और पिता स्नान से शुद्ध होता है ।

—मनुस्मृति ५।६२ का टिप्पण

५ शुद्धं भूमिगतं तोयं, शुद्धा नारी पतिव्रता ।
शुचि क्षेमकरो राजा, सन्तुष्टो ब्राह्मण शुचि ॥

—चाणक्यनीति ८।१७

पृथ्वी पर पडा हुआ जल, पतिव्रता स्त्री, कल्याणकारी राजा, और सन्तोषी ब्राह्मण—ये चारो शुद्ध-पवित्र माने गए हैं ।

६ शुद्ध न होने वाले—

मित्रद्रुह कृतघ्नस्य, स्त्रीघ्नस्य पिशुनस्य च ।
चतुर्णामपि चैतेषां, निष्कृतिर्नैव विश्रुता ॥

—सुभाषितरत्नभाण्डागार पृष्ठ १६१

मित्र द्रोही, कृतघ्न, स्त्रीघातक और चुगल—इन चारो की शुद्धि नहीं होती ।

७ गृहस्थ का शुद्ध होना दुसभव —

आरम्भे वर्तमानस्य, हिंसकस्य युधिष्ठिर !
गृहस्थस्य कुत शौच, मथुन येन सेव्यते ॥

—शिवपुराण

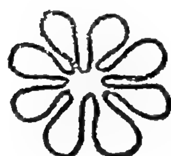
हे युधिष्ठिर ! जो आरम्भ मे वर्तमान है, हिसक है और मैथुनसेवन करता है, उस गृहस्थ के शुद्धि कहा ?

८ **स्नान न करने तक अशुद्ध—**

तैलाभ्यगे चिताधूमे, मैथुने क्षौरकर्मणि ।
तावद् भवति चाण्डालो, न यावत् स्नानमाचरेत् ।

—चाणक्यनीति ८।६

तेल लगाने पर, चिता का धुआँ लगने पर, मैथुन करने के बाद और हजामत कराने के बाद, जब तक स्नान न किया जाय तब तक व्यक्ति चाण्डालवत् अशुद्ध रहता है ।



यज्ञ

१ देवो और पितरो के लिए द्रव्य का त्याग करना यज्ञ है। देवता और पितर मनुष्यो के दिये हुए भोजन की राह देखते हैं, मनुष्य उनके ऋणी हैं। अगर वे यज्ञ-श्राद्ध न करें तो उनका जीवन ही अपूर्ण रह जाता है। देवता और पितर अग्नि तथा ब्राह्मणो के मुख से खाद्य ग्रहण करते है। (इसीलिए यज्ञो और श्राद्धो मे ब्राह्मणो को खिलाया जाता है।)

—यज्ञरहस्य के आधार से

२ यज्ञ के तीन प्रकार—

(१) औषधियज्ञ—यह फल-फूल धान्य आदि से होता है।

(२) प्राणियज्ञ—इसमे पशु एव मनुष्य हामे जाते हैं।

(३) आत्मयज्ञ—यह आध्यात्मिक व्रत से सम्पन्न होता है। एव अहिंसात्मक है।

३ यज्ञ का मडन—

यज्ञात् प्रजा प्रभवति, नभसोऽम्भ इवामलम् ।
अग्नौ प्रास्ताहुतिर्ब्रह्म-न्नादित्यमुपगच्छति ॥
आदित्याज्जायते वृष्टि वृष्टेरन्न तत प्रजा ।

—महाभारत शांतिपर्व, अध्याय २६३ श्लोक ११

जिस प्रकार आकाश से निर्मल जल की वर्षा होती है, उसी प्रकार शुद्ध-भाव मे किए हुए यज्ञ से योग्य प्रजा की उत्पत्ति होती है। विप्रवर ! अग्नि मे डाली हुई आहुति सूर्य मडल को प्राप्त होती है, सूर्य से जल की वृष्टि होना है, वृष्टि से अन्न उपजना है और अन्न से सम्पूर्ण प्रजा जन्म तथा जीवन धारण करती है।

१७ हिंसात्मक यज्ञ

१ यज्ञार्थं पशव सृष्टा, स्वयमेव स्वयभुवा ।
यज्ञस्य भूत्यै सर्वस्य, तस्माद् यज्ञेवधोऽवध ।।३९।।
औषध्य॰ पशवोवृक्षा-स्तिर्यञ्च पक्षिणस्तथा ।
यज्ञार्थं निधनं प्राप्ता, प्राप्नुवन्त्युत्सृती पुन ।।४०।।

—मनुस्मृति ५

स्वय ब्रह्मा ने यज्ञ के लिए और सब यज्ञो की समृद्धि के लिये पशुओ का निर्माण किया है अत यज्ञ मे की हुई हिंसा वास्तव मे अहिंसा ही है ।

औषधियाँ, वृक्ष, पशु, तिर्यञ्च और पक्षी जो यज्ञ के लिए मरते हैं, वे सब उच्च गति मे जाते हैं ।४०।

२ अश्वमेधमखे ह्यश्व, गोमेधे वृषमेव च ।
नरमेधे नर राजन् ! वाजपेये तथा ह्यजान् ।।३४।।
राजसूये महाराज ! प्राणिना घातन बहु ।
पुण्डरीके गज हन्याद्, गजमेधेऽथ कुञ्जरम् ।।३५।।

— पद्मपुराण, भूमि खण्ड, अध्याय ३७

अश्वमेध यज्ञ मे घोडा, गोमेध मे वृषभ, नरमेध मे मनुष्य, वाजपेय यज्ञ मे बकरा, राजसूय यज्ञ मे अनेक प्राणी, पुण्डरीक यज्ञ मे गज, गजमेध यज्ञ मे कुजर (हाथी की विशेष जाति) का होम किया जाता है ।

३ ऋग्वेद १।६२ मे अश्वमेध यज्ञ का विस्तृत वर्णन है एव पढने लायक है ।

४ सामवेद कौथुमीशाखा गृह्यकर्म-प्रतिपादक गोभिल-गृह्य सूत्र, प्रपाठक २, खण्ड १०, सूत्र १४ से ३१ तक गोमेध यज्ञ का विस्तार है ।



१ प्लवा ह्येते अदृढा यज्ञरूपा, अष्टादशोक्तमवरं येषु कर्म ।
एतच्छ्रेयो येऽभिनन्दन्ति मूढा, जरा मृत्यु ते पुनरेवापि यन्ति ।
—मुण्डकोपनिषद् १।२।७

निश्चय ही ये यज्ञरूप अठारह नौकाएँ अदृढ (अस्थिर) है, जिनमे निम्न श्रेणी का (उपासनारहित) सकाम कर्म बताया गया है। जो मूर्ख "यही कल्याण का मार्ग है"—यो मानकर इसकी प्रशसा करते हैं, वे बारबार नि सदेह वृद्धावस्था और मृत्यु को प्राप्त होते रहते है।

२ सुरा मत्स्या मधु मासमासव कृशरौदनम् ।
धूर्तैं प्रवर्तितं ह्येतन्नैतद् वेदेषु कल्पितम् ॥
—महाभारत-शातिपर्व २६५।९

सुरा, आसव, मधु, मास, मछली तथा तिल और चावल की खिचडी—इन वस्तुओ को धूर्तों ने यज्ञ मे प्रचलित किया है किन्तु वेदो मे इनके उपयोग का विधान नही है।

३ प्रवृत्तं च निवृत्त च, द्विविध कर्म वैदिकम् ।
आवर्तते प्रवृत्तेन, निवृत्तेनाश्नुतेऽमृतम् ॥४७॥
हिंस्र द्रव्यमय काम्य-मग्निहोत्राद्यशान्तिदम् ।
दर्शश्च पौर्णमासश्च, चातुर्मास्य पशु सुत ॥४८॥
एतदिष्ट प्रवृत्ताख्य, हुत प्रहुतमेव च ।
पूर्तं सुरालयाराम-कूपाजीव्यादिलक्षणम् ॥४९॥
—श्रीमद्भाग

वैदिक कर्म दो प्रकार के हैं—प्रवृत्तिपरक ... निवृत्तिपरक । ...
परक—ये वृत्तियो को उनके विषयो की ... । निवृ

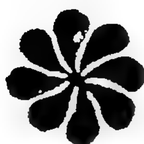
ये वृत्तियो को उनके विषयो की ओर से लौटाकर शान्त एव आत्मसाक्षात्-कार के योग्य बना देते हैं।

प्रवृत्तिपरक कर्ममार्ग से बार-बार जन्म-मृत्यु की प्राप्ति होती है और निवृत्तिपरक भक्तिमार्ग या ज्ञानमार्ग से परमात्मा की प्राप्ति होती है ॥४७॥

श्येनयागादि हिंसामय कर्म, अग्निहोत्र, दर्श, पौर्णमास, चातुर्मास्य, पशु-याग, सोमयाग, वैश्वदेव, बलिहरण आदि द्रव्यमय कर्म इष्टकर्म कहलाते है और देवालय, बगीचा कुआ आदि बनवाना तथा प्याऊ आदि लगाना पूर्तकर्म है। ये सभी प्रवृत्तिपरक कर्म हैं और सकामभाव से युक्त होने पर अशान्ति के ही कारण बनते हैं। (४८-४९)

४ इष्टापूर्तं मन्यमाना वरिष्ठ, नान्यच्छ्रेयो वेदयन्ते प्रमूढाः ।
नाकस्य पृष्ठे ते सुकृतेऽनुभूत्वेम, लोक हीनतर वाविशन्ति ॥
—मुण्डकोपनिषद् १।२।१०

इष्ट और पूर्त कर्मों को ही श्रेष्ठ मानने वाले अत्यन्त मूर्ख लोग उससे भिन्न वास्तविक श्रेय को नही जानते। वे पुण्य कर्मो के फलस्वरूप उच्चतम स्थान मे जाकर वहाँ के भोगों का अनुभव करके इस मनुष्य-लोक मे अथवा इससे भी अत्यन्त हीनयोनियो मे प्रवेश करते हैं।



आत्मयज्ञ-अहिंसात्मक यज्ञ

१ इन्द्रियाणि पशून् कृत्वा, वेदी कृत्वा तपोमयीम् ।
अहिंसामाहुतिं कृत्वा, आत्मयज्ञं यजाम्यहम् ।

—प्राचीन संग्रह से

जिस मे इन्द्रियाँ पशु हैं, तपरूप वेदिका है और अहिंसा की आहुति है— मैं वही आत्मिक यज्ञ करता हूँ ।

२ श्रद्धा पत्नी सत्य यजमान, श्रद्धा सत्य तदित्युत्तम मिथुनम् ।
श्रद्धया सत्येन मिथुनेन, स्वर्गान् लोकान् जयतीति ॥

—ऐतरेय ब्राह्मण ७।१०

जीवन यज्ञ मे श्रद्धा पत्नी है और सत्य यजमान है । श्रद्धा-सत्य की उत्तम जोड़ी है । इस जोडी से मनुष्य दिव्यलोक को प्राप्त करता है ।

३ ब्रह्म का साक्षात्कार पाने वाले विद्वान् सन्यासी के लिए यज्ञ का यजमान आत्मा है, अन्त करण की श्रद्धा पत्नी है, शरीर समिधा है, हृदय वेदी है, मन्यु (क्रोध) पशु है, तप अग्नि है और दम दक्षिणा है ।

—तैत्तिरीय आरण्यक, प्रपाठक १०, अनुवाक ६४

४ ज्ञानपालि परिक्षिप्ते, ब्रह्मचर्य दयाम्भसि ।
स्नात्वातिविमले तीर्थे, पापपङ्कापहारिणि ।
ध्यानाग्नौ जीवकुण्डस्थे, दममारुतदीपिते ।
असत्कर्म-समित्क्षेपै-रग्निहोत्र कुरूत्तमम् ।
कषायपशुभिर्दुष्टै - धर्म-कामार्थनाशकै ।
शममन्त्रहुतैर्यज्ञ, विधेहि विहित बुधै ।

—व्यास (स्याद्वादमञ्जरी, पृष्ठ ८४)

ज्ञान रूप पाल पर गिरे हुए पाप-पक के नाशक ब्रह्मचर्य एव दयारूप जल मे स्नान करके जीव रूपी कुण्ड मे दम रूप हवा से दीप्त ध्यान-अग्नि मे अशुभ कर्मरूप काष्ठ को डालकर उत्तम अग्नि-होत्र करो। शमरूप मत्र से आहुति को प्राप्त हुए, धर्म, काम एव अर्थ का नाश करने वाले—ऐसे दुष्ट कषाय रूप पशुओ से यज्ञ करो! पूर्वकाल मे ज्ञानियो ने ऐसा ही किया है।

५ शान्ति यज्ञरतो दान्तो, ब्रह्मयज्ञे स्थितो मुनिः।
वाड्-मनः-कर्मयज्ञश्च, भविष्याम्युदगायने ॥३२॥
पशुयज्ञैः कथ हिंस्रै-र्मादृशो यष्टुमर्हति।
अन्तवद्भिरिव प्राज्ञः, क्षेत्रयज्ञैः पिशाचवत् ॥३२॥

—महाभारत, शान्तिपर्व, अध्याय १७५

मैं निवृत्तिपरायण होकर शातिमय यज्ञ मे तत्पर रहूगा, मन और इन्द्रियो को वश मे रखकर ब्रह्मयज्ञ (वेद-शास्त्रो के स्वाध्याय) मे लग जाऊगा और मुनिवृत्ति मे रहूगा। उत्तरायण के मार्ग से जीने के लिए मैं जप और स्वाध्याय रूप वाग्यज्ञ, ध्यानरूप मनोयज्ञ एव गुरुशुश्रूषादि रूप कर्मयज्ञ का अनुष्ठान करूगा ॥३२॥

मेरे जैसा विद्वान् नश्वर फल देने वाले हिंसायुक्त पशुयज्ञ और पिशाचो के समान अपने शरीर के ही रक्त, मास द्वारा किए जाने वाले तामस यज्ञो का अनुष्ठान कैसे कर सकता है ॥३३॥

६ सुसवुडो पचहिं सवरेहिं, इह जीविय अणवकखमाणो।
वोसट्ठकाओ सुइचत्तदेहो, महाजय जयई जन्नसिट्ठ ॥४२॥
तवो जोई जीवो जोइठाण, जोगा सुया सरीर कारिसग।
कम्मेहा सजमजोगसन्ती, होम हुणामी इसिण पसत्थ ॥४४॥

—उत्तराध्ययन १२

जो पाँच सवरो मे सुसवृत होता है, जो असयम-जीवन की इच्छा नही करता, जो काय का व्युत्सर्ग करता है, जो शुचि है और जो देह का त्याग करता है, वह महाजयी श्रेष्ठ यज्ञ करता है ॥४२॥

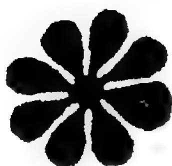
इस यज्ञ मे तप ज्योति है। जीवज्योति स्थान है। योग (मन, वचन और

काया की सत् प्रवृत्ति) घी डालने की कर्छियाँ हैं। शरीर अग्नि जलाने के कण्डे हैं। कर्म ईंधन है। सयम की प्रवृत्ति शान्तिपाठ है। इस प्रकार मैं ऋषि-प्रशस्त (अहिंसक) होम (यज्ञ) करता हू ॥४४॥

७ अश्वमेध यज्ञ और नेवला—युधिष्ठिर ने अश्वमेध यज्ञ किया एव अत्यधिक दान दिया। वहाँ एक नेवला आया (जिसका आधा शरीर सोने जैसा था) एव बोला—तुम्हारा यज्ञ कुरुक्षेत्रवासी उञ्छवृत्ति—ब्राह्मण के एक सेर सत्तू के भी बराबर नही है।

एकदा उस ब्राह्मण परिवार को उञ्छवृत्ति से एक सेर सत्तू मिला। ब्राह्मण-ब्राह्मणी, पुत्र-पुत्रवधू चारो ने पाव-पाव बांटा। इतने मे एक भूखा ब्राह्मण आया। चारो ने दान दिया। ब्राह्मण ने भोजन करके हाथ धोए। उसके कीचड मे लोटने से मेरा आधा शरीर सोने का हो गया। तुम्हारा नाम सुनकर यहाँ आया था लेकिन कुछ लाभ नही मिला, कारण द्रव्य न्यायोपार्जित नही है।

—महाभारत, अश्वमेध पर्व, अध्याय ९०



२०

आत्मयज्ञ की श्रेष्ठता

१ श्रेयो द्रव्यमयाद् यज्ञाज्, ज्ञानयज्ञो परंतप ।

—गीता ४।३३

द्रव्यमय यज्ञ से ज्ञानयज्ञ श्रेष्ठ है ।

२ विधियज्ञाज जपयज्ञो, विशिष्टो दशभिर्गुणैं ।
उपांशु स्याच्छतगुण, साहस्रो मानस स्मृत ।

—मनुस्मृति २।८५

विधि (दर्श-पौर्णमास) यज्ञ मे जपयज्ञ (बोल-बोलकर जाप करना) दस गुणा उससे उपांशुयज्ञ (केवल जीभ एव होठ हिलें ऐसा जाप) सौ गुणा, और उससे मानसयज्ञ (जिसमे जीभ भी न हिले ऐसा जाप) हजार गुणा फल देता है ।

३ ससारवृद्धि हेतो यज्ञादि रूपाद् धूममार्गाद् विपरीतो यम-नियमादि रर्चिमार्ग ।

— वेदान्तदर्शन (स्याद्वादमजरी, पृष्ठ ८४)

ससार की वृद्धि करने वाले यज्ञादि रूप धूममार्ग से विपरीत यम-नियमादि रूप अर्चिमार्ग है ।

२१ तीर्थ, यज्ञ एवं बाह्य क्रिया-कांडों को महत्त्व देनेवालों के लिए

१ यस्यात्मबुद्धिः कुणपे त्रिधातुके,
स्वधीः कलत्रादिषु भौम इज्यधीः ।
यत्तीर्थबुद्धिः सलिलेन कर्हिचिज्,
जनेष्वभिज्ञेषु स एव गोखरः ॥

—श्रीमद्भागवत १०।८४।१३

जो वात-पित्त-कफ रूप तीन धातुओं से बने हुए शवतुल्य शरीर को आत्मा (मैं) समझता है, स्त्री-पुत्र आदि को अपना मानता है, मिट्टी-पत्थर-काष्ठ आदि पार्थिव विकारों को अर्थात् मूर्तियों को इष्टदेव मानता है तथा पानी को तीर्थ समझता है, वह गोमहण-ज्ञानियों के बीच गर्दभ के समान है।

२ व्यास और शुकदेव—स्कन्द पुराण, नागर-खण्ड, पूर्वार्ध, अध्याय १५० में कहा है कि शुकदेव १२ साल गर्भ में रहे, मा को कष्ट होने लगा। तब व्यास ने पूछा—तू कौन है?

शुकदेव—चौरासी में भटकने वाला।

व्यास—बाहर आ जा!

शुकदेव—माया में फँस जाऊँगा।

व्यास—नहीं फँसेगा।

शुकदेव गर्भ से बाहर आये और तपस्यार्थ चलने लगे। व्यास ने उसे रोकते हुए कहा—बेटा! ठहर जा, अभी तो तेरे जन्मादि संस्कार करूँगा।

शुकदेव—इन सस्कारो ने ही तो मुझे ससार मे फँसाया है।

व्यास—बेटा ! क्रमश चारो आश्रमो का पालन करना चाहिये। इनके पालन से ही मुक्ति मिल सकती है।

शुकदेव—पिताजी ! यदि ऐसा ही है तो सबसे पहले हिजडो, गृहस्थो, मृगो एव भिखारियो को मुक्ति मिलनी चाहिये क्योकि ये क्रमश. स्वभाव से ही ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ एव अकिंचन (सन्यासी) हैं।

व्यास—पुत्र-पौत्रादि होने से पितृऋण-देवऋण से मुक्ति एव स्वर्ग मिलता है।

शुकदेव—तो फिर कुत्तो, सूअरो (इनके पुत्र अधिक होते हैं) एव गीधो (ये कई पीढियाँ देखते हैं) का कल्याण सर्वप्रथम होना चाहिए। यो कहकर शुकदेव विदा हो जाते हैं।

३ भार्गव और सुमति—मार्कण्डेय पुराण, अध्याय १०, श्लोक १० से ४२ तक पिता-पुत्र भार्गव एव सुमति की चर्चा है। पिता पुत्र को वैदिक मान्यतानुसार वेदपाठ, गृहस्थाश्रम एव यज्ञ आदि करने का उपदेश देता है। पुत्र को विशेष ज्ञान उत्पन्न होने से वह कहता है—

एव ससारचक्रेऽस्मिन्, भ्रमता तात ! सकटे।
ज्ञानमेतन्मया प्राप्त, मोक्षसप्राप्तिकारकम् ॥२७॥
विज्ञाते यत्र सर्वेय, ऋग-यजु - साममहिता।
क्रियाकलापो विगुणो, न सम्यक् प्रतिभाति मे ॥२८॥

पिताजी ! ससार चक्र मे भटकते-भटकते मुझे मोक्ष दिलाने वाला यह सद् ज्ञान प्राप्त हुआ है।२७।

इस ज्ञान के प्रभाव से अब मुझे ऋग्, यजु एव सामवेद मे कहे हुए क्रियाकलाप गुणशून्य एव असम्यक् लगते हैं।२८।

२२

श्राद्ध

१ प्रेतं पितृंश्च निर्दिश्य, भोज्यं यत् प्रियमात्मन ।
श्रद्धया दीयते यत्र, तच्छ्राद्धं परिकीर्तितम् ॥

—महर्षि मरीचि (निर्णयसिन्धु, परिच्छेद ३)

प्रेतो और पितरो के लिए श्रद्धा से जो अपना प्रिय भोजन दिया जाता है, उसका नाम श्राद्ध है।

२ पितृनुद्दिश्य विप्रेभ्यो, दत्तं श्राद्धमुदाहृतम् ।

—अगस्त्यमुनि (श्राद्ध-पितृमीमांसा)

पितरो के निमित्त से जो ब्राह्मणो को दिया गया है, उसे श्राद्ध कहा है।

३ पितर—पितरो की उत्पत्ति महर्षि मनु के पुत्र मरीचि आदि ऋषियो से हुई है। इनके अग्निष्वात्त आदि अनेक गण हैं। जैसे—मरीचि पुत्र, अग्निष्वात्त देवो के पितर है। विराट् पुत्र सोमसद साध्यगण के पितर हैं। अत्रिपुत्र बर्हिषद् दैत्य-दानव-गाधर्व-राक्षस आदि के पितर हैं। भृगुपुत्र सोमप ब्राह्मणो के, अङ्गिरापुत्र हविर्भुज क्षत्रियो के, पुलस्त्यपुत्र आज्यप वैश्यो के और वशिष्ठपुत्र सुकालिन शूद्रो के पितर है।

पितृलोक दक्षिण मे है, उसका स्वामी यम है, वही सब पितर रहते हैं, वे अदृश होते हैं, उनका भोजन भी अदृश है, वे ब्राह्मणो के मुख से खाते हैं। ब्राह्मण जब श्राद्ध मे भोजन करते हैं, तब मन्त्राहूत पितर उनके शरीर मे आ जाते हैं। भोजन से तृप्त होकर वे श्राद्धकर्ता के मृत पूर्वजो को विभिन्न रूप से तृप्त करते है अर्थात् देवो को अमृत रूप मे, प्रेतो को रुधिर रूप से, राक्षसो को मास रूप से, पशुओ को तृण रूप से और मनुष्यो को अन्नादि रूप से श्राद्ध मे खाया हुआ अन्न भेज देते हैं और

श्राद्धकर्ता को आयु-धन-प्रजा-विद्या-स्वर्ग व मोक्ष देते है। जो अपुत्र होते हैं, वे कल्पपर्यन्त प्रेत रूप से निर्जन वन मे घूमते हैं।

(मनुस्मृति अ० ३ तथा निर्णयसिन्धु-परिच्छेद ३ के आधार से)

आसोज वदी मे कर्ण राजा ने दान दिया था, इसलिए श्राद्धो को कनागत (कर्णागत) भी कहते हैं।

श्राद्ध का वास्तविक अर्थ मृत पूर्वजो का स्मरण करना है एवं उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना है।



२२ श्राद्ध

१ प्रेत पितृश्च निर्दिश्य, भोज्यं यत् प्रियमात्मन ।
श्रद्धया दीयते यत्र, तच्छ्राद्धं परिकीर्तितम् ॥

—महर्षि मरीचि (निर्णयसिन्धु, परिच्छेद ३)

प्रेतो और पितरो के लिए श्रद्धा से जो अपना प्रिय भोजन दिया जाता है, उसका नाम श्राद्ध है।

२ पितृनुद्दिश्य विप्रेभ्यो, दत्तं श्राद्धमुदाहृतम् ।

—अगस्त्यमुनि (श्राद्ध-पितृमीमांसा)

पितरो के निमित्त से जो ब्राह्मणो को दिया गया है, उसे श्राद्ध कहा है।

३ पितर—पितरो की उत्पत्ति महर्षि मनु के पुत्र मरीचि आदि ऋषियो से हुई है। इनके अग्निष्वात्त आदि अनेक गण हैं। जैसे—मरीचि पुत्र, अग्निष्वात्त देवो के पितर है। विराट् पुत्र सोमसद साध्यगण के पितर हैं। अत्रिपुत्र बर्हिषद् दैत्य-दानव-गाधर्व-राक्षस आदि के पितर है। भृगुपुत्र सोमप ब्राह्मणो के, अङ्गिरापुत्र हविर्भुज क्षत्रियो के, पुलस्त्यपुत्र आज्यप वैश्यो के और वशिष्ठपुत्र सुकालिन शूद्रो के पितर हैं।

पितृलोक दक्षिण मे है, उसका स्वामी यम है, वही सव पितर रहते हैं, वे अदृश होते हैं, उनका भोजन भी अदृश है, वे ब्राह्मणो के मुख से खाते हैं। ब्राह्मण जव श्राद्ध मे भोजन करते हैं, तव मत्राहूत पितर उनके शरीर मे आ जाते हैं। भोजन से तृप्त होकर वे श्राद्धकर्ता के मृत पूर्वजो को विभिन्न रूप से तृप्त करते हैं अर्थात् देवो को अमृत रूप से, प्रेतो को रुधिर रूप से, राक्षसो को मास रूप से, पशुओ को तृण रूप से और मनुष्यो को अन्नादि रूप से श्राद्ध मे खाया हुआ अन्न भेज देते है और

श्राद्धकर्ता को आयु-धन-प्रजा-विद्या-स्वर्ग व मोक्ष देते हैं। जो अपुत्र होते हैं, वे कल्पपर्यन्त प्रेत रूप से निर्जन वन मे घूमते हैं।

(मनुस्मृति अ० ३ तथा निर्णयसिन्धु-परिच्छेद ३ के आधार से)

४ आसोज वदी मे कर्ण राजा ने दान दिया था, इसलिए श्राद्धो को कनागत (कर्णागत) भी कहते हैं।

५ श्राद्ध का वास्तविक अर्थ मृत पूर्वजो का स्मरण करना है एव उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना है।



२३ श्राद्ध के योग्य-अयोग्य ब्राह्मण

१ श्रोत्रियायैव देयानि, हव्य-कव्यानि दातृभि ।
अर्हत्तमाय विप्राय, तस्मै दत्तं महाफलम् ।।

—मनुस्मृति अध्याय ३।१२८

दाता को वेदाध्यायी को ही हव्य-कव्य देना चाहिए क्योंकि उस पूज्यतम ब्राह्मण को देवान्न या श्राद्धान्न देने से बहुत फल होता है।

३ जटिल चानधीयानं, दुर्बलं कितव तथा।
याजयन्ति च ये पूगाम्ताश्च श्राद्धे न भोजयेत् ।।१५१।।
चिकित्सकान् देवलकान् मासविक्रयिणस्तथा।
विपणेन च जीवन्तो, वर्ज्या स्युर्हव्यकव्ययो ।।१५२।।

—मनुस्मृति अध्याय ३

वेदपाठ रहित, जटाधारी-ब्रह्मचारी, दुर्बल (अजितेन्द्रिय), जुआरी और ग्राम्य-पुरोहित—इनको श्राद्ध न खिलावे।

वैद्य, पुजारी (देवाश खाने वाले), मास वेचने वाले और वणिक् वृत्ति से (व्यापार मे) जीनेवाले ब्राह्मण यज्ञ और श्राद्ध दोनों मे त्याज्य हैं।१५२।

२४ श्राद्ध को न माननेवालों का मंतव्य

१ मृतानामपि जन्तूना, श्राद्ध चेत् तृप्तिकारणम्।
तन्निर्वाणप्रदीपस्य, स्नेह सवर्द्धयेच्छिखाम्।

—स्याद्वादमजरी, कारिका ११ टीका

मृत व्यक्तियो को भी यदि श्राद्ध तृप्ति का कारण है, तो बुझे हुए दीप की शिखा को तेल भी बढा देगा।

२ यदि श्राद्ध मे दिया हुआ द्रव्य पितरो को मिलता है तो आज की दृश्य दुनिया मे सभी को कुछ-न-कुछ तो खाने के लिए मिलता ही है, तो क्या सभव है कि पीछे सभी के पुत्र-पौत्रादि श्राद्ध करते ही हैं ? नही, क्योकि मनुष्यो के सिवा (पशु आदि) तो कोई श्राद्ध करते ही नही तथा मनुष्यो मे भी श्राद्ध करने वाले मनुष्य अपेक्षाकृत बहुत कम हैं।

—वैदिकविचारविमर्शन—श्राद्ध प्रकरण

३ गुरु नानक एक बार हरिद्वार गये। वहा गगा के किनारे अनेक व्यक्ति पूर्व की ओर मुख करके हाथो मे गगाजल उछाल रहे थे। पूछने पर वे बोले कि पितरो (मृत पूर्वजो) की शान्ति के लिए तर्पण कर रहे है। उन्हें शीतल जल पहुँचा रहे हैं। गुरु नानक पश्चिम की तरफ मुख करके गगा-जल फेंकने लगे। लोगो ने पूछा—यह क्या कर रहे है ? नानक ने कहा—हमारे देश मे दुष्काल पड गया है। पानी के अभाव मे खेती सूख रही है अत उन्हे जल पहुँचा रहा हूँ। विस्मित लोगों ने कहा—क्या ऐसे जल पहुँच सकता है ? नानक बोले—यदि नही पहुँचता तो आपका दिया हुआ—यह जल पितरो का कैसे पहुँचेगा ? (सब चुप)।

२५. श्राद्ध आदि में मांस का विधान और निषेध

१ विधान—

(क) प्राणात्यये तथा श्राद्धे, प्रोक्षित द्विज-काम्यया ।
देवान् पितॄन् समभ्यर्च्य, स्वादन् मासं न दोपभाक् ।।

—याज्ञवल्क्यस्मृति १।१७९

अन्नाभाव मे प्राण जाते हो, रोग हो एव श्राद्ध मे निमन्त्रित हो, तो वेदोक्तविधि से सस्कृत मास, जो देव, द्विज एव पितरो के लिए बनाया हो, उनकी पूजा करके उसे खाने मे दोप नही लगता ।

(ख) नियुक्तस्तु यथान्याय, यो मास नात्ति मानव ।
स प्रेत्य पशुता याति, सभवादेकविंशतिम् ।।

—मनुस्मृति ५।३५

श्राद्ध और मधुपर्क मे नियुक्त मनुष्य जो माम नही खाता, वह मरकर समवत २१ बार पशु होता है ।

(ग) न मासभक्षणे दोषो, न मद्ये न च मैथुने ।
प्रवृत्तिरेषा भूताना, निवृत्तिस्तु महाफला ।।

—मनुस्मृति ५।५६

मास, मद्य और मैथुन सेवन करने मे दोप नही है क्योकि यह प्राणियों की प्रवृत्ति है, किंतु इन सब से निवृत्त होना महान् फलदायी है ।

० यह भी पढने मे आया है कि "न मासभक्षणेऽदोषो" इस पद्य मे लुप्त अकार लगाकर कई विद्वानो ने इस श्लोक का यह अर्थ भी किया है कि मासभक्षण आदि क्रियाओ मे अदोप नही है अर्थात् दोप तो अवश्य है किन्तु ये क्रियाए ससारी जीवो की प्रवृत्ति बन गई हैं, फिर भी इनसे निवृत्त होना महान् फल है ।

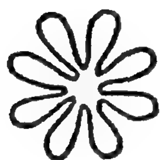
—स्याद्वादमजरी

२ निषेध—

न दद्यादामिष श्राद्धे, न चाद्याद् धर्मतत्त्ववित् ।
मुन्यन्नैः स्यात्परा प्रीतिर्यथा न पशुहिंसया ॥

—श्रीमद् भागवत ७।१५।७

धर्म का मर्मज्ञ पुरुष श्राद्ध मे मास का अर्पण न करे और न उसे स्वय खाए क्योकि पितरो की प्रसन्नता जैसी हविष्यान्न से होती है, वैसी पशु-हिंसा से नही होती ।



व्यसन

० व्यस्यति पुरुष श्रेयस. इति व्यसनम् ॥१॥
व्यसन द्विविध सहजमाहार्यं च ॥२॥

—नीतिवाक्यामृत १६

जो दुष्कर्म मनुष्य को कल्याण-मार्ग से गिराते है, उन्हे व्यसन कहते हैं। व्यसन दो प्रकार के हैं सहज और आहार्य।

(१) सहज—जन्म के साथ उत्पन्न होने वाले व्यसन सहज कहलाते है।

(२) आहार्य—कुसग के कारण उत्पन्न होने वाले व्यसन (द्यूतक्रीडा, मद्यपान आदि) आहार्य माने जाते हैं।

२ व्यसनस्य च मृत्योश्च, व्यसन कष्टमुच्यते।
व्यसन्यधोऽधो व्रजति, स्वर्यात्यव्यसनी मृत'।

—मनुस्मृति ७।५३

मृत्यु और व्यसन को ही कष्ट कहा है क्योकि व्यसनी मरने पर नरक मे गिरता हैं और अव्यसनी मरने पर स्वर्ग को जाता है।

२७ सात व्यसन एवं उनसे हानि

१ द्यूत च मांस च सुरा च वेश्या, पापर्द्धि-चौर्ये परदारसेवा।
एतानि सप्त व्यसनानि लोके, घोरातिघोरं नरक नयन्ति ॥
—जैनसिद्धान्त बोलसग्रह, भाग ६, पृष्ठ १५५

(१) जुआ, (२) मांस, (३) मदिरा, (४) वेश्या, (५) शिकार, (६) चोरी, (७) परस्त्रीगमन—ये सात व्यसन आत्मा को घोरातिघोर नरक मे ले जाते है।

२ चोरी जारी जो करे, खावे मदिरा-मास ।
निश्चय करिके नानका ! नरका करे निवास ॥
पुन नरक से निकल कर, महापातकी जत ।
सूकर-कूकर योनि मे, भटके काल अनन्त ॥
अन्न-उदक के होत ही, जो खावे मद-मास ।
काक-गीध का रूप धर, भटके बीच आकाश ॥
—गुरु नानक

३ ये जो है, शराब और जुआ, मूढ-विश्वास और मास—सब शैतान के गदे काम है।
—कुरान ५।९३

४ जुए पसत्तस्स धणस्स नासो, मसप्पसत्तस्स दयापणासो।
वेसापसत्तस्स कुलस्स नासो, मज्जे पसत्तस्स जसस्स नासो ॥
हिंसापसत्तस्स सुधम्मनासो, चोरी पसत्तस्स सरीरनासो ।
तहा परत्थीसु पसत्तयस्स, सव्वस्स नासो अहमा गई य ॥
—गौतमकुलक

जुए मे आसक्त व्यक्ति के धन का नाश होता है, मास के लोलुप पुरुषो मे दया नही रहती। वेश्यासक्त पुरुष का कुल नष्ट होता है, मद्यसेवन

व्यक्ति की अपकीर्ति होती है। हिंसानुरागी धर्म से भ्रष्ट हो जाता है, चोरी का व्यसनी शरीर से हाथ धो बैठता है। परस्त्रीगामी अपना सर्वस्वनाश कर देता है और नीच गति मे जाता है।

२ व्यसनो के कुफल—

(क) द्यूताद् राज्यविनाशन नलनृपः प्राप्तोऽथवा पाण्डवा,
मद्यात् कृष्णनृपश्च राघवपिता पापर्धितो दूषित.।
मासाच्छ्रेणिक भूपतिश्च नरके चौर्याद् विनष्टा न के।
वेश्यात कृतपुण्यको गतधनोऽन्यस्त्रीमृतो रावण।

द्यूत से नल राजा अथवा पाण्डव राज्य-भ्रष्ट हुए। मद्य से कृष्ण का वश नष्ट हुआ, शिकार से दशरथजी दूपित हुए, मास-लोलुपता से राजा श्रेणिक नरक गया। चोरी से अनेक जीव नष्ट हुए, वेश्या के कारण कयवन्ना सेठ निर्धन हुआ तथा परस्त्री के निमित्त से राजा रावण की मृत्यु हुई।

(ख) प्रथम पाण्डवा भूप, खेलि जूआ सब खोयो।
मांस खाय बकराय, पाय विपदा बहु रोयो।
बिन जाने मदपान, जोग जादोगन दज्झे।
चारुदत्त दुख सह्यौ, वेसवा-विसन अरुज्झे।
नृप ब्रह्मदत्त आखेट सो, तिम शिवभूति अदत्तरति।
पररमनि-राचि रावन गयो, सातो सेवत कौन गति।

—भूधरदास

(वेश्या-शिकार-चोरी-परस्त्रीगमन—इन चारो व्यसनो का विवेचन पहले-दूसरे भाग मे आ गया है अत, द्यूत आदि प्रथम तीन व्यसनो का विवरण यहां पढ़िये।)

द्यूत

१ अट्ठावय न सिक्खेज्जा !

—सूत्रकृतांग ९।१०

द्यूत खेलना मत सीखो !

२ अक्षैर्मादीव्य !

—ऋग्वेद १०।३४।१३

पासो से मत खेलो !

३ श्रियस्तत्र न तिष्ठन्ति, यत्र द्यूत प्रवर्तते ।
न वृक्षजातयस्तत्र, विद्यते यत्र पावक ।

जहाँ द्यूत क्रीडा होती है, वहाँ लक्ष्मी नही ठहरती । जहाँ अग्नि जलती है, वहाँ वृक्ष की जातियाँ नही ठहरती ।

४ जुआ खेल क्या है गले मे जुआ है ।
न आखिर किसी का यह हर्गिज हुआ है । —रतन कवि

५ व्यसनो का मूल द्यूत

भिक्षो ! कन्था श्लथा ते ?
नहि सफरिवधे जालमश्नासि मत्स्यान् ?
ते वै मद्योपदशा
पिवसि मधु ? सम वेश्यया यासि वेश्याम् ?
दत्वाङ्घ्रि मूर्ध्न्यरीणा
किमु तव रिपवो ? भित्तिभेत्ताऽस्मि येषा,
चौरोऽसि ? द्यूतहेतो—
स्त्वयि सकल गुणा नास्ति नष्टे विचार ।

—सुभाषितरत्नभांडागार पृष्ठ ६४

एक भिक्षु जा रहा था। उससे एक व्यक्ति ने पूछा—हे भिक्षुराज ! तुम्हारी कथा इतनी ढीली कैसे ?

उत्तर—भाई ! यह कथा नही, किंतु मच्छी मारने के लिए जाल है।

प्रश्न—क्या तुम मच्छी खाते हो ?

उत्तर—मछलिया तो मद्य के उपदश हैं।

प्रश्न—क्या तुम मद्य पीते हो ?

उत्तर—वेश्या के साथ पी लिया करता हूँ।

प्रश्न—क्या वेश्या के पास जाते हो ?

उत्तर—शत्रुओ के मस्तक पर पैर देकर जाता हूँ।

प्रश्न—क्या तुम्हारे भी शत्रु है ?

उत्तर—जिनकी भीत फोडी थी, वे शत्रु ही हैं।

प्रश्न—क्या तुम चोर हो ?

उत्तर—द्यूत खेलने के कारण कभी-कभी चोरी भी कर लेता हूँ। प्रश्न-कर्ता चकित होकर कहने लगा—भाई ! तुम्हारे मे तो सारे ही गुण अर्थात् दुर्गुण आ गए हैं क्योकि बुद्धिभ्रष्टो के विचार नही होता। तत्त्व यह है कि एक द्यूत के कारण सभी व्यसन आ जाते हैं।

६ द्यूतं समाह्वय चैव, राजा राष्ट्रान्निवारयेत्।
राज्यान्तकरणावेतौ, द्वौ दोषौ पृथिवीक्षिताम् ॥२२१॥
अप्राणिभिर्यत्क्रियते, तल्लोके द्यूतमुच्यते।
प्राणिभि क्रियते यस्तु, स विज्ञेय समाह्वय ॥२२३॥

—मनुस्मृति ९

राजा अपने राज्य मे जुआ और समाह्वय दोनो को न होने दे क्योकि ये दोनो दोष राजाओ के राज्य का अन्त कर देते हैं ॥२२१॥ ससार में निर्जीव वस्तुओ (पासा आदि) से बाजी लगाकर जो खेल खेलते हैं, उसे द्यूत कहते हैं और जो जीवो (मेंढा, तीतर, बटेर आदि) से बाजी लगाकर खेल खेलते हैं, उसे समाह्वय कहते हैं।

मांस

१ मा स भक्षयिताऽमुत्र, यस्य मासमिहाद्म्यहम् ।
इनि मासस्य मासत्व, प्रवदन्ति मनीपिण ।।

—मनुस्मृति ५।५५

यहाँ मैं जिमका मास खाता हूँ, वह परभव मे मुझे खाएगा। विज्ञजन मास शब्द का यह रहस्य बतलाते हैं। (मास शब्द को उल्टा लिखने से "स मा" हो जाता है)

२ अनुमन्ता विशसिता, निहन्ता क्रयविक्रयी ।
सस्कर्ता चोपहर्ता च, खादकश्चाष्ट घातका ।।

—मनुस्मृति ५।५१

(१) अनुमोदन करनेवाला (२) काटनेवाला (३) मारनेवाला (४) मास को खरीदनेवाला (५) वेचनेवाला (६) पकानेवाला (७) परोसनेवाला (८) खानेवाला – ये आठो घातक-हिंसक माने गए हैं।

३ न हि मासं तृणात् काष्ठा-दुपलाद् वापि जायते ।
हत्वा जन्तुं ततो मासं, तस्माद् दोपस्तु भक्षणे ।।

—महाभारत, अनुशासन पर्व ११५।२४

तृण से, काठ से अथवा पत्थर से माम नही पैदा होता, वह जीव की हत्या करने पर ही उपलब्ध होता है, अत उसके खाने मे महान् दोष है।

४ पचेन्द्रियवहभूग, मसं दुग्गंध-असुइवीभच्छ ।
रक्खसपरितुलिय भक्खग, मामयजणय कुगइमूल ।
माम पञ्चेन्द्रिय जीवो के वध से उत्पन्न होता है। वह दुर्गन्धमय है,

अपवित्र है, घृणोत्पादक है, रोग पैदा करनेवाला है एव दुर्गति का मूल कारण है। मासभक्षक व्यक्ति राक्षस के समान होता है।

५ आत्मार्थं य परप्राणान्, हिंस्यात् स्वादुफलेप्सया।
व्याघ्र-गृध्र-शृगालैश्च, राक्षसैश्च समस्तु स ॥

—महाभारत, अनुशासन पर्व, अध्याय ४५

जो स्वाद की इच्छा से अपने लिए दूसरे के प्राणो की हिंसा करता है, वह बाघ, गीध, सियार और राक्षसो के समान है।



३० मांस-निषेध

१ नाकृत्वा प्राणिनां हिंसा, मांसमुत्पद्यते क्वचित् ।
न च प्राणिवधः स्वर्ग्य-स्तस्मान्मांस विवर्जयेत् ॥४८॥
समुत्पत्तिं च मांसस्य, वध-बन्धौ च देहिनाम् ।
प्रसमीक्ष्य निवर्तेत, सर्वमांसस्य भक्षणात् ॥४९॥

—मनुस्मृति-५

जीवों की हिंसा बिना किये कभी मांस उत्पन्न नहीं हो सकता और न ही पशुओं का वध स्वर्ग देने वाला है। इसलिए मांस खाना छोड़ देना चाहिए ॥४८॥

मांस की उत्पत्ति को और जीवों के वध-बन्धन को अच्छी तरह सोचकर सब प्रकार के मांस-भक्षण को त्याग देना चाहिए ॥४९।

२ मांस पुत्रोपमं मत्वा, सर्वमांसानि वर्जयेत् ।
ध्यान-दानविशुद्ध्यर्थ-मृषिभिर्वर्जितं पुरा ॥४४॥
किं जापहोमनियमै-स्तीर्थस्नानैश्च भारत !
यदि खादन्ति मांसानि, सर्वमेव निरर्थकम् ॥४६॥

—धर्मसंग्रह

मांस को पुत्र के तुल्य समझकर सब प्रकार के मांस का त्याग कर देना चाहिए। ध्यान-दान की विशुद्धि के लिए ऋषियों ने इनका निषेध किया है।४४।

जो व्यक्ति मांस खाता है, उसके जाप, होम, नियम और तीर्थस्नान आदि सभी क्रियायें निरर्थक हैं।

३ अपने पेट को जानवरों का कब्रिस्तान मत बनाओ ! जिसने जानवरों के मृत्यु समय की करुणा भरी चिल्लाहट सुनी है, वह उनका मांस खा नहीं सकता।

४ जे रत्त लग्गे कपडे, जामा होय पलीत।
जे रत्त खाये माणसा, निर्मल कैसे चित्त॥

—पजाबी पद्य

५ एन बिस्मिल्ला एन झडका कीन्हा, दया दोनो से भागी।
कहत कबीर सुनो भाई साधो! आग दोया घर लागी॥

६ जिन देशो मे मासाहार अधिक है, उनमे डाक्टरो की सख्या भी अधिक है। भारत मे आज से सौ वर्ष पूर्व, वैद्य-डाक्टर बहुत कम थे। ज्यो-ज्यो मासाहार बढा, वैद्य-डाक्टर भी बढते ही गए।



१ सप्तर्षयो वालखिल्या स्तथैव च मरीचिपा ।
अमासभक्षण राजन् ! प्रशसन्ति मनीषिण ॥९॥
न भक्षयति यो मास, न च हन्यान्न घातयेत् ।
तन्मित्र सर्वभूताना, मनु स्वायम्भुवोऽब्रवीत् ॥१०॥
ददाति यजते चापि, तपस्वी च भवत्यपि ।
मधुमासनिवृत्त्येति, प्राह चैव वृहस्पति ॥१३॥
सर्वे वेदा न तत् कुर्यु , सर्वे यज्ञाश्च भारत !
यो भक्षयित्वा मासानि, पश्चादपि निवर्तते ॥१६॥

—महाभारत, अनुशासन पर्व, अध्याय ११५

भीष्म पितामह युधिष्ठिर से कह रहे हैं कि—राजन् ! सप्तर्षि, वालखिल्य तथा सूर्य की किरणो का पान करने वाले अन्यान्य मनीषी महर्षि मास न खाने की प्रशसा करते हैं ॥९॥

स्वायम्भुव मनु का कथन है कि जो मनुष्य न मास खाता, न पशु की हिंसा करता और न दूसरे से हिंसा करवाता, वह सपूर्ण प्राणियो का मित्र है ॥१०॥

बृहस्पति जी का कथन है—जो मद्य और मास त्याग देता है, वह दान देता है, यज्ञ करता है और तप करता है अर्थात् उसे दान, यज्ञ और तपस्या का फल प्राप्त होता है ॥१३॥

भारत ! जो पहले मास खाता रहा हो और पीछे उसका सर्वथा परित्याग कर दे, उसको जिस पुण्य की प्राप्ति होती है, उसे सम्पूर्ण वेद और यज्ञ भी नही प्राप्त करा सकते ॥१६॥

२ इष्ट दत्तमधीत च क्रतवश्च सदक्षिणा ।
अमासभक्षणस्यैव, कला नार्हन्ति षोडशीम् ॥

—महाभारत, अनुशासन पर्व, अध्याय ४५

यज्ञ, दान, वेदाध्ययन तथा दक्षिणा सहित अनेकानेक यज्ञ ये सब मिलकर मास-भक्षण के परित्याग की सोलहवी कला के बराबर भी नहीं होते । ●

३२ मांस की ताकत कम

१ अन्नाद् दशगुण पिष्ट, पिष्टाद्द शगुण पय ।
पयसोऽष्टगुण मास, मासाद् दशगुणं घृतम् ।।

—चाणक्यनीति १०।१६

अनाज से दस गुना बल आटे मे, आटे से दस गुना दूध मे, दूध से आठ गुना मास मे और मास से दस गुना बल घृत मे होता है।

२ बादाम मे ६१ प्रतिशत, चना, चावल, मक्खन एव घी मे ८५ प्रतिशत, गेहूँ-मक्कई मे ८६, किसमिस मे ७३, मलाई मे ६६, माम मे २६, अडे मे २६ और मछली मे १३ प्रतिशत शक्ति मानी जाती हैं।

— श्रावकधर्मप्रकाश पु ज ८

३ डाक्टर फोर्ड एम डी कहते है कि मटर, चना, आदि धान्यो मे २३ से ३० प्रतिशत नाइट्रोजन, ५० से ५८ तक नशास्ता एव तीन प्रतिशत के लगभग नमक वाले पदार्थ होते हैं, किन्तु मास मे नाइट्रोजन केवल ८ से ६ प्रतिशत होती है तथा नशास्ता तो नही के समान होता है, अत मास मस्तिष्क की नसो को शक्ति नही पहुँचा सकता।

०

३३ मांसाहार से होने वाले भयङ्कर रोग

१ मासाहार शक्ति प्रदान करने के बदले निर्बलता का शिकार बनाता है और उससे जो नाइट्रोजीनस पदार्थ उत्पन्न होता है, वह स्नायु पर जहर का काम करता है।

—सर टी लोडर ब्रन्टन

२ डाक्टर एल्फ्रेड साहब ने लदन के डाक्टरो की सभा मे अपना निबन्ध पढते हुए कहा था कि मास मे ८० से ९० प्रतिशत कीडे होते है।

३ मासाहारियो के प्राय कैंसर, क्षय, पायेरिया, गठिया, मृगी, उन्माद, अनिद्रा, लकवा, पथरी आदि भयकर रोग अधिक उत्पन्न होते है। देखिये उनके कतिपय उदाहरण।

४ कैंसर—

(क) मासाहार मे युरीक एसीड की वृद्धि होती है और युरीक एसीड बढने से कैंसर होता है।

—डा० डोग्लास मेकडोनल्ड

(ख) मेरे गहरे अनुभव के बाद यह सिद्ध हुआ है कि इगलैंड मे कैंसर का दर्द अधिक होने का कारण खासकर मास की खुराक का बढना ही है।

—डा० सर जेम्स सयिर एम डी, एफ आर सो पी

(ग) चिकागो की विश्वस्त गिनती के अनुसार ३३ वर्ष के अन्तर्गत कैंसर के रोगियो मे ८१ प्रतिशत वृद्धि हुई है। कोपनहेगन और म्युनीच मे भी यह रोग बहुत ज्यादा मात्रा मे बढ रहा है। मास खानेवाले २५ देशो के कैंसर रोगियो का मिलान करने पर पता लगा है कि १९ देशो मे कैंसर के रोगियो की सख्या अधिक, ५ देशो मे अत्यन्त अधिक और एक

देश की सख्या साधारण निकली। जबकि मास का सूक्ष्म-उपयोग करने वाले अथवा मास नही खाने वाले ३९ देशो मे कैंसर के रोगियो का प्रमाण अधिक नही मिला।

० एक रोगी को तीन वर्ष से यह रोग हुआ था। मासाहार का त्याग करने से वह नीरोग हो गया। जबकि उसके बहुत ही भयकर जाति का कैंसर था।

—डा जे ऐच केलोग

(घ) एक उनचास वर्ष की स्त्री को कैंसर का दर्द था। उसे अन्न-फलाहार पर रखने से वह नीरोग हो गई।

— डा विलियम लेम्ब

• ५ दांत का दर्द—

(क) मासाहार बराबर नही चबाया जाने मे दात, गला और नाक के दर्दों को उत्पन्न करता है।

—प्रो० किथ

(ख) इगलैण्ड, अमेरिका (जहा मासाहार प्रचलित है) मे १५० वर्ष पहले की बजाय अब दात के दर्द दस गुने अधिक पाये जाते हैं।

— मि० आर्थर एण्ड वुड

(ग) ब्रिटिश डेण्टल एसोसिएशन को स्कूल के विद्यार्थियो के दातो का परीक्षण करने से मालूम हुआ कि १०५०० मे से ८९२५ दत-रोगी हैं।

— मि० थोमस जे० रोगन

, ६ एपेण्डीसाइटीज—

(क) रुमानिया के २०००० किसान जो अन्न, फल एव शाक पर निर्वाह करते हैं, उनमे से सिर्फ एक व्यक्ति को यह रोग था, जब कि मास-भक्षण करने वालो मे से हर २२१ मनुष्य के पीछे १ मनुष्य को इस रोग का शिकार पाया गया।

—डा लुकास शेम्पोनोअर

(ख) फ्रेंच-सिपाही मास पर निर्वाह करते हैं, इसी कारण उनको एपेण्डी-

साइटीस का दर्द विशेप रूप मे होता है और अरब लोग अन्न-फल-शाक पर रहते हैं अत' वे इस रोग मे मुक्त हैं।

— फ्रेंच सेना के सर्जन जनरल

(ग) अन्न-फल-शाक पर रहने वाले ईस्ट अफ्रीका निवासियो को यह दर्द नही होता था। — चीफागो के डा० सेन

७ हृदय पर असर—

(क) मास खाने वालो के हृदय अन्न-फल-शाक खाने वालो के हृदय से दस गुना अधिक जोर से धडकता है। मासाहारियो का हृदय एक मिनट का विचार करते हुए १० गुना अधिक चलता है तो एक घट मे ६०० गुना अधिक दौडता है। फलस्वरूप शरीर के यत्र घिस जाते है।

—मि० जे० एच० ओलीवर

ख) दिमाग एव ज्ञान तन्तुओ के ऊपर मास की खुराक का वहुत बुरा असर पडता है और इसी कारण मासाहारी देशो मे पागलपन के रोगो की अधिकता देखी जाती है। सरकारी सूत्रो के अनुसार इगलैड की जनता मे प्रति २५० मनुष्यो मे से एक मनुष्य पागल होता है और पाँच-पाँच अपराधियो मे से एक पागल है। यतीमखानो मे हर तीन मनुष्यो मे से दो कमजोर दिमाग के ज्ञात हुए हैं। इसी प्रकार स्कलो मे पढने वाले लडको की जाच होने पर इगलैड मे करीव १,५०,००० लडके कम-जोर दिमाग के मालूम पडे हैं।

—डा० रेन्टोल

८ गठिया - जलोदर आदि लीवर एव किडनी से सम्बन्ध रखने वाले रोगो का मुख्य कारण युरीक एसीड गिना जाता है और वह युरीक एसीड मास की खुराक मे अधिक प्रमाण मे होने से मासाहारियो मे यह दर्द खास कर दृष्टिगोचर होता है।

मास सदृश नाइट्रोजन वाले पदार्थों से लीवर, किडनी तथा ऐसे ही दूसरे भागो पर भी अधिक बोझ पडता है और उससे सन्धिवात, लीवर तथा किडनी सम्बन्धी अन्यान्य दर्द उत्पन्न होते हैं।

—डा० योननुरडन

३५ मांसभक्षकों के लिए ध्यान देने योग्य बातें

१ शुक्र-शोणित सभूत, मास य स्वादते नरः ।
स जनः कुरुते शौचं, हसन्ति तत्र देवता ॥

—प्राचीन सग्रह से

रज-वीर्य से उत्पन्न मास को जो मनुष्य खाता है और फिर वह यदि शुद्धि रखना चाहता है, तो देवता उसका उपहास करते हैं।

२ य आममासमदन्ति, पौरुषेय च ये क्रवि गर्भा न खादन्ति केशवा, स्नानितो नाशयामसि ॥

—अथर्ववेद ८।६।२३

जो कच्चा-पक्का मास खाते हैं तथा गर्भ (अण्डे) खाते हैं, वे शरीर को कब्र बनाते है। उनका नाश कर देना चाहिए, उन्हे राज्य मे नही रहने देना चाहिए।

३ हे अग्नि! तू मासभक्षको को अपने ज्वालामय मुख मे रख ले!

—ऋग्वेद १०।८७२

४ य पौरुषेयेण क्रविपा समङ्क्ते, यो अश्व्येन पशुना यातुधान॰।
यो अघ्न्याया भरति क्षीरमग्ने! तेषा शीर्षाणि हर मापि वृश्च ॥

—ऋग्वेद ८।४।८।१६

जो मनुष्य-राक्षस घोडे और गाय का मास खाता हो एव गाय के दूध को चुरा लेता हो, हे अग्नि देव! उसका मस्तक काट डालो।

५ मास-मास सब एक है, मुर्गी हिरनी गाय।
आख देख नर खात है, ते नर नरकहि जाय ॥

—नानक

६ वकरी खाती पात है, ताकि काढत खाल।
जो नर वकरी खात है, ताको कवण हवाल ॥

—कवीर

७ मास मछरिया खात है, सुरापान से हेत,
वे नर नरक हि जाएगे, माता-पिता समेत ॥
तिलचर मछली खाय के, कोटि गऊ दे दान,
काशी करवत ले मरे, तो भी नरक निदान ॥

—कवीर

८ तुह पियाइ मंसाइ, खडाइ सोल्लगाणि य।
खाविओमि समसाइ, अग्गिवन्नाइ णेगसो।

— उत्तराध्ययन १९।६९

तुझे खण्ड किया हुआ और शूल मे खोस कर पकाया हुआ मास प्रिय था, यह याद दिलाकर मेरे शरीर का मास काटकर उसे अग्नि जैसा लाल कर मुझे खिलाया गया। (मृगापुत्र अपनी माता से कह रहा है)

९ धन्वन्तरि वैद्य ने स्वय मत्स्य-गाय-महिप आदि का मास खाया और रोगी को खिलाया, अत वह मरकर छठी नरक मे गया।

—विपाक० श्रु० १, अ० ६



३६ मनुष्य का कलेजा खानेवाला औघड़

१ औघड अपना नाम वसत, पिता का नाम मगरू और निवास स्थान का नाम हजारीवाग वताता है। पहले यह वाराणसी (वनारस) के श्मशान मे जाकर चिताओ से इधर-उधर छिटके हुये गरम मास के लोथडो को वडे शौक से खाता था। एक दिन गगा मे वहाई हुए एक लाश को चीरते हुए देखकर इसे वहा से भगा दिया गया। यह औघड २-३ वर्ष से गगा पार फतेहपुर गाव मे रहा करता था और सिद्ध वावा के नाम से प्रसिद्ध हो गया था। इसी वीच मे कई जगह कुछ ठठरियो, खोपडियो और खून के छीटे देखकर पुलिस ने छानवीन की और वह इसी सिलसिले मे उक्त औघड की झोंपडी तक पहुँच गई। वताया जाता है कि पुलिस ने इसे झोंपडी में खून से सना हुआ पाया और मानव-कलेजे का कलेवा करते हुए देखा। पास मे रक्त से भरी हुई एक वोतल भी थी। पुलिस ने जमीन मे गडी हुई सम्वन्धित मानव की लाश का सिर वरामद किया। पुलिस का अनुमान है कि कुष्ठ के रोगियो को कुष्ठ अच्छा कर देने का आश्वासन देकर औघड वावा अपनी झोंपडी मे ले आता और किसी वहाने से उनकी हत्या कर अपनी हविश पूरी करता। वाराणसी की पुलिस ने इसे हथकडी-वेडी मे जकड कर जिला-जेल मे भेज दिया। (मासाहारी कितने निर्दय एव निर्घृण होते हैं, यह इस घटना से समझने योग्य है।)

—नवभारत १९७२, फरवरी १५

● ●

३६ मद्य, मद्यनिषेध

१ मज्ज पुण कट्ठपिट्ठनिप्फन्नं ।

—स्थानांग ४।१

मद्य काष्ठ एवं अनाज को सड़ाकर बनाया जाता है।

२ सुरा वै मलमन्नानां, पाप्मा च मलमुच्यते ।
तस्माद् ब्राह्मणराजन्यौ, वैश्यश्च न सुरां पिबेत् ॥९३॥
गौडी पैष्टी च माध्वी च, विज्ञेया त्रिविधा सुरा ।
यथैवैका तथा सर्वा, न पातव्या द्विजोत्तमैः ॥९४॥

—मनुस्मृति, अध्याय ११

सुरा (मदिरा) अन्न के मल को कहते हैं। मल को पाप कहते हैं। इस लिए ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य सुरा को न पीवें ॥९३॥

सुरा तीन प्रकार की है—गौडी, पैष्टी और माध्वी ।

१ गौडी—गुड से बनी हुई ।
२ पैष्टी—अनाज को सड़ा कर बनाई हुई ।
३ माध्वी—महुवे से बनी हुई ।

इनमें जैसी एक है, वैसी ही तीनों हैं। इसलिए ब्राह्मण उनका पान न करें।

३ सुरं वा मेरगं वा वि, अन्नं वा मज्जगं रसं ।
ससक्खं न पिबे भिक्खू, जसं सारक्खमप्पणो ॥

—दशवैकालिक ५।२।३६

अपने संयम का संरक्षण करता हुआ भिक्षु सुरा, मेरक या अन्य किसी भी प्रकार का मादक रस आत्म-साक्षी से न पीए ।

४ बुद्ध ने पचशील मे मद्य-निषेध की पचम शील (मज्ज न पायव्व) के रूप में स्थापना की। जातककथा मे बतलाया गया है कि एक बार सुरा-महोत्सव पर मदिरा पीकर पाच सौ स्त्रियो ने बुद्ध की धर्मसभा मे बहुत ही अभद्रता का प्रदर्शन किया। बुद्ध ने और कोई चारा न देखकर अपने योग-बल से उनका मद उतारा एव उनकी अश्लीलता का निवारण किया।

—नैतिकविज्ञान, पृष्ठ ५६

५ फ्रेंच सरकार मद्यपान को रोकने के लिए २० करोड डालर प्रतिवर्ष खर्च करती है। वारसा-पोलेण्ड मे १३ चिकित्सालय चालू हैं। सोवियत कजाकिस्तान मे मद्य पीकर गाडी चलाने वाले ड्राइवरो को गोली से उडा देने तक का विधान है।

—जैनभारती, १९६५ मई ३०, डा० जेठमल भसाली के लेख से

६ न चेत् सुरां पिबन्ति।

—ऋग्वेद ३।३।१३।२

दानव भी विवेकी बन सकते हैं, यदि वे सुरापान छोड दे।

३७ मद्यपान की मात्रा

१ फ्रांस मद्यपान में सर्वोपरि है, फ्रांसवासी अनुमानत २० करोड़ गैलन मदिरा प्रतिवर्ष पीते हैं। पोलेण्ड में ६० प्रतिशत स्कूल के बच्चे शराब पीते हैं। संयुक्तराष्ट्र अमेरिका एवं ब्रिटेन में भी प्राय यही स्थिति है।

—जैन भारती, १९६५ मई ३, डा० जेठमल भंसाली के लेख से

२ **भारत में १६ अरब रुपयों की शराब**—भारत में प्रतिवर्ष १६ अरब रु० की शराब पीई जाती है। यदि इस विशाल धनराशि का अन्य कार्यों में व्यय किया जाए तो जहां १०००० मध्यम दर्जे के उद्योग स्थापित हो सकते हैं। वहां ५० लाख लोगों को प्रत्यक्ष और १ करोड़ को अप्रत्यक्ष रोजगार मिल सकता है।

• अ० भा० मद्यनिषेध परिषद् के महामन्त्री श्री रूपनारायण ने आज यहां बताया कि सरकार को शराब से राजस्व के रूप में २ अरब रु० की प्राप्ति होती है।

उन्होंने ने बताया कि १९४७ में यह राजस्व केवल ८७ करोड़ रु० था, जो गत २५ वर्षों में ४ गुना बढ़ गया। इसी अवधि में शराब की खपत २० गुनी बढ़ गयी है।

—हिन्दुस्तान, सितम्बर २५।१९७२

३८ मद्यपान के दुर्गुण

१ विवेक संयमो ज्ञान, सत्य शौच दया क्षमा ।
मद्यात् प्रलीयते सर्वं, तृण्या वह्निकणादिव ।

—योगशास्त्र ३।१६

आग की चिनगारी से घास के ढेरवत् मदिरापान से विवेक, सयम, ज्ञान, सत्य शौच, दया एव क्षमा आदि सभी गुण नष्ट हो जाते हैं ।

२ मद्यपानाद् मतिभ्र शो, नराणा जायते खलु ।
मद्यपान से मनुष्यो की निश्चय ही बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है ।

३ मद्ये हि प्रकटो दोष श्रीह्रीनाशादिरैहिक ।
मद्यपान मे श्री (लक्ष्मी) ह्री (लज्जा) नाशादि इहलोक सम्बन्धी भी अनेक दोप हैं ।

४ वैकल्यं धरणीपात—मयथोचितजल्पनम् ।
सन्निपातस्य चिह्नानि, मद्य सर्वाणि दर्शयेत् ।

—सुभाषितरत्नभाडागार पृष्ठ १०४

विकलता, पृथ्वी पर गिरना, अनुचित वोलना आदि सन्निपात के सभी लक्षण मद्य दिखलाता है ।

५ कृमिरास कुवास शरीर दहै, शुचिता सव छीवत जात सही,
जिहि पान किए सुधि जात हिये, जननी जन जानत नार यही ।
मदिरा सम आन निपिद्ध कहा, यह जान भले कुल मे न गही,
धिक है उनको वह जीभ जलो, जिन मूढन के मत लीन कही ।

—भूधरदास

६ वैरूप्य व्याधिपिण्ड स्वजनपरिभव कार्यकालातिपातो ।
विद्वेषो ज्ञाननाश स्मृतिमतिहरण विप्रयोगश्च सद्भि ॥
पारुष्य नीचसेवा कुलबलविलयो धर्मकामार्थ-हानि ।
कष्ट वै षोडशैते निरुपचयकरा मद्यपानस्य दोषा ॥

—हरिभद्रीयाष्टक-टीका

१ मद्यपान से शरीर कुरूप और बेडौल हो जाता है।
२ व्याधियाँ शरीर में घर कर लेती हैं।
३ घर के लोग तिरस्कार करते हैं।
४ कार्य का उचित समय हाथ से निकल जाता है।
५ द्वेष उत्पन्न होता है।
६ ज्ञान का नाश होता है।
७-८ स्मृति और बुद्धि का नाश हो जाता है।
९ सज्जनों से जुदाई होती है।
१० वाणी में कठोरता आती है।
११ नीचों की सेवा करनी पड़ती है।
१२ कुल की हीनता होती है।
१३ शक्ति का ह्रास होता है।
१४-१६ धर्म, काम एवं अर्थ की हानि होती है।

इस प्रकार आत्मा को गिराने वाले मद्यपान के सोलह कष्टदायक दोष हैं।

७ एकतश्चतुरो वेदा, ब्रह्मचर्य तथैकत ।
एकत सर्वपापानि, मद्यपान तथैकत ।

—सुभाषितरत्नभांडागार, पृष्ठ १०८

जैसे चारों वेद एक तरफ हैं और ब्रह्मचर्य एक तरफ है, इसी प्रकार जगत के सारे पाप एक तरफ हैं और मद्यपान का पाप एक तरफ है।

८ पीकर शराब होता है शर खराब ।
यक तो शर खराब है, दोष शराब में ।

—उर्दू शेर

९ पहले शराव को आदमी पीता है और फिर शराव को शराव पीती है—वार-वार इच्छा होती है एव अत मे शराव आदमी को पी जाती है
—जापानी लोकोक्ति

१० शराव पीना और कुछ भी नही, केवल अपनी इच्छा से पागल वनना है।
—सेनेका

११ अंब फलै पत लायके, महू फले पत खोय।
पत खोये को आचरैं, ताकी पत किम होय ?

१२ एक प्याला वुद्धिहीन, दूसरा पागल और तीसरा मूर्च्छित कर देता है।
—शेक्सपियर

१३ शराव की वोतल—

मत्री के हाथ मे शराव की वोतल थी। शरावी राजा ने पूछा—क्या है ?

मत्री—कुछ नही।
राजा—क्या कहा ?
मत्री—नही-नही घोडा है।
राजा—झूठ वोलता है। कहा है घोडा ?
मत्री—नही-नही, हाथी है।
राजा—फिर झूठ ?
मंत्री—नही-नही, कुत्ता है।
राजा—फिर वही वात ?
मत्री—नही-नही, मुर्दा है।

राजा ने फिर आग्रह किया। तव मत्री ने वोतल दिखला दी।

राजा ने पूछा—इतनी देर झूठ क्यो वोला ?

मत्री ने कहा—मैंने विल्कुल सत्य वोला है। सुनिये ! इसका रहस्य। पीने से पहले यह शराव कुछ भी नही है। एक वोतल पीने के वाद मनुष्य घोडे की तरह विकारी वन जाता है। दूसरी वोतल पी लेने पर हाथीवत्

मन्दोन्मत्त हो जाता है। तीसरी पीने से कुत्ते की तरह भोंकने लगता है और अत्यधिक पी लेने से मनुष्य मुर्दे की तरह बेहोश हो जाता है। राजा को ज्ञान हुआ एव उसने शराब पीनी छोड दी।

१४ शहरो का राक्षस—

बादशाह—शहरो का राक्षस कहाँ रहता है ?

वजीर—शीर्ष महल मे।

बादशाह—उसके साथी कौन-कौन हैं ?

वजीर—दरिद्रता, बीमारी, मार-पीट एव पागलपन ये चार उसके साथी हैं।

बादशाह—नाम क्या है ?

वजीर—शराब।

* *



३६ शराबियों की दुर्दशा

१ हुत्सु पिता सो युध्यन्ते दुर्मदासो न सुरायाम् ।
उधर्न नग्ना जरन्ते ।

—ऋग्वेद ८।२।१२

दिल खोलकर शराब पीने वाले वदमस्तो की तरह लडते है और नगो की तरह रात को कोलाहल करते हैं ।

२ मद्यपस्य शवस्येव, लुठितस्य चतुष्पथे ।
मूत्रयन्ति मुखे श्वानो, व्यात्ते विवरशङ्कया ॥१११॥
मद्यपानरसे मग्नो, नग्न स्वपिति चत्वरे ।
गूढं च स्वमभिप्राय प्रकाशयति लीलया ॥११२॥

—योगशास्त्र, ३

मुर्दों की तरह सडक पर पडे हुए शरावियो के फटे हुए मुख मे खड्‌ढा समझकर कुत्ते मूत जाते हैं ॥१११॥

मद्यपान मे निमग्न मनुष्य नग्न होकर राजमार्ग मे सो जाता है और न कहने की गुप्त वात कह डालता है ॥११२॥

३ तुह पिया सुरा सीहू, मेरओ य महूणि य ।
पाइओ मि जलतीओ वसाओ रुहिराणि य ॥

—उत्तराध्ययन, १६।७०

तुझे सुरा, सीधु, मैरेय और मधु ये मदिराए प्रिय थी, यह याद दिलाकर मुझे जलती हुई चर्वी और रुधिर पिलाया गया । (मृगापुत्र अपनी माता से कह रहा है)

४ सन् १७८६ की वात है—रूस की रानी कैथरिना के कहने से मुख्यमत्री शहजादे वाट्सकिन ने किसानों को एक वृहद् राजभोज दिया । उस अव-

सर पर किसानों को मनमानी शराब पिलाई गई। मादकता में बेभान किसान रात को इधर-उधर खेतों में पड़े रहे। उस रात सर्दी इतनी कड़ाके की पड़ी कि प्रातःकाल होने तक सोलह हजार किसान मौत की गोद में सोये हुए मिले।

—नैतिकविज्ञान, पृष्ठ ५६

५ जयपुर (गुलाब-बाग) के चिड़ियाघर में नशे में झूमते हुए एक मनुष्य ने शेर के पिंजरे की सलाखों में अपना एक हाथ डाला एवं शेर उसे खा गया। ज्यों ही दूसरा हाथ डालने लगा—चौकीदार ने आकर उसे रोका।

—नवभारत, १६ जनवरी १९६६

६ मध्यावधि चुनाव के प्रचारार्थ कई आदमी एक गांव में गए। शराब पीकर पागल हो गए एवं जिस दल का प्रचार करना था, उसी की निन्दा करने लगे।

—नवभारत, १५ जनवरी १९६६

• ७ एक बार मद्रास सरकार से स्त्रियों ने प्रार्थना की थी कि—हमारे पतियों को कानून द्वारा शराब छुड़वाइए! बच्चे भूखे मर रहे हैं।

८ पीयल के तोख पार्‌यो महम्मद को मान गार्‌यो,
बुद्धिसिंह को बिगार्‌यो नीके निरधारों में,
खून बिन जेत खोयो डूंगरसिंह को डबोयो,
जोर को मरन जोयो हियामाऋ हारों में,
तखत को कीन्हो तंग नन्जन को मृत्यु संग,
कोटापति को अपन ऊमर उचारों में
तोप पोप ओस मार काहे अफसोस कोप—
हाय दारु! तेरो दोष कहा लों पुकारों मैं।

—कवि ऊमरदान

तमाखू, तमाखू का प्रचार

१ सन् १४९२ नवम्बर मे कोलवस ने 'क्यूवा' टापू ढूढा एव उसने वहा के जगली मनुष्यो को पत्ते लपेट कर मुह मे डाले हुए धुआ निकालते देखा। वह कुछ पत्ते यूरोप मे लाया, चर्चा चली और लोग पीने लगे। सन् १४९४ मे कोलवस ने दुवारा अमेरिका की यात्रा की, वहा लोगो को तमाखू सूघते देखा। सुनकर यूरोपियन स्त्रिया तमाखू सूघने लगी। सन् १५०३ मे स्पेनिश लोग "पेरागुआ" पर विजय करने गये। वहा के सिपाही तमाखू खाते थे एव शत्रुओ की आखो मे तमाखू का रस थूकते थे। तव से यूरोप मे तमाखू का खाना चला।

—अध्ययन के आधार पर

२ सन् १९१६ के विश्वयुद्ध के वाद फ्रास मे तमाखू के अभाव मे वहा की स्त्रिया एक सिगरेट के वदले सिगरेटदाता को अपना सतीत्व देने लगी थी।

—सेक्स्वल लाइफ ड्यूरिङ् दि वर्ल्डवार

३ रामायण-महाभारत आदि प्राचीन ग्रथो मे तमाखू का वर्णन दृष्टिगोचर नही होता। मुसलमान लोग हुक्का पीते थे, ऐसा वर्णन शिवराजविजय काव्य मे मिलता है।

४१ तमाखू में जहर

१ एक वैज्ञानिक कहता है कि एक रत्तल अच्छी तमाखू में इतना 'निकोटीन' विष है जो तीन मिनट में २५०० कुत्तों को मारने में समर्थ है। दूसरा विष 'कोलोडाइन' है, जिसकी एक बूंद का बीसवां भाग बिजली के धक्के के समान स्थिति पैदा करके मेढक को मार डालता है। तीसरा विष 'फरफरोल' भी भारी नुकसान करने वाला है।

२ अमेरिका में तमाखू के लाखों मन रस से कृषि-विनाशक कीड़े मर जाते हैं – हाटनाटाट के निवासी तमाखू के तेल से सांपों को मारते हैं—एक बूंद तेल से काला नाग मर जाता है।

—सजीवनी बूटी पृष्ठ ८६

३ शिकागो के शरीर-शास्त्री के मत से तमाखू में जो नीकोटीन विष होता है। उसके एक ओंस के १/८०० भाग यदि इंजेक्शन द्वारा मनुष्य के खून में मिला दिया जाय तो वह मर जाएगा। इसका १/३ प्रत्येक सिगरेट में रहता है।



यह निष्कर्ष व्यापारिक क्षेत्र मे काम करने वाले ९७ व्यक्तियो के (जिनमे ७७ सिगरेट पीने वाले और २० न पीनेवाले शामिल थे) स्वास्थ्य-परीक्षण द्वारा निकाला गया है।

डॉ० वेस का कहना है कि तमाखू के धुएँ से श्वास-सस्थान को जो क्षति पहुँचती है, उससे सुनाई नही पडता।

(ख) **सिगरेट से कैंसर**—दस सिगरेट प्रतिदिन वीस वर्ष तक पीने से श्वास नलियो मे कैंसर हो जाता है।

एक जर्मन विशेपज्ञ के अनुसार ७०,००० सिगरेट पीने के वाद कैंसर के लक्षण दिखाई देने लगते हैं। चाहे यह मात्रा दस प्रतिदिन के हिसाव से वीस वर्षों मे ली जाए अथवा वीस प्रतिदिन के हिसाव से दस वर्षों मे ली जाए।

—हिन्दुस्तान, अप्रैल १२, १९७०

५ **सिगरेट से मार-काट**—कलकत्ता मे तस्करी से अमेरिका से लायी गई एक ऐसी नशीली सिगरेट विकती है, जिसे पीकर वहाँ के वीटनिक युवक अपने घर के अन्य सदस्यो को मारते हैं, दात से काटते है और शृगालो की तरह तवतक चिल्लाते हैं, जवतक वे वेहोश नही हो जाते। (देखिए चित्र)—



—धर्मयुग



तमाखू का निषेध

१ तमाखुपत्र राजेन्द्र ! भज मा-ज्ञानदायकम् ।
तमाखुपत्र राजेन्द्र ! भज माऽज्ञानदायकम् ॥

राजन् ! इन लक्ष्मी और ज्ञान देने वाले आखुपत्र श्री गणेशजी का भजन करो ! लेकिन अज्ञानदाता तमाखू-पत्र का सेवन मत करो। (इस श्लोक के दो अर्थ होते हैं।)

२ तमाखू भक्षण पर खेद—

समझ तमाखू सूगली कुत्ता न खावै काग।
ऊंट टाट खावै नहीं, अपणो जाण अभाग।
अपणो जाण अभाग, गजब नहिं न्याय गवेडो।
सूकर भूंडी समझ, निपट निकलै नहिं नेडो।
मृग पशु बच जाय, अहर निशि खाय न आखू।
वडा नोचरी वात, तिका नर खाय तमाखू।

—भाषा श्लोकसागर

३ तमाखू सूंघने का निषेध—

रग वग मूर्छा नीठ, फवै छोटो फुरणाँ,
छ्यू हिक उतरै कठ, त्रिपै चचू हिक चरणाँ,
खांसी आवै खरा, सूग नस नाचे नाग।
मजलस बिगडै मजो, ठचका जद पडै ठचाग।
हैं यहै गुणो हितु हुओ, झाजा भग-भग छाड दो।
सूगली सूंघ गैणा सुघड, नाप न कीजै नास्यो।

—भाषा श्लोकसागर

४ हुक्का-निषेध—

होका से हुजमत गई, लाज शरम गई ऊठ।
घृत बेचकर लायो तमाखू, गई हियारी फूट।
गई हियारी फूट, घर-घर आग नें डोलै।
ऊँचा कुल रो होय, वचन तिहा निरता बोलै।
कहै गिरधर कविराय, सुनो रे सज्जन लोको।
हिवडो दाझणहार, दूर तज दीजे होको।

५ तमाखू का त्याग—

अमरीकी कैंसर सोसाइटी के अनुसार १ अक्टूबर तक दो करोड १० लाख व्यक्तियों ने सिगरेट पीनी छोड दी, उनमे १ लाख तो डाक्टर हैं। (वहा सिगरेट पीने वाले २ लाख डाक्टर है) सन् १९६८ मे ६५ हजार व्यक्ति फेफडो के कैंसर मे मरे थे।

—हिन्दुस्तान २२, अक्टूबर १९६८



१ विडौजा पुरा पृष्ठवान् पद्मयोनिं, धरित्रीतले सारभूत किमस्ति।
चतुर्भिर्मुखैरित्यवोचद् विरञ्चि-स्तमाखुस्तमाखुस्तमाखुस्तमाखुः।

—सुभाषितरत्नभांडागार, पृष्ठ १०४

इन्द्र ने ब्रह्मा से पूछा कि पृथ्वी में सारभूत चीज क्या है? ब्रह्मा ने अपने चारों मुखों से कहा—तमाखु-तमाखु-तमाखु-तमाखु।

(यह तमाखू के समर्थकों का कथन है)

२ बादशाह और बीरबल तमाखू के खेत के पास होकर कहीं जा रहे थे। वहाँ एक गधा खड़ा था। बादशाह ने हँसकर कहा—तमाखू को गधे भी नहीं खाते। बीरबल ने उत्तर दिया—हाँ हजूर! जो गधे होते हैं, वे नहीं खाते।

(बीरबल तमाखू का व्यसनी था)

३ वैष्णवों की कल्पना—

श्रीकृष्णः पूतनायाः स्तनमलमपिबत्, कालकूटेन पूर्णं,
प्रच्छन्ने भूप्रदेशे किमपि च पिबतो यत्तदा तस्य वक्त्रात्।
तस्मादेषा तमाखु मुरहरपरमोच्छिष्टमेतद् दुरापं,
स्मृत्वा नत्वा मिलित्वा ह्यनिशमतिमुदा सेव्यते वैष्णवाग्र्यैः।

—सुभाषितरत्नभांडागार, पृष्ठ १०४

श्रीकृष्ण ने जब पूतना राक्षसी के स्तन पर लगे हुए कालकूट का पान किया था, उस समय उनके मुख से उसका कुछ अंश पृथ्वी पर गिर पड़ा। वह जो गिरा वह तमाखू बनी है। इसे विष्णु भगवान् का उच्छिष्ट मानकर वैष्णवों के समझदार लोग भी इस तमाखू की स्तुति कर विधि-पूर्वक सेवन करते हैं।

४५ चाय

१ कफ कट्टण सुस्ती हरण, नीद-नाश बल क्षीण।
लोही का पानी करे, गुण दो, अवगुण तीन।

—एक अनुभवी

२ भ्रात कस्त्वं ? तु चायो।
गमनमिह कुतो ? वारिधेः पूर्वपारात्।
कस्य त्व दण्डधारी ?
किमु नहि विदित श्रीकलेरेव राज्ञ ॥
चातुर्वर्ण्यं विधात्रा
विरचितममल ब्रह्मणा धर्महेतो—
रेकीकर्तुं बलात्तन्
निखिलजगति रे ! शासनादागतोऽस्मि।

एक पथिक ने चाय से पूछा—भाई ! तू कौन है ?
चाय—मेरा नाम चाय है।
पथिक—कहा से आये हो ?
चाय—समुद्र के पूर्वतट से आया हू।
पथिक—किसके दंडधारी हो ?
चाय—कलि महाराज का सिपाही हू।
पथिक—किसलिए आए हो ?
चाय—ब्रह्मा ने धर्म के लिए जो चार वर्ण बनाये थे, उन्हे एकाकार करने के लिए मैं कलि महाराज के शासन से आया हू।

दूसरा कोष्ठक

१ राजनीति

१ सत्यानृता च परुषा प्रियवादिनी च,
हिंस्रा दयालुरपि चार्थपरा वदान्या।
नित्यन्यया प्रचुरनित्यधनागमा च,
वारागनेव नृपनीतिरनेकरूपा ॥

—भर्तृहरि नीतिशतक, ४७

राजनीति वेश्या के समान अनेक प्रकार से बरतती है। यह कहीं सत्य, कहीं असत्य, कहीं कठोर, कहीं प्रियभाषिणी, कहीं हिंसक, कहीं दयालु, कहीं कृपण, कहीं उदार तथा कहीं अधिक व्यय करनेवाली और कहीं अधिक संचय करने वाली हो जाती है।

२ नीति एक साधारण नारी की धड़कन है और राजनीति उसका ज्वर है।

—वेन्डेल फिलिप

३ राजनीति कहती है कि [illegible] को खोजना और अपने [illegible] छिपाना, [illegible] दो काम हैं।

४ गुरुर्वारोपित[illegible], प्रणाम [illegible]।

—महाभारत

जो [illegible], उसे [illegible] (राजनीति में) [illegible] है।

५ [illegible]।

—कौटलीय अर्थशास्त्र ६।८

वेल से वेल तोडना चाहिए अर्थात् शत्रुओ को परस्पर भिडाये रखना चाहिए।

६ धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति।

—शुक्लयजुर्वेद १।८

मारते हुए को मारो। जो हम पर आक्रमण करता है, उसे नष्ट कर दो।

७ सत्यधर्मविहीनेन, न सदध्यात् कथचन।
सुसधितोऽप्यसाधुत्वादचिराद् याति विक्रियाम्।

—पञ्चतन्त्र, ३।२४

सत्यधर्म विहीन-शत्रु के साथ कभी सधि न करो क्योंकि दुष्ट होने के कारण वह तुरन्त बदल जायेगा।

८ राजनीति व धर्म वे वस्तुएँ हैं, जिनमे प्राय सामजस्य नही होता।

—बर्क

९ राजनीति के सदृश दूसरा कोई जुल्म नहीं।

—डिजरायली

१० राजनीति साधु के लिए नही है।

—महात्मा तिलक

११ धर्मनीति मे जो हुआ, राजनीति का मेल।
काजी-मिश्रित दूध-सा, चन्दन! होगा खेल॥
धर्मनीति सहती नही, दंभ वराये नाम।
राजनीति का तो भला, कूटनीति है नाम॥

—चन्दनमुनि

१२ सभी राजनीतिक सस्थाएं अपने झूठो के परिणामस्वरूप ही अन्त मे मिट जाती हैं।

—जॉन आरबुथनॉट

१३ वास्तविक राजनीति यथार्थता को स्वीकार करने मे है।

—हेनरी एडम

१ संविधान—२६ जनवरी, १९५० से भारत का संविधान अमल में है। भारत-संघ के अन्तर्गत १८ राज्य और ६ संघीय-क्षेत्र हैं। भारत सर्वप्रभुसत्तासम्पन्न लोकतंत्रीय गणराज्य है, और राष्ट्रमण्डल (कामनवेल्थ) का सदस्य है। इस देश की सरकार संसदीय-प्रणाली की है तथा प्रत्येक वयस्क (२१ वर्ष से अधिक आयु के) नागरिक को मताधिकार प्रदान किया गया है। इसका संवैधानिक-प्रमुख राष्ट्रपति है, जो संसद के दोनों सदनों और राज्यों की विधानसभाओं के सदस्यों से बने निर्वाचक-मण्डल द्वारा पाँच साल के लिए चुना जाता है।[1] उपराष्ट्रपति राज्यसभा और लोकसभा के सदस्यों द्वारा निर्वाचित होता है और वह राज्यसभा की पदेन अध्यक्षता करता है। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में बना मंत्रिमण्डल राष्ट्रपति को सहायता व परामर्श देता है।

(क) संसद—संघ या यूनियन के विधान मण्डल को संसद (पार्लियामेंट) कहते हैं। इसके दो सदन हैं—राज्यसभा और लोकसभा।

१ राज्यसभा—राज्यसभा में २५० से अधिक सदस्य नहीं होते। इनमें से १२ सदस्य साहित्य, कला, विज्ञान, समाजसेवा आदि क्षेत्रों में अपनी ख्याति के कारण राष्ट्रपति द्वारा नामजद किए जाते हैं। शेष सदस्य राज्यों की आबादी के अनुसार राज्यों की विधानसभाओं द्वारा आनुपातिक प्रतिनिधित्व के आधार पर एकल परिवर्तनीय प्रणाली से चुने जाते हैं।

नोट १, विधानसभाओं, राज्यसभा और लोकसभा के सदस्य राष्ट्रपति को चुनते हैं।—इनकी संख्या [illegible] हजार है [illegible] के पास [illegible] हजार [illegible]।

—हिन्दुस्तान [illegible] ७, १९५७

राज्यसभा कभी भग नही होती। हर दूसरे वर्ष एकतिहाई सदस्य सदस्यता से मुक्त होते जाते हैं। राज्यसभा की सदस्यता के लिए न्यूनतम आयु ३० वर्ष होनी चाहिए।

० लोकसभा—लोकसभा के सदस्यो की इस समय सख्या ५१८ है। ये सदस्य वयस्क मताधिकार के आधार पर राज्यो के निर्वाचन-क्षेत्रो से प्रत्यक्ष मतदान से चुने जाते हैं।[1] लोकसभा यदि बीच मे भग न कर दी जाए तो साधारणत इसका कार्य-काल पाच साल होता है।

(ख) राज्य—राज्यो की शासन-पद्धति केन्द्रीय सरकार के अनुरूप है। प्रत्येक राज्य के विधान-मण्डल मे राज्यपाल के अतिरिक्त दो या एक सदन होते हैं विधान परिषद् और विधान सभा। कुछ राज्यो मे एक सदन की ही व्यवस्था है। राज्यपाल की नियुक्ति राष्ट्रपति करता है। मुख्यमत्री के नेतृत्व मे बना मन्त्रिमडल राज्यपाल को सहायता व परामर्श देता है।

सघ या यूनियन और राज्यो के विधि-नियामक अधिकारो का नियमत तीन सूचियो द्वारा होता है। सघ की ससद को अखिल भारतीय स्तर के ९७ विषयो पर कानून बनाने का अधिकार है। राज्यो की सूची मे ६६ विषय हैं। तीसरी सूची समवर्ती है और इसमे ४७ विषय हैं, जिनके सबध मे केन्द्र और राज्य दोनो ही कानून बना सकते हैं। परन्तु राज्य व केन्द्रीय कानून मे भेद होने पर केन्द्रीय कानून मान्य होता है।

सविधान ने केन्द्रीय सरकार को ससद द्वारा निर्धारित सीमा तक कर्ज लेने का अधिकार दिया है। राजस्व आय के वितरण के बारे मे समय-समय पर सिफारिश करने के लिए राष्ट्रपति वित्तआयोग नियुक्त करते हैं। केन्द्र व राज्यो के हिसाब-किताब की निगरानी व नियत्रण के लिए राष्ट्रपति एक लेखानियत्रक एव एक महालेखा-परीक्षक नियुक्त करते हैं। इसके प्रतिवेदन ससद और विधानसभाओ के सम्मुख पेश किए जाते हैं।

नोट १—पाच-पाच नाम व्यक्तियो के प्रतिनिधि लोकसभा के सदस्य होते हैं।

(ग) संशोधन—संविधान में संसद ही संशोधन कर सकती है। अब तक २१ संशोधन हो चुके हैं। संशोधन विषयक विधेयक प्रत्येक सदन में प्रस्तुत किया जाना चाहिए और सदन के कुल सदस्यों एवं उपस्थित सदस्यों में कम से कम दो-तिहाई सदस्यों के बहुमत से स्वीकृत और राष्ट्रपति द्वारा संपुष्ट होना चाहिए।

(घ) न्यायपालिका—भारत के सर्वोच्च न्यायालय (सुप्रीमकोर्ट) का एक मुख्य न्यायाधिपति होता है, और अधिक से अधिक उसमें १३ न्यायाधीश होते हैं, जो राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त किए जाते हैं। ये ६५ वर्ष की आयु तक कार्य कर सकते हैं। न्यायाधिपति के लिए भारत का नागरिक होना अनिवार्य है और उसे भारत के एक या एक से अधिक उच्च न्यायालयों (हाईकोर्टों) के कार्य का कम से कम १० वर्ष का अनुभव होना चाहिए।

(ङ) निर्वाचन—संसद व विधानसभाओं के निर्वाचन-कार्य के वास्ते एक निर्वाचन आयोग है। देश भर में होने वाले निर्वाचनों के नियंत्रण और निरीक्षण का उसको अधिकार दिया गया है। यह राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त मुख्य आयुक्त की देख-रेख में कार्य करता है। मुख्य निर्वाचन-आयुक्त की सेवा सम्बन्धी अवधि और शर्तें सर्वोच्च न्यायालय के ही समान होती हैं।

(च) राजभाषा—अनुच्छेद ३४३ की व्यवस्था के अनुसार संघ की राजभाषा नागरी लिपि में लिखी हिन्दी मानी गई है, जिसमें अंकों के अन्तर्राष्ट्रीयरूप (रोमन अंकों) का प्रयोग होता है। किन्तु अहिन्दी भाषी जनता की सुविधा के वास्ते २६ जनवरी, १९६५ के बाद भी अंग्रेजी का व्यवहार हिन्दी के साथ साथ अनन्त काल तक होता रहेगा। राज्य अपने-अपने क्षेत्र के लिए वहाँ की प्रचलित किसी भाषा को कानून बनाकर राज्य की राजभाषा घोषित कर सकते हैं।

(छ) संकटकालीन व्यवस्था—संविधान के अनुच्छेद ३५२ के अनुसार, यदि राष्ट्रपति का यह विश्वास हो जाय कि युद्ध के कारण, बाहरी हमले के कारण या आन्तरिक उपद्रव के कारण संकटकालीन अवस्था है, तो वह आपातकाल की घोषणा कर सकता है।

राज्यसभा कभी भग नही होती। हर दूसरे वर्ष एकतिहाई सदस्य सदस्यता से मुक्त होते जाते हैं। राज्यसभा की सदस्यता के लिए न्यूनतम आयु ३० वर्ष होनी चाहिए।

० **लोकसभा**—लोकसभा के सदस्यो की इस समय सख्या ५१८ है। ये सदस्य वयस्क मताधिकार के आधार पर राज्यो के निर्वाचन-क्षेत्रो से प्रत्यक्ष मतदान मे चुने जाते हैं।[1] लोकसभा यदि बीच मे भग न कर दी जाए तो साधारणत इसका कार्य-काल पाच साल होता है।

(ख) **राज्य**—राज्यो की शासन-पद्धति केन्द्रीय सरकार के अनुरूप है। प्रत्येक राज्य के विधान-मण्डल मे राज्यपाल के अतिरिक्त दो या एक सदन होते हैं विधान परिषद् और विधान सभा। कुछ राज्यो मे एक सदन की ही व्यवस्था है। राज्यपाल की नियुक्ति राष्ट्रपति करता है। मुख्यमत्री के नेतृत्व मे बना मत्रिमडल राज्यपाल को सहायता व परामर्श देता है।

सघ या यूनियन और राज्यो के विधि-नियामक अधिकारो का नियमत तीन सूचियो द्वारा होता है। सघ की ससद को अखिल भारतीय स्तर के ९७ विषयो पर कानून बनाने का अधिकार है। राज्यो की सूची मे ६६ विषय हैं। तीसरी सूची समवर्ती है और इसमे ४७ विषय हैं, जिनके सबध मे केन्द्र और राज्य दोनो ही कानून बना सकते है। परन्तु राज्य व केन्द्रीय कानून मे भेद होने पर केन्द्रीय कानून मान्य होता है।

संविधान ने केन्द्रीय सरकार को ससद द्वारा निर्धारित सीमा तक कर्ज लेने का अधिकार दिया है। राजस्व आय के वितरण के बारे मे समय-समय पर सिफारिश करने के लिए राष्ट्रपति वित्तआयोग नियुक्त करते हैं। केन्द्र व राज्यो के हिसाब-किताब की निगरानी व नियत्रण के लिए राष्ट्रपति एक लेखानियत्रक एव एक महालेखा-परीक्षक नियुक्त करते हैं। इसके प्रतिवेदन ससद और विधानसभाओ के सम्मुख पेश किए जाते हैं।

नोट १—पाच-पाच लाख व्यक्तियो के प्रतिनिधि लोकसभा के सदस्य होते हैं।

(ग) संशोधन—संविधान में संसद ही संशोधन कर सकती है। अब तक २१ संशोधन हो चुके हैं। संशोधन विषयक विधेयक प्रत्येक सदन में प्रस्तुत किया जाना चाहिए और सदन के कुल सदस्यों एवं उपस्थित सदस्यों में कम से कम दो तिहाई सदस्यों के बहुमत से स्वीकृत और राष्ट्रपति द्वारा संपुष्ट होना चाहिए।

(घ) न्यायपालिका—भारत के सर्वोच्च न्यायालय (सुप्रीमकोर्ट) का एक मुख्य न्यायाधिपति होता है, और अधिक से अधिक उसमें १३ न्यायाधीश होते हैं, जो राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त किए जाते हैं। ये ६५ वर्ष की आयु तक कार्य कर सकते हैं। न्यायाधिपति के लिए भारत का नागरिक होना अनिवार्य है और उसे भारत के एक या एक से अधिक उच्च न्यायालयों (हाईकोर्टों) के कार्य का कम से कम १० वर्ष का अनुभव होना चाहिए।

(ङ) निर्वाचन—संसद व विधानसभाओं के निर्वाचन-कार्य के वास्ते एक निर्वाचन-आयोग है। देश भर में होने वाले निर्वाचनों के नियंत्रण और निरीक्षण का इसको अधिकार दिया गया है। यह राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त मुख्य आयुक्त की देख-रेख में कार्य करता है। मुख्य निर्वाचन-आयुक्त की सेवा सम्बन्धी अवधि और शर्तें सर्वोच्च न्यायालय के ही समान होती हैं।

(च) राजभाषा—अनुच्छेद ३४३ की व्यवस्था के अनुसार संघ की राजभाषा नागरी लिपि में लिखी हिन्दी मानी गई है, जिसमें अंकों के अन्तर्राष्ट्रीयरूप (रोमन नम्बरों) का प्रयोग होता है। किन्तु अहिन्दी भाषी जनता की सुविधा के वास्ते २६ जनवरी, १९६५ के बाद भी अंग्रेजी का व्यवहार हिन्दी के साथ साथ [illegible] होता रहेगा। राज्य अपने-अपने क्षेत्र के लिए अपने यहाँ प्रचलित किसी भाषा को [illegible] बनाकर राज्य की राजभाषा घोषित कर सकते हैं।

(छ) संकटकालीन व्यवस्था - संविधान के अनुच्छेद ३५२ के अनुसार, यदि राष्ट्रपति को यह विश्वास हो जाय कि युद्ध के कारण, बाहरी हमले [illegible] के या आन्तरिक [illegible] से [illegible] संकटकालीन अवस्था है, तो वह संकटकाल की घोषणा कर—

किसी राज्य की वैधानिक व्यवस्था भग होने पर या होने की आशका होने से राष्ट्रपति मव या जिममे देश की सुरक्षा खतरे मे पडने की आशका है, कुछ शासकीय कार्य अपने हाथ मे ले मकता है। राज्य के राज्यपाल द्वारा यह रिपोर्ट भेजने पर कि राज्यकार्य वैधानिक दृष्टि से चलाना सम्भव नही या वह अन्य कारणो से यह विश्वास करले कि राज्य का शासन मवैधानिक विधियो से सभव नही है तो वह स्वय उस राज्य का कार्यभार ग्रहण कर सकता है।(अनुच्छेद ३५६)।

(ज) नागरिक उड्डयन—नागरिक उड्डयन का महत्त्व तेजी से बढ रहा है। इस समय सरकारी क्षेत्र मे ८६ हवाई अड्डे हैं। इनमें तीन-दमदम (कलकत्ता), सान्ताक्रुज (वम्वई) और पालम (नई दिल्ली) अन्तर्राष्ट्रीय हैं। ९ कस्टम हवाई अड्डे घोपित किए गए हैं। इलाहाबाद मे सिविल एवियेशन ट्रेनिंग सेण्टर है। १२ सहायता प्राप्त उड्डयन क्लब हैं। हवाई परिवहन पूर्णत सरकारी क्षेत्र मे है। इसका सचालन दो निगम करते हैं, एयर इण्डिया और इण्डियन एयर लाइन्स।

(झ) सडकें—भारत मे सडको की कुल लम्बाई ४,८०,००० मील है। सडकें, राजपथ, प्रदेशपथ, जिलारोड और ग्रामपथ, इन चार भागो में विभक्त है। राजपथ, राज्यो की राजधानियो, बन्दरगाहो, विदेशी राजपथो को मिलता है। देश मे सचार की यह मुख्य प्रणाली है। प्रदेशपथ राज्यो मे मुख्यत ट्रकरोड है। जिलारोड जिलाओ के मुख्य कार्यालयो मे पहुचता है और ग्रामपथ, देहात की आवश्यकताए पूरी करते हैं।

(ञ) जहाजरानी—भारत का समुद्रतट ३,५३५ मील से अधिक लम्बा है। सब देशो के व्यापारिक जहाज इसके बदरगाहो मे आते है। तटवर्ती व्यापार एकमात्र भारतीय जहाजो द्वारा होता है। भारत की जहाजरानी अब तेरह लाख टन की सीमा पार कर गई है। भारत मे ६ मुख्य बन्दरगाह हैं—कलकत्ता, विशाखापत्तनम्, मद्रास, कोचीन, बम्बई और काडला।

(ट) कृषि—भारत कृषि-प्रधान देश है। शायद ही कोई ऐसी फसल हो, जो यहा न होती हो। मुख्यत चावल, गेहू, ईख, तिलहन, कपास, पटसन और चाय की खेती होती है। प्रतिएकड़ उपज कम है। भारतीय कृषि

आज भी प्रकृति की दया पर निर्भर है। बाढ़ और सूखा दोनों ही इसके शत्रु हैं। इन पर विजय पाने के लिए जल-विद्युत की अनेक विशाल योजनाएं शुरू की गई हैं। इनमें दामोदर-घाटी, भाखड़ानंगल, हीराकुंड, तुंगभद्रा, मयूराक्षी, भवानी और नागार्जुन तथा रिहन्द परियोजनाएं मुख्य हैं।

—भारतज्ञानकोष १९७१-७२, पृष्ठ ६१

२ आमचुनाव—भारत में वयस्क मताधिकार की पद्धति संविधान के अनुच्छेद ३२६ के अन्तर्गत अपनाई गई। इसके अन्तर्गत उन सभी को मताधिकार प्राप्त है, जो २१ वर्ष के हो चुके हैं। किसी को भी लिंग, जाति और धर्म के आधार पर मतदान के अधिकार से वंचित नहीं किया गया है। ऐसी भी कोई शर्त नहीं है कि मतदान का अधिकार पाने वाला शिक्षित हो, या कर देता हो या किसी सम्पत्ति का मालिक हो। केवल वे लोग ही मतदान के अधिकार से वंचित हैं, जो देश के नागरिक नहीं हैं, पागल हैं, अथवा किसी अपराध व भ्रष्टाचार के लिए दंडित किए जा चुके हैं।

चुनाव-आयोग के अनुसार वयस्क मताधिकार भारत के संविधान में, उसकी व्यावहारिक स्वरूप में निष्ठा की अभिव्यक्ति है।

पिछले आम चुनावों में मतदाताओं की सूची वयस्क मताधिकार के आधार पर तैयार की गई और १९७१ के चुनावों में भी ऐसा ही किया गया।

सन् १९५२ के प्रथम आम चुनाव में १७ करोड़ ३० लाख लोगों को वोट देने का अधिकार था। सन् १९६२ के आम चुनाव में २१ करोड़ से भी अधिक मतदाता थे, सन् १९६७ के आम चुनाव में [illegible] से भी अधिक मतदाताओं ने भाग लिया। इनमें से ६० से ७० प्रतिशत ने मतदान में भाग लिया। १९७१ में मतदाताओं की संख्या २७ करोड़ ४० लाख हो गई। इनमें [illegible] उम्मीदवार शामिल थे। कुछ उम्मीदवार निर्विरोध भी चुने गए।

—भारतज्ञानकोष [illegible], पृष्ठ [illegible]

३　होमगार्ड—पन्द्रह जनवरी सन् १९६३ को सरकार ने होमगार्ड की स्थापना की। इसमे देश-भर मे १० लाख व्यक्ति भरती करने का लक्ष्य रखा गया। होमगार्ड—(१) आन्तरिक सुरक्षा कायम रखने मे मदद करेंगे। ये पुलिस की भी मदद करेंगे। (२) हवाई आक्रमण-आग-बाढ आदि के समान सकट आने पर मदद करेंगे। (३) ये सकटकालिक श्रमसेना का काम करेंगे। इसमे १६ से ४० साल की आयु के व्यक्ति भरती हो सकते हैं।

—भारतज्ञानकोष, १९७१-७२

४　ओहदे के अनुसार उच्च पदाधिकारियो का क्रम—

१ राष्ट्रपति
२ उपराष्ट्रपति
३ प्रधानमत्री
४ उपप्रधानमत्री
५ राज्यपाल
६ भूतपूर्व राष्ट्रपति
७ भूतपूर्व गवर्नर जनरल
८ ले० गवर्नर
९ सर्वोच्च न्यायालय के प्रमुख न्यायाधीश
१० लोकसभा के अध्यक्ष
११ केन्द्रीय मन्त्रिमडल के मत्री
१२ भारतरत्न से विभूषित व्यक्ति
१३ १७ तोपो या अधिक की सलामीवाले भारतीय रियासतो के शासक
१४ राज्यो के मुख्यमत्री
१५ उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश
१६ विदेश मत्रालय के महासचिव
१७ चीफ ऑफ स्टाफ या वह जनरल जो उसके समकक्ष हो
१८ उच्च न्यायालय के प्रमुख न्यायाधीश
१९ सघ-लोकसेवा आयोग के अध्यक्ष
२० लोकसभा के सदस्य

—भारत ज्ञानकोष, १९७१-७२

५ भारत का राष्ट्रीय चिन्ह—भारत सरकार ने २६ जनवरी १९५० ई० को राष्ट्रीय चिन्ह के रूप में सारनाथ व साँची में सम्राट अशोक के बनाए सिंह-स्तम्भ को स्थान दिया है। राष्ट्रीय चिन्ह में तीन शेर हैं और नीचे उपनिषद् का वाक्य 'सत्यमेव जयते' अंकित है।

६ भारत का राष्ट्रीय ध्वज—२२ जुलाई १९४७ ई० को विधान-परिषद् ने राष्ट्रीय ध्वज स्वीकृत किया, यह ध्वज तिरंगा है। सबसे ऊपर केसरिया रंग, मध्य में श्वेत रंग और निचले भाग में हरा रंग है। इस ध्वज की लम्बाई-चौड़ाई का अनुपात ३ और २ का है। उसके श्वेत रंग वाले भाग के बीचों बीच नीले रंग का एक धर्मचक्र बना हुआ है। यह सारनाथ के धर्मचक्र के समान है।

—सामान्य ज्ञान एवं व्यक्ति-परिचय, सन् ७२, पृष्ठ १२१, १२२

७ भारत के प्रमुख राजनीतिक दल एवं उनके चिन्ह—

कांग्रेस (नई)	गाय और बछड़ा
कांग्रेस (पुरानी)	चर्खा कातती हुई महिला
कम्युनिस्ट पार्टी	गेहूं की बाली और हंसिया
स्वतन्त्र पार्टी	तारा
कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी)	हंसिया, हथौड़ा, तारा
जनसंघ	दीपक
प्रसोपा	झोंपड़ी
संसोपा	बरगद का पेड़
रिपब्लिकन पार्टी	हाथी
भारतीय क्रांति दल	हल लिए हुए किसान

—भारत ज्ञानकोष सन् १९७१-१९७२ पृष्ठ ७८

८ भारत का राष्ट्रीय-गान—

जन-गण-मन अधिनायक जय हे ! भारत-भाग्यविधाता !
पजाब, सिन्धु, गुजरात, मराठा, द्राविड, उत्कल वगा ॥
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गगा, उच्छल जलधि तरंगा।
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिष मागे ॥
गाए तव जय गाथा, जन-गण-मन अधिनायक जय हे !
भारत-भाग्यविधाता।
जय हे ! जय हे ! जय हे ! जय जय जय जय हे ।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (विश्वकवि)
(स्वीकृति २४ जनवरी सन् १९५०)

९ राष्ट्र (भारत) की कतिपय ज्ञातव्य वस्तुए —

राष्ट्रध्वज	—तिरगा (झडा)
राष्ट्रगीत	—जन-गण-मन ' ''
राष्ट्रपक्षी	—मोर
राष्ट्रग्रन्थ	—सविधान
राष्ट्रभाषा	—हिन्दी
राष्ट्रचिन्ह	—श्री अशोक स्तम्भ
राष्ट्रधन	—बालक
राष्ट्रनीति	—तटस्थता
राष्ट्रनिर्माता	—शिक्षक
राष्ट्रतारा	—सत्यमेव जयते
राष्ट्रपर्व	—१५ अगस्त, २६ जनवरी
राष्ट्रधर्म	—मानवता
राष्ट्रसत	—श्री विनोबा भावे
राष्ट्रकवि	—श्री रामधारीसिंह दिनकर
राष्ट्रपिता	—महात्मा गाधी
राष्ट्रपति	—श्री वी० वी० गिरि
राष्ट्रखेल	—हॉकी
राष्ट्रआह्वान	—जय जवान-जय किसान !

३

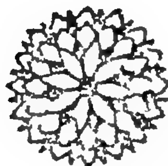
राजनीतिज्ञ

१ राजनीतिज्ञ वह जंतु है, जो एक बाड़े पर बैठकर भी दोनों कान पृथ्वी पर सटाये रखता है।

२ राजनीतिज्ञ पारे की तरह है, अगर तुम उस पर अंगुलि रखने की कोशिश करो तो उसके नीचे कुछ नहीं मिलता।

—आस्टिन

३ राजनीतिज्ञ भावी निर्वाचन के विषय में सोचता है जबकि राजनीतिकुशल भावी-पीढ़ी के विषय में चिन्ता करता है।



४ राष्ट्रपति-पद के विषय में चिन्तन

१ जॉर्ज वाशिंगटन—"मैं राष्ट्रपति बनने के बजाय कब्र मे रहना ज्यादा पसन्दकरूँगा।"

टामस जेफर्सन—"यह पद केवल अनवरत काम लादता है और नित्यप्रति किसी-न-किसी मित्र की क्षति होती है।"

अब्राहम लिंकन—"नरक के स्वामी को यदि ऐसी ही दिक्कते उठानी पडती हैं, जैसी मुझे यहाँ उठानी पड रही है तो मुझे शैतान पर भी दया आती है।"

थियोडोर रूजवेल्ट—"मैं राष्ट्रपति पद का आनन्द भोगता हूँ, और काम करना पसन्द करता हूँ। लेकिन यह परेशानी पैदा करने वाला तथा चक्कर मे डालने वाला है।"

वुड्रो विल्सन—"कभी-कभी ऐसे अवसर आते हैं, जब मैं भूल जाता हूँ कि मैं राष्ट्रपति हूँ।"

हरबर्ट हूवर—"राष्ट्रपतियों को एकान्त के दो ही अवसर प्राप्त होते हैं—एक प्रार्थना का और दूसरा मछली मारने का।

स्वर्गीय राष्ट्रपति जोन एफ कैनेडी ने अमरीकी राष्ट्रपति के पद को "उच्च और एकाकी" बताया था।

(ये सभी अमरीकी राष्ट्रपति थे)

—हिंदुस्तान, नवम्बर ५, १९६४

२ भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद राष्ट्रपति पद को कैद मानते थे। मुक्त होने पर उन्होंने कहा था—आज मुझे इतना आनन्द है, जितना छुट्टी होने पर बच्चों को होता है।

५ राजा, राजा की महिमा

१ पर्जन्यमिव भूतानामाधार पृथिवीपति ।

—कविताकौमुदी

राजा प्राणियो को मेघ की तरह आधार भूत है ।

२ न राज्ञ पर दैवतम् । —चाणक्यसूत्र ३६२

राजा से बढ़कर कोई देवता नही है ।

३ राजा बन्धुरबन्धूना, राजा चक्षुरचक्षुषाम् ।
राजा पिता च माता च, सर्वेषा न्यायवर्तिनाम् ॥

—पञ्चतन्त्र १।३७७

राजा अबन्धुओ का बन्धु है, अधो की आख है तथा सभी न्यायवर्ती व्यक्तियो का माता-पिता है ।

४ बुद्धिशस्त्र प्रकृत्यङ्गो, घनसवृतिकञ्चुक ।
चारेक्षणो दूतमुख , पुरुप , कोऽपि पार्थिव ॥

—शिशुपालवध

बुद्धि जिसका शस्त्र है, सेना, अमात्य आदि जिसके अग है । दुर्भेद्य-मत्र की सुरक्षा जिसका कवच है, गुप्तचर जिसके नेत्र है और सदेशवाहक दूत जिसका मुख है—राजा इस प्रकार का कोई अलौकिक पुरुष ही है ।

५ राजान प्रथम वन्दे, ततो भार्या ततो धनम् ।
राजन्यसति लोकेऽस्मिन्, कुतो भार्या कुतो धनम् ॥

—सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृष्ठ १८३

पहले राजा को और बाद मे स्त्री एव धन को नमस्कार करता हूँ क्योकि राजा की अविद्यमानता मे कहाँ स्त्री और कहाँ धन ?

४ राष्ट्रपति-पद के विषय में चिन्तन

१ **जॉर्ज वाशिगटन**—'मैं राष्ट्रपति बनने के बजाय कब्र मे रहना ज्यादा पसन्दकरूंगा ।"

टामस जेफर्सन—"यह पद केवल अनवरत काम लादता है और नित्यप्रति किसी-न-किसी मित्र की क्षति होती है ।"

अब्राहम लिंकन—"नरक के स्वामी को यदि ऐसी ही दिक्कतें उठानी पडती है, जैसी मुझे यहां उठानी पड रही है तो मुझे शैतान पर भी दया आती है ।"

थियोडोर रूजवेल्ट—"मैं राष्ट्रपति पद का आनन्द भोगता हूँ, और काम करना पसन्द करता हूँ । लेकिन यह परेशानी पैदा करने वाला तथा चक्कर मे डालने वाला है ।"

वुड्रो विल्सन—"कभी-कभी ऐसे अवसर आते हैं, जब मैं भूल जाता हूँ कि मैं राष्ट्रपति हूँ ।"

हरबर्ट हूवर—"राष्ट्रपतियो को एकान्त के दो ही अवसर प्राप्त होते हैं—एक प्रार्थना का और दूसरा मछली मारने का ।

स्वर्गीय राष्ट्रपति जॉन एफ कैनेडी ने अमरीकी राष्ट्रपति के पद को "उच्च और एकाकी" बताया था ।

(ये सभी अमरीकी राष्ट्रपति थे)

—हिंदुस्तान, नवम्बर ५, १९६४

२ भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद राष्ट्रपति पद को कैद मानते थे । मुक्त होने पर उन्होंने कहा था—आज मुझे इतना आनन्द है, जितना छुट्टी होने पर बच्चों को होता है ।

५ राजा, राजा की महिमा

१ पर्जन्यमिव भूतानामाधार पृथिवीपतिः ।

—कविताकौमुदी

राजा प्राणियो को मेघ की तरह आधार भूत है ।

२ न राज्ञ पर दैवतम् । —चाणक्यसूत्र ३७२

राजा से बढकर कोई देवता नहीं है ।

३ राजा बन्धुरबन्धूना, राजा चक्षुरचक्षुषाम् ।
राजा पिता च माता च, सर्वेषा न्यायवर्तिनाम् ॥

—पञ्चतंत्र १।३७७

राजा अबन्धुओ का बन्धु है, अंधो की आख है तथा सभी न्यायवर्ती व्यक्तियो का माता-पिता है ।

४ बुद्धिशस्त्र· प्रकृत्यङ्गो, घनसंवृतिकञ्चुक ।
चारेक्षणो दूतमुख , पुरुष·, कोऽपि पार्थिव· ॥

—शिशुपालवध

बुद्धि जिसका शस्त्र है, सेना, अमात्य आदि जिसके अग हैं । दुर्भेद्य-मत्र की सुरक्षा जिसका कवच है, गुप्तचर जिसके नेत्र हैं और सदेशवाहक दूत जिसका मुख है—राजा इस प्रकार का कोई अलौकिक पुरुष ही है ।

५ राजानं प्रथम वन्दे, ततो भार्या ततो धनम् ।
राजन्यसति लोकेऽस्मिन्, कुतो भार्या कुतो धनम् ॥

—सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृष्ठ १४७

पहले राजा को और बाद मे स्त्री एव धन को नमस्कार करता हूँ क्योकि राजा की अविद्यमानता में कहा स्त्री और कहां धन ?

(६) राजा का शरीर—

इन्द्रात् प्रभुत्व ज्वलनात् प्रताप, क्रोधो यमाद् वैश्रवणाच्च वित्तम्।
पराक्रम रामजनार्दनाभ्या-मादाय राज्ञ' क्रियते शरीरम् ॥
—भावदेव सूरि

इन्द्र से प्रभुता, अग्नि से प्रताप, यम से क्रोध, वैश्रवण से धन और राम-कृष्ण से पराक्रम लेकर राजा का शरीर बनाया जाता है।

(७) राजा के गुण—

पात्रे त्यागी, गुणे रागी, भोगी परिजनै सह।
भावबोद्धा रणे योद्धा, प्रभु पञ्चगुणो भवेत् ॥
—सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृष्ठ १४८

पात्र को दान देने वाला, गुणो का प्रेमी, परिजनो के साथ वस्तु का उप-भोग करने वाला, दूसरे के भावो को भापने वाला और युद्ध करने मे वीर राजा इन पाच गुणो से युक्त होना चाहिए।

(८) राजा का अपमान—

बालोऽपि नावमन्तव्यो, मनुष्य इति भूमिप।
महती देवता ह्येषा, नररूपेण तिष्ठति ॥ —मनुस्मृति-७।८

बालक और मनुष्य समझकर राजा का कभी अपमान नही करना चाहिए क्योकि राजा मे मनुष्य के रूप से एक बडी देवी विराजमान है।

(९) राजा के विषय मे विविध—

(क) राजा करे सो न्याव, पासो पडै सो दाव,
○ राजा माने सो राणी, और भरे पाणी।
—राजस्थानी कहावतें

(ख) वगे मानी ते घरे मानो। —गुजराती कहावत

(ग) राजा री आस करणी, पण आसगो नही करणो।
रावलो तेल पल्लै झेल।
○ राजा बिना नगरी सूनी।
○ मादलियो मर्‌यो र गोठ बिखरी। —राजस्थानी कहावतें

६ श्रेष्ठ राजा

१ योऽनुकूल-प्रतिकूलयोरिन्द्र-यमस्थान स राजा।

—नीतिवाक्यामृत, ५।१

राजा वस्तुत वही है, जो अनुकल जनो के लिए इन्द्र एवं प्रतिकूल जनों के लिए यम के समान है।

२ जो देश के कडे बोल सहता है, वही देश का स्वामी है।
जो देश के लिए दु ख सहता है, वही सच्चा राजा है।

—तामो उपनिषद्, ७८

३ सत्यं शौर्यं दया त्यागो, नृपस्यैते महागुणाः।

—हितोपदेश, ३।१२६

सत्य, शूरता, दया और त्याग—ये चार राजा के बडे गुण माने गए हैं।

४ न्यायेन मेदिनीनाथो राजते।

राजा न्याय से शोभा पाता है।

५ विजितात्मा तु मेधावी, स राज्यमभिपालयेत्।

—महाभारत

जो आत्मविजयी एव बुद्धिमान होता है, वही राजा अच्छी तरह से राज्य करता है।

६ व्यक्तक्रोध-प्रसादश्च, स राजा पूज्यते जनै।

जो राजा समयानुसार क्रोध करना एव प्रसन्न होना जानता है, जनता द्वारा वही पूज्य होता है।

७ चक्षुपा मनसा वाचा, कर्मणा च चतुर्विधम्।
प्रसादयति यो लोक, त लोकोऽनुप्रसीदति।

—विदुरनीति, २।२५

जो राजा प्रेम दृष्टि से, मन से, प्रिय वचनो से और जनहित कार्यों से प्रजा को प्रसन्न करता है, प्रजा उसी राजा से प्रसन्न रहती है।

८ प्रतापवति राज्ञि निष्ठुरे सति न भवन्ति राष्ट्रकण्टका।

—नीतिवाक्यामृत, ८।२२

जिस देश मे राजा प्रतापी (पुण्यशाली-राजनीतिज्ञ-तेजस्वी) तथा कठोर शासन करने वाला होता है, उसके राज्य मे राष्ट्रकण्टक—प्रजा को पीडित करने वाले अन्यायी-चोर-डाकू आदि नही होते।

९ परिपालको हि राजा सर्वेषां धर्मषष्ठाशमवाप्नोति।

—नीतिवाक्यामृत, ७।२३

जो राजा समस्त वर्णाश्रम-धर्म की रक्षा करता है, वह उस धर्म के छठे भाग के फल को प्राप्त होता है।

१० न रामसदृशो राजा, पृथिव्या नीतिमानभूत्।
न कूटनीतितत्त्वज्ञ, श्रीकृष्णसदृशो नृप।

श्री राम जैसे नीतिमान् और कृष्ण जैसे कूटनीतिज्ञ राजा इस पृथ्वी पर नही हुए।

११ न्यायी विक्रमादित्य—

कहा जाता है कि विक्रमादित्य राजसभा मे सोने के सिंहासन पर और घर मे चटाई पर बैठते थे।

इनके राज्यकाल मे दो मित्र सेठ थे—एक था लखपति और दूसरा था करोडपति। अकस्मात् दोनो की सेठानिया एक साथ गर्भवती हो गई। करोडपति का आग्रह था कि अपने गर्भस्थ-बालको का रिश्ता कर ले। चाहे मेरे पुत्र हो और तेरे पुत्री हो अथवा तेरे पुत्र हो एव मेरे पुत्री हो। भावीवश दोनो के पुत्र या पुत्रिया हो जायें तो बात अलग है।

लखपति ने काफी आना-कानी की किन्तु मित्र के आग्रह से आखिर सगपन तय हो गया और दोनो के हस्ताक्षरो वाली लिखा-पढी भी कर ली गई। अस्तु! लखपति के पुत्र एव करोडपति के पुत्री हुई। कुछ ही

समय के वाद व्यापार मे नुकसान होने के आघात से लखपति की मृत्यु हो गई। मा-वेटे एक फूटे-टूटे मकान मे रहकर दु खी जीवन विताने लगे।

इधर करोडपति की नीयत विगड गई। उसने अपनी पुत्री का रिश्ता राजा विक्रमादित्य से कर दिया। उस गुप्त लिखा-पढी का राजा को विल्कुल पता नही था। राजा ज्यो ही वरात लेकर व्याहने जा रहा था, त्यो ही माता से भेद पाकर लडका एक ऊँचे मकान की छत पर चढ वैठा और जोर-जोर से चिल्लाकर कहने लगा—राजन्! अन्याय हो रहा है, मैं महादुखी हूँ, सुनिये मेरी फरियाद!

राजा ने उसको मकान की मुडेर से अपने हाथी पर ले लिया। वालक ने लिखा-पढी का कागज राजा के हाथ मे दे दिया। ढुकाव के स्थान पर ज्योही सेठ जी आए, राजा ने लिखा-पढी दिखाकर सारा हाल पूछा। सेठ शर्मिदा हुआ। न्यायी राजा ने अपनी विनोली पोशाक उस वालक को पहनाकर करोडपति की कन्या के साथ उसका व्याह कर दिया और धन देकर उस गरीव को श्रीमत वना दिया। कहा जाता है कि उसी समय से राजा ने प्रतिवन्ध लगा दिया कि अन्तर्जातीय विवाह न किया जाए।

— कालूगणी से श्रुत

१२ न्यायी नसीरुद्दीन (वादशाह) की वेगम रसोई कर रही थी। हाथ जले, दासी रखने के लिए कहा। वादशाह वोला—गरीव को दासी कहा से? खुद मेहनत करो! खजाने का पैसा प्रजा का है।

१३ महाराज रणजीतसिंह एक दिन शिकार करने गए। वह न मिली अत. जगल मे विश्राम करने लगे। एक मिट्टी का ढेला अचानक आ लगा। वुढिया पकडी गई। पूछने पर उसने कहा—हम माँ-वेटे तीन दिनो के भूखे हैं। इसलिए आम खाकर भूख मिटाने की नीयत से मैंने यह ढेला मारा था। दुर्भाग्यवश आपके लग गया। राजा वुढिया की भूख से गद्-गद हो गए एव उसे १०० मोहरें देकर एक महीने के भोजन की व्यवस्था करवाई।

—राष्ट्रदूत, ३ जून, १९७२

७ राजा के धर्म-कर्तव्य

१ प्रजाकार्यं स्वयमेव पश्येत् ।

—नीतिवाक्यामृत, ११।३२

प्रजा का कार्य राजा को स्वयमेव देखना चाहिये ।

२ राज्ञो हि दुष्टनिग्रह-शिष्टपरिपालन धर्मं ।

—नीतिवाक्यामृत, ५।२

दुष्टो का निग्रह एव शिष्टो का पालन करना राजा का धर्म (कर्तव्य) है।

३ दुष्टस्य दण्ड सुजनस्य पूजा, न्यायेन कोपस्य च सप्रवृद्धि ।
अपक्षपातो रिपुराष्ट्र-चिन्ता, पञ्चापि धर्मा नरपुङ्गवानाम् ।

दुष्टो को दण्ड देना, सुजनो की पूजा करना न्याय से खजाने की वृद्धि करना, न्याय करते समय पक्षपात नही करना, रिपुराष्ट्रो की चिंता करते रहना—राजाओ के ये पांच धर्म माने गए हैं ।

४ अपराधानुरूपो दण्ड. पुत्रेऽपि प्रणेतव्यः ।

—नीतिवाक्यामृत, १७।१०

अपराध के अनुरूप दण्ड पुत्र को भी देना चाहिए ।

५ पिता वा यदि वा भ्राता, पुत्रो वा यदि वा सुहृत् ।
नीतिच्छेदकरा राज्ञा, हन्तव्या भूतिमिच्छता ॥

—पद्मचरित्र, पृष्ठ ८६

पिता हो भाई हो, पुत्र हो और चाहे मित्र हो, जो नीति का छेदन करने वाले हो, समृद्धि-इच्छुक राजा को, उन्हे मार देना ही उचित है ।

६ यदवध्यवधात् पापं, वध्यत्यागात् तदेव हि ।

—योगवाशिष्ठ, ३।६०।३

अवध्य का वध करने से जो पाप होता है, वध्य को छोडने से भी राजा के लिए वही पाप माना गया है।

७ प्रजाना रक्षण दानमिज्याध्ययनमेव च।
विषयेष्वप्रशक्तिश्च, क्षत्रियस्य समासत ॥ —मनुस्मृति, ५।८६

महर्षि मनु ने सक्षिप्त रूप से क्षत्रियो के लिये ये पाच कर्म निश्चित किए हैं— (१) प्रजाजनो की रक्षा करना, (२) दान करना, (३) यज्ञ करना, (४) अध्ययन करना (५) विषयो, (गीत-नृत्यादि) मे आसक्त न होना।

८ राजाओ के चिंतन करने योग्य छ गुण—

सधि च विग्रह चैव, यानमासनमेव च।
द्वैधीभाव सश्रय च, षड्गुणाश्चिन्तयेत् सदा ॥
—मनुस्मृति, ७।१६०

सधि (मेल-जोल), विग्रह (लडाई), यान (चढाई), आसन (घेरा डालना), द्वैधीभाव (दो शत्रुओ के बीच फूट डलवाना), सश्रय (बलवान का आश्रय लेना), राजाओं को इन छ गुणो का चिंतन सदा करते रहना चाहिए।

० एकया द्वे विनिश्चित्य, त्रीश्चतुर्भिर्वशे कुरु।
पञ्च जित्वा विदित्वा षट्, सप्त हित्वा सुखी भवे ॥

हे राजन्! एक (बुद्धि) से, दो (कर्तव्य-अकर्तव्य) का निश्चय करके चारो (शाम-दाम-दड-भेद) द्वारा, तीन (शत्रु-मित्र-उदासीन) को वश कर। पाच (इन्द्रियो) को जीतकर, छ गुणो (सधि-विग्रह-आदि) को समझकर एव सात व्यसनो को छोडकर सुखी बन।

६ राजाओ के त्यागने योग्य सात व्यसन—

स्त्रियोऽक्षा मृगया पान, वाक्पारुष्य च पञ्चमम्।
महच्च दण्डपारुष्य-मर्थदूषणमेव च ॥
—विदुरनीति, १।६७

(१) स्त्रियो का अधिक ससर्ग, (२) जुआ खेलना, (३) शिकार खेलना, (४) शराब आदि नशीली चीजे पीना, (५) कटु वचन बोलना, (६) बड़ा कठोर दण्ड देना और (७) धन का अपव्यय करना। राजा को ये व्यसन छोड देने चाहिए।

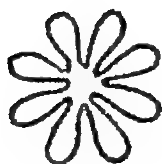
१० न्याय की सात बातें—

प्रथम अकल वहू होय, लोभ मन रती न राखै।
भय न जवर को करै, दीन-खल दया न दाखै।
शत्रुन को उर आन, शत्रु को शत्रु न जाने।
मित्रन को उर आन, मित्र को मित्र न माने।
आलस न करे नृप एक छिन, सवे कम्मर प्रभु माफ की।
प्रताप वदै निश्चय किया, सात वात इन्साफ की।

११ मन्त्रपूर्वः सर्वो व्यापारः क्षितिपतीनाम्।

—नीतिवाक्यामृत, १०।२२

राजाओं को अपने समस्त कार्यों (सधि, विग्रह, यान आसन, सश्रय और द्वैधीभाव) का प्रारम्भ मन्त्रपूर्वक सुयोग्य मन्त्रियों के साथ निश्चित करके करना चाहिए।



८ राजा की कमियाँ

१ पर्वता इव राजानो दूरत- सुन्दरा लोके ।

—नीतिवाक्यामृत, ३२।३३

पर्वतो की तरह राजा दूर मे ही अच्छे लगते हैं ।

२ काके शौचं द्यूतकारे च सत्य,
मर्पे क्षान्ति स्त्रीषु कामोपशान्ति ।
क्लीबे धैर्यं मद्यपे तत्त्वचिन्ता,
राजा मित्र केन दृष्ट श्रुत वा ।

—पञ्चतत्र, १।१५८

क्या किसी ने काक मे शुद्धि, जुआरियो मे सत्य, साप मे क्षमा, स्त्रियो मे विकार की शाति, नपुसको मे धैर्य, मद्यपान करने वालो मे तत्त्वचिन्तन तथा राजा मे मित्रता, ये गुण देखे-सुने हैं ? अर्थात् प्राय देखने-सुनने मे नहीं आते ।

३ गणयन्ति न राज्याग्रेऽपत्यस्नेह महीभुजः ।

राजा लोग राज्य के लिये सन्तान का स्नेह भी नही गिनते ।

४ राजा काना रा काचा ।

—राजस्थानी कहावत

५ राजानी माया ते ताडनी छाया ।

० राजानी कृपा ते ठीकरे दूध ।

० राजा, वाजा ने वानरा जेम भमावे तेम भमे ।

—गुजराती कहावतें

६ केवलिया किसी का काका भी नही और मामा भी नही ।

—हिन्दी कहावत

७ रामरै घर रो आईज्यो पण राजरै घर रो मत आईज्यो।

—राजस्थानी कहावत

८ राजपूतो के प्रति व्यंग—

(क) राजपूत ते गरजपूत।

— गुजराती कहावत

(ख) दारु मास दपट्ट, अमल अणमाप अरोगै।
चंवरपोस स्यू' चीठ, भँवर मादक सुख भोगै॥
परणी नें परिहरै, गैर सुत गोदी धारै।
जोवनवय मे जोध, सटक सुरलोक सिधारै॥
शश-शिकार तीतर सुभट, कुरजा ,चिडी-कबूतरा।
भाया स्यू नित उठ भिडै, परम धरम रजपूतरा॥

— भाषाश्लोकसागर



९ अयोग्य राजा

१ स किं राजा, यो न रक्षति प्रजा ।

—नीतिवाक्यामृत, ७।२१

वह राजा क्या काम का, जो प्रजा की रक्षा नही करता ।

२ स खलु नो राजा, यो मन्त्रिणोऽतिक्रम्य वर्तते ।

—नीतिवाक्यामृत, १०।५८

जो राजा मन्त्रियो की वात का उल्लघन करता है, वह राजा नही रह सकता ।

३ क्षितिपति को नाम नीति विना ।

—सुभाषितरत्नखण्डमजूषा

नीति विना का राजा क्या काम का ।

४ अन्यायं कुरुते यदा क्षितिपति कस्त निरोद्धु क्षम ।

—सुभाषितरत्नखंडमजूषा

जव राजा ही अन्याय करने लग जाए तो फिर उसे रोकने वाला है ही कौन !

५ स्थाल्येव भक्त चेत् स्वयमश्नाति, कुतो भोक्तु भुक्ति ।

— नीतिवाक्यामृत, १०।१०८

यदि खुद थाली ही खाने लग जाय तो खाने वाला कहा से खाए ।

६ समुद्रस्य पिपासाया कुतो जगति जलानि ।

—नीतिवाक्यामृत, ८।७

यदि समुद्र ही प्यासा हो जाए तो फिर जगत मे पानी कहा से आए !

७ आग जले तो जल को कहू, जल जले तो किसको कहू ?

— हिन्दी पद्य

८ वाड चीभडा गले तो धणी ने शु पाके।
राजा कई लूंटी ले तो रैयत कोनी आगल जई कहे।

—गुजराती कहावतें

९ अन्यायी राजा की गति—

(क) मोहाद् राजा स्वराष्ट्रं यः, कर्षयत्यनवेक्षया।
सोऽचिराद् भ्रश्यते राज्याद्, जीविताच्च सवान्धव।

—मनुस्मृति, ७।१११

जो राजा अज्ञानवश धन लेकर या मार-पीटकर अपने देश को पीडित करता है, वह स्वजन-वान्धवो सहित शीघ्र ही राज्य और जीवन से भ्रष्ट हो जाता है।

(ख) जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी,
सो नृप अवसि नरक-अधिकारी।
मोचिय नृपति जो नीति न जाना,
जेहि न प्रजा प्रिय प्रान समाना।

—रामचरितमानस-अयोध्याकाण्ड

१० **मूर्खराजा की विचित्र खीझ और रीझ**।—पुराने जमाने मे एक राजा अत्यन्त ऋद्धिशाली था। उसकी सवारी के समय हाथी को अत्यधिक शृंगारा जाता था। हाथी पर एक झूल ओढ़ाई जाती थी, उसमे लाखो की कीमत के सैकडो रत्न लगे हुए थे। एक दिन धूम-धाम से राजा की सवारी निकल रही थी। उस समय एक नाई ने झूल का एक रत्न चुरा लिया। पता लगते ही खीझकर राजा ने हुक्म दिया कि इसे तालाव में डुवो-डुवोकर मार दो। बस, नाई की मौत आ गई। राजा के सिपाहियो ने उसे तालाव मे डुवो-डुवोकर मृतप्राय कर दिया।

आखिर नाई के दिमाग मे एक वात आई। उसने सिपाहियो से कहा—मुझे एक वार महाराज के दर्शन करवा दो। ज्योंही उसे राजा के सामने लाया गया, उसने चिल्लाकर कहा—हजूर! मैंने सुना था कि आपकी रीझ व खीझ दोनों विचित्र हैं। दुर्भाग्यवश खीझ तो मैंने देख ली है

लेकिन रीझ देखने का मौका नही मिल सका। अगर विना देखे मर गया तो मेरे मन की मन मे ही रह जायेगी। राजा बोला—अच्छा ऐसी वात है ? तो, लो ! दिखलाता हूँ अपनी विचित्र रीझ। वस, तत्काल उसी झूल से हाथी सजाया गया और नाई को उस पर विठाकर गाजे-वाजे से सवारी निकाली गई। फिर झूलसहित हाथी को वख्शीश देकर नाई को सदा के लिए अपने घर भेज दिया गया। अस्तु ! (राजा की मूर्खता तथा नाई की वुद्धिमत्ता विचित्र थी)।

११ वरमराजकं भुवन न तु मूर्खो राजा।

— नीतिवाक्यामृत, ३८।२३

अराजकता अच्छी है किंतु मूर्ख राजा का होना अच्छा नही।



१० राजाओं के प्रकार

१ राजा, महाराजा, माडलिक, सम्राट्, वासुदेव, वलदेव, प्रतिवासुदेव, चक्रवर्ती एव धर्मचक्रवर्ती। इस तरह राजा अनेक प्रकार के होते है।

२ **राजा**—किसी देश या जाति का प्रधान शासक राजा कहलाता है।

महाराजा - वडे राजा को महाराजा कहते हैं।

माडलिक—किसी मडल या प्रात का शासक माडलिक कहा जाता है।

सम्राट्—अनेक राजाओ पर शासन करने वाला राजा सम्राट् माना जाता है।

—नालन्दा-विशालशब्द-सागर के आधार से

३ **वासुदेव**—वासुदेव पूर्वभव मे अवश्य निदान (नियाणा) करके आते है। इनके शरीर का वर्ण कृष्ण होता है। इनमे वीस लाख अष्टापद जितना वल होता है और प्रतिवासुदेव को मारकर ये त्रिखण्डाधीश वनते है। सोलह हजार देश इनके अधीन होते है, सोलह हजार नरेश एव आठ हजार देवता इनकी सेवा करते हैं। इनके सोलह हजार रानिया होती हैं, चक्र-खड्ग आदि सात रत्न होते हैं तथा इनकी माता सात स्वप्न देखती है।

४ **वलदेव**—ये वासुदेव के मातेर-वडे भाई होते है। छोटे भाई के साथ इनका इतना अधिक प्रेम होता है कि मरने के बाद छ महीनो तक उसके शरीर को अपने पास रखते है एव प्रेमवश उसे जीवित ही समझते हैं। इनकी माता चार स्वप्न देखती है। इनमे दस लाख अष्टापद की ताकत होती है। चार हजार देवता इनकी सेवा करते है। हल-मूसल आदि इनके शस्त्र होते हैं। अधिक प्रेम होने के कारण दोनो भाई साथ ही राज्य

करते हैं। वासुदेव की मृत्यु के बाद बलदेव दीक्षा लेते हैं और घोर तपस्या करके कई मोक्षगामी एव कई स्वर्गगामी होते हैं।

५ प्रतिवासुदेव - ये भी पूर्वजन्म मे नियाणा करके आते हैं और प्राय तीन खण्ड के राजा होते हैं। इनकी ऋद्धि वासुदेव से कुछ कम होती है। ये निश्चित रूप से वासुदेव के हाथ से मारे जाते हैं एव नरक मे जाते हैं।

६ चक्रवर्ती—मनुष्यलोक के सबसे बड़े राजा को चक्रवर्ती कहते हैं। ये समूचे भरत के, ऐरावत के अथवा महाविदेह की एक विजय के स्वामी होते हैं। गर्भ मे अवतरते समय इनकी माता १४ स्वप्न देखती हैं। बत्तीस हजार देशो पर इनका अधिकार होता है। बत्तीस हजार नरेश इनकी आज्ञा शिरोधार्य करते हैं। पच्चीस हजार देवता इनकी सेवा मे रहते हैं। नवनिधान व चौदह रत्न इनके हाजिर रहते हैं। इनके चौसठ हजार रानिया होती हैं। बीस-बीस हजार सोने-चाँदी की एव सोलह हजार रत्नो की खानें होती हैं। चौरासी-चौरासी लाख हाथी-घोड़े और साग्रामिक रथ होते हैं। छियानवे करोड पैदल सेना होती है, निन्नाणवें लाख अगरक्षक होते हैं, सोलह हजार मत्री होते हैं तथा चालीस लाख अष्टापद जितना इनमे बल होता है। मनुष्यलोक मे चक्रवर्ती, वासुदेव, बलदेव एव प्रतिवासुदेव जघन्य बीस और उत्कृष्ट एक-सौ पचास तक हो सकते हैं।

७ धर्मचक्रवर्ती (तीर्थंकर)—जो विशेष त्याग-तपस्यादि द्वारा तीर्थंकर नाम-कर्म का उपार्जन करके तीसरे भव मे माता को १४ स्वप्न दिखाकर राजकुल मे जन्म लेते हैं। फिर कई राज्य करके एव कई बिना राज्य किये (कुमारावस्था मे) ही सयम लेकर घातिक कर्मों का नाश करके केवलज्ञानी बनते हैं एव साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका रूप चार तीर्थों की स्थापना करते हैं, वे तीर्थंकर कहलाते हैं। उनमे चौंतीस अतिशय (विशेषताए) होती हैं, उनकी वाणी मे पैंतीस गुण होते हैं तथा उनके शरीर मे एक हजार आठ शुभ लक्षण होते हैं। तीर्थंकर जघन्य बीस और उत्कृष्ट एक-सौ सत्तर होते हैं।

- लोकप्रकाश, पुञ्ज ४

८ जंबूद्वीप के भरतक्षेत्र मे इस अवसर्पिणी काल मे नव वासुदेव, नव बलदेव, नव प्रतिवासुदेव, बारह चक्रवर्ती एव चौबीस तीर्थंकर हुए हैं। समवायांग सूत्र के अनुसार उनके नाम इस प्रकार हैं—

नव वासुदेव :—

(१) त्रिपृष्ठ	(२) द्विपृष्ठ
(३) स्वयभू	(४) पुरुषोत्तम
(५) पुरुषसिंह	(६) पुरुषपुण्डरीक
(७) दत्त	(८) लक्ष्मण
(९) कृष्ण	

नव बलदेव :—

(१) अचल	(२) विजय
(३) भद्र	(४) सुप्रभ
(५) सुदर्शन	(६) आनन्द
(७) नन्दन	(८) राम
(९) बलभद्र	

नव प्रतिवासुदेव :—

(१) अश्वग्रीव	(२) तारक
(३) मेरक	(४) मधु
(५) निशुम्भ	(६) बलि
(७) प्रह्लाद	(८) रावण
(९) जरासन्ध	

बारह चक्रवर्ती :—

(१) भरत	(२) सगर
(३) मघव	(४) सनत्कुमार
(५) शान्ति	(६) कुन्थु
(७) अर	(८) सुभूम
(९) महापद्म	(१०) हरिषेण
(११) जयसेन	(१२) ब्रह्मदत्त

चौवीस तीर्थंकर :—

(१) ऋषभ प्रभु
(२) अजित प्रभु
(३) सभव प्रभु
(४) अभिनन्दन प्रभु
(५) सुमति प्रभु
(६) पद्मप्रभ प्रभु
(७) सुपार्श्व प्रभु
(८) चन्द्रप्रभ प्रभु
(९) सुविधि प्रभु
(१०) शीतल प्रभु
(११) श्रेयास प्रभु
(१२) वासुपूज्य प्रभु
(१३) विमल प्रभु
(१४) अनन्त प्रभु
(१५) धर्म प्रभु
(१६) शान्ति प्रभु
(१७) कुन्थु प्रभु
(१८) अर प्रभु
(१९) मल्लि प्रभु
(२०) मुनिसुव्रत प्रभु
(२१) नमि प्रभु
(२२) अरिष्ठनेमि प्रभु
(२३) पार्श्व प्रभु
(२४) महावीर प्रभु

५ शलाकापुरुष —नव वलदेव, नव वासुदेव, नव प्रतिवासुदेव, वारह चक्रवर्ती, चौवीस तीर्थंकर—ये तिरेसठ विश्व मे शलाका पुरुप माने जाते हैं। इनके परस्पर मिलने के विपय मे यह मान्यता है कि तीर्थंकर-तीर्थंकर, चक्रवर्ती-चक्रवर्ती, वासुदेव-वासुदेव तथा वासुदेव-चक्रवर्ती प्राय. कभी नही मिल सकते।

—लोकप्रकाश, पु ज ४

११ राज-गुरु

१ वंश-वृत्त-विद्याभिजनविशुद्धा राज्ञामुपाध्याया. ।

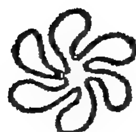
—नीतिवाक्यामृत, ५।१३

राजगुरु वंश, चरित्र, विद्या एवं कुल से विशुद्ध होने चाहिए ।

पुरोहितमुदितोदितकुल—शील षडङ्गवेदे दैवे निमित्ते
दंडनीत्यामभिनीतमापदा, दैवीना मानुषीणा च प्रतिकर्तार कुर्वीत ।

—नीतिवाक्यामृत, ११।१

जो कुलीन, सदाचारी और छह वेदांग (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द एवं ज्योतिष) चार वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद अथर्ववेद एवं सामवेद अथवा प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग और द्रव्यानुयोग), ज्योतिष, निमित्त ज्ञान और दंडनीति-विद्या मे प्रवीण हो एवं दैवी (उल्कापात-अतिवृष्टि-अनावृष्टि आदि) तथा मानुषी आपत्तियो को दूर करने मे समर्थ हो—ऐसे विद्वान् पुरुष को राजपुरोहित-राजगुरु बनाना चाहिए ।



१२ राज-मंत्री

१ अम्भासि जलजन्तूना, दुर्गं दुर्गनिवासिनाम्।
स्वभूमि श्वापदादीना, राज्ञा मन्त्री पर बलम्।

—सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृष्ठ १७०

जैसे—मत्स्यादि जलजन्तुओ का बल पानी है, दुर्गनिवासियो का बल दुर्ग—किला है और श्वापद—हिंसक पशुओ का बल भूमि है, उसी प्रकार राजाओ का बल मन्त्री माना गया है।

२ अमात्यमुख्य धर्मज्ञ प्राज्ञं, दान्त कुलोद्भवम्।
स्थापयेदासने तस्मिन्, खिन्न कार्येक्षणे नृणाम्।

—मनुस्मृति, ७।१४०

राजकार्य की देख-भाल मे खिन्न होने पर राजा को अपने आसन पर प्रधानमन्त्री को स्थापन कर देना चाहिए लेकिन वह मन्त्री धर्मज्ञ, प्राज्ञ, दान्त एव कुलीन होना चाहिए।

३ राज्ञो हि मन्त्रिपुरोहितौ मातापितरौ अतस्तौ न केषुचिद् वाञ्छितेषु निरस्तयेत्।

—नीतिवाक्यामृत, ११।२

मन्त्री-पुरोहित हितैषी होने के कारण राजा के माता-पिता हैं, इसलिए उनको किसी भी अभिलषित पदार्थ मे निराश नही करना चाहिए।

४ मन्त्रिणो राजद्वितीयहृदयत्वान्न केनचित् सह ससर्गं कुर्युः।

—नीतिवाक्यामृत १०।५५

मन्त्री लोग राजा के दूसरे हृदयरूप होते हैं। इसलिए उन्हें किसी के साथ स्नेहादि सम्बन्ध न रखना चाहिए।

१३ मंत्री कितने हों ?

१ एको मंत्री न कर्तव्य. ॥६६॥

एको हि मन्त्री निरवग्रहश्चरति मुह्यति च कार्येषु कृत्स्नेषु ॥६७॥

—नीतिवाक्यामृत, १०

राजा को केवल एक ही मन्त्री नही रखना चाहिए क्योकि अकेला मन्त्री स्वतन्त्र होने से निरकुश हो जाता है। इसलिए वह अपनी इच्छा के अनुसार राजा का विरोधी होकर हरएक कार्य कर डालता है। और विकट परिस्थिति मे निश्चय करने योग्य कार्यों मे मोह (अज्ञान) को प्राप्त हो जाता है।

२ त्रय· पंच सप्त वा मन्त्रिणस्तै· कार्याः।

—नीतिवाक्यामृत, १०।११

राजाओ को तीन, पांच या सात मन्त्री नियुक्त करने चाहिए। सारांश यह है कि विषम सख्यावाले मन्त्रिमडल का परस्पर एक मत होना कठिन है। इसलिए वे राज्य के विरुद्ध षड्यन्त्र करने मे असमर्थ रहते हैं।

३ परस्परकलहो नियोगिषु भूभुजा निधि ।

नीतिवाक्यामृत

मन्त्रियो की आपसी अनबन राजाओ की निधि मानी गई है।

१४ अयोग्य मंत्री

१ स मन्त्री शत्रुर्यो नृपेच्छयाऽकार्यमपि कायतयाऽनुशास्ति ।

—नीतिवाक्यामृत १०।५२

वह मन्त्री शत्रु है, जो राजा की इच्छा के अनुसार अकार्य को भी कार्य-रूप मे अनुशामित करने लगता है ।

२ वैद्यो गुरुश्च मन्त्री च यस्य राज्ञ प्रियवदा ।
शरीर-धर्म-कोपेभ्य, स क्षिप्र परिहीयते ॥

—हितोपदेश, ३।१०४

जिम राजा के वैद्य, गुरु और मन्त्री मीठी वात करने वाले हो, वह राजा शरीर, धर्म एव कोप मे शीघ्र ही क्षीण हो जाता है ।

३ शस्त्राधिकारिणो न मन्त्राधिकारिण स्यु ।

—नीतिवाक्यामृत, १०।१०१

शस्त्र-सचालन करने वाले अर्थात् केवल वीरता प्रकट करने वाले क्षत्रिय लोग मत्रणा करने के योग्य नही हैं ।

४ दुर्मन्त्री राज्यनाशाय ।

—सुभाषितरत्नभाडागार

दुष्ट मत्री राज्य का नाश कर देता है ।

५ कुमत्री राज्यस्य दूषणम् ।

दुष्ट मत्री राज्य का एक दोप है ।

६ धूर्त स्त्री वा शिशुर्यस्य, मन्त्रिण स्युर्महीपते ।
अनीतिपवनक्षिप्त कार्याब्धौ स निमज्जति ॥

—हितोपदेश, ३।१३१

जिस राजा के धूर्त, स्त्री अथवा बालक मन्त्री हो, वह अनीतिरूपी पवन से उडाया हुआ कार्यरूपी समुद्र मे डूब जाता है।

७ स किं भृत्य. स किं मन्त्री, य आदावेव भूपतिम्।
युद्धोद्योग स्वभूत्यागं, निर्दिशत्यविचारितम्॥

— हितोपदेश, ३।३८

जो पहले ही राजा को बिना विचारे युद्ध के उद्योग का और अपनी भूमि के त्याग का उपदेश करता है, वह निंदित सेवक तथा निन्दित मन्त्री है।



१५ राजदूत

१ दूत एव हि संधत्ते, भिनत्त्येव च संहतान् ।
दूतस्तत्कुरुते कर्म, भिद्यन्ते येन मानवा ॥

—मनुस्मृति, ७।६६

दूत ही बिगड़े हुओ को मिलाता है और मिले हुओं को फोडता है। दूत ऐसा काम करता है, जिससे (शत्रु-पक्ष का) जन-बल छिन्न-भिन्न हो जाता है।

२ दूतं चैव प्रकुर्वीत, सर्वशास्त्रविशारदम् ।
इङ्गिताकारचेष्टज्ञं, शुचिं दक्षं कुलोद्गतम् ॥

—मनुस्मृति, ७।६३

जो सब शास्त्रो मे कुशल, इंगित (इशारा), आकार (मुख-नेत्र के भाव) और चेष्टा मे मन का भाव समझने वाला, पवित्र चरित्र, चतुर और कुलीन हो, उसे राजदूत बनाना चाहिए।

३ अनुरक्त: शुचिर्दक्ष:, स्मृतिमान् देश-कालवित् ।
वपुष्मान् वीतभीर्वाग्मी, दूतो राज्ञ: प्रशस्यते ॥

—मनुस्मृति, ७।६४

अपने स्वामी मे अनुरक्त, पवित्र हृदय, दक्ष, स्मरण शक्तिवाला, देश-काल का ज्ञाता, सुन्दर शरीर वाला, निर्भय और वक्ता—इन गुणो वाला राजदूत प्रशंसनीय माना गया है।

४ स्वामिभक्तिरव्यसनिता, दाक्ष्य, शुचित्वममूर्खता, प्रागल्भ्य, प्रतिभावत्त्व, क्षान्ति, परमर्मवेदित्व, जातिश्च प्रथमे दूतगुणा ।

—नीतिवाक्यामृत, १३।२

स्वामिभक्त, द्यूतक्रीडन—मद्यपानादि व्यसनो मे अनासक्त, चतुर, पवित्र, निर्लोभी, निर्मल शरीर तथा शुद्ध वस्त्रयुक्त, विद्वान्, उदार, बुद्धिमान, सहिष्णु, परमर्म का ज्ञाता और कुलीन—ये दूत के मुख्य गुण हैं।

५ अनासन्नेष्वर्थेषु दूतो मन्त्री।

—नीतिवाक्यामृत, १३।१

राजा का दूर देश सम्बन्धी कार्य (सन्धि-विग्रहादि) दूत द्वारा ही सिद्ध होता है, अत वह मन्त्री तुल्य माना गया है।

६ दूत के तीन प्रकार —

स त्रिविधो, निसृष्टार्थ, परिमितार्थः, शासनहरश्चेति।

— नीतिवाक्यामृत, १३।३

दूत तीन प्रकार का होता है —(१) निसृष्टार्थ, (२) परिमितार्थ, (३) शासनहर।

जिसके द्वारा निश्चित किये हुए संधि-विग्रह को उसका स्वामी प्रमाण मानता है, वह निसृष्टार्थ है। जैसे—पाडवो के श्रीकृष्ण।

इसी प्रकार राजा द्वारा भेजे हुए सदेश और शासन (लेख) को ज्यो का त्यो शत्रु के पास कहने या देने वाले दूत को क्रमश परिमितार्थ एव शासनहर जानना चाहिए।

७ दूत अवध्य —

उद्यतेष्वपि शस्त्रेषु वन्धुवर्गवधेष्वपि।
परुषाण्यपि जल्पन्तो, वध्या दूता न भूभुजा।

—पञ्चतन्त्र, ३।८८

राजदूत राजा के लिए अवध्य होते हैं। चाहे वे शस्त्र उठा लें, वन्धुवर्ग का वध कर दें या कटुवचन बोल जाए।

१६ विदेशों में भारतीय दूतावास एवं उच्चायुक्त

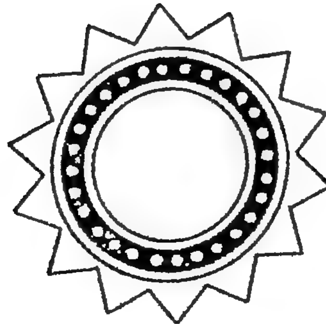
१ अफगानिस्तान
२ अलजीरिया
३ अर्जेण्टाइना
४ आस्ट्रिया
५ वेलजियम
६ ब्राजील
७ वर्मा
८ कम्बोडिया
९ चिली
१० चीन
११ कांगो
१२ चैकोस्लोवाकिया
१३ डेनमार्क
१४ इथोपिया
१५ फिनलैंड
१६ फ्रांस
१७ जर्मनी
१८ गुएना
१९ हंगरी
२० इंडोनेशिया
२१ ईरान
२२ ईराक
२३ आयरलैंड
२४ इटली
२५ जापान
२६ कुवैत
२७ लाओस
२८ लेवनान
२९ मालागासे
३० मैक्सिको
३१ मोरक्को
३२ नेपाल
३३ नीदरलैंड
३४ नार्वे
३५ फिलीपीन्स
३६ पोलैंड
३७ रूमानिया
३८ सऊदी अरब
३९ सेनेगाल
४० सोमालिया
४१ दक्षिणी यमन
४२ स्पेन
४३ सूडान
४४ स्वीडन
४५ स्विट्जरलैंड
४६ सीरियन अरब गणराज्य

४७ थाईलैंड
४८ तुर्की
४९ सयुक्त अरब गणराज्य
५० सयुक्त राज्य अमेरिका
५१ रूस
५२ यूगोस्लाविया

उच्चायुक्त

१ आस्ट्रेलिया
२ कनाडा
३ श्रीलका
४ घाना
५ गुयाना
६ केन्या
७ मलावी
८ मलेशिया
९ मारीशस
१० न्यूजीलैंड
११ नाइजीरिया
१२ पाकिस्तान
१३ सिंगापुर
१४ तजानिया
१५ ट्रिनिडाड एण्ड टोवेगो
१६ युगाडा
१७ ब्रिटेन
१८ जाविया

—भारतज्ञानकोष, सन् १९७१-७२



१७ भारत में विदेशी दूतावास एवं उच्चायुक्त

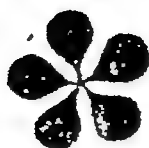
१ अफगानिस्तान
२ अलजीरिया
३ अर्जेण्टाइना
४ आस्ट्रिया
५ वेलजियम
६ ब्राजील
७ वर्मा
८ कम्बोडिया
९ चिली
१० चीन
११ कोलविया
१२ कांगो
१३ क्यूबा
१४ चैकोस्लोवाकिया
१५ डेनमार्क
१६ इथोपिया
१७ फिनलैंड
१८ फ्रास
१९ जर्मनी
२० ग्रीस
२१ हगरी
२२ इडोनेशिया
२३ ईरान
२४ ईराक
२५ आयरलैंड
२६ इटली
२७ जापान
२८ जोर्डन
२९ कुवैत
३० लाओस
३१ लेवनान
३२ मेक्सिको
३३ मगोलिया
३४ मोरक्को
३५ नेपाल
३६ नीदरलैंड
३७ नार्वे
३८ पेरू
३९ फिलीपीन्स
४० पोलैंड
४१ रूमानिया
४२ सऊदी अरव
४३ स्पेन
४४ सूडान
४५ स्वीडन
४६ स्विट्जरलैंड

४७ सीरियाई अरब गणराज्य
४८ थाईलैंड
४९ तुर्की
५० रूस
५१ सयुक्त-अरब गणराज्य
५२ सयुक्त राज्य अमेरिका
५३ उरुग्वे
५४ वेनेजुएला
५५ यूगोस्लाविया
५६ बल्गारिया

उच्चायुक्त

१ आस्ट्रेलिया
२ ब्रिटेन
३ कनाडा
४ श्रीलका
५ घाना
६ मलेशिया
७ मारीशस
८ न्यूजीलैंड
९ नाइजीरिया
१० पाकिस्तान
११ सिगापुर
१२ तजानिया
१३ युगाडा

—भारतज्ञानकोष, सन् १९७१-७२



राज-कर्मचारी

१ अधिकारमद पीत्वा, को न मुह्यात् पुनश्चिरम् ।

—शुक्रनीति

अधिकार रूपी मद्य पीकर कौन पागल नही होता ।

२ राज्ञो हि रक्षाधिकृता, परस्वादायिन॰ शठा ।
भृत्या भवन्ति प्रायेण, तेभ्यो रक्षेदिमाः प्रजा ॥

—मनुस्मृति, ७।१२३

राजकर्मचारी प्राय परधन को लेने वाले एव वचक—ठग होते हैं । अतः उनसे प्रजा को बचाना चाहिये ।

३ किसी भी राज्य को चलाने के लिए अच्छे कानूनो की उतनी जरूरत नही है, जितनी अधिक अच्छे अधिकारी की ।

—अरस्तू

४ नालम्पटोऽधिकारी ।

—नीतिवाक्यामृत, १०।१०५

जो मनुष्य नि स्पृह (धनादि की चाह नहीं रखने वाला) होता है, वह अधिकारी (मन्त्री आदि कर्मचारी) नही हो सकता ।

५ पुलिस की बुराइयां—रिश्वत, मद्यपान, जुआ, व्यभिचार एव चोरो से मिलना ।

६ जो नृप से अधिकार ले, करे न पर-उपकार ।
पुनि ताके अधिकार मे, आदि न रहत अकार ॥

७ यस्यानियमित कर्म, साधुत्व वचनेष्वपि ।
सदैव कुटिल सोऽय, स्वपदाद् द्राग् विनश्यति ॥

—शुक्राचार्य

जिसके कार्य नियमित न हो और सज्जनता केवल वचन मे हो, वह कुटिल अधिकारी अपने पद से शीघ्र ही पतित हो जाता है ।



१६ गुप्तचर

१ स्व-परमण्डलकार्याकार्यावलोकने चारा खलु चक्षूंषि क्षितिपतीनाम् ।१।
अलौल्यममान्द्यममृषाभाषित्वमभ्यूहकत्व चारगुणा· ।२।
तुष्टिदानमेव चाराणा वेतनम् ।३।
ते हि तल्लोभात् स्वामिकार्येषु त्वरन्ते ।४।

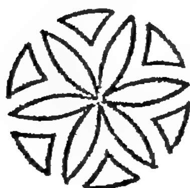
—नीतिवाक्यामृत, १४

गुप्तचर स्वदेश-परदेश सम्बन्धी कार्य-अकार्य का ज्ञान करने के लिए राजाओ के नेत्र हैं । (१)

सन्तोष, आलस्य का न होना, उत्साह अथवा नीरोगता, सत्यभाषण और विचारशक्ति—ये गुप्तचरो के गुण हैं । (२)

कार्य-सिद्धि हो जाने पर राजा द्वारा जो सन्तुष्ट होकर प्रचुर धन दिया जाता है, वही गुप्तचरो का वेतन है । (३)

क्योकि उस धन-प्राप्ति के लोभ से ही वे लोग अपने स्वामी की कार्य सिद्धि शीघ्रता से करते हैं । (४) ।



२० प्रजा

१ राष्ट्राणि वै विश ।

—ऐतरेयब्राह्मण, ८।२६

प्रजा ही राष्ट्र है।

२ विशि राजा प्रतिष्ठित ।

—यजुर्वेद, २०।९

राजा की स्थिति प्रजा पर ही निर्भर है।

३ विशस्त्वा सर्वा वाञ्छन्तु ।

—अथर्ववेद, ४।८।४

हे राजन् ! समस्त प्रजा तुम्हे चाहती रहे।

४ त्वा विशो वृणता राज्याय ।

—अथर्ववेद, ३।४।२

हे राजन् ! प्रजाओं द्वारा ही तुम राज्य के लिए चुने जाओ।

५ ध्रुवाय वै समिति कल्पतामिह

—अथर्ववेद, ३।४।२

तुम्हारी अविचल स्थिति समिति—लोकसभा पर ही निर्भर है।

६ दुनिया मे सबसे बडी शक्ति है लोकमत, और वह सत्य-अहिंसा से ही पैदा हो सकती है।

—गांधी

७ प्रजा सुखे सुख राज्ञ, प्रजाना च हिते हितम् ।
नात्मप्रिय प्रियं राज्ञ, प्रजाना तु प्रिय प्रियम् ॥

—कौटिलीय अर्थशास्त्र, १।१९

प्रजा के सुख मे राजा का सुख है और प्रजा के हित मे राजा का हित है। अपना प्रिय कार्य वस्तुत राजा को प्रिय नही होता किन्तु प्रजा का प्रिय कार्य ही प्रिय होता है।

८ प्रजा न रञ्जयेद् यस्तु, राजा रक्षादिभिर्गुणै ।
अजागलस्तनस्येव, तस्य जन्म निरर्थकम् ॥१२१॥
प्रजापीडनसतापात्, समुद्भूतो हुताशन ।
राज्ञ कुल श्रिय प्राणान्, नादग्ध्वा विनिवर्तते ॥१२३॥
हिरण्यधान्यरत्नानि, गजेन्द्राश्चापि वाजिन ।
तथान्यदपि यत्किंचित्, प्रजाभ्य स्यान्महीपते ॥१२६॥

—सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृ० १५१

जो राजा प्रजा को प्रसन्न नही रखता, उसका जन्म बकरी के गलस्तन की की तरह व्यर्थ है ॥१२१॥

प्रजा के सन्ताप की आग इतनी भयंकर है कि वह राजा के कुल, लक्ष्मी यावत् प्राणो तक को भस्म कर डालती है ॥१२३॥

हिरण्य, धान्य, रत्न, हाथी, घोडा एव अन्य सभी वस्तुएँ राजा को प्रजा से ही प्राप्त होती हैं ॥१२६॥

९ हिन्दुस्तान के बादशाह ने एक पत्र देकर अपना दूत चीनपति के पास भेजा। उसमे लिखा था—आप लोग अधिक कैसे जीते हैं? चीननरेश ने पढकर कहा—पाच सौ वर्ष पुराना वडवृक्ष जल जाने के बाद उत्तर दूँगा। आगतुक अत्र हरदम यही भावना करने लगे कि यह वड जल्दी से जले तो ठीक। बस, दो ही महीने मे वह वृक्ष जल गया। अब उत्तर माँगा। बादशाह ने कहा—प्रजा का प्रेम बढाओ एव उसका आशीर्वाद प्राप्त करो। हम इसी से अधिक जीते हैं।

२१ यथा राजा तथा प्रजा

१ प्रभुचित्तमेव हि जनोऽनुवर्तते ।

—शिशुपालवध

लोक राजा के चित्त के पीछे ही चला करते हैं।

२ यथाभूमिस्तथा तोय, यथा बीज तथाङ्कुर ।
यथा शास्त्र तथा कर्म, यथा राजा तथा प्रजा ।

भूमि के अनुसार पानी निकलता है। बीज के अनुसार अकुर होता है। शास्त्र के अनुसार कर्म किया जाता है। और राजा के अनुसार प्रजा चला करती है।

३ राज्ञि धर्मिणि धर्मिष्ठा, पापे पापा समे समा ।
राजानमनुवर्तन्ते, यथा राजा तथा प्रजा ।

—चाणक्यनीति, १३।७

राजा धर्मी होने पर प्रजा धर्मी, पापी होने पर पापी और सम होने पर सम होती है, क्योंकि प्रजा राजा के पीछे ही चला करती है। जैसा राजा होता है, वैसी ही प्रजा होती है।

४ तोते की करामात—दो मित्र थे—एक के पास घोड़ी थी और दूसरे के पास गाय। एक दिन रात को दोनों ही एक साथ ब्या गईं। गाय का मालिक जाग रहा था। उसकी नीयत बिगड़ गई। उसने जाते ही अपने बछड़े को घोड़ी के स्तनों से और घोड़ी के बछेड़े को गाय के स्तनों से जोड़ दिया। अबोध बच्चे अज्ञानवश उन्हें ही अपनी माता समझकर स्तन-पान करने लगे। ज्योंहि मित्र जागा धूर्तमित्र ने चिल्लाकर कहा - भाई! हलाहल कलियुग आ गया अत अनहोनी बातें होने लगी हैं। देख! घोड़ी के बछड़ा और गाय के बछेड़ा उत्पन्न हो गया। मित्र ने कहा—ऐसा

असभव बात नही हो सकती। बस, बात ही बात मे विवाद बढ गया। घोडी के मालिक ने पचो एव राजा के आगे पुकार की लेकिन कुछ भी सुनाई नही हुई। आखिर बेचारा हार कर घोडी और बछडे को लेकर उन्हे चराने जगल मे जाने लगा अपनी किस्मत को रोने लगा।

एक दिन एक तोते ने आकर मनुष्य-वाणी से उसका दुख पूछा। बेचारे ने रोते हुए अपनी कर्म कहानी सुनाई। तोते ने कहा—मैं तेरा न्याय करवा दूंगा, तू मेरे शरीर को काला कर दे। उसने काजल आदि से उसका (गर्दन और चोच को छोडकर) सारा शरीर काला कर दिया। तोता राजदरबार मे पहुचा। कृष्णवर्ण देखकर राजा विस्मित हुआ और पूछने लगा।

राजा—पक्षिमध्ये शुक श्रेष्ठ, त प्रति पृष्टवान् नृप।
नीलकण्ठ रक्तचञ्चुः, कथं कृष्णं वपुस्तव ?

पक्षियो मे श्रेष्ठ तोते से राजा ने पूछा—शुकराज ! तेरी गर्दन नीली है और चोच लाल है, फिर शरीर काला कैसे हुआ ?

तोता—समुद्रेषु गतस्तत्र, वह्निज्वाला प्रवर्तते।
तया दग्धमिद गात्र, राजन्! तेनास्ति कृष्णकम्।

राजन्! मैं उडता-उडता एक बार समुद्र मे चला गया वहा अग्निज्वाला से जलकर मेरा शरीर काला हो गया।

राजा—रे! रे! पक्षि-दुराचारि-ननृत भाषसे कथम् ?
समुद्रेषु कुतो वह्नि कुतो ज्वाला प्रवर्तते ?

अरे! दुराचारी पक्षी! क्यो झूठ बोलता है ? समुद्र मे कहा तो आग और कहा उसकी ज्वाला।

तोता—प्रसूते ह्यश्विनी वत्स, कामधेनुस्तुरगमम्।
अन्यायग्रथिलो राजा, यथा राजा तथा प्रजा॥

राजन् ! जहा गाय वछेडे को और घोडी वछडे को पैदा करती है, वहा असभव कुछ भी नही कहा जा सकता। क्योकि तुम्हारे जैसे अन्यायी राजा के राज मे जैसा राजा है, वैसी ही प्रजा है।

राजा चौंका और उन दोनो मित्रो को बुलाकर उनका न्याय किया।

—प्राचीन सग्रह से

५ किमत्र चित्र यदि कामसूर्भू—
वृ॑त्ते स्थितस्याधिपते प्रजानाम्।

—रघुवश

चरित्रवान राजा की प्रजा को यदि पृथ्वी मनइच्छित फल दे तो कोई आश्चर्य नही।



राज्य

१ राज्ञ पृथ्वीपालनोचित कर्म राज्यम् ।

—नीतिवाक्यामृत ५।४

राजा पृथ्वी की रक्षा के योग्य कर्म—षाड्गुण्य (सधि, विग्रह, यान, आसन, सश्रय और द्वैधीभाव) को राज्य कहते हैं।

२ सरकार जनशक्ति का छोटा-सा अंश है। —विनोबा

३ सत्ये राज्यं प्रतिष्ठितम् । —अध्यात्मरामायण

राज्य सत्य मे प्रतिष्ठित होता है।

४ राजरीत आवै जठै राज आयो रैवे। —राजस्थानी कहावत

५ तीन प्रकार के राज्य —

१ कुराज्य—जहा शोर-गुल कम और दु ख ज्यादा हो।
२ स्वराज्य—जहा शोर-गुल ज्यादा और दु ख कम हो।
३ सुराज्य—जहा न ज्यादा शोर-गुल हो और न ज्यादा दु ख हो।

६ राज्य के तीन अग—

अन्न, फौज और प्रजा का विश्वास। —कन्फ्यूशियस

७ राज्य के आठ अंग—

स्वाम्यमात्यश्च राष्ट्रं च दुर्गं कोशो बलं सुहृत् ।
राज्याङ्गानि प्रकृतय, पौराणा श्रेणयोऽपि च ॥

—हितोपदेश ३।१४३

१. स्वामी २ मत्री ३. राष्ट्र ४ किला ५ कोश ६ सेना ७ मित्र ८ पुरवासियों के समूह—ये राज्य के आठ अग हैं।

२३ सुराज्य (अच्छी सरकार)

१ अच्छी सरकार वह है, जो प्रभावशाली हो। प्रभावशाली तब होगी, जब उसके पास जनता के लिये भोजन का प्रबन्ध, अस्त्र-शस्त्र और उसके प्रति जनता का विश्वास होगा।

विपत्ति के समय सब से पहले अस्त्र-शस्त्र का त्याग करना और फिर आवश्यक हो तो भोजन का भी त्याग कर देना किंतु प्रजा का विश्वास कभी न खोना चाहिए।

—कागफ्यूत्सी

२ रामराज्य का चित्र —

दैहिक दैविक भौतिक तापा,
रामराज्य नहिं काहूहि व्यापा।
सब नर करहि परस्पर प्रीति,
चलहि सुधर्म-निरत श्रुति-रीति।
बैर न करहि काहु मन कोई,
राम प्रताप विषमता खोई।
नहीं दरिद्र कोउ दुखी न दीना,
नाहि कोउ अबुध सुलक्षण हीना।

—रामचरितमानस

३ चाहे सोनो उछालता जावो।

—राजस्थानी कहावत

२४ कुराज्य

१ वर न राज्य न कुराजराज्यम् ।

—चाणक्यनीति ६।१३

राज्य का न होना अच्छा है किंतु दुष्ट राजा का राज्य होना अच्छा नहीं।

२ कुराजराज्येन कुत प्रजासुखम् ।

—चाणक्यनीति ६।१४

दुष्ट राजा के राज्य मे प्रजा को सुख कहा ।

३ लूण कपूर गिणै इक आगर,
गुणी निगुणीय पडै नहि जाहर ।
कायर-सूर सवै इकसे,
अकुलीन-कुलीन अजाहर नाहर ।
शाह रु चोर न जान पडे,
अतिलीक-अलीक की ठीक न ठाहर ।
कौन पे जाय के कीजे पुकार सो,
जा दरवार मे वुंव न वाहर ।

—भाषाश्लोकसागर

४ अन्याय नगरी, अबूझ राजा ।
टकै सेर भाजी, टकै सेर खाजा ।

—राजस्थानी कहावत

५ **पोपांबाई का राज्य**—पुर शहर (उदयपुर) मे राजा पोपसिहजी राज्य करते थे । वहा टके सेर भाजी और टके सेर खाजा मिलते थे । विहार करते-करते गुरु-शिष्य वहा आए । भिक्षा मे अच्छा भोजन मिला । लोलुप होकर शिष्य वही रहने लगा । गुरु ने वहा नहीं रहने के लिए काफी

कहा किंतु हठीला शिष्य न माना तब विवश गुरु भी वहीं रहे। सरस भिक्षा मिलने से दोनो के शरीर काफी ताजे-मोटे हो गए। चौमासे मे अधिक वृष्टि हुई और दीवार गिरने से एक आदमी मर गया। दरबार जुडा एव पोपसिंहजी ने निर्णय दिया कि सेठ की दीवार से आदमी मरा है, अत उसे शूली चढा दो!

सेठ ने अपील की—महाराज! मैंने तो मिस्तरी को पूरे पैसे दिये थे। उसने दीवार कच्ची क्यो बनाई?

राजा—हा-हा! मिस्तरी को चढाओ शूली पर!

मिस्तरी—मजदूर ने गारा पतला कर दिया, इससे दीवार कच्ची रह गई। अत दोष तो मजदूर का है।

राजा—हा! मजदूर ही दोषी है, उसे चढा दो शूली पर।

मजदूर—पखालिये ने पानी ज्यादा डाल दिया एव मेरे पास सूखी मिट्टी नही थी। अत गारा पतला रह गया। इसमे मेरा क्या दोष?

राजा—अच्छा! जाओ पखालिये को शूली पर चढाओ, उसी का सब दोष है।

पखालिया—राजन्! मैं पानी डाल रहा था, उस वक्त सेठ की बहू रमझम-रमझम करती हुई निकली, मैं उसे देखने लगा—इधर पानी ज्यादा पड गया। अब मैं क्या करू?

राजा—अच्छा! सेठ की बहू को शूली पर चढा दो, उसने ऐसे जेवर क्यो पहने, जिससे मनुष्य की हत्या हो गई।

सेठ—राजन्! मेरी बहू का क्या दोष? दोष उस सुनार का है, जिसने ऐसे जेवर घडे।

राजा—हा-हा! सुनार दोषी है, इसे चढाओ शूली पर।

सुनार—राजन्! दोष मेरा नहीं। लोहार का है, उसी ने हमारे औजार घडे है। हम चाहे जितना ही प्रयत्न करें, जेवर रमझम-रमझम किये बिना नहीं रहते।

राजा—ठीक-ठीक ! मूल दोषी लोहार ही है, उसे चढाओ जल्दी शूली पर ।

एक ग्रामीण लोहार शहर मे आया ही था, उसे सिपाही पकड लाए। उसको बात का कुछ भी पता नही था। वह मृत्युभय से कापने लगा। आखिर लोगो के समझाने पर बोला—स्वामिन् ! यद्यपि मैं ही गुनाहगार हूँ लेकिन दुबला-पतला हूँ अत शूली माता मेरे से तृप्त नही हो सकेगी।

राजा—अच्छा ! ऐसी बात है तो जाओ शहर मे जो भी ताजा-मोटा हो, उसे पकडकर शूली चढा दो।

सिपाहियो ने उसी चेले को आ पकडा, जो माल खाकर मोटा-ताजा बन रहा था। वह रोता-बिलखता गुरु के पास आया और भविष्य मे आपकी आज्ञानुसार चलूगा, यह प्रण करके प्राण-भिक्षा मागने लगा।

कृपालु गुरु शिष्य सहित शूली के निकट पहुचे एव एक-दूसरे को धक्का देकर कहने लगे कि मैं चढूगा शूली पर। राजा ने धक्कम-धक्की का कारण पूछा। गुरु ने कहा—इस समय पल, वेला एव लग्न इतने श्रेष्ठ है कि जो भी इस शूली माता की गोद मे बैठेगा, वह सदेह स्वर्ग मे पहुच जाएगा।

राजा—यदि सदेह स्वर्ग मिलता है, तब तो शूली चढेंगे खुद हम ! बस, मूर्ख राजा शूली चढकर मर गया। उसी दिन से पोपसिहजी का नाम पोपांबाई हो गया और मूर्ख राजा के राज्य को पोपाबाई के राज्य की उपमा लगने लगी, अस्तु !

- एक बार दो व्यापारियो मे काली मिर्च का सौदा हुआ। मिर्चें कुछ तेज हो गई। व्यापारी उल्टी पायली से नापकर देने लगा। ग्राहक सुल्टी पायली से लेना चाहता था। आखिर दोनो राजदरबार मे पहुचे। पोपसिहजी ने निर्णय दिया कि तेरी उल्टी गई और इसकी सुल्टी गई जाओ, आडी पायली मे भरकर माप लो ! ग्राहक बोला हुजूर ! आडी पर तो एक दाना भी नहीं ठहर सकेगा। पोपसिहजी ने कहा—बस, चले

जाओ चुपचाप ! जो कुछ कह दिया, वही ठीक है। यह दृश्य देखकर एक कवि ने कहा—

पोपाबाई रा राज मे, पूरो घोर अघार।
ऊंची सू घी छोड के, आडी भरो गिवार।

६ नव पेठे-तेरह लगवाड—

मालिन वेचने को नव पेठे लेकर बैठी—

(१) दीवान, (२) कोतवाल, (३) पुरोहित, (४) तहसीलदार, (५) थानेदार, (६) जमादार, (७) चोहटिया, (८) न्यायाधीश, (९) वकील—ये सब क्रमश आते गये और एक-एक फल उठाते गये। माल सारा उठ गया, पैसा किसी ने नही दिया। फिर नगरसेठ, वैद्य आदि चार ग्राहक और आये एव पेठा न मिलने से मालिन की साडी एव गदहे को भी खींचने लगे। तब मालिन ने कहा—यहा तो नव पेठो पर तेरह लगवाड हैं।

७ बुरी सरकार के शासन मे अच्छे स्त्री-पुरुषो के लिये जेल को छोडकर और कोई भी स्थान नही रहता।

—गांधी

८ कोई यहा प्रबन्ध नही है,
आलोचना लोच से खाली,
अब मजाक मे मजा न गम है।
सत्ता मे सत कहा रहा है,
सिर्फ अहम् मे हम ही हम है।

—हिन्दुस्तान, ४ जुलाई, १९६६

९ अल्ला री मा रो चालीसो।

० ऊंट खुडावै र गधो डामीजै।
० काम करै ऊधोदास र जीम जावै माधोदास।
० घोडै ही वेगा नटावै र गधै ही वेगा चढावै।
० घोडो दौड-दौड मरै र, सवार री हूंस ही को पूरीजै नी।

—राजस्थानी कहावतें

१० राणी रुए रोटला ने अने गोली खाए गोल ।

—गुजराती कहावत

११ अपूज्या यत्र पूज्यन्ते, पूज्याना तु विमानता ।
त्रीणि तत्र प्रवर्तन्ते, दुर्भिक्ष मरणं भयम् ॥

—पञ्चतन्त्र ३।१९१

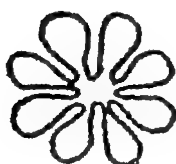
जिस राज्य मे अपूज्यो का पूजन और पूज्यो का अपमान होता है, वहां ये तीन बातें अधिक होती हैं—दुर्भिक्ष, मरण और भय ।

१२ कादा खाधा कमधजा, घी खाधो गोलाह ।
चूरू चाली ठाकरा ! वाजंतां ढोलाह ॥

—राजस्थानी दोहा

१४ गोला घणा नजीक, अमरावा आदर नही ।
तिण ठाकर नै ठीक, रण मे पडसी राजिया !

—सोरठासग्रह



२५ अराजकता

१ नाराजके जनपदे, स्वक भवति कस्यचित् ।
मत्स्या इव जना नित्य, भक्षयन्ति परस्परम् ।

—वाल्मीकिरामायण

विना राजा के देश मे किसी की कोई वस्तु अपनी नही रहती । मछलियो की भाति सव लोग सदा परस्पर एक-दूसरे का भक्षण करते ही रहते है ।

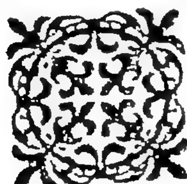
२ नहि पति वहुपति निवलपति, पति कुमार पति नार ।
और पुरन की कहा चली, सुरपुर होत उजार ।

—राजस्थानी दोहा

३ यत्र स्त्री यत्र कितवो, वालो यत्र प्रशासिता ।
तद् गृह क्षयमायाति, भार्गवो हीदमब्रवीत् ।।

—पञ्चतन्त्र ५।१०८

जहा स्त्री, कितव-धूर्त और वालक शासन करता है, वह घर नष्ट हो जाता है—यह शुक्राचार्य का कथन है ।



२६ स्वराज्य–प्रजातंत्र राज्य

१ जनता के लिए जनता द्वारा सचालित—जनता की ही शासन-प्रणाली का नाम प्रजातन्त्र है ।

—लिंकन

२ मैं प्रजातन्त्र मे इसलिए विश्वास करता हू कि वह प्रत्येक मनुष्य की शक्ति को उन्मुक्त करता है ।

—वुडरो विल्सन

३ प्रजातन्त्र इस दृढ विश्वास की आधारशिला पर स्थित है कि साधारण मनुष्य मे भी असाधारण कार्य करने की शक्ति निहित है ।

—हैरी इमर्सन फासडिक

४ अविश्रमो लोकतन्त्राधिकारः ।

—अभिज्ञानशाकुन्तल

प्रजातन्त्र-शासन हमेशा प्रगतिशील होता है ।

५ कोई भी सरकार प्रबल विरोधीदल के बिना अधिक दिन टिक नहीं सकती ।

—डिजरायली



२७

राष्ट्र–देश

१ पशु-धान्य-हिरण्यसम्पदा राजते इति राष्ट्रम् ।

—नीतिवाक्यामृत, १६।१

देश, गाय-भैंस आदि पशु, गेहूं-चावल प्रभृत अन्न एवं हिरण्य-सुवर्ण आदि धन-सम्पत्ति से शोभायमान होता है, इससे इनकी 'राष्ट्र' संज्ञा है।

२ भर्तुर्दण्ड—कोशवृद्धिं दिशतीति देश ।

—नीतिवाक्यामृत, १६।२

यह स्वामी को सैन्य और कोष की वृद्धि देता है, अत इसकी 'देश' संज्ञा है।

३ श्रीर्वै राष्ट्रम् ।

—शतपथब्राह्मण, ६।७।३।७

लक्ष्मी—धन से ही राष्ट्र चलता है।

४ कुराजान्तानि राष्ट्राणि ।

—सुभाषितरत्नखण्डमंजूषा

बुरा राजा राष्ट्र का नाश कर देता है।

१ न गजाना सहस्रेण, न लक्षेण च वाजिनाम् ।
तथा सिद्ध्यन्ति कार्याणि, यथा दुर्गप्रभावत ॥६३॥
विपहीनो यथा नागो, मदहीनो यथा गज ।
सर्वेपा वश्यता याति, दुर्गहीनस्तथा नृप ॥६५॥
एकः शत योधयते, प्राकारस्थो धनुर्धर ।
शत सहस्राणि तथा, सहस्र लक्षमेव च ॥६७॥
दुर्गाणि राज्ञा कार्याणि, सजलानि दृढानि च ।
द्रव्यमन्नं च तेष्वेव, स्थापनीय प्रयत्नत ॥६८॥

—सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृष्ठ १४६

हजार हाथियो से और लाख घोडो से जो काम सिद्ध नही होते, वे एक दुर्ग से सिद्ध हो सकते हैं ॥६३॥

दुर्गहीन राजा—विपहीन सर्प और मदहीन हाथी की तरह हरएक दुश्मन के काबू मे आ जाता है ॥६५॥

दुर्ग पर रहा हुआ एक धनुर्धर सौ सुभटो से, सौ हजार सुभटो से और हजार लाख सुभटों से युद्ध कर सकते है ॥६७॥

इसलिए राजाओ को चारो तरफ जलवाले एव सुदृढ दुर्ग बनाकर उनमें अन्न व दूसरी समस्त युद्ध की सामग्री स्थापित करनी चाहिए ॥६८॥

२६ राज्यकोष—खजाना

१ कोशो हि भूपतीना जीवन, न प्राणा. ।।५।।
क्षीणकोशो हि गजा पौर—जनपदानन्यायेन ग्रसते, ततो राष्ट्र-शून्यता स्यात् ।।६।।

—नीतिवाक्यामृत, २१

वास्तव मे कोष ही राजाओ का जीवन है, प्राण नहीं ।।५।।
कोषविहीन राजा देशवासियो के निर्दोष होने पर भी उन्हे अन्याय मे दण्डित कर जुर्माना आदि द्वारा उनमे प्रचुर धनराशि ग्रहण करने को सतत प्रयत्नशील रहता है। फलस्वरूप अन्याय मे पीडित प्रजा वहाँ से भाग जाती है, जिससे राज्य मे शून्यता हो जाती है।

२ नियोगिषु लक्ष्मी क्षितीश्वराणा द्वितीय' कोश ।

—नीतिवाक्यामृत, १८।६७

अधिकारियो की सम्पत्ति राजाओ का दूसरा खजाना है। क्योंकि संकट पडने पर उनके काम आ जाती है।

३ अतिव्ययोऽनवेक्षा च, तथाजनमधर्मत ।
पोषण दूरसस्थान, कोषव्यसनमुच्यते ।।
अधिक व्यय करना, देख-रेख न करना, अन्याय से प्राप्त करना तथा दूरस्थ सस्था के पोषण मे लगाना—ये चार कोष का नाश करने वाले हैं।

बल–सेना

१ सेना के चार अग हैं—हाथी, घोडे, रथ और पायक—पैदल सुभट।

२ बलेषु हस्तिन प्रधानमङ्ग स्वैरवयवैरष्टायुधा हस्तिनो भवन्ति।

—नीतिवाक्यामृत २२।२

चतुरङ्ग सेना मे हाथी प्रधान माने जाते हैं, क्योकि वे अष्टायुध हैं अर्थात् वे अपने चारो पैर, दो दान्त, पूछ और सूड रूप आठ शस्त्रो से युद्ध मे शत्रुओ का विनाश करते हुए विजयश्री को प्राप्त करते हैं।

३ अश्वबलं सैन्यस्य जङ्गम प्रकार ।

—नीतिवाक्यामृत २२।७

घोडो की सेना चतुरङ्ग सेना का चलता-फिरता भेद है, क्योकि वे अत्यन्त चपल व वेग से गमन करने वाले होते हैं।

○ अश्व के ९ उत्पत्तिस्थान (जातिया) हैं—

(१) ताजिका (२) स्वस्थलाणा (३) करोखरा (४) गाजिगाला
(५) केकारवा (६) पुष्टाहारा (७) गाव्हारा (८) सादुपारा
(९) सिन्धुपारा।

४ सैनिक के तीन आदर्श—

(१) मुट्ठीबन्द—किसी के सामने हाथ न पसारे।

(२) कमरबन्द—देशरक्षा के लिये सदा तत्पर रहे।

(३) लगोटबन्द—चरित्र का पक्का हो।

५ स्वयमनवेक्षण, देयांशहरण, कालयापना, व्यसनाप्रतीकारो, विशेष-विधावसभावन च तस्य विरक्तिकारणानि।

—नीतिवाक्यामृत, २२।१७

राजा के निम्नलिखित कार्यों से, उसकी सेना उसके विरुद्ध हो जाती है— स्वय अपनी सेना की देख-रेख न करना, सैनिको को देने योग्य वेतन मे मे कुछ भाग हडप लेना, आजीविका के योग्य वेतन को यथासमय न देकर विलम्ब से देना, उन्हे विपत्तिग्रस्त देखकर भी सहायता न करना और विशेष अवसरो (पुत्रोत्पत्ति, विवाह व त्योहार आदि खुशी के मौको) पर उन्हे धनादि से सम्मानित न करना।

६ अक्षौहिणी सेना—

गज इकवीन हजार, आठ-सौ सत्तर गज ही।
रथ इकवीस हजार, आठ-सौ सत्तर रथ ही।
एक लाख नव सहस, सुभट नर-सेना नायक।
तिण ऊपर शत तीन अधिक पच्चास सुपायक।
सोहत तुरग पैंसठ सहस, छव सौ दस फिर और लिय।
इहविध अभग चतुरंग दल, अक्षौहिणी परमाण किय।

—भाषाश्लोकसागर

(कौरवो के पास ग्यारह एव पांडवो के पास सात अक्षौहिणी सेना थी।)

७ ५६ देशो की सेना और उस पर १६॥ खरब रु० वार्षिक खर्च—विश्व के ५६ राष्ट्र प्रतिरक्षा पर प्रतिवर्ष १६ खरब ५० अरब (१,६५,००० करोड) रु० खर्च कर रहे है। यह सूचना युद्ध अध्ययन इन्स्टीट्यूट की अन्तिम रिपोर्ट (१९६८-६९) मे दी गई है। इस राशि मे अधिकाश अफ्रीकी, लेटिन अमरीकी, कृष्णसागरीय तथा अटलाण्टिक राज्यो—फारस की घाटी के सुल्तानो तथा और भी और देशो का सैनिक व्यय शामिल नही है।

इन ५६ देशो की सेनाओ मे २,८४,७५,००० सैनिक है तथा उनके पास ४५,९६० सैनिक विमान है।

१३ कम्युनिस्ट देशो की सैनिकशक्ति १४ पश्चिमी राष्ट्रो (इंग्लैण्ड, जर्मनी, फ्रान्स आदि) मे अधिक है [illegible] पश्चिमी राष्ट्रो का सैनिकव्यय कम्युनिस्ट देशो से दुगुना है। कम्युनिस्ट [illegible] पास ८१,१४,५००

सैनिक और १६,००० विमान है, जबकि पश्चिमी राष्ट्रों के पास ६५,१६,६६० सैनिक हैं और ६,४४५ फौजी विमान हैं। सेण्टो और सी ए टो देशो (ब्रिटेन, फ्रास, तुर्की और अमरीका को छोडकर) के पास ८,१३,४७० सैनिक है और ८८८ सैनिक विमान हैं।

१६ निर्गुट देशो (भारत, इडोनेशिया, सयुक्त अरब गणराज्य और युगोस्लाविया आदि) के सैनिको की सख्या ४०३४,४०० है और इनके पास ३,६४७ विमान हैं। इन देशो का फौजी खर्च ४,५८२ करोड रु० है। भारत का फौजी खर्च दस अरब रुपये है।

चार देशो का (जापान, द० कोरिया, स्पेन, ताइवान) जिनका अमरीका से रक्षा समझौता है, सैनिक खर्च ६०० करोड रु० है। इनके पास १७,०३,००० सैनिक और १,३६० विमान है। कम्बोडिया, लाओस व द० विएटनाम का फौजी खर्च १७८ करोड रु० है। इनके पास ६,३४,००० सैनिक और २२० विमान हैं,

—हिन्दुस्तान, ३१ मार्च

१ दसविहे सत्थे पन्नत्ते, त जहा—

सत्थमग्गी विस लोण, सिणेहो खारमविल।
दुप्पउत्तो मणो वाया-काया भावो य अविरई।।

—स्थानाग १०।७४३

जिनसे प्राणियो की हिसा हो, उसे शस्त्र कहते हैं। वे शस्त्र दस प्रकार के बताए गए हैं—

(१) अग्नि—यह अपनी जाति से भिन्न विजातीय-अग्नि की अपेक्षा स्वकायशस्त्र है और पृथ्वीकाय, अप्काय आदि की अपेक्षा परकाय शस्त्र है।

(२) विष—स्थावर और जगम के भेद से विष दो प्रकार का है।

(३) लवण—अनेक प्रकार का नमक।

(४) स्नेह—तेल, घी आदि स्निग्ध पदार्थ।

(५) क्षार - राख-चूना आदि।

(६) अम्ल—काञ्जी आदि एक प्रकार का खट्टा रस, हरे शाक वगैरह मे डालने से वह अचित्त हो जाता है। (ये छ द्रव्यशस्त्र हैं एव शेष चार भाव शस्त्र हैं।)

(७) दुष्प्रयुक्त मन—हिंसा आदि मे प्रयुक्त मन।

(८) दुष्प्रयुक्त वचन—हिंसा आदि मे प्रयुक्त वचन।

(९) दुष्प्रयुक्त शरीर—हिंसा आदि मे प्रयुक्त शरीर।

(१०) अविरति—किसी प्रकार का प्रत्याख्यान न करना अप्रत्याख्यान या अविरति कहलाता है।

२ चार प्रकार के शस्त्र—(१) पाणिमुक्त (२) यन्त्रमुक्त (३) अमुक्त (४) मुक्तामुक्त।

(१) पाणिमुक्त—शक्ति आदि।

(२) यन्त्रमुक्त—तीर आदि।

(३) अमुक्त—छुरी, कटारी, तलवार आदि।

(४) मुक्तामुक्त—लाठी आदि।

—अभिधानचिन्तामणि ३।४३८

३ लाठी के गुण—

लाठी मे गुण बहुत है, सदा राखिये सग।
ऊडा पानी अथग जल, तहा बचावत अंग।
तहा बचावत अग, झपट कुत्ता कू मारै।
घर मे नार कुनार, ताहि कू लट्ठ सुधारै।
कहै गिरधर कविराय, मित्र कू लिखणी चिट्ठी।
छोड ढाल-तलवार, हाथ मे रखणी लट्ठी।

० डडा पीर है विगडिया, तिगडिया दा।

—पजाबी कहावत

४ आधुनिक युग के सहारक अस्त्र—

इन्टर काटीनेटल बैलिस्टिक मिसाइल (आई० सी० बी० एम०) इस युग का सहारक अस्त्र है। यह बटी दूर (५,००० से १०,००० मील) तक की मार, मार सकता है। तोप का निकला गोला जिस माग मे जाता है, उसी से यह भी जाता है। इस कारण इसको बैलिस्टिक विस्फोट कहते हैं। इसकी गति १०,००० मील प्रति घटा है। २६ अगस्त १९५७ को रूस ने सफलतापूर्वक यह रॉकेट चलाया था। इस नूतन आविष्कार से पश्चिमी जगत का हृदय दहल गया। अमेरिका ने इसके जवाब मे 'इन्टर-मीडिएट रेंज बैलिस्टिक मिसाइल' तैयार किया है।

—विश्वज्ञान कोष

५ शस्त्रो पर प्रतिवर्ष १४,६०० करोड रु० व्यय—

जनेवा, २९ फरवरी (यून्यू) विश्व मे शस्त्रस्पर्धा पर प्रतिवर्ष १४,६,०० करोड रु० खर्च किये जा रहे है। उक्त सूचना निश्शस्त्रीकरण सम्मेलन मे सयुक्तराष्ट्र-महासचिव श्री कुर्त वाल्दहीम ने दी।

उन्होने बताया कि रूस तथा अमेरिका के पास इतने परमाणु-आयुध है कि इनसे वे न केवल एक-दूसरे को अपितु सारी मानवजाति को नष्ट कर सकते हैं।

—नवभारत २ मार्च, १९७२

६ तीर—निशाने पर लग जाय उसे ही तीर कहते हैं—चतुर निशानेबाज तीर चलाने से पहले निशाना अच्छी तरह साधता है।

—बोस्ता

७ सर्वोत्तमशस्त्र—

बादशाह ने पूछा—शस्त्र कौनसा बढिया ? सभासदो ने यथारुचि शस्त्रो के नाम लिये। बीरबल ने समय को सर्वोत्तम शस्त्र कहा। बादशाह ने सबूत मागा। बीरबल ने कहा—मौका आने पर सबूत दू गा। कुछ समय के बाद एकदिन बीरबल कचहरी जा रहा था। सामने से मदोन्मत्त हाथी आ पहुचा। बीरबल ने एक सोए हुए कुत्ते को घुमाकर हाथी के सिर पर दे मारा। हाथी चौंका और रास्ता छोडकर भाग गया। बीरबल ने कचहरी पहुचकर सारा हाल सुनाते हुए कहा—देखिये हजूर ! समय पर कुत्ता तलवार बन्दूक से भी बढिया शस्त्र बन गया। अतः सर्वोत्तम शस्त्र "समय" ही है।

३२ युद्ध (युद्धनिषेध)

१ युद्ध विनाशविद्या का नाम है।

—जॉन एस० सी० एवट

२ संग्रामो वै क्रूरम्, सग्रामे हि क्रूरं क्रियते।

—शतपथ ब्राह्मण १।२।५।१६

सग्राम क्रूरता का रूप है, क्योकि सग्राम मे क्रूर कर्म किए जाते हैं।

३ ससार मे आजतक अच्छा युद्ध और बुरी शाति कभी नही हुई।

—फ्रैंकलिन

४ युद्ध मे सत्य की हत्या सबसे पहले होती है।

—अग्रेजी कहावत

५ युद्ध निषेध—

(क) युद्ध करना गलत है, युद्ध के लिए सेना खडी करना गलत है

—कांगफ्यूत्सी

(ख) युद्ध करना गलत है, सेना मे भरती होना गलत है, सेनापति अपराधी है, किसी प्रदेश पर लोगो की इच्छा के विना कब्जा करना गलत है।

—मैनशियस (कागफ्यूत्सो का अनुयायी)

(ग) हथियार चाहे जितने नक्कासीदार हो, वे सुख के साधन नही हो सकते। हथियार अशुभ के सूचक हैं। ज्ञानी पुरुष उनका प्रयोग नही करते। लाचारी की बात दूसरी है।

—ताओपनिषद् ३१

(घ) पुष्पयुद्धमपि नीतिविदो नेच्छन्ति, किं पुन: शस्त्रयुद्धम्।

—नीतिवाक्यामृत ३२।३०

नीतिज्ञपुरुष फूलो से लडना भी पसन्द नही करते, फिर शस्त्र की तो बात ही कहा !

(ङ) सामसाध्य युद्धसाध्य न कुर्यात् ।

—नीतिवाक्यामृत ३०।२५

शान्ति से बन सकने वाला कार्य युद्ध मे सिद्ध मत करो !

(च) साम्ना दानेन भेदेन, समस्तैरथवा पृथक् ।
नाधितु प्रयतेतारीन् न युद्धेन कदाचन ॥

—हितोपदेश ३।४०

मीठे वचन मे, धन देकर और तोड-फोड करके, इन तीनो उपायो ने एक साथ ही अथवा अलग-अलग, शत्रुओ को वश करने का यत्न करना चाहिये, पर युद्ध से कभी नही ।



३३ युद्ध से पहले विचारणीय बातें

१ चपलौ किल शूराणां, रणे जय-पराजयौ ।

—कथासरित्सागर

संग्राम में शूर-सुभटो की जय-पराजय अस्थिर रहती है।

२ विचित्रा हि रणे गतिः ।

— त्रिषष्ठि शलाकापुरुषचरित्र ४।१

संग्राम की गति विचित्र है।

३ *समस्यासमेन सह विग्रहे, निश्चितं मरणं, जये संदेहः ।*

—नीतिवाक्यामृत ३०।६८

असमान के साथ युद्ध करने मे मरना निश्चित है, विजय मे संदेह है।

४ बुद्धियुद्धेन परं जेतुमशक्तः शस्त्रयुद्धमुपक्रमेत् ।

—नीतिवाक्यामृत २१।३

बुद्धि के युद्ध से न जीत सकने पर शस्त्रयुद्ध करना चाहिए।

५ न तथेषवः प्रभवन्ति यथा प्रज्ञावतां प्रज्ञा ।

—नीतिवाक्यामृत २१।२

तीर उतना काम नही कर सकते, जितनी बुद्धिमानो की बुद्धि।

६ मित्रामात्यसुहृद्वर्गा, यदा स्युर्दृढभक्तय ।
शत्रूणां विपरीताश्च, कर्त्तव्यो विग्रहस्तदा ॥

—हितोपदेश ३।९५

मित्र, मन्त्री और अपने लोग, जब दृढ शुभचिन्तक हों और शत्रुओं के विपरीत हो, तब युद्ध करना चाहिए।

७ भूमिर्मित्रं हिरण्य वा, विग्रहस्य फलत्रयम् ।
नास्त्येकमपि यद्येषा, विग्रह न समाचरेत् ॥

—पञ्चतन्त्र ३।१५

युद्ध के तीन फल हैं—भूमि, मित्र और धन की प्राप्ति । जहाँ इनमे से एक भी फल न मिले, वहा युद्ध नही करना चाहिए ।

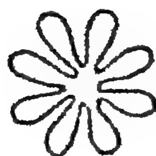
८ यत्रायुद्धे ध्रुव मृत्यु-र्युद्धे जीवितसशय ।
तमेव काल युद्धस्य, प्रवदन्ति मनीषिण ॥

—हितोपदेश २।१७०

जिस समय, युद्ध के नही करने मे मृत्यु का होना निश्चय हो, और युद्ध मे जीने का सदेह हो, उसी काल को पडित लोग युद्ध का समय कहते है ।

९ पडवे पोढताह, करडावण हर कोइ करै ।
धारा मे धमताह, आसू आवै ईलिया ।

—सोरठा-संग्रह



३४ युद्ध के कतिपय नियम

१ न च हन्यात् स्थलारूढं, न क्लीबं न कृताञ्जलिम् ।
न मुक्तकेशं नासीनं, न तवास्मीति वादिनम् । ६१॥
न सुप्तं न विसन्नाहं, न नग्नं न निरायुधम् ।
नायुध्यमानं पश्यन्तं, न परेण समागतम् ॥६२॥

—मनुस्मृति, अध्याय-७

स्थल पर खडे हुए, नपुंसक, हाथ जोडने वाले, खुले केश वाले, आसन पर बैठे हुए और 'मैं तुम्हारा हूं' यों कहने वाले शत्रु को नहीं मारना चाहिए ॥६१॥

जो सोया हुआ हो, सन्नाह रहित हो, नग्न हो, शस्त्ररहित हो, युद्ध से विमुख केवल देखने के लिए आया हो, और दूसरे से युद्ध में जुटा हुआ हो, ऐसे शत्रु को नहीं मारना चाहिए ॥६२॥

२ स्त्री-विप्र-लिङ्गि-बालेषु, प्रहर्तव्यं न कर्हिचित् ।
प्राणत्यागेऽपि संजाते, विश्वस्तेषु विशेषतः ।

—पञ्चतन्त्र ८।४०

स्त्री, ब्राह्मण, साधु-सन्यासी, बालक और विश्वस्त व्यक्ति इन सब पर प्राण-त्याग का प्रसंग आ जाने पर भी प्रहार नहीं करना चाहिए ।

३ चरणेषु पतितं भीतमशस्त्रं च हिंसन् ब्रह्महा भवति ।

—नीतिवाक्यामृत ३०।७५

पैरों में पड़ते हुए, भयभीत एवं शस्त्रहीन को मारने वाला ब्रह्मघाती होता है ।

३५ युद्ध का प्रोत्साहन

१ जये च लभते लक्ष्मीं मृते चापि सुरांगना ।
क्षणविध्वंसिनः कायाः, का चिन्ता मरणे रणे ॥

—हितोपदेश २।१७२

विजय होने पर लक्ष्मी मिलती है और मर जाने पर देवांगनायें प्राप्त होती हैं । ये शरीर क्षण-विनश्वर हैं, फिर संग्राम में मरने की क्या चिन्ता !

२ समोत्तमाधमै राजा, त्वाहूतः पालयन् प्रजाः ।
न निवर्तेत संग्रामात्, क्षात्रं धर्ममनुस्मरन् ॥८७॥
संग्रामेष्वनिवर्तित्वं, प्रजानां चैव पालनम् ।
शुश्रूषा ब्राह्मणानां च, राज्ञां श्रेयस्करं परम् ॥८८॥
आहवेषु मिथोऽन्योन्यं, जिघांसन्तो महीक्षितः ।
युध्यमानाः परं शक्त्या स्वर्गं यान्त्यपराङ्मुखाः ॥८९॥

—मनुस्मृति, अध्याय ७

प्रजा का पालन करता हुआ क्षात्रधर्म के अनुसार समबल, अधिकबल या कमबल वाले राजा से युद्धार्थ बुलाये जाने पर युद्ध से मुंह न मोड़े ॥८७॥

युद्ध में पीठ न दिखाना, प्रजा का पालन और ब्राह्मणों की सेवायें राजाओं के लिए परम कल्याणकारक हैं ॥८८॥

युद्ध में परस्पर एक-दूसरे को मारने की इच्छा करने वाले और सम्पूर्ण शक्ति लगाकर लड़ने वाले राजा युद्ध में पीठ न दिखाते हुए स्वर्ग को जाते हैं ॥८९॥

३ यस्तत्र हन्यते देवि ! गजस्कन्धगतो नरः।
ब्रह्मलोकमवाप्नोति, रणेष्वभिमुखो हतः॥
रथमध्यगतो वापि, हयपृष्ठगतोऽपि वा।
हन्यते यस्तु संग्रामे, शक्रलोके महीयते॥
स्वर्गे हता प्रपूज्यन्ते, हन्ता त्वत्रैव पूज्यते।
द्वावेतौ सुखमेधेते हन्ता यश्चैव हन्यते॥

—महाभारत, अनुशासनपर्व, अध्याय १४५

महादेव पार्वती से कह रहे हैं—देवि ! जो संग्राम में हाथी की पीठ पर बैठा हुआ युद्ध के मुहाने पर मारा जाता है, वह ब्रह्मलोक को प्राप्त होता है।

रथ के बीच में बैठा या घोड़े की पीठ पर चढ़ा हुआ जो वीर युद्ध में मारा जाता है वह इन्द्रलोक में सम्मानित होता है। मारे गये योद्धा स्वर्ग में पूजित होते हैं, किंतु मारने वाला इसी लोक में प्रशंसित हो जाता है। अतः युद्ध में दोनों ही सुखी होते हैं। जो मारता है वह, और जो मारा जाता है वह।

४ युद्ध करने की अनिच्छा प्रकट करने पर अर्जुन से श्री कृष्ण ने कहा—

अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं, संग्रामं न करिष्यसि।
ततः स्वधर्मं कीर्तिं च, हित्वा पापमवाप्स्यसि॥३४॥

यदि तू इस धर्मयुक्त संग्राम को नहीं करेगा तो स्वधर्म को और कीर्ति को खोकर पाप को प्राप्त हो जाएगा॥३४॥

० हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं, जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय ! युद्धाय कृतनिश्चयः॥३७॥

—गीता-अध्याय-२

अतः युद्ध करना तेरे लिए सब प्रकार से अच्छा है, क्योंकि या तो मरकर स्वर्ग को प्राप्त होगा अथवा जीतकर पृथ्वी को भोगेगा, इससे हे अर्जुन ! युद्ध के लिए निश्चयवाला होकर खड़ा हो जा !

३६

प्राचीन युद्ध के चित्र

१ शरजाल - तिरस्कृतदृष्टिपथ,
पथरोधसमाकुल - तीव्रभटम् ।
भटकोटिविपाटित - कुम्भितट,
तटविभ्रमहस्तिशरीरचितम् ॥१॥

रचितप्रथितोरुमुहस्तिघट,
घटनागतभीरुकृतार्तरवम् ।
रवपूरित-भूधरदृग्विवर ।
वरहेतिनिवारित-खिन्ननृपम् ॥२॥

नृपभिन्नमदोद्धुर-वैरिगण,
गण-सिद्ध-नभश्चरघुष्टजयम् ।
जयलम्पट-योधशतैश्चटुल,
चटुलाश्वसहस्र-विमर्दकरम् ॥३॥

करसृष्टसरोषविवर्णरथ,
रथभंगविवर्तित बोलबलम् ।
बलशालिभटेरित-सिंहनद,
नदभीषणरक्तनदीप्रवहम् ॥४॥

—प्राचीनसंग्रह से

वह युद्ध इतना भयंकर था कि बाणों की भरमार के कारण कुछ नहीं दीख रहा था और सारे मार्ग बलशाली सुभटों द्वारा आकीर्ण होने के कारण निरुद्ध थे। हजारों योद्धाओं ने हाथियों के समूह को नष्ट कर डाला था और ऐसा लग रहा था कि नदी का तट हाथियों के शरीर से उपचित हो रहा है ॥१॥

युद्ध-स्थल विशाल उरु वाले हाथियो की घटा से सकुल था। वहा आये हुए कायर व्यक्तियो का आर्त्तस्वर गूज रहा था और वह पहाडो की गुफाओ मे प्रतिध्वनित हो रहा था। अग्नि चारो ओर से घेर कर, सग्राम मे खिन्न हुए नृपो को भस्मसात् कर रही थी ॥२॥

राजाओ ने मद से उच्छृखल हुए अपने शत्रुओ को मार डाला, तब आकाश मे विचरण करने वाले विद्याधरो ने जयनाद किया। वह युद्ध विजय की लालसा रखने वाले सैकडो योद्धाओ से चपल और हजारो चचल आखो द्वारा शत्रु के मान का विमर्दन करने वाला था ॥३॥

राजाओ ने अपने हाथ से छोडे बाणो द्वारा रथो को विवर्ण (छिन्न-भिन्न) कर डाला। रथ टूटने के कारण सारे रण-स्थल मे कोलहल हुआ और शक्ति-शाली सुभटो ने सिहनाद किया। युद्ध ने बल पकडा और देखते-देखते रक्त की नदी भीषण कलरव करती हुई प्रवाहित हो गई ॥४॥

२ दुवसेन उदग्गन खग्ग समग्गन,
अग्ग तुरग्गन वग्ग लई।
मच्चि रंग उतगन दंग मतगन,
मज्जि रनंगन जग जई।
लगी कंप लजाकन भीरु भजाकन,
वाक कजाकन हाक वटी।
जिम मेह असवर यो लगि अवर,
चंड अडवर मेह चढी ॥१॥

फहरक्कि दिशान-दिशान वडे,
वहरक्कि निशान उडे वियरे।
रनना अहिनायक की निकसे कि,
पराभल होलिय की प्रसरे।

गजघट ठनकिय भेरी भनकिय,
रग रनकिय कोप करी ।
पक्खरान झनकिय बान सनकिय,
चाप तनकिय ताप परी ॥२॥

धमचक्क रचक्कन लग्गि लचक्कन,
कोलमचक्कन तोल कढ्यो ।
पखरालन भाल खुभी खरतालन,
व्याल कपालन माल बढ्यो ।
डगमग्गि शिलोच्चय शृग डुले,
झगमग्गि कृपानन अग्गि झरी ।
बजि खल्ल तबल्लन हल्ल उझल्लन,
भुम्मि हमल्लन घुम्मि परी ॥३॥

—कवि सूर्यमल

उछलते हुए अग्र भागवाली दोनो ही सेना के सैनिको ने कृपाण उठाकर घोडे आगे बढाए, रणविजयी और सज्जित उन्मत्त हाथियो ने युद्ध मचाया। वीरो की ललकार सुनकर लज्जित होने वाले तथा भागने वाले कायर काँपने लगे। सजल बदलो के सदृश आकाश मे धूलि छा गई ॥१॥

दशो दिशाओ मे उडती हुई बडी और छोटी ध्वजाए, ऐसी प्रतीत होने लगी, मानो शेषनाग की जिह्वा निकल रही है। अथवा होली की ज्वाला निकल रही है। हाथियो के घटो ठनकार और भेरी (दुन्दुभि) की भनकार होने लगी। पवन घण्टियें बजने लगी। घोडो के लोह बख्तरो की झनकार से बाणो के सनसनाने से और धनुष्टंकार से भयानकता छा गई ॥२॥

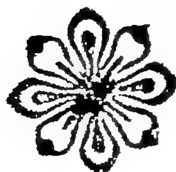
पृथ्वी-धारक वराह, युद्ध-स्थलों मे झुकने लगा। जिनके बोझ से वाराह मस्तक हिलाता है, नभि के नखो से इसका अन्दाजा लग गया। वाराह-

युक्त घोडो के भार और उनके चुभने वाली खुरतालों से शेषनाग के कपाल में दर्द बढ गया। पर्वत हिलकर उनके शिखर डुलने लगे और जगमगाती तलवारो से आग झडने लगी। उस हल्ले के दबाव से तबलो के समान खालें (चमडी) बजन लगी और हमलो से पृथ्वी घूमने लगी ॥३॥

३ खड्ग आदि छत्तीस आयुधो से युद्ध करते हुए वीर सुभट—

लड रहे हैं खग[१] मुद्गर[२] मुशल[3] शस्त्री[४] बाण[५] से,
जुड रहे हैं दंड[६] कौशल[७] चक्र[८] कुंत[९] कृपाण[१०] से,
गदा[११] छुरियाँ[१२] लकुट[१३] कस[१४] करपत्र[१५] सेल्ल[१६] चला रहे,
असिपत्र[१७] अर्धमुखी[१८] मुशु[१९] गाडीव[२०] खूब घुमा रहे।
नाराच[२१] नाली[२२] क्षुरमुखी[२३] तोमर[२४] परशु[२५] कई ले गदा[२६]।
भिड रहे हैं वज्र[२७] भल्लो[२८] शक्ति[२९] लांगल[30] से मुदा।
विस्फोट[31] पाल[32] त्रिशूल[33] भिंदिपाल[34] ले कई मस्त हैं।
खुहा[35] पट्टिश[36] आदि युत भट, युद्ध-व्यस्त समस्त हैं।

—संक्षिप्त जैन महाभारत १।३५



३७ विश्व के कतिपय उल्लेखनीय युद्ध

१ **मेरेथन का युद्ध**—यह ४९० ई० पू० यूनानियो तथा फारसवासियों के बीच हुआ और इसमे यूनानियो की विजय हुई।

२ **शतवर्षीय युद्ध**—यह १३३८ से १४५३ ई० तक फ्रास तथा इगलैंड के बीच होता रहा, अन्त मे इगलैंड को झुकना पडा।

३ **सप्तवर्षीय युद्ध**—१७५६-१७६३ ई० मे इगलैंड ने जर्मनी के सहयोग से फ्रास और सोवियत-सघ को पराजित किया।

४ **अमेरिकी-स्वतन्त्रतायुद्ध**—१७८३ ई० मे जार्ज वाशिंगटन ने ब्रिटेन के सैनिको को पराजित कर के अमरीका को स्वतत्रता दिलाई।

५ **वाटरलू का युद्ध**—१८१५ ई० मे वैल्जली ने नेपोलियन को हराकर उसे बन्दी बना लिया।

६ **नीलनदी का युद्ध**—१८६९ ई० मे नेल्सन ने फ्रांसीसी बेडे को हराया और भू-मध्य सागर पर ब्रिटेन का अधिकार हो गया।

७ **अमरीकी सिविल वार**—१८६१-६६ ई० मे अब्राहम लिंकन के नेतृत्व मे उत्तरी राज्यो ने दक्षिणी राज्यो को हराया और सघीय राज्य की स्थापना की।

—सामान्य ज्ञान एव व्यक्ति परिचय, सन् १९७२, पृष्ठ २८

८ **प्रथम विश्वयुद्ध**—प्रथम विश्वयुद्ध से पहले सर्बिया नामक एक छोटा-सा प्रदेश था, जो आजकल युगोस्लाविया मे मिल गया है। वहा के एक नवयुवक ने आर्कड्यूकफर्डिनेंड (उस समय के आस्ट्रिया-हगरी के उत्तराधिकारी) को गोली का निशाना बना दिया। इसके ठीक एक महीने बाद २८ जुलाई, सन् १९१४ को आस्ट्रिया हगरी ने सर्बिया के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। इस तरह प्रथम विश्वयुद्ध की शुरुआत हुई। [illegible]

समाप्त होने तक इस युद्ध मे ६ करोड व्यक्ति भाग ले चुके थे और ८५ लाख व्यक्ति मौत के घाट उतारे जा चुके थे।

आस्ट्रिया-हगरी की युद्धघोषणा के बाद कुछ ही दिनो मे यूरोप के अन्य राष्ट्र भी युद्ध मे उतर पडे। एक ओर आस्ट्रिया-हगरी, जर्मनी, तुर्की और बल्गारिया थे। इन्हे मध्ययूरोपीयराष्ट्र कहा जाता था। दूसरी ओर ब्रिटेन और उसके आधीनस्थ देश तथा फ्रास, इटली बेल्जियम, और जापान थे, जो मित्रराष्ट्र कहलाते थे।

आखिर जर्मनी, आस्ट्रिया और तुर्की की सेनाए समूचे यूरोप मे पीछे हटने लगी तब ११ नवम्बर, १९१८ को उत्तरी फ्रास मे एक रेल के डिब्बे मे युद्ध-विराम समझौते पर हस्ताक्षर हो गए।

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद यूरोप का नक्शा बदल गया और भविष्य मे युद्ध रोकने के लिए राष्ट्रसघ की स्थापना हुई।

० **द्वितीय विश्वयुद्ध**—इस युद्ध का मूल कारण १ सितम्बर १९३९ को पौलैण्ड पर जर्मनी का आक्रमण था। इस युद्ध मे एक ओर जर्मनी, इटली और जापान थे, जो धुरीराष्ट्र कहलाते थे और दूसरी ओर फ्रास, ब्रिटेन, अमेरिका और रूस थे, जो मित्रराष्ट्र कहलाते थे।

अमेरिका ने अणुबम का प्रथम प्रयोग इसी महायुद्ध मे किया था। फलस्वरूप जापान के दो महत्वपूर्ण नगर हिरोशिमा और नागासाकी बुरी तरह नष्ट हो गए। यह युद्ध लगभग पाच साल तक चला। युद्ध मे मित्रराष्ट्रो की विजय हुई। कहा जाता है कि दुनिया की जितनी तबाही इस विश्वयुद्ध मे हुई, उतनी इससे पूर्व प्राय कभी न हुई।

हरिजन-सेवक—समाचार पत्र के अनुसार इस विश्वयुद्ध मे हमलो से स्त्रिया, बालक व वृद्ध लगभग डेढ करोड एव दो करोड से अधिक नर-जवान मारे गये। ढाई करोड घायल, लूले, अपाहिज तथा लगडे बने।

नोट—१. द्वितीय विश्वयुद्ध मे अकेले रूस के २५ खरब रुबल (२८ खरब रुपये) खर्च हुए थे।

—हिन्दुस्तान दैनिक २८ अगस्त १९६६

लगभग तीन करोड व्यक्ति वेघर हो गए। पाच करोड निर्वासित तथा कैदी बने एव १५ करोड के लगभग व्यक्ति अनेक प्रकार की बीमारियो के शिकार बने।[1]

युद्ध मे प्रतिदिन का खर्च इतना था कि भारत की वार्षिक आय मात्र डेढ दिन मे लग जाती थी। इतनी रकम यदि वर्तमान दुनिया के (लगभग २३४ करोड) मनुष्यो मे वितरित की जाती तो प्रति मनुष्य के हिस्से मे तीस हजार रुपये आते अर्थात् प्रतिकुटुम्ब (चार प्राणी-स्त्री, पुरुष एव दो बच्चे) के पास अपना चालीस हजार का मकान, पन्द्रह हजार की कार, चालीस हजार की पूंजी (खेती-व्यापार आदि के लिए) और इसके अतिरिक्त, पच्चीस हजार रुपये बैंक मे जमा होते।

—हरिजन सेवक
—विश्वकोष भाग ६
—जैनभारती १५ मई, १९५५ के आधार

९ मलाया मे मेढको का युद्ध—

कुआलालम्पुर ५ जुलाई—यहा से कुछ ही दूर पर स्थित झील के दोनो तटो पर मेढको की दो बडी फौजो मे घमासान युद्ध हो रहा है। लोगो का कहना है कि ५०-५० मेढको की अनेक टुकडिया एक दूसरी टुकडी पर हमला कर रही है। अनेक मरे है, एव घायल हुए है। अनुभवियो का कथन है कि लम्बे समय तक वर्षा न होकर अचानक मूसलाधार पानी

---

1 साप्ताहिक हिन्दुस्तान के अनुसार द्वितीय विश्वयुद्ध मे मृतको की संख्या—

रूस के २१० लाख
जर्मनी के १२५ लाख
पोलैंड के ६६ लाख
चीन के ३० लाख
जापान के २७ लाख
अमेरिका के १० लाख ७० हजार
अंग्रेजी साम्राज्य के १४ लाख ३० हजार
फ्रास के १५ लाख २० हजार

पढने से मेढकों में उग्र कामवासना पैदा होती है, उसी का यह परिणाम है।

—हिन्दुस्तान, ६ जुलाई १९६४ के आधार से

१० मुक्ति देने वाला युद्ध—

(क) इमेण चेव जुज्झाहि, किं ते जुज्झेण वज्झओ।

—आचारांग ५।३

अपने अन्तर के विकारों से ही युद्ध कर। बाहर के युद्ध से तुझे क्या मिलेगा!

(ख) जुद्धारिहं खलु दुल्लभं।

—आचारांग ५।३

विकारों से युद्ध करने के लिए फिर यह अवसर मिलना दुर्लभ है।

(ग) सद्धं नगरं किच्चा, तवसंवरमग्गलं।
खन्ति निउणपागारं, तिगुत्तं दुप्पधंसयं ॥२०॥
धणुं परक्कमं किच्चा, जीवं च इरियं सया।
धिइं च केयणं किच्चा, सच्चेण पलिमन्थए ॥२१॥
तवनारायजुत्तेण, भेत्तूण कम्मकंचुयं।
मुणी विगयसंगामो, भवाओ परिमुच्चए ॥२२॥

—उत्तराध्ययन, अध्ययन ९

श्रद्धा को नगर, तप और संयम को अर्गला, क्षमा को (बुर्ज, खाई और शतघ्नी स्थानीय) मन, वचन और काय-गुप्ति से सुरक्षित, दुर्जेय और सुरक्षा-निपुण परकोटा बनाकर ॥२०॥

फिर पराक्रम को धनुष, ईर्यासमिति को उसकी डोर और धृति को उसकी मूठ बनाकर उसे सत्य से बांधे ॥२१॥

तप-रूपी लोहबाण से युक्त धनुष के द्वारा कर्म-रूपी कवच को भेद डाले। इस प्रकार संग्राम का अन्त कर मुनि संसार से मुक्त हो जाता है ॥२२॥

जय-पराजय

१ विजय कितनी सुन्दर है किन्तु कितनी मूल्यवान् भी।

—बाउफ्लर्स

२ प्रलोभनों के प्रतिरोध का प्रत्येक क्षण एक महान् विजय है।

—फेबर

३ कई युद्ध ऐसे भी हैं जिनमें हारना ही विजय है।

—गांधी

४ हार मानी र झगड़ो मिट्यो।

—राजस्थानी कहावत

५ तुलसी तहा न जीतिये, जहा जीते हु हार।

६ न तं जितं साधु जितं, यं जितं अवजीयति।
तं खो जितं साधु जितं, यं जितं नावजीयति॥

—जातक १।७०।७०

वह विजय अच्छी विजय नहीं है, जो बाद में पराजय में बदल जाए। वह विजय श्रेष्ठ विजय है, जो कभी पराजय में नहीं बदलती।

७ शासक सत्ता बढ़ाने में, व्यापारी धन इकट्ठा करने में, शत्रु शत्रु को पराजित करने में, दुकानदार ग्राहक को ठगने में और ग्राहक दुकानदार को ठगने में अपनी जीत मानते हैं, किन्तु वस्तुतः वे हार ही जाते हैं।

८ हारे उनको जीत है, जीते उनको हार।
हार जीत के भेद को, क्या समझे नगार॥

—दोहा सन्दोह

९ एक विद्वान् ने अनेक पण्डितों को जीता। दिग्विजय का पत्र लेने के लिए माता के पास आया। माता ने कहा—[illegible] अभी बाकी है। विद्वान्

कबीर के पास जाकर बोला या तो चर्चा करो या हार स्वीकार करो ! कबीर ने चर्चा नही की और लिखकर दे दिया कि कबीर हारा और मैं जीता । मा के पास आकर वह पत्र दिया तो उसमे लिखा था—मैं हारा और कबीर जीता । माता ने समझाया कि दूसरे को हराने की भावना अपनी ही हार है । ज्ञान हुआ एव सत कबीर का शिष्य बना ।

० सर्वजित्—राजा ने दिग्विजय करके 'सर्वजित्' का पद लेना चाहा । माता ने कहा—मन को जीते बिना मैं तो तुझे सर्वजित् नहीं मानती । आखिर उसने मन को जीता ।

१० सम्राट् अशोक ने गद्दी पर बैठने के आठ वर्ष बाद कलिंग-विजय की । उसमे एक लाख व्यक्ति मारे गए और डेढ लाख कैदी बने । अशोक माता से आशीर्वाद लेने आया । माता ने कहा—"लडाई मे अगर तू मारा जाता तो मेरी और तेरी रानियो की क्या दशा होती ?" सम्राट् को इस वाक्य से ज्ञान हुआ एव भविष्य मे लडाई न करने की प्रतिज्ञा की ।

९ जय का कारण—

नयेनाङ्कुरितं शौर्यं, जयाय न तु केवलम् ।
अन्ययुक्तविषं युक्तं, पथ्यं स्यादन्यथा मृतिः ।।

न्याय से प्रफुल्लित शूरता ही जय देने वाली है, न्यायशून्य नहीं । अन्य वस्तु मिश्रित विष भी उचित-पथ्य बन जाता है, अन्यथा उसी से मरण हो जाता है ।

१० जयं वेरं पसवति, दुक्खं सेति पराजितो ।
उपसन्तो सुखं सेति, हित्वा जय-पराजयं ।।

—धम्मपद, १५।५

विजय से वैर की परपरा बढती है, पराजित व्यक्ति मन मे दुखता रहता है । जो जय और पराजय को छोड देता है, वह सदा सुखी होता है ।

तीसरा कोष्ठक

१ नेता

१ मस्तक पर नेतृत्व की पट्टी चिपकाने मात्र से व्यक्ति नेता नहीं बन जाता। नेता बनने के लिए विशेष स्वभाव व गुण होने चाहिये।

२ महान नेताओं में कतिपय ऐसे गुण होते है, जो समूचे राष्ट्र को प्रेरणा देते है।

—नेहरू

३ तर्क और निर्णय एक नेता के गुण हैं।

—टेलीटस

४ प्रगतिशील नेता के लिए दो बातें आवश्यक हैं—
दिमाग में बर्फ और दिल में आग।

—विनोबा

५ नेता में ये पांच गुण आवश्यक—

१ अन्तर्मुखता, २. धैर्य, ३. आचार दृढता, ४ सुविधा-असुविधा से ऊपर, ५ अनासक्ति।

६ नेता बनने के इच्छुक अपने आपको पूछें—

१ क्या तुम शारीरिक व मानसिक थकान में भी प्रसन्नचित्त रहकर आवश्यक कार्य चला सकते हो ?

२ क्या तुम अपने सुधार के लिए कुछ पढ़ते हो ?

३ क्या तुम अपने कार्य में उत्साही हो एवं दूसरों में उत्साह भर सकते हो ?

४ क्या तुम अपने कार्य के लिए योग्य व्यक्तियों को प्राप्त कर सकते हो ?

५ क्या तुम्हारे मे अधिकाश लोगो के साथ अच्छा सम्बन्ध बनाए रखने की कुशलता है ?

६ क्या तुम्हारा निर्णय सामान्यतया ठीक होता है ?

७ क्या तुम दुष्टो का विरोध करने मे साहस रखते हो ?

—व्याख्यान के मसालो से

७ सफल नेता वही है जो पहले ही से यह समझ ले कि भीड किधर जाएगी और दौडकर भीड के आगे-आगे चलने लगे।

—एक बडा राजनीतिज्ञ

८ विद्वान् पथ पुर एता ऋजुनेपति।

—ऋग्वेद ५।८६।१

समझदार नेता ही ठीक रास्ते से ले जाता है।

६ उस्ताद बैसे पास, तो काम आवे रास —गुजराती कहावत

१० यदि नेत्रहीन को नेत्रहीन नेता मिल जाये तो दोनो कूप मे गिर पडेंगे।

—बाइबिल

११ जेनो आगू आधलो, तेनो कटक कूवामा। —गुजराती कहावत

१२ लीडरो की धूम है, फालोअर कोई नही।
सभी जनरल हैं यहा, आखिर सिपाही कौन है ? —उर्दू शेर

१३ न गणस्याग्रतो गच्छेत्, सिद्धे कार्ये सम फलम्।
यदि कार्यविपत्तिः स्याद्, मुखरस्तत्र हन्यते॥

—सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृष्ठ १६०

गण के आगे नेता बनकर बिना सोचे-समझे बिना मत चलो, क्योंकि कार्य-सिद्धि होने पर सभी को समान फल मिलता है और विपरीत अवस्था मे नेता मारा जाता है।

१४ नेतृत्व का भ्रम—जिस समय हम समझते हैं कि हम नेतृत्व कर रहे हैं, प्राय. दूसरो के नेतृत्व मे होते हैं। —बायरन

२ स्वामी

१ आत्मातिशयं धनं वा यस्यास्ति स स्वामी ।

—नीतिवाक्यामृत ११।३

जिसके पास आत्मातिशय हो अर्थात् धर्म, कुलाचार, कुलीनता व नैतिकता आदि गुणों के कारण विशुद्ध भाग्यशालिता हो तथा धन हो, उसे स्वामी कहते हैं ।

२ अकर्णदुर्बलः शूरः, कृतज्ञः सात्त्विको गुणी ।
वदान्यो गुणरागी च, प्रभुः पुण्यैरवाप्यते ॥

ऐसा स्वामी पुण्यों से ही मिलता है, जो कानों का कच्चा न हो, वीर हो, कृतज्ञ हो, सात्त्विक हो, गुणी हो, उदारवृत्तिवाला हो और गुणों का प्रेमी हो ।

३ दोषा गुणा गुणा दोषाः, दोषा दोषा गुणा गुणाः ।
रक्ते विरक्ते मध्यस्थे, स्वामिनि त्रिविधा गुणाः ॥

स्वामी में तीन गुण होते हैं—जब वह प्रसन्न होता है तब सेवक के दोषों को गुण समझता है । अप्रसन्न दशा में गुणों को दोष समझता है और मध्यस्थ-अवस्था में यथार्थ अर्थात् गुणों को गुण और दोषों को दोष समझता है ।

४ स्वामित्व—

आधिपत्यं हि प्रायोऽन्धीकरणं नराणाम् ।

—त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र

आधिपत्य (स्वामित्व) प्रायः मनुष्यों को अंधा करने वाला है ।

३ स्वामी के कर्तव्य

१ भक्त शक्त कुलीन च, न भृत्यमपमानयेत् ।
पुत्रवल्लालयेन्नित्य, य इच्छेच्छ्रियमात्मन ॥

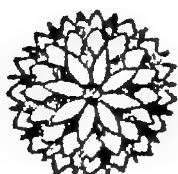
—पञ्चतन्त्र १।३८२

भक्त, शक्त एव कुलीन सेवक का कभी अपमान नही करना चाहिए। स्वामी को अगर अपनी शोभा रखनी हो तो सेवक का पुत्रवत् लालन-पालन करना चाहिए।

२ कारुण्य सविभागश्च, यस्य भृत्येपु सर्वदा ।
संभवेत् स महीपाल-स्त्रैलोक्यस्यापि रक्षणे ॥

—पञ्चतत्र २।२७

जो स्वामी सेवको के प्रति सदा दयाभाव एव सविभाग की भावना रखता है, वह तीनो लोको की रक्षा करने के लायक बन सकता है।



४ स्वामी का प्रसाद

१ प्रभु प्रसादो हि मुदे न कस्य। —कुमारसंभव

स्वामी का प्रसाद किसे आनन्द नहीं देता।

२ स्वामिनाधिष्ठितो मेषोऽपि सिंहायते।

—नीतिवाक्यामृत १०।४८

साधारण (कमजोर) मेढा भी अपने स्वामी से अधिष्ठित होने पर सिंह के समान बलवान हो जाता है, फिर मनुष्य का तो कहना ही क्या?

३ स्वामिप्रसादः सम्पदं जनयति,
न पुनराभिजात्यं, पाण्डित्यं वा। —नीतिवाक्यामृत १०।६५

स्वामी की कृपा संपदा दे सकती है किन्तु कुलीनता और पंडिताई नहीं दे सकती।

४ सूखी मेहरबानी—

लूखे मैं ओढ़ूँ बिछाऊँ, या लपेटूँ क्या करूँ?
रूखी-फीकी सूखी-साखी, मेहरबानी आपकी।।

—[illegible]

५ न क्वापि सौख्यमपराधकृतः प्रभूणाम्।

स्वामी का अपराध करने वाले को कहीं भी सुख नहीं।

६ प्रभुप्रसादे विश्वासं, न कुर्यात् स्वप्नसन्निभे।
नन्देन मन्त्री निक्षिप्तः, शकटालोऽपि बन्धने।।

—सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृष्ठ १६१

स्वामी का प्रसाद स्वप्न के समान है। इसका विश्वास नहीं करना चाहिए। नन्दराजा ने शकटाल जैसे मंत्री को कैद कर लिया। (अन्यथा राजा के निमित्त से उसे मरना पड़ा)।

५

निन्दनीय स्वामी

१ स किं प्रभुर्यश्चिरसेवकेष्वेकमप्यपराध न सहते । ११।५४
स किं स्वामी य आश्रितेषु व्यसने न प्रविधत्ते । २२।२४

—नीतिवाक्यामृत

वह स्वामी क्या काम का, जो अपने चिरकालीन सेवक का एक भी अपराध नही सहता । ११।५४

वह स्वामी व्यर्थ है, जो सकट के समय मे भी अपने सेवको की सहायता नही करता । २२।२४

२ याचते कार्यकाले य., स किं भृत्य स किं सुहृत् ।
यो न सभावयेद् भृत्यान्, कार्यकाले स किं प्रभु ॥

—हितोपदेश २।३२

कार्य के समय मागने वाले सेवक और मित्र किस काम के तथा कार्य के समय सेवको को याद न करने वाला स्वामी किस काम का ।

३ क्रूरं व्यसिनन लुब्ध-मप्रगल्भ सदामयम् ।
मूर्खमन्यायकर्तार, नाधिपत्ये नियोजयेत् ॥

ऐसे व्यक्ति को कभी स्वामी नही बनाना चाहिए, जो क्रूर हो, व्यसनी हो, लोभी हो, नासमझ हो, सदा रोगी रहता हो, मूर्ख हो एव अन्याय करने वाला हो ।

सेवक

१ इङ्गितज्ञा हि सेवकाः ।

—त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र ४।१

सेवक स्वामी के इंगित को समझने वाले होते हैं ।

२ नव वस्त्र नव छत्र, नव्या स्त्री नूतन गृहम् ।
सर्वत्र नूतन शस्त, सेवकान्ने पुरातने ॥

—सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृष्ठ १६६

नया वस्त्र, नया छाता, नई स्त्री और नया घर—ये सभी जगह अच्छे माने जाते हैं किंतु सेवक और चावल पुराने अच्छे होते हैं ।

३ नवसेवकः को नाम न भवति विनीतः ।

—नीतिवाक्यामृत ३२।८९

नया सेवक कौन विनीत नहीं होता ? प्रायः थोड़े दिन तो विशेष भक्ति दिखलाता ही है ।

४ सेवक की आवश्यकता—

(क) बधा पालखी मा बेसे त्यारे उपाडे कोण ?
सौ घोडे चढे त्यारे आगल कोण दोडे ?

० हुँ राणी तु राणी, कोण भरे पाणी ।

—गुजराती कहावतें

(ख) नाचारी जात मे सगला ही ठाकर ।

—राजस्थानी कहावत

५ सेवक के कर्तव्य—

(क) यमनुजीवेत् तं नापवदेत् ।

—कौटलीय अर्थशास्त्र

जिसके सहारे मे जीना हो, उस स्वामी की निन्दा नही करनी चाहिए।

(ख) वरमात्मनो मरण, नाहितोपदेशः स्वामिषु।

—नीतिवाक्यामृत ५।१६

सेवक के लिए स्वय मर जाना अच्छा है किन्तु अपने स्वामी को अहित-कारी उपदेश देना अच्छा नही।

(ग) स्वामी सू किसो सग्राम।

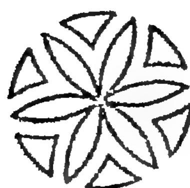
—राजस्थानी कहावत

६ कर्त्तव्यहीन सेवक—

आहारे वडवानलश्च शयने य कुम्भकर्णायते,
सदेशे बधिर पलायनविधौ सिहः शृगालो रणे।
अन्धो वस्तुनिरीक्षणेऽथगमने खञ्ज पटु क्रन्दने,
भाग्येनैव हि लभ्यते पुनरसौ सर्वोत्तम सेवक ॥

—सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृष्ठ १०२

जो खाने मे वडवानल है, सोने मे कुभकर्ण है सदेश सुनने मे बहरा है, पलायन करने मे सिह है, सग्राम मे गीदड है, वस्तु को देखने मे अन्धा है, काम के लिए कही जाने मे खोडा लगडा है और रोने मे निपुण है—इन गुणो वाला सर्वोत्तम सेवक भाग्य से ही मिलता है अर्थात् पूरे दुर्भाग्य से मिलता है।



सेवक की दयनीय दशा

१ स्वाभिप्रायपरोक्षस्य, परचित्तानुवर्तिन. ।
स्वय विक्रीतदेहस्य, सेवकस्य सुख कुत ॥

—सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृष्ठ १०१

जो अपने अभिप्राय के प्रतिकूल दूसरों के चित्त के पीछे चलने वाला है एव अपने शरीर को भी बेचा हुआ-सा रखने वाला है, उस सेवक को सुख कहा ?

२ परसेवैकसक्ताना, कुतः स्नेहो निजे जने ।

—सुभाषितरत्नखण्डमजूषा

दूसरो की सेवा मे आसक्त व्यक्तियो का अपने लोगो मे स्नेह कहा ?

३ प्रणमत्युन्नतिहेतो,—र्जीवितहेतोर्विमुञ्चति प्राणान् ।
दु खीयति सुखहेतो, को मूढ सेवकादन्य ॥

—हितोपदेश २।२७

सेवक को छोड़कर दूसरा ऐसा मूर्ख कौन हो सकता है, जो उन्नति के लिए नीचा झुके, स्वामी को जीवित रखने के लिए अपने प्राणों का त्याग करे और सुख के लिए दुःख का अनुभव करे ।

४ सेवया धनमिच्छद्भि, सेवकै पश्य ! यत्कृतम् ।
स्वातन्त्र्य यच्छरीरस्य, मूढैस्तदपि हारितम् ॥

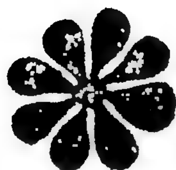
—हितोपदेश २।२०

सेवावृत्ति से धन की इच्छा करने वाले मूर्ख सेवकों ने जो कुछ किया है, उसे देखो तो सही ! बेचारों ने अपनी शारीरिक स्वतन्त्रता भी हार दी ।

५ भूशय्या ब्रह्मचर्यं च, कृशत्व लघुभोजनम् ।
सेवकस्य यतेर्यद्वद्, विशेष. पापधर्मज: ।

—सुभाषितरत्नभांडागार, पृष्ठ १०१

जमीन पर सोना, ब्रह्मचर्य पालना, दुर्बल रहना और थोडा भोजन करना—सेवक की ये चारो क्रियाए मुनि के समान ही होती हैं। अतर इतना ही है कि सेवक की उक्त क्रियाए पाप के लिए होती है और मुनि की धर्म के लिए।



१ मौनान्मूक प्रवचनपटुश्चाटुको जल्पको वा।
धृष्ट पार्श्वे वसति च यदा दूरतश्चाप्रगल्भ ॥
क्षान्त्या भीरुर्यदि न सहते प्रायशो नाभिजात ।
सेवाधर्म परमगहनो योगिनामप्यगम्य ॥

—भर्तृहरि-नीतिशतक ५८

सेवक यदि मौन रहे तो मूक, चतुरता से बोले तो बातूनी अथवा वाचाल, निकट बैठा रहे तो धीठ, दूर रहे तो मूर्ख, सहनशील हो तो डरपोक एव सहन न करे तो प्राय अकुलीन कहा जाता है। तत्त्व यह है कि सेवाधर्म अत्यन्त कठिन है और योगियो द्वारा भी इसे निभाना कठिन है।

२ सेवा श्ववृत्तिराख्याता, यैस्तैर्मिथ्या प्रजल्पितम्।
स्वच्छन्द चरति श्वात्र सेवक परशासनात् ॥

—पञ्चतन्त्र १।२६१

सेवा को श्वानवृत्ति कहने वाले झूठे है, क्योंकि श्वान स्वतन्त्र रूप से घूमता है और सेवक को स्वामी के आदेशानुसार चलना पड़ता है।

३ सेवा से लाभ—

(क) करै सेवा तो मिलै मेवा। —राजस्थानी कहावत

० करे सेवा तो मले मीठा मेवा।

० चाकरी करता भाखरी मळे। —गुजराती कहावत

(ख) अप्रधान प्रधान स्यात्, काले सम्यङ्निषेवणात्।
प्रधानोऽप्यप्रधान स्यात्, सेवालस्यादिना जन ॥

—शुक्रनीति

समय पर सेवा करने से अमुख्य-मुख्य बन जाता है तथा सेवा में आलस्यादि करने से मुख्य भी अमुख्य हो जाता है।

* *

१ अहो ! अहीनामपि खेलनेभ्यो, दु खानि दूर नृप सेवनानि ।
एकोहिना मृत्युमुपैति दष्ट, सपुत्र-पौत्रस्तु नृपेण दष्ट. ॥

सर्पों का खेल करने से भी राजाओ की सेवा ज्यादा खतरनाक है। साँप का काटा हुआ तो सिर्फ एक ही मरता है किंतु राजा का काटा हुआ, पुत्र-पौत्रो सहित मरता है।

२ अत्यासन्ना विनाशाय, दूरस्था न फलप्रदा ।
सेव्यन्ता मध्यभावेन, राजा वह्निर्गुरु स्त्रिय ॥११॥
अग्निराप- स्त्रियो मूर्ख- सर्पो राजकुलानि च ।
नित्य यत्नेन सेव्यानि, सद्य प्राणहराणि षट् ॥१२॥

—चाणक्यनीति १४

१ राजा, २ अग्नि, ३ गुरु, ४ स्त्री—ये चारो अधिक निकट रहने से विनाश कर देते हैं और दूर रहने से फल नही देते अत इनकी मध्यमभाव से सेवा करनी चाहिए ॥११॥

१ अग्नि, २ पानी, ३ स्त्री, ४ मूर्ख, ५ सर्प, ६ राजकुल—ये छहो शीघ्र प्राणनाशक हैं, अत इनकी सेवा सावधानीपूर्वक करनी चाहिए ॥१२॥

१ ताडितोऽपि दुरुक्तोऽपि, दण्डितोऽपि महीभुजा।
न चिन्तयति यः पापं, स भृत्योऽर्हो महीभुजाम् ॥८९॥

योऽनाहूतः समभ्येति, द्वारे तिष्ठति सर्वदा।
पृष्टः सत्यं मितं ब्रूते, स भृत्योऽर्हो महीभुजाम् ॥९०॥

अनादिष्टोऽपि भूपस्य, दृष्ट्वा हानिकरं च यः।
यतते तस्य नाशाय, स भृत्योऽर्हो महीभुजाम् ॥९१॥

न क्षुधा पीड्यते यस्तु, निद्रया न कदाचन।
न च शीतातपाद्यैश्च, स भृत्योऽर्हो महीभुजाम् ॥९२॥

—सुभाषितरत्नभांडागार पृष्ठ १५०

जो ताडने पर, धमकाने पर एवं दण्ड देने पर भी राजा के प्रति बुरा विचार नहीं करता, वह सेवक राजाओं के योग्य कहलाता है ॥८९॥

जो बिना बुलाए आ जाता है, सदा द्वार पर खड़ा रहता है और पूछने पर ही परिमित एवं सत्य बोलता है, वह सेवक राजाओं के योग्य कहलाता है ॥९०॥

जो न कहने पर अनिष्ट को दूर करने का प्रयत्न करता है, वह सेवक राजाओं के योग्य कहलाता है ॥९१॥

जो भूख, नींद एवं सर्दी-गर्मी से विचलित न होता हुआ सदा राज-सेवा में लगा ही रहता है, वह सेवक राजाओं के योग्य कहलाता है ॥९२॥

२ राजवल्लभ सेवक—

अन्तःपुरचरैः सार्धं, यो मन्त्रं न समाचरेत्।
न कलत्रैर्नरेन्द्रस्य, स भवेद्राजवल्लभः ॥२६३॥
सम्मतोऽहं प्रभोर्नित्य—मिति मत्वा व्यतिक्रमेत्।
कृच्छ्रेष्वपि न मर्यादां, स भवेद्राजवल्लभः ॥२६४॥
द्विषि द्वेषपरो नित्य—मिष्टानामिष्टकर्मकृत्।
यो नरो नरनाथस्य, स भवेद्राजवल्लभः ॥२६५॥
द्यूतं यो यमदूताभं, हाला हालाहलोपमाम्।
पश्येद्दारान् वृथाकारान्, स भवेद्राजवल्लभः ॥२६६॥

—सुभाषितरत्नभण्डागार पृष्ठ १५४

जो अन्तःपुर में रहने वालों से और रानियों से कभी सलाह मशविरा नहीं करता, वह सेवक राजा का प्रीतिपात्र होता है ॥२६३॥

मैं राजा का प्रेमपात्र हूँ, यह सोचकर जो कभी मर्यादा का उल्लंघन नहीं करता, वह राजा का प्रीतिपात्र होता है ॥२६४॥

जो राजाओं के शत्रुओं से शत्रुता और इष्ट-मित्रों से मित्रता रखता है, वह राजा का प्रीतिपात्र होता है ॥२६५॥

जो द्यूत को यमदूत, मदिरा को हलाहल जहर एवं सुन्दर-परस्त्री को व्यर्थ रूपवाली मानता है, वह राजा का प्रीतिपात्र होता है ॥२६६॥



११

नौकरी

१ पार की नौकरी सांप खिलावणे के बराबर है।—राजस्थानी कहावत

२ उत्तम खेती, मध्यम वेपार ने कनिष्ठ चाकरी।

—गुजराती कहावतें

० भूख मां भूंडी चाकरी।

—राजस्थानी कहावत

३ नौकरी रै र नकारै रै वैर।

४ प्यारी तो मरने पड़ी, बच्चे दुखी अथाह।
फिर भी छुट्टी नहिं मिले, हाय! नौकरी हाय!
रोटी थाली में पड़ी, लग रही भूख अथाह।
छोड़ उसे जाना पड़े, हाय! नौकरी हाय!
खाट-बिछौने हैं बिछे, आ रही नींद अथाह।
छोड़ उसे जाना पड़े, हाय! नौकरी हाय!
पढ़ा-लिखा बिल्कुल नहीं, मालिक मूर्ख गवाह।
भरनी उनकी हाजरी, हाय! नौकरी हाय!
काम करो अच्छी तरह, चाहे चित्त लगाय।
ऊपर से बोला नहीं, हाय! नौकरी हाय!
दिल तो कहता पाप है, फिर भी हर अन्याय।
परवश तो करना पड़े, हाय! नौकरी हाय! —दोहा-संदोह

५ बिगड़ी खेती र सुधरी चाकरी बराबर। —राजस्थानी कहावत

६ राष्ट्रपति व प्रधानमंत्रियों का वेतन :—

अमेरिका के राष्ट्रपति—	२,००,००० डालर वार्षिक
ब्रिटेन प्रधानमंत्री—	२०,००० पौंड वार्षिक
भारत के राष्ट्रपति—	१०,००० रुपये मासिक
जापान के प्रधानमंत्री—	१,१०,००० येन मासिक

—[illegible] सन् १९७० ई०

१२ नौकर

१ नौकर को एक नहीं नौ-नौ काम करने पड़ते हैं। —हिन्दी कहावत

२ नौकर खाय ठोकर, दास ते सदा उदास।

० घासिया घोडा ने पेटिया चाकर। —गुजराती कहावतें

३ चाकर है तो नाचा कर, ना नाचे तो ना चाकर।

० चाकर से कूकर भला, सोवे अपनी नींद। —हिन्दी कहावतें

४ पांच रो मालिक र पचास रो गुमास्तो। —राजस्थानी कहावत

५ ईमानदार नौकर बहुत थोड़े होते हैं। —धनमुनि

६ नौकर के विषय में विशेष—

(क) नौकर रखते समय यह सोचना चाहिये कि इसके घर का खर्चा कितना है? अगर खर्चे से नौकरी कम होगी तो संभव है, नौकर को चोरी के लिए विवश होना पड़ेगा।

(ख) नौकर के साथ खाने-पीने में भेदभाव नहीं रखना चाहिये और उसकी शक्ति से अधिक काम नहीं कराना चाहिये अन्यथा वह ज्यादा दिन नहीं टिकेगा।

(ग) नौकर को नौकर न समझकर यदि तुम अपने भाई और पुत्र के समान समझोगे तो वह सदा के लिए तुम्हारा बन जायेगा। —धनमुनि

७ नौकरी काटने वाला सेठ—एक सेठ आने में देरी होने पर मुनीम की नौकरी काट लेता था। एक दिन सेठ को चोरों ने घेर लिया। उसने मुनीम को आवाज दी। उसने कहा—आधा घंटा की नौकरी काट लेना, नहीं आता मैं तो। चोर सेठ का धन लूट कर ले गये एवं मार-पीट कर गए।

१३ स्वाधीन-स्वतन्त्र

१ स्वावलम्बी सदा सुखी।

—संस्कृत कहावत

स्वतन्त्र व्यक्ति सदा सुख का अनुभव करता है।

२ आपरी नीद सोवै र आपरी नीद जागै।

—राजस्थानी कहावत

३ मिले खुश्क रोटी जो आजाद रहकर,
(तो वह) खौफ व जिल्लत के हलुवे से बेहतर।

— उर्दू शेर

४ स्वाधीनता और दासता मन के परिणाम हैं, जिसका मन स्वाधीन है, वह विष्ठा का टोकरा ढोता हुआ भी राजा है।

—गांधी

५ जो व्यक्ति अपना स्वामी (इन्द्रियजित) नहीं, वह कभी स्वतन्त्र नहीं।

—एपिक्टेटस

६ जिसे सत्य ने स्वाधीन बना दिया, केवल वही स्वाधीन है, शेष सभी दास हैं।

—कूपर

७ [illegible] अधिक [illegible] दास कोई भी नहीं, जो [illegible] कि हम स्वतन्त्र हैं। —गेटे

८ [illegible] आदमियों का काम आजाद नहीं [illegible] [illegible] को आजाद बनाना होगा। —थोरो

१ स्वतन्त्रता-स्वदमन अर्थात् इन्द्रिय-मन को वश करना। स्वतन्त्रता में संयम की आवश्यकता है—पृथ्वी से बंधा हुआ वृक्ष फलता है, किनारों से बंधी हुई नदी समुद्र से मिलती है, कील से बंधे हुए तार मनोहर शब्द सुनाते हैं और नियन्त्रित भाप मोटर, स्टीमर व बड़ी-बड़ी मशीनों को चला देती है।

—व्याख्यान के मसालों से

२ स्वतन्त्रता राष्ट्र का शाश्वत यौवन है। —फोय

३ व्यक्तिगत स्वतन्त्रता ही मानव समाज की मर्यादा एवं प्रसन्नता का प्रथम सोपान है।

—बुल्वरलिटन

४ वासना की भूमि पर कभी स्वतन्त्रता अंकुरित नहीं होगी। वह ज्ञान के तीर उदित होती है।

—टी एल वास्वानी

५ गांधी जी के पास सर्वप्रथम १६ आदमी थे और अंग्रेजों के पास करोड़ों। किन्तु सत्य एवं संयम के बल से ही वे स्वतन्त्रता प्राप्त कर सके।

६ भूखी जनता को कितनी भी राजनीतिक स्वतन्त्रता की बातें कहो, सन्तुष्ट नहीं कर सकती।

- लेनिन

७ स्वतन्त्रता अनेक प्रकार की है। जैसे—वाणी-स्वतन्त्रता, मुद्रण-स्वतन्त्रता, भ्रमण-स्वतन्त्रता, आचार-स्वतन्त्रता एवं विचार-स्वतन्त्रता।

८ स्वतन्त्रता योग्यतानुसार ही दी जा सकती है। क्रोधी को वाणी-स्वतन्त्रता, अंधे को भ्रमण स्वतन्त्रता, दुराचारी को—आचार स्वतन्त्रता और मूर्ख को विचार स्वतन्त्रता देने से नुकसान ही होगा।

—व्याख्यान के मसालों से

१५ स्वाधीनता-आजादी

१ स्वाधीनता विकास का प्रथम चरण है।

—विवेकानन्द

२ नागरिक स्वाधीनता के मानी हैं, साधारण कानून की मर्यादा के अन्दर रहते हुए, आदमी जो चाहे, कहे और करे! —गांधी

३ उस स्वाधीनता को तिलाञ्जली दे दो जो पाप की अनुचरी हो।

—रामकृष्ण

४ आजादी—

(क) दो किस्म की आजादी है। झूठी—जहां कोई जो चाहे करने को आजाद है। सच्ची—जहां वह वही करने को आजाद है, जो उसे करना चाहिए।

—किंग्सले

(ख) पाप की गुलामी करने वाली आजादी को नष्ट कर दो!

—रामतीर्थ

(ग) अपनी आजादी को मनुष्य, पैसा, कुल या धन के हाथ न बेच दो!

—रामकृष्ण

(घ) भारत के लिए आजादी कोई नयी चीज नहीं, क्योंकि यहां प्रत्येक [illegible] का चरम लक्ष्य कर्मों से मुक्त होना है। महात्मा तिलक कहा करते थे कि आजादी भारत का जन्मसिद्ध अधिकार है, किन्तु [illegible] नुसार नागरिक-अधिकार माना गया है। [illegible]

(ङ) किसी भी बेगुनाह को मारना अपनी आजादी खोना है।

—गांधी

पराधीनता

१ रोग, शोक, मरण, नीरस भोजन, सत्ताधीनता, याचना, इष्ट-वियोग, अनिष्ट-संयोग आदि न चाहने पर भी कर्मवश प्राप्त होते हैं—यह एक बड़ी भारी पराधीनता है।

२ राजा प्रजा पर, सेठ मुनीम पर, पति पत्नी पर—ऐसे एक दूसरे पर हुक्म चलाना चाहते हैं। पराधीन होकर रहना कोई नही चाहता।

—व्याख्यान के मसालो से

३ पराधीन सपने सुख नाही।

—रामचरित मानस

४ पराधीन वृथा जन्म।

पराधीन होकर जीना व्यर्थ है।

० कष्टः खलु पराश्रयः।

पराधीनता निश्चित रूप से कष्टमयी है।

० धिगस्तु परवश्यताम्

—सुभाषितरत्नखण्ड मंजूषा

परवशता को धिक्कार है।

५ पर की आशा सदा निराशा।

—हिन्दी कहावन

६ कवलः शक्यते क्षेप्तुं, नाकृष्टुं हस्तिनो मुखात्

—त्रिषष्टि शलाकापुरुषचरित्र

हाथी के मुख में ग्रास देना अपने हाथ में है किन्तु वापिस निकालना नहीं।

७ यद्-यत् परवशं कर्म, तत्तद् यत्नेन वर्जयेत्।

जो-जो काम परवश हैं, उन्हें यत्नपूर्वक छोड़ते रहो।

८ परायत्तः प्रीते कथमिव रस वेत्ति पुरुष

—मुद्राराक्षस नाटक

पराधीन पुरुष प्रीति के रस को कैसे जान सकता है ?

९ वर मानिनो मरण, न परेच्छानुवर्तनादात्मविक्रय ।

—नीतिवाक्यामृत, २६।५६

स्वाभिमानी को मर जाना अच्छा है, परन्तु पराई इच्छानुसार चलकर अपने आप को बेचना अच्छा नहीं ।

१० स्ववश रकपणो भलो, शु परवश रगरोल ।
वर पोतानी पातली, शू पर घरनो झोल ।।

—पंदराजानो रास



शासक

१ प्रजा दण्डधराभावे, मात्स्यं न्यायं श्रयन्त्यमू ।

—महापुराण

यदि दण्ड देने वाला न हो तो प्रजा मछलियों की तरह एक-दूसरे को खाने लग जाय।

२ शासक के लिए एक सर्वोपरि गुण है—अव्यग्रता।

—विलियमपिट

३ धर्मशील-पुरुष राष्ट्र पर शासन करे, व्यूह-विद्या में निपुण व्यक्ति सेनापति बने एवं व्यवहार-साधनों में अलिप्त व्यक्ति राजा बने। अनुभव ऐसा है कि जब निरोधक कानून लोकव्यवहार पर अंकुश लगाते हैं तो देश गरीब हो जाता है, जब हथियारों की खुली छूट दी जाती है तो सरकार खतरे में पड़ जाती है, लोग जितने ही धूर्त बनते हैं, बनावटी बातें बढ़ती हैं और हाथ सफाई का सम्मान होता है तो दगाबाजों की बन आती है।

—ताओउपनिषद् ७।५७

४ जो शासक रखता नहीं, जनमानस का ध्यान।
चन्दन! रह सकती नहीं, उस शासक की शान।

—दोहा-द्विशती

५ क्रूर शासक—

चीन का सम्राट् च्यांग चेंट (१६४३-८८) संसार का सबसे बड़ा क्रूर-शासक माना जाता है। गद्दी पर बैठने के दिन उसने छ लाख पुरुष, चार लाख स्त्रियां, तीन लाख सैनिक एवं ७०० राज कर्मचारियों को मारा था।

—हिन्दुस्तान, २८ अगस्त १६६६

१८

१ उत्पथ-प्रतिपन्नस्य, दण्डो भवति शासनम्। —पञ्चतन्त्र

उन्मार्गगामी को दण्ड देने का नाम शासन है।

२ शासन का उद्देश्य जनता का कल्याण एवं उन्नति है। राजा जनता के लिए है, पर जनता राजा के लिए नहीं। —[illegible]

३ कठोर दण्ड देने वाला शासन जनता में क्षोभ उत्पन्न करता है, मृदु दण्ड देने वाले शासन की जनता अवहेलना कर देती है और उचित दण्ड देने वाले शासन के प्रति जनता नत होती है। जो शासन दण्ड का समुचित उपयोग करता है वह जनता को धर्म-अर्थ-काम से युक्त करता है और जो अनुचित प्रयोग करता है, वह गृहस्थों में ही नहीं, अपितु परिव्राजकों में भी विद्रोह की भावना उत्पन्न कर देता है। —कौटिल्य

४ [illegible] स्वतन्त्र देश में सत्ताधों की अल्पता होने पर भी [illegible] अधिक [illegible] है। किंतु स्वेच्छाचारी शासन में सत्ताधों का बाहुल्य होते [illegible] भी [illegible] अल्प रहता है। —[illegible]

५ हुक्कारादि दण्ड—पहले हुंकार, [illegible] एवं धिक्कार के दण्ड थे। फिर [illegible] कटवाना, हाथी के पैरों नीचे फिंकवाना [illegible] सूली-फांसी आदि [illegible]। फांसी का दण्ड अब भी विद्यमान है।

६ पांच प्रकार का दण्ड—१—[illegible] २—[illegible] ३—[illegible] ४—अपमानदण्ड ५—इन्द्रियविपर्यासदण्ड। —पांच [illegible] [illegible] से

७—संसार में चार प्रकार के शासन चलते हैं—

१. धन का शासन २. [illegible] का शासन ३. [illegible] का शासन ४. प्रेम का शासन।

१९ सत्ता

१ सत्ता एक ऐसा मद है, जो आदमी को अंधा बना देता है। सत्ता मिलने के बाद साधारण व्यक्तियों पर प्रायः नजर नही टिकती।

—धनमुनि

२ सत्ता का सदुपयोग करने वाले विरले हैं। दुरुपयोग तो दुनिया करती ही है।

○ सत्ता पाकर जो दुनिया का कुछ भला कर गए, वे राम की तरह अमर बन गए और जो बुरा कर गए वे रावण की तरह सदा के लिए बदनाम हो गए। सत्ता चली जाती है, लेकिन भलाई-बुराई नही जाती।

—धनमुनि

३ सत्ता का महत्व—

(क) सत्ता मे वह अद्भुत तेज है, जिससे साधारण आदमी भी चमकने लगता है और उसके चारो ओर वाह-वाह होने लगती है।

—धनमुनि

(ख) धन ने सत्ता बडी।

— हिन्दी कहावत

(ग) जेना हाथमा डोई तेना सौ कोई।

○ सत्ता आगल डाणप शा कामनु।

○ सौ तारी दलील ने एक मारो हुकम।

—गुजराती कहावतें

२०

क्रांति और संघर्ष

१ क्रांति—

(क) क्रान्तियाँ छोटी-छोटी बातों के विषय में नहीं होतीं, किन्तु उनसे उत्पन्न होती हैं। —अरस्तू

(ख) क्रान्तियाँ उत्पन्न की नहीं जातीं, वे स्वयं उत्पन्न होती हैं। —वेन्डेलफिलिप

(ग) क्रान्ति में महत्त्व सामाजिक-परिवर्तन का है न कि संघर्ष और रक्तपात का। —बाबा धर्माधिकारी

(घ) क्रान्तियों में सर्वोच्च शक्ति अन्त में सबसे त्याज्य व्यक्ति के हाथ में पहुँच जाती है। —डान्टन

२ संघर्ष—

(क) संघर्षों को पर्याप्त समय के लिये स्थगित नहीं किया जा सकता, उन्हें तय करना होगा। —एमिल्स

(ख) संघर्षों को देखकर, चन्दन! धैर्य न छोड़।
लाते हैं संघर्ष ही, जीवन में कुछ मोड़।
कम्पाता भूकंप ज्यों, भूमि-गर्भ का ज्ञान।
त्यों जीवन का जलजला, करता नवनिर्माण।
—चन्दन मुनि

१० अत्यंत शिष्ट कानूनों का पालन प्राय कम ही होता है जबकि अत्यंत कठोर कानूनों का उल्लंघन कम होता है।

—फ्रैंकलिन

११ रजाबंदी के साथ लगाई गई पाबंदियाँ ही फायदा पहुंचा सकती हैं।

—गांधी

१२ कभी आपको इतना उच्च मत समझो। कानून तुमसे भी ऊपर है।

—थामस फूलर

१३ वेपारमा वायदो ने शास्त्र मा कायदो।

—गुजराती कहावत

१४ अजब कानून—

न्यूयार्क मे ऐसा कानून है कि सड़क पर चलता हुआ कोई भी व्यक्ति कीड़े को बिना कुचले निकल जायगा तो उस पर ५० डालर जुर्माना होगा।

—सरिता, अप्रैल १६५८

२१ कानून

१ कानून तो जैसे मकडी के जाले हैं। छोटे-छोटे जीव उनमे फस कर प्राण खो बैठते हैं, जबकि बडे-बडे जीव उन्हे भी तोड डालते हैं।

२ कानून एक ऐसे गड्ढे के समान है, जिसका कोई थाह नही।

—अबूर्थनॉट

३ कानून दुष्टो द्वारा दुष्टो के लिए ही बनाये जाते हैं।

—इटालियन कहावत

४ क्या बिल्ली चूहो के लिए कभी उचित कानून बना सकती है।

—जॉन ब्राइट

५ मक्कारो और गद्दारो के लिए कोई कानून नही हैं।

—रस्किन

६ छोटे-छोटे कानून बडे-बडे अपराधो को जन्म देते हैं।

—उइदा

७ नये कानून, नये स्वामी और नए धोखे।

—हिन्दी कहावत

८ निर्धनो पर कानून शासन करता है और धनी कानूनो पर शासन करते हैं।

—ओलिवर गोल्डस्मिथ

९ कानून मनुष्यो को अधिकार देता है लेकिन उसके उपयोग की शक्ति नही देता। कानून मनुष्य को मौका देता है पर उससे फायदा उठाने की कुव्वत पैदा नहीं करता। कानून घोडे को पानी दिखा सकता है किन्तु पिला नही सकता।

—दादा धर्माधिकारी

१० अत्यंत शिष्ट कानूनों का पालन प्रायः कम ही होता है जबकि अत्यंत कठोर कानूनों का उल्लंघन कम होता है।

—फ्रैंकलिन

११ रजामंदी के साथ लगाई गई पाबंदियां ही फायदा पहुंचा सकती हैं।

—गांधी

१२ कभी आपको इतना उच्च मत समझो। कानून तुमसे भी ऊपर है।

—थामस फुलर

१३ वेपारमां वायदो ने शास्त्र मां कायदो।

—गुजराती कहावत

१४ अजब कानून—

न्यूयार्क में ऐसा कानून है कि सड़क पर चलता हुआ कोई भी व्यक्ति कीड़े को बिना कुचले निकल जाएगा तो उस पर ५० डालर जुर्माना होगा।

—सरिता, अप्रैल १९४८

२२ नियम

१ न नियम भिन्द्यात् ।

—चरक संहिता-सूत्रस्थान ८।२५

नियम को मत तोडो ।

२ कदापि मर्यादा नातिक्रमेत् ।

—कौटलीय-अर्थशास्त्र

मर्यादा का उल्लघन कभी नही करना चाहिए ।

३ भंग मर्यादा हुए पर, दुर्दशा होती वडी ।
वाग से वाहर झुका, तरु भी व्यथा पाता वडी ॥

—हिन्दी पद्य

४ नियमो का विधान मनुष्य के लिए है, पर मनुष्य का निर्माण नियम के लिए नही ।

—रामतीर्थ



न्याय

२२

१ युक्त्यार्थपरीक्षणं न्याय.।

—भिक्षु-न्यायकर्णिका १।१

साध्य-साधन के अविरोध को युक्ति कहते हैं। युक्ति द्वारा वस्तु की परीक्षा करना न्याय है।

२ नियमयुक्त व्यवहार का नाम न्याय है।

३ सत्य या धर्म मे परिणत होना न्याय है।

—[illegible]

४ न्याय का थोड़ा-बहुत व्यवहार वर्षों की झूठी भक्ति से [illegible] अच्छा है।

—[illegible]

५ ईश्वरी न्याय की चक्की [illegible] [illegible] से [illegible], किन्तु [illegible] [illegible] है।

—[illegible]

६ अगर न्याय से प्यार होगा तो ईश्वर तुम्हारा साथी बन जाएगा।

—[illegible]

७ अल्लाह ने तराजू स्थापित किया है किन्तु [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मत करो।

—[illegible]

८ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

२२

९ आज का हमारा न्याय बुरी तरह बेलगाम, खुले आम अंधा है और बेकसी की दीर्घ मार से वह पीडित है।

—रस्किन

१० ढवा न्याय र ढवा खेती।

० राजा करै सो न्याव र पासो पडै सो दाव।

० भाठो र न्याय बैठावै ज्यूं ही बैठ जावै।

—राजस्थानी कहावतें

११ न्याय मे विलम्ब करना न्याय को अस्वीकार करना है।

— ग्लेडस्टन

१२ वलात्कृतमन्यायकृतं राजोपाधिकृत न प्रमाणम्।

—नीतिवाक्यामृत २८।११

जबरदस्ती से किया हुआ, अन्याय से किया हुआ एव राजा की उपाधि से किया हुआ कार्य प्रमाण नही है।

१३ हम प्रेम का दरिया वहा सकते हैं, पर न्याय के नाम से नानी मर जाती है।

—रस्किन

१४ अन्यायोपेक्षा सर्व विनाशयति।

—नीतिवाक्यामृत ८।२०

अन्याय की उपेक्षा सर्वनाश करने वाली है।



न्यायाधीश

१ न्यायाधीश सैकिण्ड गॉड (दूसरा ईश्वर) माना जाता है।

२ न्याय के पद पर बैठने वाले मनुष्य को पक्षपात और द्वेष से मुक्त होना चाहिए।

३ योर जजमेंट स्टुड बी इम्पार्शल, करेक्ट एण्ड फर्म।

—हैडमास्टर रामचन्द्र

तुम्हारा निर्णय पक्षपातरहित, न्यायपूर्ण एवं निश्चित होना चाहिए।

४ न्यायार्थ अपने बन्धु को भी दण्ड देना धर्म है।

—मैथिलीशरण गुप्त

५ न्यायाधीश में चार बात अवश्य होनी चाहिये—

(१) नम्रतापूर्वक सुनना (२) बुद्धिमत्तापूर्वक उत्तर देना। (३) शान्त होकर विचार करना (४) निष्पक्ष होकर न्याय करना।

६ सुण हाकिम! सलाम करे, अरजी [illegible] हूँ यार!
हजारूँ री [illegible] [illegible] [illegible]।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], न्याय [illegible]।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।
सुण हाकिम! सलाम करे, अरजी [illegible] हूँ यार!

—[illegible]दास

७ [illegible] हाकिम और [illegible] [illegible]।

८ हाकिम बदल जाता है, हुक्म नहीं बदलता।

—हिन्दी कहावतें

८ अजब न्यायाधीश—

(क) उत्तरप्रदेश मे किसी के खेत मे चर लेने से मजिस्ट्रेट ने भैस को दो साल की कैद दी। जेलर ने कहा—हजूर! जेल मनुष्यो के लिए है।

(ख) पोलेण्ड मे भवननिर्माण के मजदूरो ने अपने मैनेजर को गाडी मे लादकर कूडे मे फेंक दिया। क्रुद्ध होने पर उन्होने एक आदेश पत्र दिखाया। जिसमे "मैनेजर को फैंक दो" ऐसा उसी की सही वाला हुक्म था।

९ निर्णय के अजब तरीके—

(क) दो-सौ वर्ष पहले विवाद का फैसला लाडुएल-कुश्ती मे होता था। सयुक्त राष्ट्रसघ ने इसे रोका।

(ख) वि० स० २०१२ सगरूर मे कजडो के चोरी हुई। बिरादरी मिली, दो आदमी तालाब मे कुदाये गये। जिस पक्ष का पहले बाहर निकला, उस पक्ष को चोरी का सारा धन-माल देना पडा।

—श्रुति के आधार पर

(ग) टोकरी का न्याय—चाय और चावल के व्यापारियो मे टोकरियो के स्वामित्व के विषय मे झगडा हो गया। वे न्यायार्थ राजा के पास गये। राजा ने पूछा—टोकरी! तेरा स्वामी कौन है? नही बोलने पर उसके २० डण्डे लगवाये। चाय की पत्तिया झड पडी। न्याय हो गया।

—कथालोक

(घ) सात हाथी—पिता ने बडे पुत्र को सपत्ति का आधा हिस्सा, दूसरे को चौथाई हिस्सा और तीसरे को आठवा हिस्सा लेने के लिए कहा। स्वय मर गया, सपत्ति मे सात हाथी थे। तीनो भाई लडने लगे, निपटारा नही हो सका। बुद्धिमान्-मन्त्री ने एक हाथी अपना मिलाकर न्याय किया। पहले को चार, दूसरे को दो और तीसरे को एक हाथी दिया (लोक चमत्कृत हुए) —अध्ययन के आधार पर

२५ पंच

१ ज्ञाती गोती नौकरी, पनुवारै पंचन।
नाम करै सो चौधरी, पान करै सो पंच।

—राजस्थानी दोहा

२ न्याय की रीति तो जानैं नहीं, [illegible] सुनि के [illegible] [illegible]।
चोर की ओर तो पक्ष करैं साहूकार के हाथ में गोला धरावैं।
[illegible] अपराधिन को [illegible] [illegible] लगावैं।
नर्क परै [illegible] [illegible] करैं [illegible], जो पंच कहावैं॥

— भाषाश्लोकसागर

३ परमेश्वर रूपी पंच—

[illegible]
[illegible] निज को न्याय [illegible]।
[illegible] आन न [illegible]।
[illegible] परमेश्वर जानौ॥

— भाषाश्लोकसागर

४ पंचों में परमेश्वर वासी मान कर [illegible]

[illegible]

तोला सोने का जेवर आपको दिया था। बस, यह कहते ही लड़ाई शुरू हो गई और गालियो की बौछार करता हुआ बाप कहने लगा—राड, क्यो झूठा कलक लगाती है ? तूने हमे एक तार भी नही दिया। चल निकल जा हमारे घर से !

विधवा बेटी पचो के पास जाकर रोयी-पीटी और उनसे न्याय मागा। इसका रोना-बिलखना देखकर पचो को सेठ की नीयत पर सदेह हो गया और उन्होने फैसला दे दिया कि इसे फौरन दस हजार रुपये (पाच हजार मूल रकम और पाच हजार बारह वर्ष का ब्याज) दे दिये जायें। बाप बहुत रोया-पीटा लेकिन पचो ने उसकी एक भी नही सुनी। आखिर हार कर विधवा बेटी को दस हजार की दस थैलियां देनी पडी। रुपये भी गये और बेइज्जती भी हो गई। एक साथ दो धक्के लगने मे बूढे ने उसी दिन मे खाट पकड ली, वह मरने की तैयारी करने लगा। पाच-सात दिन दूसरे किसी घर मे रहकर बेटी आई और बोली—पिताजी ! कहा गये पचो के परमेश्वर ? ये लीजिये आपके दस हजार रुपये ! मैंने तो केवल आपको समझाने के लिए यह काम किया था। पिता को ज्ञान हुआ और उसने पचायती का परित्याग कर दिया।

—'व्याख्यान-मणिमाला' के आधार से



न्यायकर्ताओं के उदाहरण

१ (क) रामराज्य में ब्राह्मण ने एक निरपराध कुत्ते पर लाठी मार दी। उसने राम से न्याय मांगा। राम ने कुत्ते से पूछा कि तू क्या चाहता है? उसने कहा—इस ब्राह्मण को कालिंजर क्षेत्र के मठ का महंत बना दो ताकि 'मठवासी-नरकवासी' इस कहावत के अनुसार यह स्वयमेव नरकगामी बन जायगा।

२ विक्रमादित्य राजा [illegible] नगर में [illegible] देखा कि चौकीदार [illegible] रहा है, जमादार चोर को, चोरी करते देखता है, कोतवाल चोरी के माल का हिस्सा ले रहा है, न्यायाधीश रिश्वत ले रहा है। दीवान से आगे बातें कहीं। उसने कहा—यह तो कुछ भी नहीं है, सदा से एक होता ही आया है। प्रातःकाल हुआ। राजा ने सबको [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अपराधियों को [illegible] पुरानी [illegible] है।

३ काशी की महारानी ने सर्दियों में तापने के लिए एक बार झोंपड़ों को जलवा दी थी। राजा ने [illegible] [illegible] मांगकर [illegible] दंड की सजा दी।

४ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

० मोहम्मद गजनवी का भानजा गरीब स्त्री से अत्याचार करता था। उसके घरवालो ने पुकार की। बादशाह ने कहा—मुझे आखो से दिखाओ! तीसरे दिन दिखाया। बादशाह ने दीपक बुझाकर उसे कत्ल किया एव बाद मे जलपान किया। कारण, प्रण कर रखा था कि पापी को मार कर ही खाऊँ-पीऊँगा। (तीन दिनो तक भूखा-प्यासा रहा)

० जहागीर के साले के मुँह लगा नौकर एक क्षत्रिय स्त्री से बलात्कार करने लगा। शिकायत की गई। बादशाह ने प्राणदडको सजा दी। भाई की प्रेरणा से बेगम नूरजहा ने उसे बचाने की काफी चेष्टा की। किन्तु बादशाह नही माना, तब बेगम ने कहा—"नूर के इशारे पर जान कुर्बान करनेवाले आप मेरा मनचाहा फैसला भी नही कर सकते," बादशाह ने जवाब दिया "जान बेची है पर ईमान नही बेचा।"

० सवाई जयसिंह (जयपुर नरेश) एक बार अचानक छत पर चले गये। नहाती हुई नग्न स्त्री पर नजर पडी। नीचे आकर राजपुरोहित से इस पाप का प्रायश्चित्त पूछा। उसने बहन-बेटी के रूप मे उस स्त्री का धन-धान्य से सम्मान करने के लिए कहा। महाराज ने पाच हजार रुपये दिये और भविष्य मे शहर मे खबर कराए बिना छत पर जाने का प्रण किया।

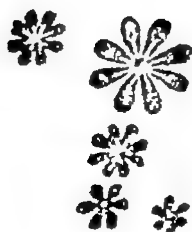
—अध्ययन के आधार पर

२ बीकानेर नरेश महाराज गगासिंह का फौजी कप्तान एक स्त्री से दुराचार करता था। उसकी सास ने पुकार की। महाराज वेष बदल कर रात को उसके घर पहुचे। पापी आकर पलंग पर बैठा। महाराज ने उसे ललकारा (दीपक बुझा दिया गया था) उसने तीन गोलिया चलाई कुछ नही हुआ। महाराज ने एक गोली से उसे मार डाला एव घसीट कर सडक पर फेंक दिया। बुढिया गिरफ्तार हुई। दरबार जुडा, मिसलें महाराज के पास पहुची। उन्होने निर्णय देते हुए कहा—इसे मैंने मारा है और भी जो ऐसा कर्म करेंगे, उनकी भी यही गति होगी।

० एक बार प्लेग का उपद्रव हुआ, सूरतगढ, हनुमानगढ आदि स्टेशनो पर महाराज गगासिंह ने डाक्टर नियुक्त किए ताकि उधर के प्लेगरोगी बीकानेर न आ सकें। काम उल्टा हो गया, डाक्टर मुसाफिरों को हैरान

करने लगे और उनमे खूब पैसे झाडने लगे। एक यात्री ने महाराज के नाम पर तार किया। महाराज पगडी बाधकर सेठ बने एव हजार-हजार के ५०-६० नोट जेब मे रखकर फर्स्टक्लास मे यात्रा करते हुए उन्हीं स्टेशनो पर आए। डाक्टरो ने रोकना चाहा, उन्होंने नोट निकाले। डाक्टर इन्कार करते गए और नोटो की सख्या बढती गई। बात करते-करते प्लेटफार्म पर आ गए एव सीटी बजाई। बस, सिपाही आए, कुर्सी लगी, महाराज ने उस पर बैठकर पगडी उतारी और मूँछो पर ताव लगाया। डाक्टर हक्के-बक्के हुए। सबको नौकरी मे बर्खास्त कर दिया गया।

—श्रुति के आधार पर



२७ वैश्य-वणिक

१ पशूना रक्षण दान-मिज्याध्ययनमेव च ।
वणिक्पथ कुसीद च, वैश्यस्य कृपिमेव च ।।

—मनुस्मृति १।९०

पशुओ की रक्षा करना, दान देना, यज्ञ करना, पढना, रोजगार, सूद पर रुपया देना और कृपि करना, ये वैश्यो के कर्म हैं ।

२ कृपि- पशुपालन वणिज्या च वार्ता वैश्यानाम् ।

—नीतिवाक्यामृत ८।१

खेती, पशुपालन और व्यापार करना ये वैश्यो की जीविका (जीवन-निर्वाह) के साधन हैं ।

३ वणिक् की प्रकृति—

(क) वाणियो वाण न वीसरे, जो अमरापुर जाय ।
साहिब सू सौदो करै, तो टको-पईसो खाय ।°

° गतायु-शतायु की कहानी—वैष्णवी मान्यता के अनुसार कल्पना की गई है कि एक बनिए को यमदूतो ने धर्मराजजी के दरबार मे उपस्थित किया । उन्होंने उसके हिसाब की वही (खाता) देखी तो उसमें गतायु लिखा था । बस, तत्काल हुक्म दे दिया कि इसकी आयु समाप्त हो गई और इसने पाप-ही-पाप किए है, अत इसे नरक मे डाल दो । बनिए ने वात-ही-वात मे वही अपने हाथ मे लेकर चुपके से 'गतायु' के 'ग' को 'श' बनाकर शतायु कर दिया एव कुछ समय के वाद कहा—महाराज ! जरा वही मुझे भी दिखला दीजिए ! ज्यो ही धर्मराज जी ने वही खोली तो उसमे 'शतायु' मिला । देखते ही बनिया कहने लगा—मेरी आयु सौ

वर्ष की है, अभी तो मुझे सत्तर ही आये हैं। अब मैं धर्म करके सब पापो को नष्ट कर दूगा। धर्मराज चुप हो गए और बनिए को वापस घर भेज दिया।

—श्री कालूगणी से श्रुत

(ख) बैठतो वाणियो र ऊठती मालण।

० वाणियो लिखै, पढै करतार।

(ग) वणिक पुत्र कागद लिखै, काना-मात न देत।
हीग मिरच जीरो लिखै, हग मर जर कर देत ॥

—राजस्थानी दोहा

(घ) एक वणिकपुत्र ने अपने भाई को पत्र लिखा—

'बाबोजी अजमेर गया, हमा अठे रुई लीना छै, तमा बठै रुई लीजो।' लेकिन मोडी लिपि बिना काना-मात की होने से उसने पढा कि 'बाबोजी आज मर गया, हमा अठे रोय लीना छै तमा बठै रोय लीजो।' बस, पढते ही रोना-पीटना शुरू हो गया।

० वखत देख र नही विणजै जिको वाणियो गिवार

—राजस्थानी कहावतें

(च) जट्टो दा कोई जठेरा नही, बनिया दा कोई बेटा नही।

—पजाबी कहावत

४ वणिको की कमजोरी—

जग्या कुजग्या गाव रो गोरवो, वेला-कुवेला दिनरो उगाली।
चारचोर चौरासी वाणिया,एक-एक चोर इक्कीस-इक्कीस ताणिया,
क्या करे विचारा एकला वणिया।

—राजस्थानी कहावत

५ वाणियैरी बेटी ने मास रो काई ठा!

—राजस्थानी कहावत

वणिक्-प्रसंशा

१ सकल नगर सुखदाय, न्याय-मारग नहिं मूकै ।
देखी जसरो दाव, चाव अवसाण न चूकै ।
न करै मुख नाकार, अग अभिमान न आणै ।
अवर धरा आधार, वार आपण न वखाणै ।
गम खाय घणी सारै गरज, क्यावर कर ऊ चा करे ।
मानिये दीप ! दरवार मे, शाह तिको सारा सिरै ॥

—दीप कवि

२ विन एकण वाणिये, प्रथम रावण पिछताणो,
विन एकण वाणिये, कोरवा युद्ध मचाणो ।
विन एकण वाणिये, खरी ऋद्धि वीसल खोई
विन एकण वाणिये, काम सर्यो नहिं कोई ।
वाणिया सीख दीजै विडम, राजभार मोटा सहे ।
वाणियो एक परधान विन, किसो राज रामो कहे ॥

३ सुनार तो निजर वाको, दृष्टि वाको काणियो ।
रजपूत तो तलवार वाको, विणज वाको वाणियो ॥

४ विणज करैला वाणिया, और करैला रीस ।
विणज करा था कादिर खोजे, कर लिए नौ के तीस ।

५ सेठानी की बुद्धिमत्ता—सेठ के धन पर राजा को ईर्ष्या हुई । धन हड़पने के लिए चार ऐसी चीजें मागी, जो (१) घटे ही घटे, (२) बढ़े ही बढ़े,

(३) घटे भी नहीं बढे भी नहीं, (४) घटे भी-बढे भी। सेठानी उत्तर देने गई। राजा को दूध का प्याला और सभासदो को घास दिया तथा उत्तर के रूप मे यह दोहा कहा—

आयु घटे, तृष्णा बढे, जग घट-बढत हमेश।
प्रारब्ध घटे न जीव की, सुन नरपति सुरतेश।

सभासद और राजा आश्चर्यचकित हुए। राजा ने पूछा—दूध का प्याला क्यो और घास क्यो? उसने कहा—आप के लिए दूध लाई हूँ क्योकि आप बच्चे हैं! (अन्यथा नगरसेठ की पत्नी को सभा मे नही बुलाते) सभासद पशुतुल्य हैं, अत इनके लिए घास लाई हूँ।

६ मृत चूहे से करोडपति—

वणिकपुत्र ससार मे, कर नहिं सकता क्या?
मृत चूहा ले बन गया, क्रोडपति कीका।

—दोहासंदोह

राधनपुर से ४० मील दूर २००-२५० घरो की आबादी वाले लहरिया गाव मे प्रेमचन्द जैन रहते थे, वे अत्यन्त गरीब थे। उनको धोती-जूते भी पूरे नसीब नही हो पाए। व्याह के तीन चार साल बाद ही उनकी अचानक मृत्यु हो गई। बाद मे उनके एक पुत्र हुआ उसका नाम 'कीका' रखा गया। गरीबी से तंग आकर मां बेटे सायला (सौराष्ट्र) चले गए। वहां कीका का ननिहाल था। चार-पांच वर्ष वहां रहे। कीका १२ वर्ष का हो गया और पढ-लिखकर काफी होशियार बन गया। फिर मां-बेटे अपने गाव आए। माता ने कुछ व्यापार करने के लिए कहा। कीका सेठ अमृतलाल के पास व्यापारार्थ कुछ पैसा लेने के लिए सामनिया वाद गया। कीका के पिता भी उनसे कर्ज लिया करते थे। ज्यों ही सेठ की दुकान पर कीका पहुँचा, वह उस समय किसी एक आसामी से कह रहा था कि देखना! अगले पैसा तो दिए ही नहीं, फिर लेने आ गया। सेठ! बनिये का बेटा एक मृत चूहे (सामने एक चूहा मरा पड़ा था) से

भी कमा-खा सकता है। तुझे कुछ शर्म आनी चाहिए। सेठ की गर्मा-गर्मी से कीका डर गया और उससे विना मिले ही चुपके से मृत चूहे को कागज मे लपेट कर वापस चल पडा। रास्ते मे एक मियां मिला। उसके पास एक सुन्दर बिल्ली का वच्चा था। मियें ने चूहे की कीमत पूछी, कीके ने दो आने मागे। मियें ने दो आने देकर चूहा ले लिया। कीका घर आकर छ पैसो के चने एव एक पैसे की मिट्टी (घर लीपने के लिए) लाया। एक पैसा वचाकर खजाने मे रखा।

गाव मे दो-ढाई-मील एक ढकियाना था, वहां वीस-पच्चीस लकडहारे आते एव सूखी लकडियां काटकर उन्हे घूम-घमकर गावो मे वेचते। दोपहर मे धूप से हैरान होकर जव वे एक वटवृक्ष के नीचे विश्राम करते, कीका उन्हें भुने हुए चने खिलाकर ठण्डा पानी पिलाता। वे उसे लकडिया देते एव शाम को उन्हे गदहों पर लादकर उसके घर पहुँचा देते। इस प्रकार कीका प्रतिदिन डेढ-दो आने कमाने लगा। कुछ समय के वाद रुपये की साढे चार मन के हिसाव से कीका उनकी लकडिया खरीदने लगा। होनहार की वात, उन्ही दिनो डीसा-छावनी वन रही थी। वहां से लकडियो के लिए कैंपवालो की मोटरें आती थी और कीका उन्हें अपनी लकडिया वेच देता था। एक वार उसके पास पचास हजार मन लकडिया एकत्रित हो गई। इधर भावीवश भारी वरसात होने से सूखी लकडियों का अभाव हो गया। अत. कीके की वे लकडिया चार रुपये मन विकी और कीका के पास दो लाख की पूजी वन गई। माता के कहने से कीके ने २० भरी सोने का एक चूहा वनाया और उसे सेठ अमथालाल के सामने रखकर मृत चूहेवाला सारा हाल सुनाया। सेठ कीका पर अत्यन्त प्रसन्न हुआ और पुत्री व्याह कर उसे अपना उत्तराधिकारी वना दिया। (सेठ के कोई पुत्र नहीं था, एक पुत्री ही थी।)

अव कीका व्यापारार्थ वम्बई गया। उन दिनो दादर-माटुंगा-शिव आदि स्टेशनो पर एक आना गज मे जमीनें विक रही थी। कीका ने दो लाख की जमीनें खरीदीं। उस समय वम्बई शहर वस ही रहा था। अत. जमीनो

की कीमत दिनोदिन बढती जा रही थी। एक आने गज मे खरीदी हुई जमीन तीन रुपया गज तक बिकी एव कीका भाई करोडपति बन गया। फिर सोना-चादी, रुई एव शेयरो का अनाप-मनाप व्यापार करने लगा। उसने अपनी माता राजाबाई की स्मृति मे 'राजाबाई टॉवर' बनवाया, जो बोम्बे यूनिवर्सिटी की एक मजिल वाली पत्थर की सादी बिल्डिग पर मानो सोने का कलश है। अस्तु ! (यह ११० वर्ष पुरानी घटना है।)

—जैन भारती (वर्ष २ अक ४४)

७ नवम्बर, सन् १९५४, पृष्ठ ८८८-९० के आधार पर



२६ वणिक्-निन्दा

१ नहि वणिग्भ्यः सन्ति परे पश्यतोहराः ।

—नीतिवाक्यामृत, ८।१०

बनियों से बढ़कर आंखों के सामने चोरी करने वाले कोई नहीं है ।

२
मानेन किंचिच्च मूल्येन किंचित्,
तुलयापि किंचित् कलयापि किंचित् ।
किंचिच्च-किंचिच्च गृहीतुकामा,
प्रत्यक्षचौरा वणिजो भवन्ति ।

—वल्लभदेव

कुछ माप से, कुछ मूल्य से, कुछ तोल के द्वारा एवं कुछ कला चतुराई के द्वारा, ऐसे थोड़ा-थोड़ा करके हड़पने के इच्छुक वणिक् प्रत्यक्ष चोर होते हैं ।

३
विकट मार मारे भरवाड़ो,
विकट गान खेडे विणजारो,
हाफलो फाफलो ब्राह्मणनो प्राणियो,
बोरो रहो लूटे बाजारे वाणियो ।

—गुजराती पद्य

४ सौ सोनार एक ठग, सौ ठग ठाकर एक ।
सतरै ठाकर भाज के, घड़यो वाणियो एक ॥

५ एक किसान बीस रुपयों की हांसली गिरवी रखकर सेठ से दस रुपये लेने आया। सेठ ने दस की लिखा-पढ़ी करके पांच रुपये दिये । किसान बोला—हुजूर ! ये तो पांच ही हैं । सेठ ने कहा—जा-जा ! घर जाकर गिन लेना, दस हो जाएंगे । किसान न माना, तब सेठ बोला—देख एक नजराने का, एक कमीशन का, एक स्टाप का, एक रसीद का और एक ब्याज का यों पांच

तो कट ही गए शेष पांच रह गए। किसान बोला—ये पांच और रख लीजिए। एक बड़ी सेठानी के नजराने का, एक छोटी सेठानी के नजराने का, एक बड़ी सेठानी के पान का, एक छोटी सेठानी के पान का और एक आपको सौ वर्ष पहुंचने के बाद क्रियाकांड करने के लिए।

—प्रेमचन्द

६ पुत्र के अभाव में एक सेठ ने भैरूजी से मिन्नौती की। "बाबा! अगर पुत्र हो जायगा तो मैं एक भैंसा चढ़ा दूंगा।" कुछ समय के बाद पुत्र तो हो गया, लेकिन दिल में दया होने से भैंसे का बलिदान करना सेठ को असम्भव प्रतीत हुआ। इधर बाबे का भय भी लग रहा था। आखिर उसने एक भैंसा ले जाकर भैरूजी की मूर्ति के साथ रस्सी से बांध दिया और यह कह कर अपने घर आ गया कि बाबा! तेरे चरणों में भैंसा हाजिर है। "भूखा-प्यासा भैंसा घंटा-दो घंटा तो शांत रहा, फिर धूम मचाने लगा और अन्त में अत्यन्त व्याकुल होकर उसने जोर से एक झटका लगाया, जिससे बाबे की मूर्ति उखड़ गयी। भैंसा दौड़ने लगा और बंधे हुए भैरूजी घसीटे जाने लगे। रास्ते में माताजी का स्थान आया। माता जी ने हंसकर कहा—बाबा! आज क्या बात है—ऐसे कैसे घसीटे जा रहे हो? भैरूजी ने सच्चा हाल सुनाते हुए उक्त राजस्थानी कहावत कही—

"माताजी! मठ में बैठा ही सटका करया है, वाणियै रै धक्के को चढ़्यानी।"

७ साधना पंजामा आववु सारु पण मारवाडी(वाणिया) ना चोपडामां आववु भूडु।

—गुजराती कहावत

८ वाणियो मित्र न वेश्या सती, कागो हंस न बुगलो जती।

—राजस्थानी कहावत

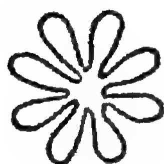
९ वणिक् के प्रति व्यंग्य—

(क) रूठोडो भोपाल, र, तूठोडो वाणियो।

—राजस्थानी कहावत

(ख) देश नराधिप तूठत है तव देवत गाम वडो वनशाली,
गाम का ठाकर होत खुशी तव, देवत खेत वडो-सो निहाली।
खेत को नायक होत खुशी तव देवत धान की पाली दो पाली,
रीझत है वनिया जव ही तव, काढत दाँत वजावत ताली।

—भाषा श्लोकसागर



३० वाणिज्य-व्यापार

१ वणिक के कर्म को वाणिज्य कहते हैं।

२ सत्यानृतं तु वाणिज्यम्।

—अभिधानचिन्तामणि ३।५३१

साच-झूठ का नाम व्यापार है।

३ ट्रेड इज दी मदर ऑफ मनी।

—अंग्रेजी कहावत

० वाणिज्ये वसति लक्ष्मीः।

—संस्कृतकहावत

व्यापार में लक्ष्मी निवास करती है।

४ हृता भिक्षा भेकैर्विनरति नृपो नोचितमहो।
कृषि क्लिष्टा विद्या गुरुविनयवृत्त्यातिविषमा।
कुसीदाद् दारिद्र्यं परकरगतग्रन्थिशमनाद्।
न मन्ये वाणिज्यात्किमपि परमं वर्तनमिह॥

—पञ्चतन्त्र १।११

भिक्षा क्षुद्रव्यक्तियों द्वारा सेवित है एवं मांगने पर श्रीमन्त लोग उचित वस्तु देते भी नहीं। खेती में कष्ट बहुत है। विद्यापाठ भी विषम है, उसमें गुरु आदि की गुलामी करनी पड़ती है, ब्याज के काम में भी रकम डूब जाने से क्वचित् दरिद्रता आ जाती है अतः व्यापार से बढ़कर आजीविका का उत्तम साधन दूसरा कोई भी नहीं है।

५ व्यापार के विषय मे विशेष ज्ञातव्य—

(क) थावर कीजे थरपना, बुध कीजे व्यापार।
(ख) बेच र पिछतावणो, राख र नहि पिछतावणो ।
(ग) ओछी पूंजी धणी नै खाय।
(घ) माझो बाप रो ही खोटो, माझै री हाडी चौराहे फूटे।

६ सीर रो धन स्यालिया खाय, सीर री होली हुवै।

—राजस्थानी कहावतें

७ व्यापार के सात प्रकार—

(१) गान्धिक व्यवहार—इत्र आदि सुगंधित वस्तु का व्यापार
(२) निक्षेप प्रवेश—व्याज पर रुपये देकर आभूषणादि रखना
(३) गौष्ठिक कर्म—गाय-भैस आदि पशुओ का व्यापार
(४) परिचित ग्राहकागम—परिचित ग्राहक का आगमन होना
(५) मिथ्याक्रयकथन - खरीद के विषय मे झूठ बोलना
(६) कूट तुलामान—तोल-माप मे कमी-बेसी करना
(७) देशान्तराद् भाण्डानयन—देशान्तर से माल लाना या वहाँ भेजना।

इन सब मे अंतिम प्रकार श्रेष्ठ माना गया है।

७ व्यापार मे हिसाव—

(क) हिसाब कौडी का, बक्शीस लाख की ।

—हिन्दी कहावत

(ख) आगली ने टेरवे वधो हिसाव।

० नभारी ने नामु लखे ने ऊंट चटी ने ऊंघे।

० भीते नामु, जोटा ने तलिए नामु, तेने बधु नकामु ।

—गुजराती कहावतें

(ग) लिख के दे ! दे के लिख।

—हिन्दी कहावत

३१ व्यापारी

१ व्यापारी को चाहिए कि ग्राहक रूप वृक्ष के फल खाए पर उसकी जड न उखेडे।

—सकलित

२ जो व्यापारी चिन्ता से लडना नही जानते, उन्हे अकाल मृत्यु का शिकार बनना पडता है।

—डा० फेरेल

३ **ग्राहक के अनुसार माल की कीमत**—बादशाह जहागीर ने एक गाव मे एक दूकानदार से दो अण्डे मांगे। व्यापारी ने अण्डे देकर २० रुपये मागे। जहागीर ने पूछा क्या अडे कम है? उत्तर मिला—अण्डे तो कम नही हैं, लेकिन बादशाह कम हैं।

४ **व्यापारियो के निर्माण की कल्पना**—

आसीत्सत्ययुगे बलिस्तदनु च त्रेतायुगे भार्गवो,
रामः सत्यपराक्रमोऽथ भगवान् धर्मस्तथा द्वापरे।
दाता कोऽपि न चास्ति सम्प्रति कलौ जीवन्ति केनार्थिन-
श्चेत्येव कृतनिश्चयेन विधिना व्यापारिणो निर्मिता।

—सुभाषितरत्नभाण्डागार पृष्ठ १०७

सत्ययुग मे बलिराजा दानी हुआ, त्रेतायुग मे परशुराम तथा पराक्रमी राम हुए एव द्वापरयुग मे भगवान कृष्ण तथा युधिष्ठिर हुए लेकिन इस कलियुग मे अर्थीजनो का जीवन देनेवाला कोई दाता नही रहा। अतएव विधाता ने निश्चय करके दाता के रूप मे व्यापारियो का निर्माण किया।

४ **अनूठा व्यापारी एव दानी**—जॉन डी० राकफेलर ने तीन आश्चर्यजनक काम किए—प्रथम उसने ससार भर मे सबसे अधिक धन बटोरा। जीवन

के प्रारम्भ मे वह प्रचण्ड धूप मे प्रतिदिन चार सेंट प्रति घंटा के हिसाब से खेत मे आलू खोदा करता था। उन दिनो सयुक्तराज्य अमेरिका भर मे कोई लखपति नही थे, परन्तु जोन डी० ने अरबो की सपत्ति उपार्जन की। फिर भी पहली युवती ने उसके विवाह के प्रस्ताव को ठुकरा दिया कारण? युवती की माँ ने उससे कह दिया कि वह अपनी बिटिया को जोन डी० रॉकफैलर सरीखे दरिद्री के गले कदापि न मढ़ेगी।

दूसरी अद्भुत बात जो उसने की, वह यह कि ससार भर मे सबसे अधिक धन उसने दान कर डाला। उसने ७५ करोड डॉलर दान मे दे डाले—इसका अर्थ है, ईसा के जन्म दिन से लेकर आज तक प्रति मिनट उसने ७५ सेंट दान मे दिये हैं।

अथवा यो कहिये कि प्रतिदिन ६०० डालर उसने दान मे दिए हैं उस समय से जब कि मूसा ने लाल सागर को इजराइल की सतान के साथ पार किया था और इस घटना को आज ३५०० वर्षों से अधिक हो गये।

और तीसरी अद्भुत बात जो रॉकफेलर ने की वह यह कि वह ९७ वर्षों तक जीवित रहा। अमरीका भर मे उसको अनेक लोग घृणा की दृष्टि से देखते थे। सहस्रो ही पत्र उनके पास उसको मार डालने की धमकी से भरे हुए आते थे। सशस्त्र अगरक्षक उसकी दिन-रात रखवाली करते थे। उसका व्यापार दूर-दूर तक फैला हुआ था और उसी को सारा प्रबन्ध भी करना पडता था।

यह भी स्मरण रहे कि ३० लाख के पीछे केवल ३० जन ही ९७ वर्ष की आयु को पहुचते हैं और १० करोड़ में एक भी ऐसा नहीं होता, जो ९७ वर्ष का हो जाये तब उसके दांत सही सलामत बने रहे। परन्तु जोन डी० के ९७ वर्ष की आयु मे एक भी नकली दात नही था।

जब वह ५५ वर्ष का हुआ, एक बार बीमार पड गया। औषधियों के सम्पूर्ण इतिहास काल मे यह एक बहुत ही सुन्दर घटना हुई। क्योंकि रोगग्रस्त होने के कारण जोन डी० ने लाखों डालर औषधियो की खोज के लिए व्यय कर डाले।

उसके रोगग्रस्त होने से रॉक् फेलर फाउण्डेशन सस्था खुली, जो आज के दिन लगभग १० लाख डालर प्रतिमास ससार भर मे स्वास्थ्य-प्रचार मे व्यय कर रही है। रॉकफेलर-फाउण्डेशन ने ससार मे हुकवर्म रोग को नष्ट करने का बीडा उठाया है, वह मलेरिया ज्वर से सफलता पूर्वक लड रहा है और उसी के कारण डाक्टरो ने भयानक पीतज्वर के लिए एक वेक्सीन खोज निकाली है।

रॉकफेलर की सपत्ति आज भी एक सौ डालर प्रति मिनट के हिसाब से बढती जा रही है।

— मानो न मानो' पुस्तक के आधार से



३२ कृषक

१ जब कृषि—खेती होती है तभी अन्य कलाएँ पनपती हैं, अत कृषक लोग ही मानव सभ्यता के निर्माता हैं।

—डे० नि० एल० वेब्स्टर

२ कृषको का परिश्रम—

बरसा रहा है रवि अनल, भूतल तवा सा जल रहा,
है चल रहा सन-सन पवन, तन से पसीना ढल रहा।
तब ही कृषक मैदान मे, करते निरन्तर काम है,
किस स्वार्थ के हित वे अहो! लेते नही विश्राम है।
मध्याह्न उनकी स्त्रियाँ लेकर, रोटिया पहुची वहीं,
रोटिया सूखी, खबर है—शाक की उनको नहीं।
सतोप से खाकर उन्हे, फिर काम मे वे लग गए,
भर पेट भोजन पा गए तो, भाग्य मानो जग गए।

—मैथिलीशरण गुप्त

३३ कृषि–खेती

१ उत्तम कृषि मध्यम वणिज, निकृष्ट चाकरी भीख निदान।

—हिन्दी पद्य

२ भूमि इतनी कृपालु है कि उसे फावड़े से कुरेदो और वह फसलों से भरकर मुस्कराती है।

– जे० राल्फ

३ ऐसे कह रोते हुए को देखकर पृथ्वी हसती है कि हाय! मेरे पास रोटी नही है।

४ कविता सोहे भाटने, खेती सोहे जाट ने।

—राजस्थानी कहावत

५ दिव्य कृषि—

० दिव्व भो! किसि किसेज्जा।
आया छेत्त तवो वीयं, संजमो जुगलंगलं।
अहिंसा समिती जोज्जा, एसा धम्मंतरा किसी ॥३॥
एयं किसिं कसित्ताणं, सव्वसत्तदयावहं।
माहणे खत्तिए वेस्से, सुद्दे वावि य सिज्झति ॥४॥

—ऋषिभाषित अध्ययन २

भव्य जनो! दिव्य खेती करो! जिसमें आत्मा क्षेत्र है, तप बीज है, संयम युगलांगल है, अहिंसा और समिति जोतने लायक बैल है। यह धर्मान्तर कृषि है। प्राणीमात्र पर दया का झरना बहाने वाली इस खेती को करके ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य-शूद्र सभी सिद्ध हो जाते हैं। ऐसे ब्राह्मण-परिव्राजक पिंगल-आर्हतर्षि बोले।

६ खेती के सात कारण—

एक कहे खेती होत वरसन से घनाघन,
दूजो कहे भूमी सेती खेती निपजती है।
तीजो कहे वीज सेती चोथो कहे हल सेती,
हाली सेती पाचमो बतावे सा अछती है।
छठो कहे बैल सेती सातमो निपेवै यार,
खेती भागा सेती ऐसी हियै दरसती है।
एक पक्ष ताने यामे वही मिथ्यादृष्टि जीव,
सात वात माने वह साचो जैनमती है।

—कवि भूधरदास



३४ चारण—चारण जाति की विशेषता

१ अकल विद्या, चित्त ऊजला, इधको घर आचार ।
वधता रजपूता विचै, चारण वाता च्यार ॥

—राजस्थानी दोहा

२ चारण मे एक विशेषता अवश्य होती है, ऐसे एक बारहठ ने बादशाह के सम्मुख कहा। बादशाह ने गौ चराते हुए एक चारण के अनपढ बालक को लक्ष्य करके पूछा—कहो! इसमे क्या विशेषता है? बारहठ ने पता लगाकर बतलाया कि यह बाँसुरी बजाकर चाहे जिस गाय को बुला सकता है। परीक्षार्थ उसे सभा मे लाया गया। उसने बासुरी बजाकर अनेक गायें बुला दिखायी। बादशाह एव सभासद आश्चर्य चकित रह गये।

—गगादान जी से श्रुत

३ **महाभारत मे धक्का-मुक्की**—उदयपुर दरबार मे पडित जी छः महीनो से महाभारत की कथा कर रहे थे। मारवाड के एक बारहठ (चारण) वहा आ पहुचे। कथा की बात चली तब बारहठ ने कहा—अगर वक्ता, वक्ता होता तो कथा इतनी लम्बी चल ही नही सकती। सात दिनो मे ही तलवारें निकल जाती। सभासदो ने अचम्भित होकर पूछा—क्या आप ऐसी कथा सुना सकते है? बारहठ का उत्तर था—हा! सुना सकता हू, लेकिन शर्त यह है कि आप (श्रोतागण) कोई शस्त्र नही रख सकेंगे। इतना ही नही, उन्हे आयुधशाला मे बन्द करके चाबियाँ भी मैं अपने पास रखूँगा।

सभासदो का आश्चर्य और भी बढ गया। बस, बारहठजी के कथनानुसार सभी शस्त्रो को बन्द करके चाबियाँ उन्हे दे दी गई। महाभारत

का श्रीगणेश हुआ एव पाचवे दिन ज्यो ही वीरो के भीषण युद्ध का वर्णन चला, श्रोताजनो का खून उबल आया। वे धक्का-मुक्की करते हुए एक-दूसरे पर टूट पडे। बारहठ ने उन्हे रोकते हुए हँसकर कहा—देखा मजा महाभारत का! कुछ समय के बाद श्रोतागण शान्त हुए एव उन्होंने प्रसन्न होकर बारहठ को खूब दान दिया। —गगादान जी से श्रुत

४ बैजूबावरा—कहा जाता है कि ये चारण जाति के थे। इनका मूल नाम बीजानन्द था। इनकी गायनकला इतनी गजब की थी कि जब ये गाते थे, पशु-पक्षी भी मुग्ध होकर बेभान-से बन जाते थे। एक बार चारणकन्याएँ नदी मे स्नान कर रही थी। ज्यो ही उन्होने बीन बजाकर गाना शुरू किया। कन्याएँ नहाना भूलकर सुनने मे लीन हो गई। इधर उनकी मधुर आवाज से आकृष्ट होकर अनेक हिरण भी वहा आ गये और स्तब्ध बनकर सुनने लगे। कन्याओ ने उन्हे गोद मे ले लिया और अपने जेवर (कडी, कठी आदि) पहना दिये। गाना बन्द होने से सारे हिरण एकदम छलागे लगाते हुए दौड गये। जेवर भी उनके साथ चले गये। कन्याएँ बहुत चिन्तित हुई। आखिर उन्होने बैजू से पुन गाने का आग्रह किया बैजू ने कहा – तुम्हारे मे से यदि कोई मेरे से शादी करो तो मैं पुन गा सकता हू। काफी विचार-विमर्श के बाद एक कन्या (सैणीजी) ने बादशाह की हुर्म का जेवर ला देने पर उनसे शादी कर लेगी इस शर्त पर पुन गाना शुरू करवाया। पूर्ववत् सभी हिरण आ गये। एव कन्याओ ने अपने अपने जेवर ले लिये।

अब बैजू दिल्ली पहुचे, गाने से प्रसन्न होकर बादशाह ने उन्हे अपनी हुर्म का जेवर बक्शा।

इधर निश्चित तिथी पर न पहुँचने से सेणीजी ने हिमालय मे गलना शुरू कर दिया।

बैजू दौडते-दौडते हिमालय गये और कहने लगे—ठहर-ठहर मैं आ गया हू। तब कन्या ने कहा—

> गलियो सारो गात, आधै मे आधो रह्यो।
> हिवै मसलता हाथ, बीजानद पाछा वलो।

यों कहती हुई कन्या हिमालय मे समा गई एव बैजू बावरे (चितभ्रम) होकर जीवन भर गाते-बजाते घूमते रहे।

— नगादान जी से श्रुत

० यह भी सुनने मे आया है कि बैजू बचपन मे ही साधु बन गये थे। एक बार साधुमडली आगरा पहुची। वहा तानसेन से प्रभावित बादशाह ने यह कानून बना रखा था कि यहाँ तानसेन के सिवा कोई भी गायन का आयोजन न करे। साधु-मडली ने गाना-बजाना किया, फलस्वरूप उन्हे मार दिया गया। किन्तु बैजू को बालक समझकर छोड दिया गया। उसने किसी सिद्ध पुरुष की सेवा करके अद्भुत गायन विद्या पढी। फिर प्रति-शोध की भावना से आगरा पहुँचा। अपनी सगीत कला से लोगो को ऐसा प्रभावित किया कि वे पागल होकर उसके पीछे ही घूमने लगे।

तानसेन ने शिकायत की। बादशाह ने बजू को बुलाया। राजसभा मे तानसेन के साथ उनकी चर्चा हुई। तानसेन ने सगीत-सम्बन्धी जटिल प्रश्न पूछे। बैजू ने उसका समाधान किया। किन्तु बैजू के प्रश्नो का उत्तर तानसेन न दे सके। फिर तानसेन ने गाना गाकर जमुना का प्रवाह रोक दिया तो बैजू ने पानी को जमा दिया (उसे बर्फ के रूप मे परिणत कर दिया) बैजू ने अपना मजीरा पानी मे फैंका। वह पानी स्तम्भ हो गया, प्रयत्न करने पर तानसेन उसे न निकाल सके। आखिर बैजू विजयी एव तानसेन पराजित घोषित कर दिये गये।

卐 卐

३५ # सोनार

१ सौ नार (नाहर) एक सोनार।

—राजस्थानी कहावत

२ सोनार चाहे अपनी मा-बहन का जेवर भी क्यों न घडे, प्राय सोना अवश्य चुराएगा।

० एक सोनार बहन का गहना घडने के लिए सोना गाल रहा था। बहन पास बैठी थी। इधर बूढा बाप राम-राम का जाप कर रहा था। सोना—चुराने का संकेत करते हुए उसने जाप की पंक्ति बदल दी और कहने लगा—"अरे राम, तेरे तो सारे बराबर है—अरे राम तेरे तो सारे बराबर हैं झुझला कर पुत्र ने कहा- "क्यो चिल्ला रहा है, राम ने तो लका कभी की लूट ली" अर्थात् सोना चुरा लिया।

३ सोनारो की होशियारी—अगर आप चोरी न कर सकेंगे तो प्राणदंड की सजा दूंगा—ऐसे कहकर एक राजा ने चारो तरफ पहरा लगाकर सोनारो से सोने का हाथी घडवाना शुरू किया। हाथी तैयार हो गया एव राजा के हिसाब से एक रत्तीभर सोना भी चोरा न जा सका। पालिश करने के लिए हाथी को नदी मे ले गए और पानी मे रखकर बालू रेत से उसकी पालिश की गई, फिर वह राजदरबार मे पेश हुआ। तोला गया तो बराबर था। राजा ने कहा अब आप लोगो को मौत की सजा मिलेगी। सोनार मुस्कराए क्योंकि पानी मे पालिश करते समय समूचा हाथी ही बदल दिया गया था। यह हाथी सोने का न होकर केवल पीतल का था भेद खुला, सारी सभा विस्मित हुई।

१ **जाट सिद्ध बन गया**—एक जैन मुनि जगल मे रास्ता भूल गये। जाट ने उन्हे रास्ते चढाया। मुनि ने उसे कुछ नियम लेने को कहा। उसने एक नियम मागा। **मन का जाना नहीं करना**—यह नियम दिलाकर मुनि तो चले गये। जाट ने खेत मे जाकर काम करना चाहा। जाटनी रोटिया लाई, उन्हे खाना चाहा। मच्छर काटने लगे, उन्हे उडाना चाहा तथा खडे-खडे थक जाने से बैठना चाहा। लेकिन ये सभी काम **मन के जाने** थे, अत उसने नही किये एव अडोल बनकर खडा का खडा ही रहा। मुनि को याद करते-करते उसे जातिस्मरण ज्ञान हो गया। पूर्व जन्म मे पाला हुआ सयम याद आने से उसने भाव-सयम ले लिया और सदा के लिये जन्म-मरण से मुक्त होकर वह सिद्ध बन गया।

—'व्याख्यान मणिमाला' के आधार से

२ **जाट ने पर्दा तोड दिया**—करोडपति के दो पुत्र अलग हो रहे थे। घर की सपत्ति (हीरा पन्ना, रुपया, आभूषण आदि प्रत्येक वस्तु) के दो हिस्से किये जा रहे थे पचासो मनुष्य काम कर रहे थे एव एक अच्छी प्रदर्शनी-सी लग रही थी। एक जाट ने यह दृश्य देखा। और घर आकर अपनी स्त्री से कहने लगा—अलग होने मे बडा आनन्द आता है, अत मैं भी तेरे से अलग होऊगा। स्त्री ने कहा—भाई भाई, पिता-पुत्र, चाचे भतीजे आदि अलग हो सकते है, लेकिन पति-पत्नी कभी अलग नहीं हुआ करते। जिद्दी जाट नही माना और दोनों अलग हो गए।

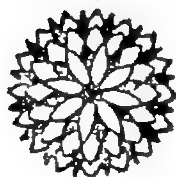
झोपडी के बीच मे एक पर्दा (टाटी) लगा दिया एव चूल्हा-चक्की आदि दो-दो कर लिये। एक भैंस थी, जिसे जाट ने नहीं रखी इसलिये वह जाटनी की तरफ रह गई। जाट रोटी बनाने लगा तो थोडी जल गयी, रोटी कच्ची रह गई और साग मे नमक दुगुना पड गया। अब वह एक

ही दिन में पूरा परेशान हो गया। इधर जाटनी कभी खीर कभी रबडी, कभी पेडा ऐसे नये-नये माल बनाकर खाने लगी। खुशबू से जाट का दिल हिल गया और पर्दे को तोड कर जाटनी के साथ मिल गया एवं खीर-रबडी खाने लगा। (अज्ञान का पर्दा तोडने से मुक्ति रूपी खीर-रबडी आदि पदार्थ मिलते हैं)

३ जट्ट गन्ना नही दिंदा, भेली दिंदा है।

० जट्ट पिआई लस्सी, गल विच पालई रस्सी।

—पजाबी कहावत



१ समानाधिकरण्यं, तेजस्तिमिरयोः कुतः ।

—शिशुपालवध २।६२

प्रकाश और अन्धकार एक ही स्थान में कैसे रह सकते हैं ?

२ एष वन्ध्यासुतो याति, खपुष्पकृतशेखरः ।
मृगतृष्णाम्भसि स्नातः, शशशृंगधनुर्धरः ॥

—सुभाषितरत्नभाण्डागार पृष्ठ ३७६

मृग-तृष्णा के जल में नहाकर, आकाश के फूल का मुकुट पहनकर एवं शशक के सींग का धनुष धारण करता हुआ यह वन्ध्या का पुत्र जा रहा है। (ये सब काम असंभव हैं।)

३ जिसके घर में नौ-सौ गाय, वह क्या छाछ पराई खाय ।

—हिन्दी कहावत

४ आभ फाट्युं त्यां थीगडुं क्यां देवुं ?
पेट फाट्युं त्यां पाटो क्यां बांधवो ?
नहातां सूतरे ते शी रीते पकडाय ?

—गुजराती कहावतें

५ फाटणवाला ने सीवणवाला को पूगे नी ।
देखती आंख्या मारवा को मिटी जै नी ।
सागर नी हांडी चूल्हे को चढ़े नी ।
सावन-भादव गाम को ढकै नी ।

- दाई सू पेट छानो थोडो ही रैवे ।
  तिस लाग्या कूवो थोडो ही खुदै ।
  मिनकी रै पेट मे घी थोडो ही खटावै ।
- राड, भाड और उलडियो गाडो कै रे ही सारै थोडा ही रैवै ।
- सेर री हाडी मे सवा सेर कठै सू खटावै ।
- साणी किसा घोडा वगसै ।
- लाय लाग्या कूवो खोदै जिको काम कद पार पडै ।
- साप रै खायोडा नै अदीतवार कद आवै ।
- घूड खाया किसो काल निकलै ।
- नगारा मे तूती री आवाज कुण सुणै ।
- डाकण वेटो दै क लै ?
- डाकण किण री मासी ।
- ऊगतो ही को तप्यो नी जको आथमतो काई तपसी ।

—राजस्थानी कहावतें

६ (क) इट टेक्स टू पीपल टू मेक ए क्वरल ।

—अंग्रेजी कहावत

एक हाथ से ताली नही वजती ।

(ख) एक सू ठ रै गाठिये सू पसारी को हुई जै नी ।

- एक दिन पढ र किसो पण्डित हो जासी ।
- एक वंदरिया रूस जाय तो किसो विंदरावन खाली हो जाय ।
- एक गाड र तुवै तो काई र र्नाह तुवै तो काई ।

—राजस्थानी कहावतें

७ मेरेज इज आनरेवल इन आल एण्ड दि वैड एन डी फाइल्ड ।

—अंग्रेजी कहावत

- सासरै जावती ने छिनाल कोइ को कैवैनी ।

—राजस्थानी कहावत

८ इफ दी स्काइ फेल्स वी विल कैच लार्क् स । —अंग्रेजी कहावत

न नौ मन तेल होगा और न राधा नाचेगी ।

९ हीजडे के घर बेटा हुआ ।

० सब मर जाय और मैं लड्डू खाता ही रहूँ । —हिन्दी कहावत

१० मूल मे मूलजी कुवारा र साले गा लगन पूछे ।

- राजस्थानी कहावत

० मुल्ला नसीरुद्दीन से किसी ने कह दिया कि तेरी स्त्री के साथ बाग मे रात के बारह बजे एक आदमी बात कर रहा था। मोला बन्दूक लेकर दूसरे दिन बाग मे जा बैठा। रात के बारह बज गये, लेकिन कोई आदमी नही आया। एक सम्बन्धी ने पूछा मोला साहेब ! आज क्या कर रहे है ? मोले ने सारी बात सुनाई। तब सम्बन्धी ने हसकर कहा—क्या तुम्हारी शादी हो गई ? अगर नही तो स्त्री कहा से आई ? मोला चौका और बोला—अहो ! शादी वाली बात तो भूल ही गया।

११ बूहे आई जन्न, विन्नो कुडी दे कन्न ! —पजाबी कहावत

बारात आ जाने के बाद कन्या के कान नही बीधे जाते ।

१२ केहरि-केस भुजग-मिण, पतिवरता रो गात ।
मूगा समतर कृपण-धन, मुवाज लागे हाथ ।।
(जीते जी सम्भव नहीं)

१३ कासारे स्फुटिते जले प्रचलिते पालो कथ बध्यते ! —शान्त-सुधारस

तालाब फूटकर पानी निकल जाने के बाद पाल कैसे बाधी जाय !

१४ समव—

० अकूरडी पर किसो आवो को हुवैनो !

० लका मे किसो दलदरी को हुवैनो !

० मूगा मे किसो कोरडू को हुवैनो !

० भलाई करता किसो बुराई को हुवैनो !

० धर्म करता किसो पाप को हुवैनो ! —राजस्थानी कहावतें

असमानता

१ वाजि-वारण-लोहाना, काष्ठ-पाषाण-वाससाम् ।
नारी-पुरुष-तोयाना—मन्तर महदन्तरम् ।

—हितोपदेश २।४०

घोडा, हाथी, लोहा, काष्ठ, पत्थर, वस्त्र, स्त्री, पुरुष एव पानी—ये सभी चीजें समान नही होती, इनमे बहुत बडा अन्तर होता है ।

२ पाग भाग सूरति प्रकृति, वाणी बुद्धि विवेक ।
अक्सर मिले न एकसे, देखे मुल्क अनेक ॥

—हिन्दी दोहा

३ बनाई हुई कोई भी चीज एक-जैसी नही होती, कुछ-न-कुछ अन्तर रहता ही है । इसी सिद्धान्त के आधार पर अवधानकर्ता आखें बन्द करके देखी हुई समान आकारवाली पुस्तको को स्पर्शमात्र से खोज निकालते हैं ।

—धनमुनि

४ कम-बेम गुलाब हुवै कलिया, इक-सी न हुवै कर आगुलिया ।

—जती रासा

५ पाचू आगल्या बराबर को हुवैनी ।

—राजस्थानी कहावत

१ छुछुन्दर ना छए बराबर, टकसाली रुपिया बधा बराबर ।

० एक बालना त्रण कटका, तेमा कालो कयो ने गोरो कयो ?

० एक निभाडा ना ठाम, एक बाडा ना गलूडिया ने एक निशाले भणेला।

—गुजराती कहावतें

२ (क) खुदा जेहडा फरिश्ता ।

० नकटा देव—बुरडा पुजारा ।

० गुरु गुड चेला शक्कर ।

० धाई भलो न फत्ती, दोनू राड कुपत्ती ।

० आधा ऊंदा थोथो धान, जैसा गुरु वैसा जजमान ।

—राजस्थानी कहावतें

(ख) ऊंट दुल्हा—गदहा पुरोहित ।

० मामा चोर—भतीजा काजी ।

० अंधा मुल्ला—टूटी मस्जिद ।

—हिन्दी कहावतें

(ग) यादृशी शीतला देवी, तादृशः खरवाहनः ।

—संस्कृत कहावत

जैसी शीतला देवी, वैसी ही गधे की सवारी ।

० बर्ड्स ऑफ दी सेम फैदर्स ।

—अंग्रेजी कहावत

एक ही [illegible] के [illegible] ।

(घ) एक मूग की दो फाड।

० लाडूगी कोर मे किमी खारी र किसी मीठी।

—राजस्थानी कहावत

(ङ) एक तवे की रोटी, कौनसी छोटी - कौनसी मोटी।

० एक थैली के चट्टे-वट्टे, एक तर्कस के तीर।

—हिन्दी कहावतें

३ (क) नष्ट देव री भ्रष्ट पूजा, लाकडा रा देव नै खूसडा री पूजा।

— राजस्थानी कहावत

(ख) जिसा भाई रा मोसाला, विसा ही वाई रा गीत।

- राजस्थानी कहावत

(ग) पसली भाई नी ने आशीष वाई नी।

—गुजराती कहावत

(घ) जैसा तेरा आव-भाव, वैसा मेरा आशीर्वाद।

—हिन्दी कहावत

(ङ) जिहो-जिहा तेरा लूण-पाणी, ओहो—जिहा मेरा कम्म जानी।

— पजावी कहावत

४ तेरा तेल गया—मेरा खेल गया तेरी रात गई—मेरी वात गई, तेरा तोल गया—मेरा मोल गया।

—हिन्दी कहावतें

५ (क) वाप मरा घर वेटा हुआ, उमका टोटा उममे गया।

—हिन्दी कहावत

(ख) वावो मर्‌यो फूलकी जाई, रह्या तीन का तीन।

—राजस्थानी कहावत

६ भला ही खरवूजो छुरी पर पडो, र भला ही छुरी खरवूजे पर पडो।

० ढेढणी रे लगावो र भलाई वाये पडो।

—राजस्थानी कहावतें

७ केशोराय (कुआ) ऊडा घणा, भाडेसरजी ऊचा घणा।
(ये दोनो बीकानेर मे हैं।)

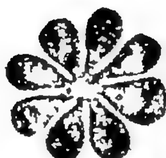
—राजस्थानी कहावत

८ दूध का दूध मे, र—पाणी का पाणी मे।

० व्याज का व्याज मे, राज का राज मे।

० बाई का फूल बाई नें र जमाई का जमाई नें।

—राजस्थानी कहावतें



१ गड-गु वड नालेर घटा, इडा वण अफार ।
इतरा तो फूटा भला, सुख पावै ससार ।।

० आख-कान-मोती-शरम, ढोल-बोल नै नार ।
इतरा नही फूटा भला, कुटु ब ताल परिवार ।।

० जवरी-चूडो-जायफल, विडग-सुपारी-वैण ।
इतरा तो भारी भला, शाह-मित्र अरु सैण ।।

० वैद वैरागी बाकरो, चौथी विधवा नार ।
इतरा तो करवा भला, माता करै बिगाड ।।

—राजस्थानी दोहे

२ दूध गायारो, कठ लुगायारो, मेल नायारो,
वैर भायारो, वघार रायारो, जीमण जमायारो ।

० घी गायारो, दही भैंस्यांरो र, छा छाल्यारी ।

—राजस्थानी कहावतें

३ (क) नान्हो तो पण राई नो दाणो, कोह्या तोये सागना लाकडा,
नान्हु तो पण सिह नु वच्चु , वाको तो पण घऊ नो गोटलो ।

—गुजराती कहावते

(ख) टूटी तो ही गुजरात, भागी तो ही नागोर ।

० टूट्या तो ही टोडा ।

० डाग भागी तो ही डोवरा जोगी परी है ।

० जूतिया खाई तो ही मखमल की ।

० सागो सेला रो ही चोखो ।

—राजस्थानी कहावतें

४१ न्यूनाधिकता

१ अजवाली तोये रात, डाह्यापण तोये वायडी नु,
डाह्यो तोये पशु, छाम मीठी पण काई दूध जेवी !

—गुजराती कहावतें

२ तीर्थंकर, गणधर, आहारकशरीर, अनुत्तर, ग्रैवेयक एव क्रमश कल्पभव-वैमानिक, भवनपति,ज्योतिषी, व्यतर देव, चक्रवर्ती, वासुदेव बलदेव और महामाडलिक—ये ऊपर वालो की अपेक्षा नीचे वाले रूप मे न्यून होते हैं।

३ स्त्री की अपेक्षा पुरुषो मे रूप अधिक होता है, इसीलिए तो स्त्रियां सिंगार करती हैं। देखो ! शेर-शेरणी, मोर-मोरणी आदि पशु-पक्षियो मे भी स्त्री से पुरुष सुन्दर होते हैं।

—व्याख्यान के मसालो से

४ लदन—औद्योगिक-मनोविज्ञान की राष्ट्रीय सस्था के एक सर्वेक्षण मे पता चलता है कि अधिकाश ब्रिटिश लडकिया अपने बॉस (अधिकारी) के रूप मे पुरुषो को अधिक पसन्द करती हैं और एक तिहाई लडकियो का तो विश्वास है कि पुरुष स्त्री से अधिक श्रेष्ठ होते हैं।

दो प्रतिशत से अधिक महिलाओ ने यह कहा कि पुरुष के निर्देशन मे कार्य करने मे उनके लिए अधिक आसानी होती है। उनकी राय मे पुरुष अधिक रोब वाले, न्याय-श्रेष्ठ और धैर्यवान होते हैं तथा वे अधिक सम्मान के पात्र होते हैं।

बॉस के रूप मे महिला की तुलना कुछ लडकियो ने 'जिन्नी' और 'पुतिया' से करते हुए कहा कि वे अस्थिर चित्त और [illegible] होती हैं। कुछ लडकियो ने तो कहा, महिलाए कभी भी पुरुष के बराबर नहीं हो सकती।

—दैनिक हिन्दुस्तान

५ **भारत मे कुँआरियो से कुँआरे अधिक**—सन् १९७१ की जनगणना के अनुमार भारत मे कुँआरियों के मुकाबले ६ करोड कुँआरे अधिक हैं। उक्त जनगणना के अनुसार देश मे १४ वर्प की अधिक आयु वाले वर्ग मे १२ करोड ६४ लाख अविवाहित महिलाएँ हैं और २० वर्ष से ऊपर के आयु वाले वर्ग मे १८ करोड ७१ लाख अविवाहित पुरुष हैं।

कभी न शादी करनेवालो की सख्या इससे भी अधिक है। पुरुषो में आजन्म कुँआरो की सख्या १५ करोड ५८ लाख ६१ हजार है तथा आजन्म कुँआरियो सख्या ११ करोड ८८ लाख ४४ हजार ८०० है।

नाबालिग लडको और लडकियो मे शादियो का भारत मे अव भी प्रचलन जारी है। १० से १४ वर्प तक के आयु वर्ग मे १५ लाख विवाहित लडके और ३७ लाख विवाहित लडकिया हैं। १५ से १९ वर्ष के आयु-वर्ग मे ४३ लाख लडके तथा १ करोड २५ लाख लडकिया विवाहित हैं।

जो लोग विवाहित होने के वाद विधुर हो गए हैं, उनकी सख्या ८३ लाख ४० हजार है, जवकि विधवाओ की सख्या २ करोड ३१ लाख है। इन आकडो मे प्रतीत होता है कि विधवाओ के पुर्नविवाह की दर वहुत नीची है।

तलाकशुदा अथवा परित्यक्ता महिलाओ की सख्या ८ लाख है, जवकि तलाकशुदा पुरुषो की सख्या ५ लाख है। ऐसे व्यक्तियो मे से लगभग ८० प्रतिशत शहर के रहनेवाले हैं।

—हिन्दुस्तान, २२ जनवरी, १९७३

४२ बिगाड़

१ बिगाड़ के पाच कारण—

१—जवानी,
२—धन,
३—अधिकार,
४—अविवेक,
५—अज्ञान। —पाच बात पुस्तक से

२ शाक वगड्‌यु तो दिवस वगड्‌यु,
अथाणु वगड्‌यु तो वर्ष वगड्‌यु,
जुवानी वगडी तेनु जीवतर वगड्‌यु,
दीकरो वगड्‌यो तेनु कुल वगड्‌यु,
अने वायडी वगडी तेनु भव वगड्‌यु।

—गुजराती कहावत

३ मारवाड़ मनमोदे डूबी, पूरब डूबी गाने में।
खानदेश खुरदे स डूब्यो, दक्खिण डूबी खाणे में।

४ फूफोजी रूससी तो भूवाजी ने राख लेसी।
(मेरा क्या बिगाड़ सकते हैं)

५ अब किसा मियां मरग्या र किसा रोजा घटग्या।
(कुछ नहीं बिगड़ा)

—राजस्थानी कहावतें

६ उसने मेरा दा कुछ नहीं विगड़िया।

—पंजाबी कहावत

५ बिगडने के बाद प्रयत्न व्यर्थ—

(क) आफ्टर डैथ कम्स दी डॉक्टर।

—अंग्रेजी कहावत

मरने के बाद डाक्टर का आना व्यर्थ है।

(ख) का वर्षा जब कृषि सुखाने!

—हिन्दी कहावत

(ग) गतोदके क सेतुबन्ध!

—संस्कृत कहावत

पानी निकल जाने के बाद पुल बांधने से क्या लाभ!

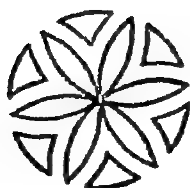
(घ) उल्लरि गाडो गयो तब केशव काम विनायक को फिर कैसो?

(ड) लुटाया पछी शां भो! आथम्या पछो असूरू शु! कण मा
पाणी पड्यु ते पड्यु वतु कगावी ने वार शु पूछवु!

—गुजराती कहावत

(च) पाछै घोडो दौड़ो र घोडी दौडो।

—राजस्थानी कहावत



वृद्धि

१ विज्ञान के युग में कृषि में (ट्रैक्टर-नहर आदि से), व्यवसाय में (रेल-मोटर-मिल-बैंक आदि से), विद्याध्ययन में (विद्यालयों की बहुलता से), वास्तुकला में (शतभौम महल आदि के निर्माण से) तथा शस्त्रास्त्र में (आणविक अस्त्रों से) क्रमशः वृद्धि हुई है।

—'नया युग-नया दर्शन' पुस्तक से

२ विश्व की जनसंख्या में १० करोड़ की वृद्धि—संयुक्तराष्ट्र संघ की जनसंख्या समिति की एक घोषणा के अनुसार इस वर्ष विश्व की जनसंख्या ३ अरब ६२ करोड़ २० लाख हो जाएगी।

१९७५ तक यह संख्या ४ अरब हो जाएगी। यदि वर्तमान जन्म दर जारी रही तो १९८० में जनसंख्या ४½ अरब और १९८५ में ५ अरब हो जाएगी।

— हिन्दुस्तान, ८ फरवरी, १९७०

३ वैज्ञानिकों ने निष्कर्ष निकाला है कि यदि दुनिया की आबादी इसी गति से बढ़ती रही। तो २००६ में यह दुगुनी हो जायेगी। नवीनतम आंकड़ों के अनुसार इस समय विश्व की जनसंख्या ३ अरब ७० करोड़ ६० लाख है और इसमें प्रतिवर्ष दो प्रतिशत के हिसाब से वृद्धि हो रही है।

—हिन्दुस्तान, ३ दिसम्बर, १९७२

४ न वृद्धिर्बहु मन्तव्या, या वृद्धिः क्षयमावहेत्।
क्षयोऽपि बहु मन्तव्यो, यो क्षयो वृद्धिमावहेत्॥

—विदुरनीति ४।७

वह वृद्धि बहुमान के योग्य नहीं, जिससे हानि हो, वह हानि भी अच्छी है, जिससे वृद्धि होती हो।

लाभ और हानिकारक

१ लाभकारक—

(क) इट इज नॉट लास्ट व्हाट ए फ्रेन्ड गैट्स ।

—अंग्रेजी कहावत

घी खिचडी मे ही ढुला ।

(ख) घी ढल्यु ते खिचडी मा । लपस्या तोये गगामा । ढोर गयु ते धणी नें घेर ।
—गुजराती कहावतें

(ग) आखड्या जिसा पड्या कोनी । —राजस्थानी कहावत

२ हानिकारण—

(क) ओछु पात्र ने अदकु भण्यो, बढकणो बहुए दीकरो जण्यो वानरो अने वीछीए करड्यो, नकटी अने सलेखम थयु, गघेडी ने फूलके चढी, कारेला नो वेलो ने लीमडे चढ्यो, टंढो अने हवलदारी मली । —गुजराती कहावतें

(ख) कपिरपि च कापिशायन - मदमत्तो वृश्चिकेन सदष्ट ।
अपि च पिशाचग्रस्तः, किं ब्रूमो वैकृतं तस्य ॥
—सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृष्ठ २४६

एक तो वन्दर स्वय चचल, फिर मदिरा पीकर मत्त हो गया, फिर उसे विच्छू काट गया और भूत लग गया । अव वह यदि विक्रिया—नाच कूद करता है तो उसे क्या कहा जाय ।

(ग) विधवा स्त्रियो के लिये पाच काम अत्यन्त हानिकारक—

(१) खेलकद मे अधिक रस लेना, (२) मेले-ठेले मे जाना, (३) शरीर को सजाना, (४) हसी-मजाक करना, (५) व्यसन का सेवन करना ।

—पाच बात पुस्तक से

निरुपाय

४५

छिन्ने बन्धे मत्स्ये पलायिते निर्विन्नो धीवरो भणति, धर्मो मे भविष्यति।

—विक्रमोर्वशीयनाटिका

जाल के बन्धनों के टूट जाने पर जब मछली निकल कर भाग जाती है, तब खिन्न होकर धीवर कहता है चलो ! मुझे पुण्य होगा।

(क) आख्या मीच र अंधारो करै, जिकैरो कोई काई करै ?

खावतो पीवतो मरै, जिकैरो कोई काई करै ?

ऊंट फिटकडी दिया ही अरडावै र गुड दिया ही अरडावै।

(ख) मन चालै पण टट्टू को चालैनी।

मन (टट्टू) चालै पण पइसा कठै ?

—राजस्थानी कहावतां

१ (क) गरभे धीणो व्याज-धन, नीलापत्ता धान,
वहू बछेरा दीकरा, नीविडिया निरवाण। १।
० लोहा लाखा चामडा, पहली किसा बखाण,
वहू वछेरा दीकरा, नीविडिया निरवाण। २।
(ख) लाडी ने पाडी नीम्वड्ये बखाण,
० अणवोध्यो मोती नीवड्ये बखाण। — गुजराती कहावतें

२ मुड्योडै माथैरी र वाट्योडी ओखधरी काई ठा पडै !
० डूम कुण जाणै कठै जावतो दीवाली करसी !
० काजीजीरी कुत्ती कैनै ठा, कठै जावतो व्यासी !
० काई गोडियो गावे र काई पूगो वाजै !
० काणी रै व्याव मे जोखा।
० गेहु खेत मे र वेटो पेट मे। —राजस्थानी कहावतें

३ हाडीया घर आवे ता जानीये। —पजावी कहावत

४ हड-हड हसी कुभारडी, देख मालण रा वूट।
चाल गाव रे गोरवें, किस कड वैठे ऊट ?
० कुम्हारिन और मालिन अपना-अपना माल वेचने किसी गाव जा रही थी। पहली के ऊट पर मिट्टी के वर्तन थे और दूसरी के ऊट पर चनो के वूट थे। मालिन का ऊट मुड-मुड कर चनो को खा रहा था। कुम्हारिन देखकर हसने लगी। तव मालिन ने कहा—क्या हस रही है, गाव के गोरवे (निकट) चल ! देखती हू तेरा ऊट किस करवट से वैठता है, अगर थोटा भी टेढ़ा वैठ गया तो तेरे सारे वर्तन फूट जाएगे।
—श्री कालुगणी से श्रुत

४७ —सुभाषितरत्नखण्डमंजूषा

१ नास्त्यदेय महात्मनाम् ।

महात्माओ के लिए कोई वस्तु अदेय नहीं है ।

२ नास्ति व्यसनिना किञ्चिद्, भुवि पर्याप्तम्रे धनम् । —कथासरित्सागर

व्यसनग्रस्तो के लिए पृथ्वी पर चाहे कितना ही धन हो, वह पर्याप्त नहीं होता ।

३ नास्ति सत्य द्यूतकारे, न शौच वृषलीपतौ ।
मद्यपे सौहृद नास्ति, धूर्तेषु त्रितयं नहि ॥ —सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृष्ठ १७२

जुआरियो मे सत्य नही, शूद्र मे शुद्धि नही, मद्य पीने वाले मे मित्रता नही और धूर्तो मे तीनो चीजे नही । —सुभाषितरत्नभाडागार, पृष्ठ ८७

४ नासत्यवादिन सख्य ।

असत्यवादियो मे मैत्रीभाव नही ।

५ फटो ऊपर तालु नहि ने लाडु ऊपर घालु नहि ।
दगला ऊपर शाल नहि, ने बखतर ऊपर ढाल नहि ।
० उघाडे बारणे धाड नहि, उजाड गामे गाड नहि ।
अने, उजाडाने बचता वार नहि ।
० घेली ने गोवालो नहि, ने कुंवारा ने सालो नहि ।
० नाटका मां फाड नहि, ने पर जमाई नो लाड नहि ।
० होली मा ढाल नहि, ने गधेडा ने गाल नहि ।

० चाडिया के शरम नहि, ने अघोरी ने धर्म नहि।
० बाढा ने बक्कर नहि, ने छासमा शक्कर नहि।
अने ऊँहूँ नो कोई औसड नहि। -- गुजराती कहावतें

६ नास्ति कामसमो व्याधि-र्नास्ति मोहसमोरिपु ।
नास्ति क्रोधसमो वह्नि-र्नास्तिज्ञानात् पर सुखम् ॥
नास्ति मेघसम तोय, नास्ति चात्मसम बलम् ।
नास्ति चक्षु सम तेजो, नास्ति धान्यसम प्रियम् ॥

—सुभाषितरत्नभाडागार, पृष्ठ १६५-६६

काम के समान कोई व्याधि (मानसिक रोग) नही, मोह के समान कोई दुश्मन नही, क्रोध के समान कोई आग नही और ज्ञान के समान कोई सुख नही।

मेघ के समान जल नही, आत्मा के समान बल नही, आख के समान तेज नही और धान्य के समान प्रिय वस्तु नही।

७ न च विद्यासमो बन्धु-र्न च धर्मो दयापर ।
न धर्मात्परम मित्र, न मुक्ते: परमा गति ॥
न पुत्रात्परमो लाभो, नानृतात् पातक परम् ।

—सुभाषितरत्नखण्डमजूषा

विद्या के समान बन्धु-स्वजन नही, दया के समान धर्म नही, धर्म के समान मित्र नही और मुक्ति के समान गति नही। पुत्र-प्राप्ति से बढकर कोई लाभ नही और असत्य से बढकर कोई पाप नही।

८ मौन कालविलम्बश्च, प्रयाण भूमिदर्शनम् ।
भृकुट्यन्यमुखी वार्ता, नकार षड्विध' स्मृत' ।

—सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृष्ठ १६५

(१) चुप रहना (उत्तर न देना), (२) देरी करना, (३) उठकर चला जाना, (४) जमीन की तरफ देखने लगना, (५) भृकुटी चढा लेना, (६) दूसरो की ओर मुह करके बात करने लगना—इस तरह नकार छ प्रकार का है।

नही के समान

१ चैत्र को मेह न दुर्बल देह, विना प्रिय गेह कछू न कछू।
सरवकी माय विना पय गाय, विना दल राय कछू न कछू।
कगीर को पान घुरत्त को ध्यान, विना स्वर गान कछू न कछू।
पातर प्यार अचातुर यार, कुपातर नार कछू न कछू।

—भापाश्लोकसागर

(ये सब नही के बराबर हैं।)

२ (क) ए ड्राप इन दि ओमन।

—अंग्रेजी कहावत

(ख) दर्या मे खस-खस।

—मराठी कहावत

(ग) ऊंट के मुह मे जीरा।

—हिन्दी कहावत

(बडों मे छोटा कुछ महत्व नही रखता अर्थात् नहीं के समान है)।

३ हाथी उडै जठै पूण्या रा के लेखा।
४ हाथी तोलीजै जठै गधा पासग मे जावै।

—राजस्थानी कहावतें

४६ नहीं से कुछ अच्छा

१ (क) अकरणात् मन्दकरण श्रेय । —कालिदास

न करने की अपेक्षा मदगति से करना भी अच्छा !

(ख) समथिंग इज वेटर दैन नथिंग । —अंग्रेजी कहावत

नही से कुछ अच्छा ।

(ग) वैलेसू वेगार आछी ।

० लाघण स्यू लापसी ही चोखी ।

० आडे दिन स्यू वासीडो ही चोखो ।

० नहिं मामा सू काणो मामो ही आछो ।

० आधा मे काणो राजा ।

० नहिं रूख जठै एरडियो ही रूख । —राजस्थानी कहावतें

२ व्रत धारु तो श्रावक **आनद** जैसे अन्यथा धारू ही नही ।

सामायिक करूं तो **पूणिया** जैसी अन्यथा करू ही नही ।

तपस्या करु तो **धन्ना मुनि** जैसी अन्यथा करूं ही नही ।

खाऊं तो **अमृत भोजन** अन्यथा खाऊ ही नही ।

पहनूं तो **दिव्य वस्त्र** अन्यथा पहनू ही नही ।

ओढू तो **रत्नकबल** अन्यथा ओढू ही नही ।

पढू तो **पूर्वों का ज्ञान** अन्यथा पढू ही नही ।

(इस प्रकार सोचना भूल है । उत्तम कार्य जितना भी हो सके करो ! नही से कुछ अच्छा ही है)

—व्याख्यान के मसालो से

चौथा कोष्ठक

१ नीतिमान और नैतिकता

१ अभय मृदुता सत्य, आर्जवं करुणा धृति ।
अनासक्तिः स्वावलम्ब, स्वशासनं सहिष्णुता ॥
कर्त्तव्यनिष्ठता व्यक्तिगतार्थस्य विसर्जनम् ।
प्रामाणिकत्व यस्मिन् स्यु. नीतिमान् उच्यते नर. ॥

—'नैतिक पाठमाला' की प्रस्तावना मे

जिस मनुष्य मे—(१) अभय, (२) मृदुता—अहं का विसर्जन, (३) सत्य, (४) आर्जव—कपट का विसर्जन, (५) करुणा, (६) धैर्य, (७) अनासक्ति, (८) स्वावलम्बन (९) आत्मानुशासन, (१०) सहिष्णुता, (११) कर्त्तव्य-निष्ठा (१२) व्यक्तिगत स्वार्थ का विसर्जन, (१३) प्रामाणिकता—ये गुण मिलते है, उसे नीतिमान कहा जाता है ।

२ नैतिकता शून्य धर्म बिना फलो का वृक्ष है । धर्मरहित नैतिकता बिना मूल का वृक्ष है ।

—शेक्सपियर

३ नैतिकता-विकास के चार स्तम्भ—
(१) पूर्ण ईमानदारी,
(२) पूर्ण पवित्रता,
(३) पूर्ण निःस्वार्थता
(४) पूर्ण प्रेम ।

—मोरल री-आरमामेंट की मान्यता

१ (क) परदार परद्रव्य, परीवाद परस्य च ।
परिहास गुरोः स्थाने, चापल्य च विवर्जयेत् ।। -पृष्ठ १६७

(ख) हितोपदेश शृणुयात्, कुर्वीत च यथोदितम् ।
विदुरोक्तमकृत्वाभूत्, कौरव शोकशल्यभाक् ।। -पृष्ठ १६१

(ग) अवृत्तिक त्यजेद् देश, वृत्ति सोपद्रवा त्यजेत् ।
त्यजेद् मायाविनं मित्र, धन प्राणहर त्यजेत् ।। -पृष्ठ १५६

(घ) दूरस्थं जलमध्यस्थ, धावन्त धनगर्वितम् ।
क्रोधवन्त मदोन्मत्त, नमस्कारेऽपि वर्जयेत् ।। -पृष्ठ १६१

(ङ) भक्त रक्तं सदासक्त, निर्दोष न परित्यजेत् ।
रामस्त्यक्त्वा सती सीता, शोकशल्याकुलोऽभवत् ।। -पृष्ठ १६१

(च) वहेदमित्र स्कन्धेन, यावत्कालविपर्यय ।
अथैवमागते काले, भिन्द्याद् घटमिवाश्मनि ।। -पृष्ठ १६१

—सुभाषितरत्नभाडागार

(क) पर-स्त्री, पर-धन, पर-निन्दा, परिहास, गुरु-स्थान मे चपलता—इन पाचो का परित्याग कर देना चाहिए ।

(ख) हित की बात सुननी चाहिए और तदनुसार काम करना चाहिए । विदुर का कहा न मानने से कौरव शोक-शल्य से पीडित हुए ।

(ग) जहाँ उदरपूर्ति न हो—ऐसा देश, जिसमे उपद्रव हो वह आजीविका, कपटी मित्र और प्राणापहारी धन, नीति के अनुसार ये चारो चीजें त्याग देनी चाहिए ।

(घ) दूर देशवर्ती, जल-मध्यवर्ती, दौडता हुआ, आधी और मदोन्मत्त—इन पाचो को नमस्कार भी नही करना चाहिए।

(ङ) भक्त, अनुरक्त, नित्यप्रेमी और निर्दोष—इन चारो को कभी नही छोडना चाहिए। देखो! सीता को छोडकर राम को शोक-शकु से व्याकुल होना पडा।

(च) जब तक समय साथ न दे, तब तक अपने शत्रु को भी कधे उठाकर चलते रहना चाहिए, किंतु मौका आते ही पत्थर पर पटक कर घडे की तरह उसे फौरन फोड डालना चाहिए।

२ मीठा हलुवा न बन, जो चट कर जाये भूखे।
कडवा नीम न बन, जो चखे सो थूके॥

३ खेलिये न जुआ, झाकिये न कुआं।
जाइये न साझ, नचिये न बाझ॥

० जैसा देश वैसा वेष। —हिन्दी कहावतें

४ पूत-कपूत कुलच्छन-नार, लडाक-पडोसी लजावन सारो।
भाई-अदेखो पुरोहित-लपट, लोभियो-मित्र अतीत-धुतारो।
चाकर-चोर कठोर-मुसाहिब, साहिब-सूम दिवान-ठगारो।
ब्रह्म भनै सुन शाह अकब्बर! बारे हीं बांध कुवां बिच डारो।

५ बोले वासो बोलिये न बोलिये न बोले वासो,
डोले काज आपके तो वाके काज डोलिये!
सुने जासो कहिये न कहिये न सुने जासो,
खोले गुझ आपसो तो वासो गुझ खोलिये!
करे जासो प्रीत कीजे प्रीत की प्रतीत लीजे,
अग जो स्वभाव तो तो अग हू न तोलिये!
एक बार बोले वासो बोलिये हजार बार,
आपसो न बोले वाके बाप सो न बोलिये!
—भावार्थदीपसागर

६ चगी है स्याणा दी सलाह पुच्छणी।
नफा जो नहिं तो नुकसान कुछ नी ॥१॥
मदा नहिं बोलिए ब्राह्मण-फकीर नू।
तत्ता नहिं छकिए प्रसाद खीर नू ॥२॥
औरत-रसोइया नाल ना बिगाडिये।
जुडदे सिरा चे भाजियाँ न मारिये ॥३॥
मुक्कदमा ना करिए जे मुख लोडिए।
रोटी बेले भूक्खा प्रावणा न टोरिए ॥४॥
कपडा न पहनिये मगलवार नू।
वेहा टूक लस्सी ना दइये बिमार नू ॥५॥
आपदा हथियार ना फडाइए होर नू।
जफी ना पाइए पाड वाले चोर नू ॥६॥
टिच्चरा न करिये मिरासी जात नू।
जूती-सोटी वाज टुग्यिे ना रात नू ॥७॥
घोडे दी पिछाडी हाकमा दे मुहर दी।
गल्ल ना उलट्टे बादस्या दे कौर दी ॥८॥
लघिए ना कोलदे वडखाणे उट्ठ दे।
जूतिया ना मारिए जवान पुत्त दे ॥९॥
पिंड विच वन्न के ना मुख लगिए।
वैरिया दे वार जाय के ना खगिए ॥१०॥
पहरे विच बैठ के ना गल्ल टुकिए।
फूला उत्ते आई ना वेल पट्टिए ॥११॥
आप गल्ल करके ना आप हसिए।
वच्छा चुगे गऊ नुं कदे ना दस्सिए ॥१२॥
जट्ट दा रुपैया व्याज नु ना लीजिए।
वाणिए दा भाऊ चौगणा ही लीजिए ॥१३॥

काम किते जावन्दे न छेडे जट्ट नू ।
हाथ विच फड़िए न ठंढे-सप्प नू ।।१४।।
माई-बाप अगे ना ऊचा बोलिए ।
दिलदार बाज भेद कान् खोलिए ।।१५।।
बैठक न बैठिए बन्दे खराब दी ।
संगत छडदे ना चोर-जुवे बाज दी ।।१६।।
छेती दे कमा चे ना लगाइये देर जो ।
बिना हथियार न जगाइये शेर जो ।।१७।।
दुश्मना दे नाल ना सलूक करिये ।
सियाल दे महीने ना तलाब तरिये ।।१८।।
जेठ दे महीने ना दुपहरे तुरिये ।।
जेडा काम कर लिया पीछे ना झूरिये ।।१९।।
न्हूवा-धोया बाला ना लगावे वसमा ।
झूठियाँ ना चकिये सोगन्ध कसमा ।।२०।।
बोता शूम होवे ना लुटावे धन नू ।
लाडला ना रखिये पुत्तर रन नू ।।२१।।

—पंजाबी कविता

७ चालता बलद ने आर मारवी नहीं, दाटया मुडदा उखेलवा नहिं, वेचातो कि जियो वहोरवो नहिं, ने सूतो सिंह जगाडवो नहिं ।

—गुजराती कहावत

८ अजाण्ये पाणी नहिं उतरणो ।

९ कादा रा छूतरा उतारणा चोखा होनी ।
(कादा रा छू नरा उतारै जिता ही उतरै)

१० निलाम लाटै नियाजी ने नाराज क्यू करणा ।

—राजस्थानी कहावतें

९ मारा जाता देखिये, आधा दीजे बाट।
० मारते के पीछे और भागते के आगे।
० चिडिया के शिकार मे सिह का सामान।

—हिन्दी कहावते

१० (क) टू स्टाप दी माउथ ऑफ ए डॉग विथ ए सॉप।

—अग्रेजी कहावत

(ख) भसता कूतराने रोटलो नाखवो, चाडियानु मो चापवु।

० दुश्मनना डाचा मा नाखवा थी दबाय।

० मृदग नु चामडु लोट लगावी कूटे तो मीठो स्वर नीकले।

—गुजराती कहावतें

११ (क) नो फिसिग लाइक फिसिग सी।

—अग्रेजी कहावत

(ख) मारवो तो हाथी, लुटवो तो भण्डार!
परणवी तो पदमणी, पहोचवु तो दरबार।

० चीरवो तो पाटडो चीरवो, देडका शा डाभवा!

० एक राय भागवी ते हजारो सोयो थाय।

—गुजराती कहावतें

१२ कन्टेम्प्ट विल सून किल एन इजरी दैन रिवेन्ज।

—अग्रेजी कहावत

गुड देने से ही मर जाय, उसे जहर क्यों दिया जाये!

१३ त्रि• पक्षस्य केश-श्मश्रु-लोम-नखान् सहारयेत्।

—चरकसहिता, सूत्रस्थान ८।१८

केश, दाढी, मूछ, रोम एव नखो को पक्ष मे तीन बार कटवाना चाहिए।

१४ रात्रौ सध्यासु विद्यादौ, क्षौर नोक्त तथोत्सवे।

— विवेकविलास

रात्रि, सध्या, विद्याध्ययन के प्रारम्भ मे तथा महोत्सव के समय हजामत कटाने का निषेध है।

१५ आँखे अजन दाँते मंजन, नितकर-नितकर-नितकर।
दाँत कुचरणी कान कुचरणी, मतकर-मतकर-मतकर।

—राजस्थानी कहावत

१६ जाये ते न जाये जाये ते भालो।
खाये ते न खाये, न खाये भालो।

—बगला कहावत

टट्टी जाऊं या न जाऊं—यदि मन मे ऐसा विकल्प हो तो जाना अच्छा है। खाना खाऊं या न खाऊं—यदि ऐसा विकल्प हो तो न खाना अच्छा है।

१७ जैनालये दुष्टकथाविलासो,
निष्ठ्यूत-निद्रा कलहादिकानि।
पानाशन - स्वादिम - खाद्यसेवे-
त्यादि-प्रमादाचरण निषिद्धम्॥

—सेठ सुगनमलजी से श्रुत

कुकथा, भोग-विलास, थूकना-मिनकना, नींद लड़ाई, झगड़ा आदि तथा अशन-पान-खादिम-स्वादिम—इन चारों प्रकार के आहार का सेवन इत्यादि प्रमादाचरण, (प्रमाद के कार्य) जैन मन्दिर या जैन-उपाश्रय मे कभी नही करने चाहिये। क्योकि उक्त कार्य धर्मस्थान मे निषिद्ध माने गये हैं।

१८ पाँच की बात पर ध्यान देना चाहिए—
१—माता-पिता की बात पर, २—शिक्षक की बात पर, ३—धर्माचार्य की बात पर, ४—सन्मित्र की बात पर, ५—सुयोग्य पत्नी की बात पर।

१६ सभा मे पांच वातें वर्जित हैं—

१—निद्रा लेना, २—अन्यमनस्क होना, ३—वातचीत या कानाफूसी करना, ४—वीच मे होकर आगे वढने की चेष्टा करना, ५—सभा के वीच मे अकारण उठना।

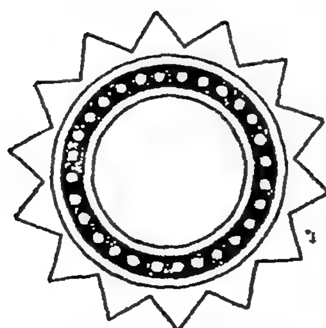
२० स्त्रियो के पांच सामान्य कर्तव्य—

१—विना देखे चूल्हा जलाना नही, २—छाने विना पानी काम मे लेना नही, ३—घरवालो को भोजन कराए विना करना नही, ४—दूध, दही आदि के वर्तन खुला रखना नही, ५—कलह-कोलाहल मे भाग लेना नही।

२१ पांच धर्मसाधना मे आलम्बन हैं—

१—षट्काय, २—गण, ३—राजा, ४—गाथापति या स्थानदाता, ५—स्वस्थ शरीर।

—'पांच वात' पुस्तक से



१ (क) द्वाविमौ पुरुषौ लोके, सूर्यमण्डलभेदिनौ ।
परिव्राड्योगयुक्तश्च रणे चाभिमुखो हत ॥

(ख) द्वाविमौ पुरुषौ लोके, शिर शूलकराविह ।
गृहस्थश्च निरारम्भो, यतिश्च सुपरिग्रह ॥ —पृष्ठ १६१

(ग) नि सारस्य पदार्थस्य, प्रायेणाडम्बरो महान् ।
न सुवर्णे ध्वनिस्तादृग्, यादृक कास्ये प्रजायते ॥ —पृष्ठ १६२

(घ) जीवन्तोऽपि मृता पञ्च, व्यासेन परिकीर्तिता ।
दरिद्रो व्याधितो मूर्ख, प्रवासी नित्यसेवक ॥ —पृष्ठ १६२

(ङ) ब्राह्मणा गणका वैश्या, सारमेयाश्च कुक्कुटा ।
दृष्टेष्वन्येषु कुप्यति, न जाने तस्य कारणम् ॥ —पृष्ठ १६२

(च) पुत्र-पौत्र-वधू-भृत्यै सम्पूर्णमपि सर्वदा ।
भार्याहीनगृहस्थस्य, शून्यमेव गृह मतम् ॥ —पृष्ठ १६२

(छ) आज्ञामात्रफल राज्य, ब्रह्मचर्यफल तप ।
परिज्ञानफल विद्या, दत्त-भुक्तफल धनम् ॥ —पृष्ठ १६३

(ज) अयुक्त स्वामिनो युक्त युक्त नीचस्य दूषणम् ।
अमृत राहवे मृत्युर्विष शङ्करस्य भूषणम् ॥ —पृष्ठ १६४

(झ) काक पक्षिषु चाण्डाल स्मृत पशुषु गर्दभ ।
नराणा कोऽपि चाण्डाल, स्मृत सर्वेषु निन्दक ॥ —पृष्ठ १६४

(ञ) कृतस्य करण नास्ति, मृतस्य मरण तथा ।
गतस्य शोचन नास्ति ह्येतद्वेदविदा मतम् ॥ —पृष्ठ १६५

(ट) असंमाने तपोवृद्धि सम्मानाच्च तप क्षय ।
पूजया पुण्यहानि स्याद् निन्दया सद्गतिर्भवेत् ॥ —पृष्ठ १६५

—सुभाषितरत्नभाण्डागार

(क) दो आदमी सूर्यमडल को भी भेद डालते हैं—योगयुक्त परिव्राजक और युद्ध मे सन्मुख रहकर मरने वाला वीर।

(ख) दो आदमी सिर मे शूल पैदा करने वाले है—निरुद्यमी गृहस्थ और परिग्रहधारी साधु।

(ग) नि.सार पदार्थ का आडम्वर प्राय अधिक होता है। देखो! कासा जितनी ज्यादा आवाज करता है, सोना उतनी कभी नही करता।

(घ) दरिद्र, रोगी, मूर्ख, प्रवासी (देश-विदेश मे घूमता रहने वाला) और सदा दूसरो की सेवा करने वाला। महर्षि व्यास ने कहा है कि ये पाच जीते हुए भी मृत के समान हैं।

(ङ) ब्राह्मण, ज्योतिषी, वेश्या, कुत्ते और मुर्गे—ये अपने साथियो को देखकर प्राय क्रुद्ध होने लगते हैं, लेकिन इसका कारण क्या है—यह कुछ समझ मे नही आता।

(च) भार्या—स्त्री से विहीन गृहस्थ का घर शून्यरूप माना गया है। चाहे वह पुत्र, पौत्र, वहू एव भृत्यो से भरा हुआ भी क्यो न हो। सभवत इसलिए यह कहावत चली आ रही है—"टावरिया ही घर वसाय ले तो वावो वूढली क्यू लावे।"

(छ) राज्य का फल है—अखण्ड आज्ञा, तप का फल है—ब्रह्मचर्य की प्राप्ति, विद्या का फल है—चौतरफा ज्ञान और धनका फल है—दान एव भोग।

(ज) समर्थ के लिए अयुक्तकार्य भी युक्त वन जाता है और तुच्छ व्यक्ति के लिए युक्तकार्य भी दोप वन जाता है। राहु के लिए अमृत भी मृत्यु वन गया और शकर के लिए विप (साप) भी आभूपण।

(झ) पक्षियो मे चाण्डाल काक है, पशुओ मे चाण्डाल गदहा है और मनुष्यो मे यदि कोई चाण्डाल है तो केवल निन्दक—दूसरो की निन्दा करने वाला।

(ज) विद्वानो का मत है कि किए हुए का पुन क्या करना, मरे हुए का पुन क्या मरना तथा गई वस्तु का पीछे मे क्या सोच-फिक्र करना।

(ट) असम्मान से तप की वृद्धि होती है और सम्मान से तप का क्षय होता है। पूजा मे पुण्य का नाश होता है किन्तु निन्दा मे समभाव रहने मे प्राणी सद्गति को प्राप्त होता है।

२ (क) कण्टकेनैव कण्टकम्। —संस्कृत कहावत

० कांटे सूं कांटो निकलै। —राजस्थानी कहावत

(ख) विषस्य विषमौषधम्। —संस्कृत कहावत

० पोइजन इज दी रीमेडी ऑफ पोइजन। —अंग्रेजी कहावत

० जहर स्यूं जहर दटै। —राजस्थानी कहावत

(ग) डायमण्ड्स कट डायमण्ड्स। —अंग्रेजी कहावत

हीरे से हीरा कटता है।

(दुष्ट से दुष्ट दबता है)

३ प्लेन्टी मैक्स डैड टी। —अंग्रेजी कहावत

जितना गुड डालो उतना मीठा।

४ गाडी भर धान रो मुट्ठी भर बानगी। —राजस्थानी कहावत

५ फैटर्स दी मेड ऑफ गोल्ड आर फेटर्स स्टिल। —अंग्रेजी कहावत

सोने की बेडी क्या बेडी नही होती।

६ सोने की कटारी पेट मे को मारीजैनी। —राजस्थानी कहावत

७ नया नौ दिन, पुराना सौ दिन। —हिन्दी कहावत

४ विज्ञान प्रश्नोत्तरी

१ प्रश्न—उष्मा के प्रधान स्रोत क्या हैं ?

उत्तर—सूर्य, विजली रासायनिक प्रक्रिया और यान्त्रिक प्रक्रिया।

२ प्रश्न—क्या ठण्डे पानी मे भी उष्मा होती है ?

उत्तर—उष्मा सभी पिंडो मे होती है। शीतलतम वर्फ मे भी और उष्ण-तम अग्नि मे भी।

३ प्रश्न—हाइड्रोजन गैस किसे कहते हैं ?

उत्तर—यह जल का एक तत्त्व है। उक्त गैस इतनी जल्दी सुलगती है कि इसे ज्वलनशील गैस भी कहा जाता है। विश्व के विदित पदार्थों मे यह सबसे हल्की है।

४ प्रश्न—ऑक्सीजन गैस के विषय मे आप क्या जानते हैं ?

उत्तर—यह गैस जीवधारियो के जीवन के लिए अनिवार्य है और हाइड्रोजन से वहुत भारी होती है। यह लपट को चमक प्रदान करती है।

५ प्रश्न—नाइट्रोजन गैस किसे कहते हैं ?

उत्तर—यह एक अदृश्य गैस है, जो सामान्य हवा का मुख्य तत्त्व होती है। हवा के प्रत्येक पाच भागो मे चार भाग नाइट्रोजन गैस होती है।

६ प्रश्न - कार्वोनिक एसिड गैस क्या है ?

उत्तर - कार्वन (या लकडी का कोयला) जव ऑक्सीजन से मिल जाता है, तव कार्वोनिक एसिड गैस वन जाती है।

७ प्रश्न—पानी से आग वुझ क्यो जाती है ?

उत्तर—पानी ईंधन पर नमी की एक परत चढा देता है और इस तरह वहा वह हवा पहुचनी वन्द हो जाती है, जिसकी ऑक्सीजन से आग भडकती है।

८ प्रश्न—तेल, चरबी और मोम किन वस्तुओं द्वारा निर्मित होते हैं ?

उत्तर—ये मुख्यत कार्बन और हाइड्रोजन गैस द्वारा निर्मित होते हैं। इनका ठोस अंश कार्बन और ज्वलनशील अंश हाइड्रोजन गैस है।

९ प्रश्न—प्राणी-ऊष्मा कैसे पैदा होती है ?

उत्तर – प्राणी-शरीर पर विद्यमान ऊष्मा केशिका-नलिका मे हाइड्रोजन गैस और कार्बन, जो प्राणी के खून मे विद्यमान रहते हैं, उनके दहन से पैदा होती है। (केश जैसी बारीक होने के कारण इन्हें केशिका-नलिका कहते हैं। ये पूरे शरीर पर पाई जाती है।)

दहन—हमारे खून मे मौजूदा कार्बन उस हवा की ऑक्सीजन के साथ मिल जाती है, जो हम सांस द्वारा ग्रहण करते हैं और इस तरह वह कार्बोनिक एसिड गैस बनाती है। उनकी यही मिलन-प्रक्रिया दहन कहलाती है।

१० प्रश्न—पानी किस तरह बनता है ?

उत्तर—पानी दो गैसों—हाइड्रोजन और ऑक्सीजन के मेल से बनता है।

११ प्रश्न—तारे छोटे-छोटे क्यों दीखते हैं ?

उत्तर—ये बहुत दूरी पर स्थित है। वास्तव मे कुछ तारे तो इतने बड़े हैं कि हम उनके आकार का अनुमान भी नहीं लगा सकते। उदाहरण के लिये, आर्द्रा नामक नक्षत्र का आकार लगभग २,६००,०००,००० मील अर्थात् हमारी पृथ्वी के व्यास से कोई तीन लाख गुना अधिक है।

—सामान्य ज्ञान एवं व्यक्ति परिचय, सन् १९७२

१ होली-दिवाली-रामनवमी-जन्माष्टमी-रक्षाबधन-शीतलासप्तमी गणेशचतुर्थी-मकर-सक्रान्ति-वसन्तपचमी-अक्षयतृतीया-महावीरजयन्ती-सवत्सरी आदि कितनेक दिन वर्ष मे महत्वपूर्ण एव उत्साहवर्धक होते हैं और त्यौहार कहलाते हैं। इन दिनो मे त्यौहार के आधारभूत महापुरुषो की जीवनिया पढकर जीवन को उन्नत बनाने का विशेष प्रयत्न करना चाहिए। त्यौहारो के रहस्य पर विशेष चिन्तन-मनन करना चाहिए। मात्र लड्डू-लापसी बनाकर खाने-खिलाने से एव बाह्य आडम्बर करने मे लाभ नही होता। दिवाली के दिन केवल दीप जलाने से, होली को रग उडाने से, जन्माष्टमी को फलाहार या रात्रिजागरण करने से, रक्षाबन्धन के दिन रखिया बधाने से या जनेऊ बदलने से, शीतला के दिन ठण्डा-बासी खाने से, सक्रान्ति के दिन तिल-गुड का भोजन करने से, एव सवत्सरी के दिन नई मुहपति धारण करने मे सन्तुष्ट होने वाले व्यक्ति बहुत बडे अन्धकार मे भ्रमण कर रहे हैं। वास्तव मे खाना-पीना, आमोद-प्रमोद करना और सिगार-सजाना तो केवल त्यौहारो का शरीर है, किन्तु विचारो की पवित्रता एव आचार शुद्धि त्यौहारो की आत्मा है अस्तु!

२ पर्व के प्रकार—

पर्व दो प्रकार के होते हैं—लौकिक और लोकोत्तर।

होली, दिवाली, दशहरा आदि पर्व लौकिक हैं—इनमे धन, विजय आदि ऐहलौकिक कामनाएँ रहती हैं। सवत्सरी, रमजान, क्रिसमिस आदि लोकोत्तर पर्व हैं। इनमे आत्मिक कल्याण की भावना मुख्य रहती है।

लौकिकपर्व तीन कारण से मनाये जाते हैं—भय से, लोभ से और विस्मय से।

नागपचमी, गोगा, शीतला आदि भय के कारण से चलते हैं। दशहरा, लक्ष्मीपूजन, दुर्गापूजन आदि विजय या धन के लोभ से मनाए जाते हैं तथा अग्निपूजा, समुद्रपूजा आदि की प्रवृत्ति विस्मय के कारण से हुई है।

६ जैन एवं बौद्ध पर्व

१ सांवत्सरी – संवत्सर (वर्ष) के अनन्तर होने के कारण यह पर्व सांवत्सरी कहलाता है। (संवत्सर शब्द से पर्व के अर्थ में अण् प्रत्यय हुआ एवं स्त्रीलिंग में ङीप् प्रत्यय हुआ।) इसका लक्ष्य है व्यक्ति, परिवार, समाज एवं राष्ट्र में सुख-शांति स्थापित करना। इस दिन आत्मनिरीक्षण, अपनी भूलों का सुधार, इन्द्रियों या मन के द्वारा की गई गलतियों के लिए छोटों-बड़ों सभी से क्षमायाचना करनी चाहिए। इस दिन मनुष्य निरामिष भोजी बने थे या बनेंगे अतः इसे पर्व का रूप दिया गया है। यह साधु साध्वी, श्रावक-श्राविका सभी को अपने-अपने कर्त्तव्य सम्भालने का संदेश देता है। इसका नाम पर्युषण पर्व भी है। पर्युषण अर्थात् कर्म-ईंधन को चारों ओर से जलाना है। (परि उपसर्ग से 'उष दाहे' धातु है और अनट् प्रत्यय है।) आठ कर्मों का क्षय करना है अतः इस पर्व को आठ दिन मनाया जाता है। यह आत्मा को अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाता है।

श्वेताम्बर जैन भाद्रकृष्णा १२-१३ से भाद्रशुक्ला ४-५ तक आठ दिन पर्युषण पर्व मनाते हैं। चौथ या पाँचम को संवत्सरी करते हैं। दिगम्बर-जैन भाद्रशुक्ला पंचमी से चतुर्दशी तक इस पर्व को दस दिन तक मनाते हैं तथा इसे दसलाक्षणी पर्व भी कह देते हैं।

२ महावीर जयन्ती — यह पर्व चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को मनाया जाता है। इस दिन चौबीसवें तीर्थंकर भगवान श्री महावीर का जन्म हुआ था। भगवान के आदर्श जीवन का स्मरण करना एवं उनके सिद्धान्तों का अनुसरण करना ही इस पर्व का मुख्य उद्देश्य है। [illegible] जैन इस पर्व के दिन भगवान की सवारी भी निकालते हैं।



३ **वीर निर्वाण दिवस (दिवाली)**—यह पर्व कार्तिक कृष्णा अमावस को होता है। अमावस की रात को १२ बजे भगवान महावीर का निर्वाण हुआ था। निर्वाणमहोत्सव करने को इन्द्रादि देवो का समूह आया। उनके दिव्य रत्नो के प्रकाश से अधेरी अमावश प्रकाशमय बन गयी एव दीपावली पर्व के नाम से प्रसिद्ध हो गयी। इस दिन महावीर स्वामी तथा गौतमस्वामी का विशेष रूप से जाप किया जाता है। गौतमस्वामी को केवलज्ञान इसी रात को हुआ था।

४ **अक्षय तृतीया**—यह पर्व भगवान ऋषभदेव के वार्षिक तप की स्मृति को ताजा करता है। वैशाख शुक्ला तृतीया को प्रभु ने अपने प्रपौत्र **श्रेयांस कुमार** के हाथ से इक्षुरस द्वारा एक वर्ष की तपस्या का पारणा किया था। जो भी भाई-वहिन वार्षिक तप (एक वर्ष तक एकान्तर या वेले-तेले आदि करते हैं) वे प्राय अक्षयतृतीया से अक्षयतृतीया तक ही करते हैं। इस पर्व के दिन भगवान ऋषभदेव का पवित्र जीवन अवश्य पढना एवं सुनना चाहिये।

५ **जैन श्वेताम्बर तेरापंथ के तीन महोत्सव**—

(क) **मर्यादा महोत्सव**—यह माघ शुक्ला सप्तमी के दिन होता है। इस मौके पर हजारो श्रावक-श्राविकाए एव सैकडो साधु-साध्विया एकत्रित होते हैं। इस दिन वर्तमान आचार्य तेरापथ के सस्थापक श्री भिक्षुस्वामीकृत मर्यादायें सुनाते हैं एव उन्हे प्रामाणिकता से पालन करने की प्रेरणा देते हैं। साधु-साध्वियो के भावी चातुर्मास की नियुक्ति भी आचार्य श्री प्राय इसी समय करते हैं।

(ख) **चरम महोत्सव**—यह भाद्रशुक्ला त्रयोदशी को मनाया जाता है। इस दिन भिक्षुस्वामी का अनशनपूर्वक स्वर्गवास हुआ था। वर्तमान आचार्य इस अवसर पर हजारो की सभा में जैन श्वेताम्बर तेरापथ के सस्थापक श्री भिक्षुस्वामी का आदर्श जीवन उपस्थित करते हैं। अन्य साधु-साध्विया एव श्रावक-श्राविकाएँ भी अपने आराध्य आदि गुरु को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

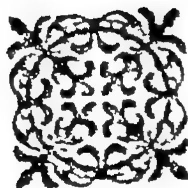
(ग) **पट्टारोहण दिवस**—जिस दिन वर्तमान आचार्य का पट्टारोहण होता है अर्थात् वे आचार्य पद पर नियुक्त होते हैं। उस दिन उक्त

महोत्सव मनाया जाता है। तेरापन्थ के वर्तमान आचार्य श्री तुलसी भाद्रशुक्ला नवमी को आचार्य बने थे।

—धनमुनि

६ बौद्धपर्व—वैशाखी पूर्णिमा बौद्धों के लिए पवित्र दिन है। इस दिन लुम्बिनी (नेपाल) में सालवृक्ष के नीचे रानी माया ने राजकुमार सिद्धार्थ को जन्म दिया था। एक अन्य वैशाखी पूर्णिमा के दिन गया में गौतमबुद्ध ने बोधिवृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त किया और बुद्ध कहलाए। तथा एक अन्य वैशाखी पूर्णिमा के दिन ८० वर्ष की आयु में भगवान बुद्ध ने महापरिनिर्वाण किया।

—'भारत ज्ञान-कोष' ७१-७२



७ हिन्दुपर्व

१ (क) दीपावली—भारत मे दीपमाला का पर्व साधारणत. अक्टूवर-नवम्वर मे होता है। यह रावण-विजय कर अयोध्या को लौटे श्रीरामचन्द्रजी के राज्याभिपेक का दिन है। भारत के कुछ भागो मे इससे हिन्दुओ का व्यावसायिक वर्ष आरम्भ होता है।[1]

(ख) दुर्गा पूजा—वगाल का यह सवसे महत्वपर्ण पर्व है। यह सितम्बर-अक्टूवर मे मनाया जाता है। यह असत्य पर सत्य की विजय का स्मरण कराता है और वताता है कि पाशविक व आसुरी शक्तियोपर दैवी शक्तियो की विजय अवश्य होती है।

नोट—(१) दीपावली के सन्दर्भ—

१ लकाविजय के अनन्तर भगवान राम का अयोध्या प्रवेश और राज्याभिपेक।

२ भगवान महावीर का परिनिर्वाण और उनकी ज्योतिर्मयी दिव्यता।

३ स्वामी दयानन्द द्वारा विपपान से अमरत्व की प्राप्ति।

४ स्वामी रामतीर्थ की गगा की लहरो मे समाधि।

५ सिक्खो के छठे गुरु हरगोविंदसिहजी की जेल से स्वर्णमन्दिर तक की विजय यात्रा।

६ आयुर्वेद के आदि आचार्य धन्वन्तरी का आविर्भाव।

७ शक्ति-पुञ्ज हनुमान का जन्मदिन।

८ वलि का पाताल गमन।

९ काली का असुर-दमन।

१० नरकासुर का वध।

—कथालोक दीपावली विशेपांक

(ग) **विजयादशमी** (दशहरा)—भारत का यह राष्ट्रीय पर्व है। श्रीराम की लंका-विजय के उपलक्ष्य मे रामलीला की जाती है। यह उत्सव भरत-मिलाप के साथ समाप्त होता है। यह सितम्बर-अक्तूबर मे होता है। दुर्गा-पूजा का भी इसमे समावेश हो जाता है। मैसूर मे दशहरा बडे उत्साह के साथ मनाया जाता है। यह बुराई पर भलाई की, पाप पर पुण्य की विजय का सूचक है। (यह मुख्यतया क्षत्रियो का पर्व है।)

(घ) **गणेश चतुर्थी**—गणेशजी कीपूजा पश्चिमी भारत मे विशेष रूप से की जाती है। लोकमान्य तिलक ने गणेशोत्सव को राजनैतिक जागृति का साधन बनाकर महाराष्ट्र मे इसका महत्व और अधिक बढा दिया। इसको **नारियल दिवस** भी कहा जाता है।

(च) **होली**—मार्च मे पूर्णिमा के दिन यह पर्व मनाया जाता है। गुलाल उडाया जाता है और पिचकारियो से हर किसी पर रग फैका जाता है। (यह मुख्यतया शूद्रो का पर्व है।)

(छ) **जन्माष्टमी**—जुलाई-अगस्त मास में पूर्णिमा से आठवें दिन मनाई जाती है। यह भगवान् श्रीकृष्ण का जन्मदिन माना जाता है।

(ज) **सरस्वती पूजा**—यह जनवरी-फरवरी मास मे वसन्त पचमी के मौके पर आती है। यह पूजा विद्या-देवी सरस्वती के सम्मान मे की जाती है। यह छात्रो का उत्सव है। वे सरस्वती का जूलूस धूमधाम से निकालते हैं।

२ **रक्षाबन्धन**—यह पर्व मुख्यतया ब्राह्मणो का है। इसे श्रावणी या नारियल पूर्णिमा भी कहते हैं। इस दिन समुद्रयात्रा से शुरु हो जाती है। इस त्योहार पर जनेऊ (यज्ञोपवीत) बदली जाती है। जनेऊ में तीन तार होते हैं। इसका अर्थ माता-पिता, ऋषि-गुरु और देवो से उऋण होना है। जैसे—'माता-पिता की सेवा करना, गुरुओ से प्राप्त ज्ञान को फैलाना सूर्य, अग्नि, वरुण, पवन आदि देवो से प्रकाश-आग, जल, हवा, लेकर जगत का उपकार करना।' जनेऊ को त्यागकर ब्राह्मण सन्यासी बनता है अर्थात् लोकैषणा, पुत्रैषणा, वित्तैषणा का त्याग करता है।

० रक्षाबन्धन का इतिहास—बलिराजा के दानादि से भयभीत होकर इन्द्र आत्मरक्षार्थ विष्णु की शरण मे गए। वामन-अवतार लेकर विष्णु यज्ञ-शाला मे पहुचे - बलि ने यथेष्ट मागने के लिए कहा। सकल्प करते समय शुक्राचार्य झारी के मुख मे घुस गए। पानी आना बन्द हुआ। विष्णु ने सलाई डाली। शुक्राचार्य की एक आख गई। फिर वामन ने साढे तीन पैर जमीन मांगी। तीन पैर मे तीनो लोक समाये। चौथा पैर बलि के सिर पर रखा एव उसे पाताल मे भेजा। इस प्रकार इन्द्रादि देवो की रक्षा हुई। रक्षा बाधते समय ब्राह्मण यह श्लोक बोला करते हैं —

येन बद्धो बली राजा, दानवेन्द्रो महाबल ।
तेन त्वां प्रतिबध्नामि, रक्षे ! मा चल-मा चल ।।

जिस रक्षाबन्धन के बल से दानवेन्द्र महाबल बलि बाधा गया था। जजमान ! मैं उसी से तुझे बाधता हू। अत भविष्य मे सदा मेरी रक्षा करते रहना, इससे मुकरना मत।

इसी प्रकार रखिया बाधकर बहन भी भाई से रक्षा का वचन लेती हैं।

देवो-दानवो के युद्ध मे इन्द्राणी ने भी इन्द्र के ब्राह्मणो से रक्षा बधाई थी। फलस्वरूप इन्द्र की विजय हुई।

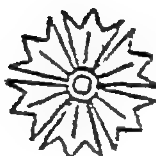
मुसलमान बादशाहो ने भी इस त्यौहार को मान्यता दी थी। गुजरातपति बहादुरशाह के आक्रमण से त्रस्त चित्तौड की राजमाता कर्णावती ने शाह हुमायू को रखिया भेजी एव हुमायू ने युद्ध करके कर्णावती की रक्षा की। आलमगीर द्वितीय को उसके मन्त्री गाजीउद्दीन ने मरवाकर लाश को यमुना के किनारे फेंक दिया। एक हिन्दुस्त्री ने उसकी रक्षा की। आलमगीर का पुत्र आलम उस स्त्री से राखी बधवाता रहा। हुमायू, जहागीर, शाहजहा और औरगजेब ने इसे महत्व दिया। आलम से अकबर और बहादुरशाह तक यह त्यौहार धूमधाम से चलता रहा।

जैन ग्रन्थानुसार विष्णुकुमार मुनि ने नमुचि ब्राह्मण से तीन पैर जमीन मागकर जैनधर्म की रक्षा की थी।

अध्यात्म दृष्टि से "आत्मा" इन्द्र है, "अहंकार' दैत्य है और "आत्मिक बल" विष्णु है। तीन पैर मे तीन लोक और आधे मे सिद्धि प्राप्त करता है।

कलम-दवात-गज बटखरे आदि पर राखी बाधने का तत्व यह है कि इनके द्वारा लिखा-पढी, तोल-माप आदि मे अप्रामाणिकता न करनी चाहिये।

—अध्ययन के आधार पर



८

ईसाई-पर्व

१ **अप्रैल-फूल**—१ अप्रैल को मूर्ख दिवस मनाया जाता है। यह सदियो से ईसाई-जगत मे प्रचलित है। बुद्धिचातुर्य से पडोसी को मूर्ख बनाने का यह उत्सव है।

२ **आल-सोल्स डे**—यह प्रार्थना का दिन है। मृतको की सद्गति के वास्ते प्रार्थना की जाती है।

३ **बैंक होली डे**—इग्लैंड मे यह एक धर्म निरपेक्ष छुट्टी है। इस दिन बैंक बन्द रहते हैं। लोग भी इस दिन पैसो का लेन-देन नही करते। कल्पना कीजिए, किसी को उस दिन कर्ज पर सूद देना हो, तो वह अगले दिन दे सकता है। पहले न देने के कारण उसके विरुद्ध कोई कानूनी कार्यवाही नही की जायेगी।

४ **कैंडलेमा डे**—इसे दो फरवरी को रोमन कैथोलिक लोग श्रद्धा से मनाते हैं। कुमारी मेरी की याद मे यह उत्सव मनाया जाता है।

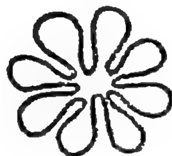
५ **क्रिसमस**—ईसा के जन्मदिन के उपलक्ष्य मे यह उत्सव मनाया जाता है। यद्यपि ईसा का जन्मदिन अज्ञात है। पाचवी सदी से ईसा का जन्मदिन २५ दिसम्बर को साधारणत मनाया जाने लगा।

६ **ईस्टर-डे**—यह ईसाइयो का मुख्य पर्व है। ईसामसीह के पुनरुज्जीवन का यह दिन माना जाता है। यह उत्सव २२ मार्च और २५ अप्रैल के बीच मे पडता है।

७ **हॉलोवीन**—इसका अर्थ है—पवित्र दिन से पहले। यह १ नवम्बर को मनाया जाता है। यह शिशिर के आने की सूचना देता है।

८ **सेन्ट वैलेंटाइन दिवस**—यह पर्व १४ फरवरी को मनाया जाता है। इस उत्सव के मूल का पता नही। इग्लैंड और फ्रास मे युवा-युवती सेंटवैलेंटाइन से पहले दिन वडी सख्या मे एकत्र होकर उत्सव मनाते हैं। यह प्रेमियो का उत्सव माना जाता है।

—भारत ज्ञानकोष सन् ७१-७२



६ मुस्लिम-पर्व

१ आखिरी चहार-शम्बा—यह 'सफर' के बुधवार को मनाया जाता है। पैगम्बर मोहम्मद अपनी आखिरी बीमारी मे इस दिन कुछ अच्छे मालूम हुए थे और उन्होंने इस दिन अन्तिम स्नान किया था।

२ बकरीद—यह इस्लामी वर्ष के अन्तिम मास के दशवें दिन मनाया जाता है। इस्लाम के अनुसार अब्राहम को परमात्मा का आदेश हुआ था कि वह अपने पुत्र इस्माइल की बलि दे। उसने अपनी आखें मूद ली और पुत्र की हत्या कर दी। कपडा उठाने पर उसने देखा कि लडका खडा है और वेदी पर दुम्बा मरा पडा है।

३ मुहर्रम—मुहर्रम मास का यह दसवा दिन है। शोक व दुख पहले दस दिन मनाया जाता है। हसन व हुसैन की शहादत की स्मृत मे यह मनाया जाता है।

४ ईद-उल-फितर—रमजान के बाद दूज का चाद निकलने पर यह मनाया जाता है। यह पवित्र दिन है, क्योंकि कुरान पहले पहल इसी दिन प्रकाश मे आया था।

५ रमजान—यह पर्व उपवास (रोजो) के महीने, रमजान की समाप्ति का द्योतक है।

१०

आश्चर्य

१ आश्चर्य दर्शन का प्रथम कारण है ।

—अरस्तू

२ आश्चर्य ही उपासना का आधार है ।

—इमर्सन

३ वडर इज दि इफैक्ट ऑफ इग्नोरैन्स ।

—अग्रेजी कहावत

आश्चर्य मूर्खता ही है ।

४ कोई भी आश्चर्य तीन दिन से अधिक नही टिकता ।

—इटालियन लोकोक्ति

५ **क्या आश्चर्य ।**

(क) वार्ता च कौतुकवती विशदा च विद्या,
लोकोत्तर परिमलश्च कुरङ्गनाभे· ।
तैलस्य बिन्दुरिव वारिणि दुर्निवार—
मेतत् त्रयं प्रसरतीह किमत्र चित्रम् ।

—सुभाषितरत्नभाडागार पृष्ठ १८२

कौतुक भरी वात, पवित्र विद्या और कस्तूरी की लोकोत्तर-सुगन्धि—ये तीनो चीजें पानी मे तैलबिन्दुवत् तत्काल ही फैल जाती हैं। यहा पर आश्चर्य नही करना चाहिए ।

(ख) दाने तपसि शौर्ये वा, विज्ञाने विनये नये ।
विस्मयो नहि कर्तव्यो, बहुरत्ना वसुंधरा ॥

—चाणक्य नीति १४।८

दान मे, तप मे, शूरता मे, विज्ञता मे, विनम्रता मे और नीति मे विस्मय नही करना चाहिए क्योंकि पृथ्वी बहुत रत्नों को धारण करने वाली है ।

(ग) किं चित्रं यदि वेदशास्त्रनिपुणोविप्रो भवेत् पण्डितः,
किं चित्र यदि राजनीतिकुशलो राजा भवेद् धार्मिक ।
तच्चित्रं यदि रूपयौवनवती साध्वी भवेत् कामिनी,
तच्चित्रं यदि निर्धनोऽपि पुरुषः पाप न कुर्यात् क्वचित् ।

—सुभाषितरत्नभाडागार पृष्ठ १८६

वेदशास्त्र पढा हुआ ब्राह्मण पडित हो एव राजनीतिकुशल राजा धार्मिक हो तो कोई आश्चर्य की वात नही किन्तु रूप-यौवन सम्पन्न स्त्री यदि सती हो तथा निर्धन आदमी यदि पाप का त्यागी हो तो आश्चर्य की वात है ।

६ **महान् आश्चर्य—**

अहन्यहनि भूतानि, गच्छन्तीह यमालयम् ।
शेषा स्थावरमिच्छन्ति, किमाश्चर्यमत परम् ॥

—महाभारत-वनपर्व

प्रतिदिन प्राणी मरण की शरण मे जा रहे हैं, फिर भी शेप जीव स्थावरता—अमरता को चाहते हैं—इससे वढकर आश्चर्य क्या हो सकता है ?

७ **आश्चर्य त्याज्य—**

विस्मय सर्वथा हेय, प्रत्यूह सर्वकर्मणाम् ।
तस्माद्विस्मयमुत्सृज्य, साध्यसिद्धिर्विधीयताम् ॥

—सुभाषितरत्नभाडागार पृष्ठ १६१

आश्चर्य सर्वथा त्याज्य है क्योंकि सभी कार्यों मे विघ्न करने वाला है अत इसका परित्याग करके साध्य की सिद्धि करनी चाहिए ।

आश्चर्य के भेद

१ **दस आश्चर्य** (जैन आगम के अनुसार)

दस अच्छेरगा पन्नत्ता, त जहा—
उवसग्ग-गब्भहरण, इत्थीतित्थ अभाविया परिसा।
कण्हस्स अवरकका-उत्तरण चद-सूराण।
हरिवसकुलुप्पत्ती, चमरुप्पाओ य अट्ठसयसिद्धा।
असजएसु पूआ, दसवि अणतेण कालेण।

—स्थानाग १०।७७७

जो वात सामान्यतया नही होती, किन्तु आश्चर्य रूप से कभी-कभी हो जाती है, उसे अच्छेरा अर्थात् आश्चर्य कहते है। इस अवसर्पिणीकाल मे दस अच्छेरे हुए है। विवरण इस प्रकार है।

(१) **उपसर्ग**—केवलज्ञान होने के बाद तीर्थङ्करो को उपसर्ग नही हुआ करते, किन्तु भगवान महावीर पर गोशालक ने तेजोलेश्या छोडी और उससे प्रभु के शरीर मे भीषण रक्त विकार हुआ।

(२) **गर्भहरण**—तीर्थङ्करो के गर्भ का सहरण नही होता, किन्तु भावीवश इन्द्र के हुक्म से हरिणैगमेषी देवता ने भगवान महावीर को देवानन्दा ब्राह्मणी की कुक्षि से निकाल कर त्रिशलारानी की कुक्षि मे स्थापित किया।

(३) **स्त्री-तीर्थ**—तीर्थङ्कर "पुरुष" ही होते हैं, परन्तु होनहारवश उन्नीसवे तीर्थङ्कर श्री मल्लिप्रभु स्त्री के रूप मे अवतरित हुए।

(४) **अभव्य परिषद**—तीर्थङ्करो का उपदेश कभी खाली नही जाता, उससे कुछ न कुछ त्याग-प्रत्याख्यान अवश्य होता है, परन्तु मनुष्यो के अभाव मे भगवान महावीर की पहली देशना खाली गई।

(५) **कृष्ण का अवरककागमन**—वासुदेव से वासुदेव नही मिला करते, लेकिन द्रौपदी को लेकर धातकी खड द्वीप की अवरककापुरी से लौटते समय श्रीकृष्ण वासुदेव शख द्वारा वहा के कपिल वासुदेव से मिले। -

(६) **सूर्य-चन्द्र का अवतरण**—देवता मूलरूप से अपने स्थान को छोडकर कहीं नही जाया करते (उत्तर—वैक्रिय करके ही जाते हैं) किन्तु भगवान् महावीर का दर्शन करने के लिए चन्द्र-सूर्य मूल रूप से आये थे।

(७) **हरिवश कुलोत्पत्ति**—युगलिको की गति देवलोक ही है, किन्तु पूर्व वैर वश एक देवता ने हरिवर्षक्षेत्र के एक युगलिक को इस भरतक्षेत्र मे रखा और वह मद्य-मासादि का सेवन करके नरकगामी हुआ एव उसके नाम से हरिवश कुल की उत्पत्ति हुई।

(८) **चमर का उत्पात**—भुवनपति देवता प्रथम स्वर्ग मे नही जाया करते, किंतु असुरपति चमरेन्द्र ने भगवान महावीर की शरण लेकर प्रथम स्वर्ग मे गया एव वहा भीषण उत्पात मचाया।

(९) **एकसौ आठ सिद्ध**—उत्कृष्ट अवगाहना वाले एक साथ एक से अधिक सिद्ध नही हुआ करते, लेकिन ऋषभदेव भगवान के समय एक ही साथ एक सौ आठ सिद्ध होने का प्रसग आ गया था।

(१०) **असंयत पूजा**—भगवान् सुविधिनाथ से लेकर भगवान् शातिनाथ तक आठ तीर्थङ्करो के मध्यवर्ती सात अन्तरो मे तीर्थ का विच्छेद हो गया था। उस समय असयतो की पूजा बहुत अधिक मात्रा मे हुई।

ये दस आश्चर्य इस हुण्डा नामक अवसर्पिणी काल मे अनन्तकाल के बाद हुए हैं। इनका विशेष हाल अन्यान्य ग्रंथो से जानना चाहिए।

२ **प्राचीन युग के सात आश्चर्य**—

(१) पिरामिड (मिस्र)
(२) बेबीलोन के झूलते उद्यान (बगदाद से ६० मील दूर)
(३) माओ सोलुस का मकबरा (एशिया माइनर)
(४) डिआना का मन्दिर (इफेसुस)
(५) रोडस की प्रतिमा

(६) ओलपिया मे वृहस्पति की प्रतिमा
(७) एलेक्जेडरिया का फॉरोस (प्रकाश-स्तम्भ)

१० मध्ययुग के सात आश्चर्य—

(१) रोम का दीर्घकाय पीसा का बुर्ज
(२) अकोरवाट कवोडिया
(३) चीन की वडी दीवार (१२५९ मील लम्वी, १७ फीट चौडी, १६ फीट ऊ ची)
(४) इ गलैड का स्टोन हैंज
(५) ताजमहल (भारत)
(६) नानकिंग पोरसीलेन वुर्ज
(७) इस्ताम्वुल मे सेंटसोफिया की मस्जिद।

१० आधुनिक युग के नौ आश्चर्य—

(१) मानव की चन्द्रयात्रा
(२) वेतार का तार व टेलीफोन
(३) रेडियो, टेलीविजन और चलचित्र
(४) वायुयान
(५) रेडियम का आविष्कार
(६) ऐनेस्पेटिक्स एण्टी टाक्सिन्स का आविष्कार
(७) मोटरकार व रेल्वे इ जिन
(८) स्पेक्ट्रम का विश्लेपण
(९) एक्स-रे का आविष्कार व परा-बैंगनी किरणो की खोज।

—भारतज्ञानकोष सन् १९७०-७१

आश्चर्यजनक वृक्ष

१ **वशी-वृक्ष**—पीरू देश मे कई ऐसे पौधे पाये जाते हैं, जिनके तने से रात्रि के निस्तब्ध वातावरण मे सुरीली आवाज निकलती है। यह सुरीली आवाज मनमोहक और कर्णप्रिय होती है।

० **चलने वाले पौधे**—कई पौधे ऐसे भी पाये जाते हैं जो चलते हैं। एक पौधा मद्रास से चलकर कुछ वर्षों मे वगाल पहुँच गया था।

—साप्ताहिक जनगण, ८ अक्टूबर ७३

२ **४०० फीट ऊँचे वृक्ष**—अमेरिका के कैलोफोर्निया प्रदेश मे डगलसफर नामक विशाल वृक्ष पाये जाते हैं। जिनकी ऊँचाई ३०० फीट से ४०० तक होती है। उक्त वृक्ष के तने की परिधि १५० फीट होती है। इस वृक्ष के तने को खोखला कर दिया जाय तो उसके अन्दर २०० बच्चो को पढाने के लिये एक स्कूल सुगमता से वनाया जा सकता है। वृक्ष की आयु एक हजार वर्ष की है।

० **पीपल और वरगद**—भारत मे पीपल की आयु २००० वर्ष से ३००० वप तक होती है। कलकत्ता मे रायल वॉटेनिकल गार्डन मे एक विशाल वरगद का पेड है। इस पूरे वृक्ष का क्षेत्रफल १३५० वर्ग फीट है। इस वृक्ष मे सन् १९५९ मे ६४७ सहायक जडे थी।

—साप्ताहिक जनगण, ८ अक्टूबर ७३

३ **वीस लाख वर्ष का पेड**—तेहरान, ३ दिसम्वर (यू० एन० आई) ईरान के अलवुर्ज पहाड के दक्षिणी ढलान मे एक अद्भुत पेड पाया गया है। वैज्ञानिको का ख्याल है कि यह वीस लाख वर्ष से भी पहले का है। खोज करने वालो के अनुसार यदि देखभाल ठीक तरह से की जाये तो वह पाच-सो साल तक और जिदा रह सकता है।

—राजस्थान पत्रिका, ५ दिसम्वर १९७३

१३ आश्चर्यजनक पशु-पक्षी

१ चार माह की दुधारु बकरी—नागौर जिले की जायल पंचायत समिति के सुरपालिया ग्राम मे एक चार मास की बकरी की बच्ची पिछले दो मास से नियमित दूध दे रही है। बकरी लोगो मे कौतूहल बनी हुई है, जिसे देखने के लिए प्रतिदिन लोगो का मेला-सा लगा रहता है।

सुरपालिया ग्राम के एक कृषक सावलदान चारण की उक्त बकरी की बच्ची प्रतिदिन तीन कप दूध देती है।

—राजस्थान पत्रिका, २२ जुलाई, १९७३

२ दूध देने वाला बकरा—उक्त विचित्र बकरा नेपाल से कलकत्ते के चिडियाखाने मे लाया गया है। यह सुबह-शाम लगभग एक सेर दूध देता है। ऐसा ही एक और बकरा जयपुर के चिडियाखाने मे भी है।

—मानो न मानो, पृष्ठ ८७

३ नट का करतब दिखाने वाली हथिनी—एक दीर्घकाय हब्शी ने (जिसका नाम इफ्राइम टॉमसन है) अपनी हथिनी "मेरी" के करतबो द्वारा लाखो डालर कमा डाले हैं। यह हथिनी टब के ऊपर चढ जाती है और अपने शरीर को सिर के बल साधे खडी रहती है। फिर टब के ऊपर से कलाबाजी खाती हुई पैरो के बल पर खडी हो जाती है।

—मानो न मानो, पृष्ठ १४९

४ सबसे ज्यादा ऊचा रींछ—अभी तक जितने भी रींछ हुए हैं, उनमे सबसे ज्यादा लबा एक ध्रुवीय रीछ था, जिसकी लम्बाई ११ फुट, सवा इच थी। यह रीछ १९६० मे मारा गया था।

५ सबसे लम्बा सांप—सबसे लबा साप दक्षिण अफ्रीका मे १९४४ मे पकडा

गया था। इसकी लवाई ३७।। फुट थी। यह **एनाकोंडा** जाति का था।

—साप्ताहिक हिन्दुस्तान, २ जुलाई १९७२

५ **दो सिर वाला साप**—इस अत्यन्त विषैले साप के दो सिर, चार आखें और दो जीभ है। यह साप जीवित है और डर्वन म्यूजियम मे सुरक्षित है। दो सिर वाले साप ससार मे वहुत कम पाये जाते हैं।

—मानो न मानो पृष्ठ १५०

६ **मुर्गी से मुर्गा**—१९३७ ई० की वात है। लदन के जू (चिडियाघर) मे एक जगली मुर्गी मुर्गा हो गई। उसकी गर्दन पर न केवल नर के जैसे पर ही निकल आए, वरन् एक छोटी-सी कलगी भी। वैज्ञानिको के लिए यह एक समस्या है जिसका वे अभी तक कोई हल नही खोज पाये हैं।

— मानो न मानो, पृष्ठ ३३

७ **चीन का गोल्डन फेजेंट मादा से नर**—यह मयूर जाति का पक्षी है। मादा का शरीर सादा भूरे रग का होता है। नर फेजेंट के सिर पर सुनहरे वालो की शानदार कलगी लगती है और शरीर सतरगा होता है। गोल्डन फेजेंट का एक जोडा १९६० फरवरी मास मे जयपुर के चिडियाघर ने खरीदा था। सन् १९७१ तक तो यह मादा फेजेंट अण्डे देती रही, किन्तु १९७२ मे अण्डे देने का क्रम रुक गया।

इस पक्षी की आयु १३-१४ वर्ष की मानी गयी है, अत अण्डे न देने का कारण वृद्धावस्था मानी गयी। १९७२ के अक्टूवर मास मे मादा के पेट के ऊपरी भाग मे लाल व हल्के सुनहरे रग की धारिया नजर आने लगी, जो धीरे-धीरे फैलती गयीं। नवम्वर मास मे इसकी पूंछ मे भी कई परो का रग परिवर्तित होने लगा, साथ ही साथ गर्दन मे भी लाल व हल्के सुनहरे रग का आवर्तन प्रारम्भ हुआ। दिसम्वर मास मे इसके सिर पर नर की तरह सुनहरी कलगी वनने लगी। यद्यपि यह रग मे हल्की थी। दिसम्वर के तीसरे सप्ताह मे इसके गर्दन पर नर की तरह 'कॉलर' वनने लगा और जनवरी १९७३ तक वह पूरा वन गया। अप्रैल १९७३ तक इस मादा के शरीर के रगो की सारी रचना नर की भाति हो गई। पक्षी-जगत में यौन परिवर्तन की यह घटना ससार मे अनूठी है। **—धर्मयुग, १६ सितम्वर, १९७३**

१४ आश्चर्यजनक बहुमूल्य-पुस्तकें

१ ब्रिटिश म्यूजिअम मे एक इंजील है, जिसको रूस-सरकार ने १,००,००० पौण्ड मे विक्रय किया था। कदाचित् इससे अधिक मूल्य और किसी पुस्तक का कभी नही दिया गया है।

० इटालिअन लेखक मैरीनेत्री ने १६३५ मे एक किताब की जिल्द बंधवाई थी जिसमे पतले टीण धातु के पत्र लगे हैं और जिन पर रग-बिरगे वर्णों और चित्रो की भरमार है।

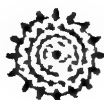
० स्वीडन के अपसाला नगर के पुस्तकालय मे एक अमूल्य पुस्तक है, जो भोजपत्र पर लिखी हुई है। इसकी धरती लाल है और चांदी के अक्षरो मे लिखावट है।

० १६३० मे बर्लिन मे मैजारिन की इन्जील ६५,००० पौंड मे नीलाम हुई थी। इस इन्जील के प्रति पृष्ठ मे ४२ लाइनें हैं और यह सबसे पहली पुस्तक है, जो अलग-अलग छापनेवाले टाइप द्वारा छापी गई थी।

० शेक्सपियर के प्रथम फोलिओ का मूल्य ५ २५० पौंड है।

० ला फौन्तेन की कहानियो की छोटी-सी पुस्तिका जिसके लिए फागोनार्ड ने चित्र बनाये थे, १६३६ मे बीस हजार फ्रांक मे नीलाम हुई थी।

—मानो न मानो, पृष्ठ ४६



१५ आश्चर्यजनक प्रतियोगितायें

१ (क) दाढी बनाना—लदन मे एक हजाम ने दाढी बनाने का एक रिकार्ड स्थापित किया। उसने एक घटे मे ७७ व्यक्तियो की दाढी बनाई। फिर गर्व से कहा—उसके सिवा अन्य कोई भी इतनी तेजी से उस्तरा चलाकर दाढी नही बना सकता। इस क्षेत्र मे वह अद्वितीय है। पर केन्ट शहर के एक अन्य हजाम ने इस रिकार्ड को भी तोड डाला। उसने एक घटे मे ८० व्यक्तियो की दाढी बनाई। दाढी वाले लोगो को रास्ते से बुला-बुला कर उसने चटपट ही कार्य समाप्त कर दिया था।

(ख) हाथ मिलाना—हाथ मिलाना तो एक प्रकार की सभ्यता है। पर इसकी भी प्रतियोगिता हो चुकी है। सन् १९५९ मे नॉटिंघम मे एक छात्र ने एक घटे मे ९००१ वार हाथ मिलाकर रिकार्ड की सृष्टि की थी। इस रिकार्ड को भी मात किया लदन शहर के एक छात्र ने। उसने १ घटे मे ३७,५०० वार हाथ मिलाया। पर इतने से भी वह सन्तुष्ट न होकर फिर हाथ मिलाने लगा। इस वार उसने स्वय अपना ही रिकार्ड तोड डाला। ४६,४२६ वार हाथ मिलाकर चैम्पियन हुआ।

(ग) शिशुजन्म—रूस की एक महिला ने २७ वार गर्भवती होकर ५३ शिशुओ को जन्म दिया, जिनमे से १६ वार एक शिशु का, ७ वार तीन शिशुओ का तथा ४ वार चार शिशुओ का जन्म हुआ था। यह महिला इतनी विख्यात हो गई कि रूस के जार द्वितीय ने भी उसे सम्मानित किया।

० फ्रास की एक ग्रामीण नारी ने ६ वर्षों मे २१ सन्तानो की मा वन कर रिकार्ड स्थापित किया। उसने प्रथम वर्ष मे एक, द्वितीय वर्ष मे दो, तृतीय वर्ष मे चार, पाचवे मे ५, तथा छठे वर्ष मे एक साथ ७ वच्चो

को जन्म दिया था। युगोस्लाविया के एक कृषक की पत्नी ने अट्ठाईस वर्षों तक लगातार प्रतिवर्ष एक शिशु को जन्म देकर धारावाहिकता की रक्षा की।

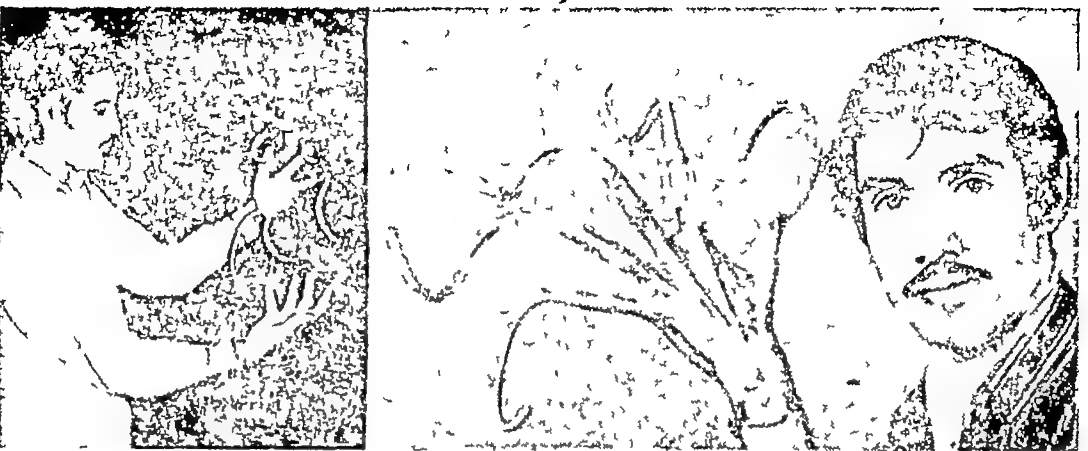
(घ) नृत्य—अकेले नाचने की प्रतियोगिता मे बेसिल की बात कही जाती है। सन् १९५३ साल के अविराम नृत्य मे उनका रिकार्ड कायम हुआ, उन्होंने ५१ दिनो तक नृत्य किया था, अवश्य ही वे प्रति घटे के पश्चात् कुछ देर के लिए विश्राम करते थे।

(ङ) प्रेम-पत्र—चिटिठ्या लिखने की कोई प्रतियोगिता नही हुई है। पर प्रेम-पत्र लिखने के बहुत रिकार्ड स्थापित किए गए हैं। मनोवैज्ञानिक फ्रायड ने विवाह के पूर्व अपनी पत्नी को पत्र लिखे थे उनकी सख्या ९०० थी।

- रूपवती अभिनेत्री जुलियट ने लगातार पचास वर्षों तक विक्टर ह्यूगो को प्रेम-पत्र लिखे थे। उनके कुल पत्र प्राय उन्नीस हजार थे।
- कनेकटिकाट के ४५ वर्षीय सज्जन ने एक महिला को बहुत से प्रेम-पत्र लिखकर प्रेम प्रकट किया था। उनमे से एक पत्र की पृष्ठ सख्या ४६५ थी।
- कोरिया के एक सैनिक को अपनी पत्नी के पास से जो पत्र मिला था वह ७५ फुट लम्बा था। सबसे अधिक मजेदार घटना आस्ट्रेलिया की एक युवती की थी। विदेश जाते हुए अपने पति के बैग मे उसने ३६५ प्रेम-पत्र ठूसकर रख दिए थे। उसकी आशका यह थी कि उसका पति कही उसे भूल न जाए।
- ब्रिटिश म्यूजियम मे एक प्रेम-पत्र अभी तक सुरक्षित है। चिट्ठी की पृष्ठ सख्या ४०० है, एव उनमे ४,१०,००० शब्द व्यवहृत हुए हैं।

—हिन्दुस्तान, रविवारीय साहित्य (वर्ष १ अक २०) फरवरी २०, १९७२

नरेन्द्रकुमार के लेख से



२ लंबे नाखून—३० वर्षीय नवयुवक मनमोहन आदित्य विश्व-नखराज बनने की भावना से १८ साल तक अपने बाये हाथ के नखो को बढाता रहा। इस समय उसके नाखूनो की सम्मिलित लम्बाई ४७ इंच है। ज्योही आदित्य की खबर धर्मयुग, २२ अप्रैल १९७३ के अंक मे छपी। दिल्ली निवासी—रमेश शर्मा ने धर्मयुग, १ जुलाई १९७३ के अंक मे खुद नखराज होने का दावा किया क्योकि उनके नाखूनो की सम्मिलित लंबाई ६१ ५ इंच है। अक्टूबर, १९७१ मे टोकियो टी० वी० पर 'दि स्पेशल सर्प्राइज आफ दि वर्ल्ड शो' के अलावा अन्य कई देशो मे भी वे अपने नाखूनो का प्रदर्शन कर चुके हैं। देखिये दोनो के चित्र—

१६

आश्चर्यजनक-स्मरणशक्ति

- थेमिसटोक्लस (पिथेगोरस) को एथेंस नगर में रहने वाले २० हजार निवासियों में से प्रत्येक का नाम याद था।
- लियुआनियां का प्रधान रबी एलिजा एक बार जिस पुस्तक को पढ लेता था, उसे कभी नहीं भूलता था। इस तरह उसने २५०० विशालकाय ग्रन्थ एकदम कंठस्थ कर लिए थे।
- अंग्रेजी राज्य काल में एक ब्राह्मण ने गंगा किनारे नहाते समय सुने हुए दो अंग्रेज सैनिकों के वाद-विवाद को साक्षी-रूप में जज के सामने ज्यों का त्यों सुना दिया। सबसे बड़ी आश्चर्य की बात यह थी कि उक्त ब्राह्मण अंग्रेजी भाषा जानता नहीं था।
- पोलैंड के प्रथम इतिहासकार और ग्रन्थ-विज्ञानी जोसेफ मैक्सीमिलियन (१७५०-१८२६) वृद्धावस्था में अंधे हो गये थे। लेकिन उनकी स्मरण-शक्ति बड़ी तीव्र थी। लेटिन भाषा के तीन विख्यात लेखकों (टीटस, लीवियस प्लाइनी और जुवेनल) के सम्पूर्ण ग्रन्थों का अपनी याददाश्त से पोलिश भाषा में अनुवाद उन्होंने बोलकर लिखा दिया था। उनका सेक्रेटरी रोज रात में उनके अनुवाद का मिलान कर लेता था, लेकिन उसे कभी एक भी छूट या अशुद्धि नहीं मिली।
- "सेखाइल कुनी" नामक एक साधारण व्यक्ति में भी अलौकिक दिमागी करिश्मा दिखाने की सामर्थ्य है। एक बार किसी थियेटर के मंच पर चार गाने तख्तों पर बहुत से अंक लिखकर तख्तों को तेज रफ्तार से घुमाया गया। तख्तों की ओर पीठ करके उक्त "कुनी" ने सिर्फ एक क्षण के लिये मुड़कर तेज रफ्तार से घूमते हुए उन तख्तों की तरफ देखा और उन सब अंकों का सही योगफल बता दिया। योगफल था ८४५६।

० नब्बे वर्ष की आयु मे फू शेंग नामक एक चीनी ने १०० खण्डो मे लिखे गये 'चीन के इतिहास" को शब्दश मुँहजबानी सुना दिया था।

० सम्राट् वांग-ती ने उक्त इतिहास को इसलिए नष्ट करा दिया था कि चीन का इतिहास उसके राज्यकाल से ही प्रारम्भ हो, लेकिन उसकी यह आकाक्षा पूरी न हो सकी, क्योकि ३२ वर्ष बाद भी शेंग को उक्त पूरा ग्र थ कण्ठस्थ था।

—विचित्रा, वर्ष ३ अक ४, सन् १९७१

२ अद्भुत ज्ञानशक्ति—सन् १९४३ मे पीटर हरकास को एक दीवार पर पुताई करते हुए सीढी से गिरने पर अलौकिक ज्ञानशक्ति मिली जिससे वह भूत और भविष्य के बारे मे काफी कुछ बता सकता था। गिरने पर जब उसे अस्पताल मे लाया गया और वह कुछ स्वस्थ हो गया, तब उसने साथ के बिस्तर पर पडे रोगी की ओर आश्चर्य से देखते हुए कहा—"अरे, तुम्हारी माँ तो मरणासन्न है और तुम यहाँ हो। तुम्हे तुरन्त अपनी माँ के पास जाना चाहिये। उसी अस्पताल मे दूसरे एक मरीज को उसने यह बताकर सबको आश्चर्यचकित कर डाला कि उसने सात दिन पूर्व एक दुकान मे एक अटेची की चोरी की थी, जिसमे अमुक वस्तुएँ थी। पहले तो डाक्टरो ने उसे मजाक समझा लेकिन जाँच करने पर सारी बातें सच निकली तो डाक्टर आश्चर्य मे पड गये।

पीटर हरकास ने प्राप्त दिव्य-ज्ञानशक्ति से लोगो की खोई हुई सम्पत्तियो एव आदमियो के बारे मे भी बताया। वह किसी मशीन को छूकर ही बता सकता था कि इस मशीन के किस पुर्जे को बदलना है, लेकिन सबसे अधिक प्रभावशाली उसका कार्य अपराधो का सुराग बताने का था। उसने अपहृत बच्चो, चोरो के गिरोहो और हत्याकाडो के अभियुक्तो के बारे मे सही जानकारी दी। बाद मे उसने अमेरिका मे कई जगहो पर तेल तथा सोने की खानो की सही जानकारी देकर वैज्ञानिको को भी चकित कर दिया। —शशिकात शर्मा (हिन्दुस्तान ५-११-७३)

१७ अन्तरिक्ष में मानव की आश्चर्यजनक उड़ान

१ यूरी गागारिन (रूस)—१२ अप्रैल सन् १९६१, एक चक्कर ग्रह-पथ मे १ घटा, ४८ मिनट, २५००० मील।

० टीटोव (रूस)—६-७ अगस्त सन् १९६१, ग्रह-पथ मे सत्रह चक्कर, पच्चीस घटा, १८ मिनट, ४,३७,००० मील।

० गोर्डन कूपर (अमेरिका)—१६ मई, सन् १९६३, २२ चक्कर ३४ घटा, १३ मिनट।

० वालेरी वायकोवस्की (रूस)—१४-१९ जून, सन् १९६३, ८२ चक्कर, ११९ घटा, २०,६०,००० मील।

० वालेंटीना तेरेस्कोवा (स्त्री रूस)—१६-१९ जून सन् १९६३, ४९ चक्कर, ७१ घण्टा, १२,५०,००० मील।

० व्लादीमीर कोमारोव, कांस्टेण्टिन फिओक्टिस्टोव और कोमारोव (प्रथम रूसी सामूहिक उड़ान)—१२ अक्टूबर, सन् १९६४, १६ चक्कर।

० अलेक्सी लियोनोव, पावेल वेलायेव (रूस)—१८ मार्च, सन् १९६५, पहली बार २० मिनट तक अन्तरिक्ष मे विचरण।

० फ्रैंक बोरमेन, जेम्स लोवेल (अमेरिका)—८ दिसम्बर, सन् १९६५, जेमिनी-७ मे दो सप्ताह की अन्तरिक्ष यात्रा।

० वर्जिल, ग्रिसिम, एडवर्ड ह्वाइट व रोजर चेफी (अमेरिका)—२९ जनवरी सन् १९६७ को अपोलोयान मे आग लगने मे मरे।

० कर्नल व्लादीमीर कोमारोव (रूस)—२५ अप्रैल, सन् १९६७, सोयूज-१ पृथ्वी की ओर लौटते समय टकरा गया कोमारोव मारे गए।

० वाल्टर इस्किरा, डोन इस्ले और वाल्टर कनिंघम (अमेरिका)—अपोलो-७

मे ११ अक्टूवर सन् १९६८ को ११ दिनो तक यात्रा की। पहला अमेरिकी अन्तरिक्ष-अभियान, जिसमे तीन यात्रियो ने भाग लिया।

० ज्यार्जी बेरेगोवोय (रूस)—क्रमश. २५ और २६ अक्टूवर सन् १९६८ को सोयूज-२ व ३ छोडे गए। दोनो यानो की अन्तरिक्ष मे भेंट हुई तथा सोयूज ३ से वाहर निकलकर ज्यार्जी वेरेगोवोय देर तक घूमे तथा ३० अक्टूवर को ४ दिनो की यात्रा के वाद धरती पर लौटे।

० नील आर्मस्ट्राग, एडविन एलड्रिन और माइकेल कालिस (अमेरिका)—२१ जुलाई सन १९६९ को अपोलो-११ चन्द्रमा पर प्रशात महासागर मे उतरा। आर्मस्टाग व एलड्रिन चन्द्र-धरातल पर चले। ये १६ जुलाई को चले थे, २१ जुलाई को पहुँचे, २ घण्टा ४० मिनट वहा ठहरे और २४ जुलाई को पृथ्वी पर लौट आए। इस चन्द्रयात्रा पर १८९ अरव रुपये खर्च हुए।

० एलनशेपर्ड, एडगर मिशेल और स्टुअर्ट ए रूसा (अमेरिका)—५ फरवरी, सन् १९७१ को चन्द्रमा पर उतरे और नौ घण्टा तक भ्रमण किया। स्टुअर्ट एरूसा मुख्य यान मे वैठा रहा। ९ फरवरी को चन्द्र-यात्रियो ने ह्यूस्टन-स्थित अनुसधान केन्द्र के माध्यम मे पत्रकार-सम्मेलन किया। अन्तरिक्ष यात्री चन्द्र-रिक्शा चन्द्रमा पर छोड आए। ये ३१ जनवरी को चले थे।

—भारत ज्ञानकोष, सन् १९७१-७२ तथा सामान्य ज्ञान एव
—व्यक्तिपरिचय सन १९७२

२ स्कार्ईलेव—यह १४ मई, १९७३ मे अमरीका द्वारा भेजा गया विशाल-अन्तरिक्षयान ८८ टन का है, ४ जनवरी १९७४ तक अनुसन्धान केन्द्र के रूप मे यह पृथ्वीकक्ष मे रहेगा। इसमे तीन आदमी आनन्द से सो सकते हैं। स्नानघर-रसोईघर आदि भी हैं। २१ देशो के २०२ अनुसन्धानकर्त्ता इसके द्वारा सगृहीत सामग्री का विश्लेषण करेंगे।

—राष्ट्रदूत, ३ जून

३ पायनियर ११ और १०

(क) केपकैनेडी, (फ्लोरिडा), ७ अप्रैल · प्रे०) सौर-मण्डल के

बडे ग्रह बृहस्पति के बारे मे वैज्ञानिक जानकारी एकत्र करने के लिए कल रात अमरीका का दूसरा अन्तरिक्ष यान पायनियर-११ रवाना हो गया है।

२५८ किलोग्राम वजनी यह अतरिक्ष यान पृथ्वी से इतनी तीव्रतम गति से रवाना हुआ कि केवल ११ घटे मे ही चन्द्रमा की कक्षा को पार कर गया। सूर्य-मण्डल से वाहर स्थित पाचवे ग्रह बृहस्पति तक पहुँचने के लिए उसे ९९ करोड ८० लाख किलोमीटर की यात्रा करने मे २० महीने का समय लगेगा।

ए. प्रे. के अनुसार अमरीका के इस नवीनतम खोजी अतरिक्षयान को गत बृहस्पतिवार की रात को एटलस-सेन्टौर राकेट से छोडा गया था। यान ४८,७६० कि. मी प्रति घटे की तीव्रतम गति से रवाना हुआ था। किसी भी मानवनिर्मित यान के लिए यह एक रिकार्ड-गति है।

अमेरिका ने गत वर्ष भी बृहस्पति के लिए एक अतरिक्षयान पायनियर-१० भेजा था, जो अव तेजी से अपने लक्ष्य की ओर वढ रहा है।

—हिन्दुस्तान, ८ अप्रैल, १९७३

(ख) पायनियर-१० बृहस्पति ग्रह के समीप से निकला—माउन्टेन व्यु (केलीफोर्निया) ४ दिसम्बर, अत्यन्त प्रखर वेग से वढता हुआ प्रथम मानव-निर्मित अतरिक्षयान पायनियर-१० सौरमण्डल के विशालतम ग्रह बृहस्पति की निकटतम दूरी—उसके एक मेघाच्छादित शिखर पर आज भारतीय समयानुसार प्रात ७ ५५ वजे पहुच गया। पृथ्वी से लगभग १ अरव किलोमीटर दूर होने के कारण पायनियर-१० के लक्ष्य के समीप पहुचने का रेडियो-सदेश प्राप्त होने और उसकी पुष्टि होने मे वैज्ञानिको को ४६ मिनट तक प्रतीक्षा करनी पडी।

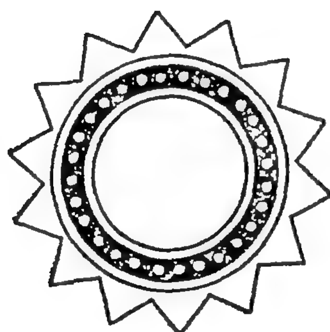
बृहस्पति की अत्यन्त सशक्त गुरुत्वाकर्षण-शक्ति के कारण अणुशक्ति चालित अतरिक्षयान की गति वढकर एक वार तो १ ३१,२०० कि मी तक पहुच गई थी। पायनियर १० को अपने लक्ष्य तक पहुचने मे २१ मास लगे है।

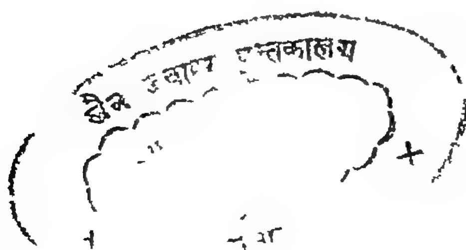
पायनियर १० ने बृहस्पति के पिछले हिस्से मे पहुचकर हजारो सूचनाएँ और विवरण पृथ्वी पर भेजे हैं, जिनका विश्लेषण करने मे अभी वैज्ञा-

निको को महीनो लगेंगे। इन सूचनाओ के फलस्वरूप सौर-प्रणाली के निर्माण एव पृथ्वी के जन्म के विपय मे जानकारी प्राप्त हो सकेगी।

वृहस्पति के समीप से निकलकर पायनियर १० उसके गुरुत्वाकर्षण को 'आधार वनाकर' गहन-अन्तरिक्ष मे अन्य ग्रहो—शनि, यूरेनस, नेप्चून व प्लूटो की ओर वढ गया है। वह मन १९८० ई० मे सौरमडल की वाह्य-तम परिधि मे स्थित प्लूटो पर पहुच जाएगा और उसके वाद सौर-प्रणाली से निकल कर गहन वाह्य अतरिक्ष मे ८० लाख प्रकाश वर्ष दूर स्थित वृप राशि की ओर वढ जायेगा।

—हिन्दुस्तान, ६ दिसम्बर, १९७३





१८ आश्चर्यजनक अन्य कई वस्तुएँ

१ आखो का अस्पताल—गलियो-बाजारो को चौडा करने के लिए साधारण इमारते तो गिरा दी जाती हैं किन्तु वे महत्वपूर्ण हो तो नींव के नीचे खुदाई करके उन्हे पहियो पर हटा लिया जाता है। हाल ही मे एक आंखो का अस्पताल इतनी चतुराई से हटाया गया कि हटाते समय डाक्टरो को अपना काम भी नही रोकना पडा।

—अध्ययन के आधार पर

२ मैसिक स्टोर—(न्यूयार्क) मे १६६ महकमे हैं। जगत् की हर एक चीज वहां मिलती है। इसमें सामान्यतया ग्यारह हजार एव नवम्बर-दिसम्बर (सीजन के समय) इक्कीस हजार आदमी काम करते हैं। ग्राहक की शिकायत पर चीजो की कीमत घटा दी जाती है। इस स्टोर का यह दावा है कि यहा से कम कीमत मे कोई चीज शहर मे कहीं नहीं मिल सकती।

वहा ग्राहको को सामान रखने के लिए पेटिया रखी हुई हैं। उनमें चौबीस घटा के किराए के निश्चित दाम डालते ही चाबी बाहर आ जाती है। सामान रखकर बन्द करने पर चाबी घूमने लगती है। २४ घण्टे मे एक मिनट ऊपर होते ही चाबी अन्दर चली जाती है। फिर किराये के पैसे दुबारा डालने पर ही चाबी बाहर आती है।

—किशनदयाल गोयल से प्राप्त

३ कलकत्ता के बिडला—म्यूजियम मे पहुंचते ही द्वार अपने आप ही खुल जाते हैं। कमरे मे कुर्सी पर बैठते ही पंखे चल पडते हैं एव घंटी बजने लगती है। मेहमान के जाने पर पंखे एव द्वार अपने आप बन्द हो जाते हैं।

—श्रुति के आधार पर

४ डिब्बाबन्द हवाईजहाज—एक विशेष प्रकार के नायलोन से बना यह विमान सामान्य विमानो मे रखा जा सकता है। दुर्घटना के समय इसे हवाई छतरी से बाहर कर दीजिये। सहायतापेक्षी चालक को इसे खोल व फुला-फैलाकर उडान करने योग्य बनाने मे कुल ६ मिनट का समय लगता है। यह विमान ६० मील प्रति घटा की रफ्तार मे पाच घटे तक उडान भर सकता है। इस पर खर्च आता है कुल २० गैलन पैट्रोल। कीमत पन्द्रह हजार डालर। पैट्रोल तथा इ जिन से साथ यह हवाई जहाज सात फुट लम्बे कनस्तर मे आसानी से रखा जा सकता है। ओहायो (अमेरिका) की गुडईयर एरोस्पेस कार्पोरेशन ने इसका निर्माण किया है और नाम है "इम्फ्लेटोबर्ड"।

—नवनीत, जनवरी, १९७२

५ मोमबत्ती—'द मुगल एम्परर्स' मे श्री एडवर्ड एस०-हाल्डन ने लिखा है—एक बार बादशाह जहागीर ने एक मोमबत्ती मक्का शरीफ भेजी थी, वह पूरी अम्बर की बत्ती थी, उसका वजन १८ रत्तल था और पूरी मोमबत्ती रत्नो से जडी थी। उन रत्नो मे गोलकुण्डा से प्राप्त वह हीरा था जिसका मूल्य ७५ हजार डालर अर्थात् ३ लाख ७५ हजार रुपये था।

—नवनीत, दिसम्बर, १९५६

६ कमाल का कु आ—नोखा तहसील (राजस्थान) के मू गासर गाव मे सात-सौ सत्तहतर फुट गहरा कुआं है जिसमे चार ऊ ट लगते हैं।

—श्रुति के आधार पर

७ वेनिस नगर की अनोखी स्थिति—यह नगर छोटे-छोटे टापुओ पर बसा हुआ है, जो ३७८ पुलो से जडा हुआ है।

—विश्वदर्पण-पृष्ठ ३८

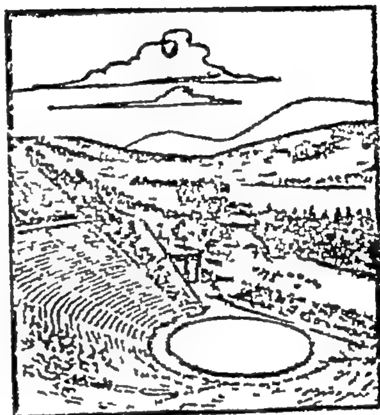
८ अजब विष और अमृत—शत्रुओ का नाश करने के लिए एक राजा ने जहर एकत्रित किया। एक वैद्य चने की दाल जितना विष लेकर आया और उसकी उग्रता दिखाने के लिए हाथी का एक बाल तोडकर विष का स्पर्श करके इसे पुन हाथी के शरीर पर लगाया और उसी समय हाथी मूर्छित होकर गिर पडा। फिर एक बाल से अमृत का स्पर्श करके लगाते ही हाथी सचेत हो गया। —व्याख्यान के मसालो से

९ अजीब तराजू—कुछ तराजुएँ बड़ी नाजुक होती हैं। यदि कागज के एक टुकड़े को ऐसी तराजू में रखकर तोला जाय और फिर उस कागज पर एक शब्द लिखकर कागज को फिर तोला जाय तो उस एक शब्द की स्याही के कारण बढ़ा हुआ वजन मालूम किया जा सकता है।

—विश्वकोष भाग ५, पृष्ठ ५३

१० यूनान की एक २००० वर्ष पुरानी रंगशाला आज भी ऐसी है कि वक्ता मंच से अपनी आवाज ऊँची किए बिना १४,००० सीटों तक पहुंचा सकता है। देखिए चित्र—

—साप्ताहिक हिन्दुस्तान
मार्च ४, १९५९



११ अद्भुत यंत्र—जगदीशचंद्र वसु ने स्कोग्राफ यंत्र बनाया, जिससे वनस्पति की गति-वृद्धि करोड़ गुनी बड़ी होकर दीखती थी।

—विश्वकोष भाग ७, पृष्ठ ७८

१२ लंबे बाल—दुनिया में सबसे ज्यादा लंबे बाल रखने का गौरव भी एक भारतीय सन्यासी को प्राप्त है। १९४९ में स्वामी पंडारा सन्नाधि के २६ फुट लंबे बाल थे। सबसे लम्बी दाढ़ी नार्वे के हैन्स एन० लॅंगसेथ की मानी गई है। उनकी दाढ़ी साढ़े सत्रह फुट लम्बी थी। मूँछ भारत की ही ऊँची रही। १९०८ में प्रतापगढ़ में जन्मे मसुरियादीन की मूँछ १९६२ में ८ फुट ६ इंच लंबी थी।

१३ १२-१२, १३-१३ अंगुलियाँ—एक विचित्र व्यक्ति के दोनों हाथों में १३-१३, तथा पैरों में १२-१२ अंगुलियाँ थीं।

—साप्ताहिक हिन्दुस्तान, २ जुलाई, १९७२

१३ सुन्दर होठ—मध्यवर्ती अफ्रीका की सारस जिगो जाति की युवती के होठ विशेष विधि से बड़े किए जाते हैं। चार वर्ष की आयु की लडकी का भावी पति अपनी अबोध पत्नी के ऊपर-नीचे के दोनो होठो मे चाकू छेदकर उनमे लकडी पिरो देता है। आयुवृद्धि के साथ-साथ लकडी भी बडी कर दी जाती है। पूर्ण युवती होने तक होठ खूब बड़े हो जाते हैं।

—मानो न मानो, पृष्ठ ३७

१४ ऊँचा टोप—बवेरिया (जर्मनी) के ग्रामो मे कृषक त्योहारो के दिन विचित्र टोप पहनते हैं। इस टोप पर मृत पक्षियो और अन्य जतुओ की प्रदर्शनी की अपनी निराली ही छटा होती है। जितना ऊँचा जिसका टोप और जितनी भयावह उस टोप की आकृति, उतनी ही बडी उसकी सफलता भी। ऐसे टोपो पर पारितोपिक भी दिया जाता है।

—मानो न मानो, पृष्ठ ६६

१५ पैंट्रोल से आग बुझाई जाती है—पैंट्रोल और मिट्टी का तेल बहुधा जलती हुई रुई की गाठो को बुझाने के काम आते हैं, क्योकि पानी बेकार सिद्ध होता है। वह गाठो के भीतर घुस नही पाता। पैंट्रोल और मिट्टी का तेल जलने के स्थान मे तुरन्त पहुच जाते हैं। आक्सीजन के अभाव के कारण बिना स्वय जले हुए प्रचण्ड अग्नि को बुझा देते हैं।

—मानो न मानो, पृष्ठ १३६

१६ आश्चर्यजनक हिसाब—सास दामाद मे कुछ रुपये माग रही थी। बहुत वर्षो के बाद एक बार पुत्री और दामाद का एक साथ आना हो गया। सास ने दामाद से रुपयो की चर्चा की और ब्याज भी मागा। दामाद की हालत नाजुक थी, वह उदास हो गया। लडकी ने भेद पाकर पिताजी से सुपारी ला देने का आग्रह किया। पिता ने सहज भाव से कह दिया, जितनी जरूरत हो कह देना, मैं ला दूगा। मौका पाकर बेटी ने कहा—

चार सुपारी चौगणी, सोलह बार गुणाय।
बाबल! बेटी लाडली, गिण-गिण पल्ले पाय॥

सोलह सुपारियो को सोलह बार चार गुणा करने से सोलह खरब सतरह

अरब, सतरह करोड, अठानवें लाख, उनहत्तर हजार, एक-सौ चौरासी सुपारियां होती हैं। ज्योंही यह हिसाब सामने आया, सास-ससुर चुप हो गए।

१७ जीवनभर का लेखा-जोखा—एक मांसाहारी मनुष्य ७० वर्ष की आयु तक कौन-सा पदार्थ किस परिमाण में खा पी लेता है—यह निम्नलिखित तालिका से प्रकट है।

	टन		टन
अण्डे	३	कहवा	१/४
रोटी	६	अन्य शाक	४ १/२
मांस	६	फल	२ १/२
दूध	६	मसाले	३/४
शराब	८	शक्कर	१ १/२
मक्खन	१ १/२	नमक	१/८
आचार	१	अन्य पदार्थ जिनमें	
जल	२७	मिठाइयाँ भी हैं।	१ १/४
चाय	१/२		
		कुल	७० टन

अतिरिक्त वस्तुएँ, जिन्हें वह काम में लाता है—६५० दियासलाई के बक्स, २ लाख सिगरेट, २४० दर्जन उस्तरे और लगभग ४ मन तोल के जूते।

—मानो न मानो, पृष्ठ ८२

१८ आकाश लेख—आज-कल कुछ पश्चिमी देशों में आकाश में भी लिखाई होने लगी है। हवाई जहाज काफी ऊँचाई पर उड़ता हुआ सफेद धुएं की एक धार छोड़ता जाता है, जिससे कुछ देर में कोई अक्षर बन जाता है। यह विज्ञापन का एक सबसे नया और प्रभावशाली तरीका है। इसे स्काई राइटिंग कहते हैं। इस प्रकार के एक संदेश के लिए कई हजार रुपये खर्च करने पड़ते हैं।

प्रत्येक अक्षर कोई एक मील लम्बा होता है। आकाश के ऐसे संदेश कहीं मीलों जा सकते। हवा लगभग १० मिनट में अक्षरों को मिटा देती है।

अंग्रेजी के कुछ अक्षर ऐसे हैं, जो सीधे, उल्टे हर तरह से पढे जा सकते हैं। जैसे O और X। कुछ अक्षरो के लिखने मे कठिनाई होती है। जैसे K और S।

आकाश लेख के लिए अब ज्यादातर दो हवाई जहाज इस्तेमाल किए जाते हैं, जो एक साथ काम करते हैं। अगर एक T की ऊपर की लाइन बनाता है तो दूसरा नीचे की। दोनो लाइने एक-दूसरे को छूती नही हैं। इनमे कोई ५० फुट का अन्तर होता है, पर वे नीचे की जमीन पर से मिली हुई नजर आती हैं।

सबसे पहला आकाश लेख ३० मई १९२२ को इंग्लैंड मे लन्दन के निकट लिखा गया था और वह एक अंग्रेजी समाचार पत्र का नाम डेलीमेल था।

—विश्वकोष भाग ५, पृष्ठ ९

१९ कलकत्ता १३०० रु० बिका—९ नवम्बर १६९८ को कलकत्ता की भूमि १३०० रु० मे बेची गई। जहा आज कलककत्ता की विशाल नगरी है, वहाँ उस समय कालीघाट, गोविन्दपुर और सुतनती—ये तीन गाँव थे। इन गावो पर स्वर्णाराम चौधरी को जमीदार के अधिकार प्राप्त थे। कलकत्ता को बेचने वालो के वंशज आज भी बारीशा (उपनगर) मे रहते हैं।

कलकत्ता बसाने वाले अंग्रेज "जाब चैर्नोक" ने मनोहरसिह के साथ कलकत्ता के सौदे पर बातचीत की थी।

—हिन्दीमिलाप, १५ नवम्बर, १९७०

२० तूफान मे आदमी उडा—पाली जिले के लखनगढ गाव मे आँधी के तूफान मे तिमजले मकान की छत पर से सेठ की चद्दर समेटता हुआ एक आदमी उड गया एवं दो फर्लाङ्ग की दूर पर गिर कर मर गया।

—हिन्दुस्तान, २६ जून, १९६३

२१ मस्तक के छेद द्वारा सिगरेट पीना—एक सिपाही का नाम फ्रैंक ब्राउन है। इसके मस्तक मे एक बार एक छेद हो गया। वह इस छेद से ही मुख के स्थान में सिगरेट पीने लगा। —मानो न मानो, पृष्ठ ११४

२२ साप के मुख से खून—नौगाव-बागला देश, २५ जून (ई० एन० ए०) सात फुट लम्बा जहरीला साप एक ८ माह के बालक पर दो घटे कुडली मार कर बैठने के बाद, उसे जीवित छोडकर चला गया एव कुछ देर बाद वह साप मर गया।

दतकथा जैसी यह घटना यहा से ४ किलोमीटर दूर चक्र-परिसद गाव में एक किसान के घर घटी।

बालक के चारो तरफ भयभीत लोगो के रहने हुये भी साप अपनी फन की छाया उस बालक के सिर पर किये रहा। इसके बाद साप स्वय ही बालक को सही सलामत छोडकर वहा से हट गया। हटते ही साप के मुह से खून निकलने लगा और वह मर गया।

—राजस्थान पत्रिका, २६ जून, १९७२



१६ कतिपय अद्भुत व्यक्ति

१ **दलाईलामा**—तिव्वत प्रदेश के पुरोहित और शासक को दलाई-लामा कहते हैं। इस शव्द का अर्थ है 'महा-समुद्र' अर्थात् जिसके पास सर्वाधिक ज्ञान और शक्ति हो, वह उत्तम व्यक्ति अवलोकिता देवी का अवतार होता है, ऐसा लामो का विश्वास है। दलाई-लामा का का चुनाव विचित्र ढग से होता है। उसकी खोज की जाती हे। दलाई-लामा के देहान्त के समय देश भर मे जो भी वालक पैदा होते हैं, उनकी विभिन्न प्रकार से परीक्षा की जाती है। जिस वालक में दलाई-लामा के पद के योग्य सर्वाधिक गुण अथवा लक्षण पाये जाते हैं, उसी को वह पद मिल जाता है। एक विशेष परीक्षा में दिवगत दलाई-लामा की कोई वस्तु अनेक वस्तुओ के साथ मिलाकर रखी जाती है। जो वालक उस वस्तु को चुन लेता है, उसी को दलाई-लामा वना दिया जाता है।

१९३३ में दलाई-लामा की मत्यु हुई थी। खोजते-खोजते १९३९ में एक वालक मिला, जो उस सर्वोच्च पद के योग्य है। वालक को वहुत वुद्धिमान वताया जाता है।

दलाई-लामा की राजधानी पोटाला में है। यहा पर अनेक भव्य प्रासाद वने हुए हैं। परलोकगत दलाई-लामा की समाधि भी यही है। इस समाधि में अतुल धनराशि भरी हुई है।

—**मानो न मानो**

२ **ससार का सबसे ज्यादा वजनी आदमी**—अमेरिका के मान्टिसेलो में ४ जून, १९२६ को जन्मे रावर्ट अर्ल ह्यूजस का वजन जन्म के समय

ग्यारह पौण्ड का था। छह वर्ष की उम्र मे उनका वजन साढ़े चौदह 'स्टोन' हो गया था[1]। छह फुट आधा इंच लंबे रावर्ट का वजन १९५८ मे मृत्यु के समय १०४१ पौंड था। एक बड़े पियानो मे हेर-फेर कर इनके लिए तावूत बनाया गया और उस तावूत को उठाया एक क्रेन ने। देखिए चित्र—

—साप्ताहिक हिन्दुस्तान,
जुलाई १, १९७२



अर्ल ह्यूजस

३ तीस वर्ष से अन्न-जल न लेने वाली रूपकुंवर बाईसा—जोधपुर से जयपुर जाते हुए जोधपुर से ३२ मील दूर, वाला ग्राम मे ६८ वर्षीय भक्त महिला श्रीमती रूपकुंवर बाईसा पिछले तीस वर्षों मे विना अन्न-जल ग्रहण किये अपना नित्यकार्य करती चली आ रही है। लोग उनको दाता, महाराजा या सतीमाता के नाम से पुकारते हैं।

जनसंघ के नेता श्री भैरोंसिह शेखावत उनकी वंश-परंपरा के समीप हैं। उनके अनुसार रूपकुंवर बाईसा का जन्म पीपाड़ शहर से आठ मील दूर ग्राम रावणियाणा के ठाकुर लालसिह शेखावत के यहाँ भाद्रपद शुक्ला अष्टमी संवत् १९६० विक्रमी (सन् १९०३ की जन्माष्टमी) को हुआ था। संवत् १९७० वि० मे उनका विवाह वाला ग्राम के जुझारसिंह के साथ हुआ।

विवाह के ठीक पन्द्रह दिन बाद ही अकस्मात् बाईसा के पतिदेव दिवंगत हो गये। बाईसा ने अपने पति के साथ सती होने की इच्छा प्रकट की

१ १४ पौंड का एक स्टोन होता है।

किन्तु परिवार वालो ने उनका मनोरथ पूरा नही होने दिया। उसी दिन से बाईसा ने सकल्पपूर्वक एक समय के भोजन का परित्याग कर दिया।

निस्सतान होने के कारण पति के ज्येष्ठ भाई जालिमसिंह के पुत्र मानसिंह को उनका दत्तक पुत्र बनाया गया। लेकिन माघ शुक्ला ११ सवत् १९९९ (सन् १९४२) को दुर्भाग्य ने पुन अपना रूप दिखाया और २३ वर्ष के उस युवक को मृत्यु निगल गई। दारुण दु ख के कारण पति और पुत्र से विहीन महिला ने फिर सती होना चाहा, किन्तु परिवार वालो ने फिर मना कर दिया। पहले उन्होने अनुनय-विनय की, फिर अपने हठ पर अड गई। तब परिवार वालो ने उनको एक कमरे मे बद कर दिया। उस दिन निर्जला एकादशी थी। कई दिनो तक वे बद कमरे मे घुटती रही, सिसकती रही। भोजन का तो प्रश्न ही कहां था, पानी की एक बू द भी नही ली।

वह दिन और आज का दिन, बाईसा ने तब से अब तक अन्न-जल ग्रहण नही किया है। बिना अन्न-जल के भी उनका जीवनक्रम नियमित है, न कोई रोग, न कोई व्याधि, न कोई अन्य शिकायत। जगत की मगल-कामना ही उनका साध्य है।

उनका एक ही उपदेश है—भाया ! भगवान् राम को नाम लेवो। वो ही शक्ति देगो बुद्धि देगो, चित्त निर्मल करेगो !



रूपकु वर बाईसा

उनके कमरे मे एक पटिया पर माला, एक चित्र और कुछ पुस्तकें, एक चटाई, एक मयूर-पखी एव पखा—बस, यह उनका सामान है। (देखिये चित्र)

—हिन्दुस्तान, १८ दिसम्बर, १९७२

४ **चार सौ टन सोने के मालिक**—अर्जेण्टाईना (दक्षिण अमरीका) के वर्तमान राष्ट्रपति जुआन पेरो के पास चार-सौ टन सोना है, जो वर्तमान [४००) रु० प्रति तोला] भाव से चौदह अरब, दस करोड़, चालीस लाख रुपयों का होता है। राष्ट्रपति इस सोने को बेचना चाहते हैं। बेचने का काम उन्होंने इटली के वित्तमन्त्रालय के इन्स्पेक्टर जनरल प्रोफेसर विसेंजो दे नार्दो को सौंपा है।

दुनिया की सबसे बड़ी सोनामंडियों में गिनी जाने वाली ज्यूरिख की सोनामंडी में सप्ताह भर में पन्द्रह से साठ टन सोने का कारोबार होता है। कहते हैं कि पूरा-का-पूरा चार-सौ टन सोना एक साथ खुले बाजार में आ जाये तो सोने का भाव ११० डालर (करीब ८०० रुपये) प्रति औंस से घटकर ४९ डालर (करीब ३७५ रुपये) प्रति औंस पर आ जाये।

उधर स्विट्जरलैंड की पुलिस ने इस सोने की वैधता को लेकर तहकीकात की, तो रोम से इस स्वर्णभंडार के मुख्य विक्रेता विसेंजो दे नार्दो ने बयान दिया कि यह सोना कानूनी है। सौदा होते ही सारा सोना, उसकी वैधता और खरेपन के प्रमाणपत्रों के साथ खरीददारों को सौंप दिया जायेगा।

—धर्मयुग १८ अक्टूबर, १९७३ के आधार से

५ **बोलनेवाली तीन महीने की बालिका**—डीडवाना-पंचायत समिति के खारोली ग्राम में एक तीन माह की बच्ची अभी से बोलने लगी है। खारोली ग्राम में जाटों परिवार की उक्त बच्ची प्रतिदिन तीन बार बोलती है तथा जब भी बोलती है तब आजा-आजा बोलती है।

—राजस्थान पत्रिका, २२ जुलाई, १९७३

६ **विचित्र जुड़वां बालक**—कोटा (नि० सं०) गत सप्ताह स्थानीय महिला-चिकित्सालय रामपुरा में सांगोद (कोटा) की ३० वर्षीय मुस्लिम युवती कनीज पत्नी अजीजुर रहमान ने एक विचित्र बालक को जन्म दिया,

जिसके दो सिर, दो नाक, चार आंखें, चार कान, एवं दो मुंह थे। एक मुंह के दांत भी निकले हुए थे।



घटनाक्रम के अनुसार गत ६ फरवरी को जब उक्त युवती को प्रसव-वेदना हुई तथा घर पर बच्चा नहीं हुआ तो उसे स्थानीय रायपुरा स्थित महिला चिकित्सालय में लाया गया जहां उक्त चिकित्सालय की इंचार्ज डा० श्रीमती पी० के० जैन ने बड़ी कुशलता से आपरेशन कर बच्चे को बाहर निकाला। बच्चा मरी हुई अवस्था मे था। देखिये चित्र

—अमर उजाला दैनिक (आगरा), १३ फरवरी, १९७३



१ किसी विशेष कार्य के आरम्भ मे दिखाई देनेवाले शुभ या अशुभ लक्षण को शकुन कहते हैं।

—नालंदा-विशाल शब्दसागर, पृष्ठ १३१९

२ गौन समे जो अपशकुन, ते आवत सुखदाय।
गौन समे जो शुभशकुन, पुर पैठत दुखदाय ॥१॥
शकुन शुभाशुभ जानि, निकट होहि तो निकट फल।
दूर सो दूर बखान, कहै भड्डली सहदेव जू ॥२॥

—शकुनावली

३ अशुभ शकुन—

(क) अङ्गार-भस्मेन्धन-रज्जु-पङ्क-पिण्याक-कर्पास-तुषास्थि-केशा।
कृष्णा-यवाऽवस्कर-कृष्णधान्य पाषाण-विष्ठा-भुजगौषधानि ॥१॥
तैल गडू-चर्म-वसाविभिन्न , रिक्त च भाण्ड लवण तृण च।
तक्रार्गला-शृङ्खल-वृष्टि-वाता ,कार्ये क्वचित् निशदिसे न शस्ता ॥२॥

—शकुनशास्त्र

(१) अङ्गार, (२) राख, (३) लकडियां, (४) रस्सी, (५) कर्दम (कीचड), (६) खल, (७) कपास (८) तुष, (९) हड्डी, (१०) केश, (११) कृष्णा, (१२) यवधान्य, (१३) कूड़ा-करकट, (१४) काला धान्य (तिल माष आदि), (१५) पत्थर, (१६) विष्ठा, (१७) सर्प, (१८) औषधि, (१९) तेल, (२०) गड (गिलोय), (२१) चर्म, (२२) चर्बी, (२३) खाली पात्र, (२४) लवण, (२५) तृण (२६) छाछ, (२७) अर्गला, (२८) शृङ्खला, (२९) वृष्टि (विना ऋतु की), (३०) प्रतिकूल वायु—ये ३० प्रस्थानादि कार्य में शुभ नही माने जाते।

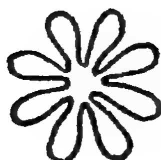
(ख) स्वपादयानस्खलन दशाना, सङ्ग॰ क्वचिद् यानपलायन च ।
द्वाराभिघातोध्वजवस्त्रपात ,प्रस्थानविघ्न कथयन्ति यातु ॥१॥
मार्जारयुद्धारवदर्शनानि कलि कुटुम्बस्य परस्परस्य ।
चित्तस्य कालुष्यकर च सर्वं, गन्तु प्रयाण-प्रतिषेधनाय ॥२॥
भूरय खग-मृगा समाकुला, स्तुल्यकालविहितारवाश्चये ।
ते भवन्ति परदेशयायिना, देहिना मरणकारिणो ध्रुवम् ॥३॥

—शकुनशास्त्र

अपने पैरो या सवारी का स्खलन होना, दस व्यक्तियो का साथ होना, सवारी (घोडा आदि) का भाग जाना, ध्वजरूप वस्त्र आदि का पतन होना (जैसे वणिक की पगडी, क्षत्रिय की तलवार, साधु के रजोहरण आदि का गिर जाना) उक्त कार्य यात्री के प्रस्थान मे विघ्न का सकेत करने वाले हैं ।

बिल्लियो का युद्ध, शब्द एव उनका दर्शन, कुटुम्ब का आपसी कलह और मन को कलुषित करने वाले सभी काय—ये यात्री के प्रयाण मे प्रतिषेधक हैं ॥२॥

बहुत के खग-मृगो का एक साथ सत्रस्त होना एव एक ही समय मे चिल्लाना, परदेशगामी - यात्रियो के लिए निश्चित रूप से मरण का कारण होता है ॥३॥



२१ शुभाशुभ शकुन

१ शुभ— —शकुनावली के अनुसार

लिए सुहागनि सुमन उछंगा, कै घट भरे होहि जल गंगा[1] ।
या विधि मिलै आवती आगे, मनहु मनोरथ सोवत जागे ॥१॥
सनमुख धेनु पियावत बाछा, इहि तें शगुन कहहु का आछा ।
दधि मछली आगे जो आवै, इन शगुनन को कोउ न पावै ॥२॥
पोथी लिये विप्र दो मिलई, तौ कारज भयो जान हु दिलई ॥३॥

० अशुभ—

इक वकगे पुनि इक वृषभ, पाँच भैंस षट स्वान ।
तीन धेनु गज सात तजि, करहि निषेध प्रयान ॥१॥
रासभ-महिषी नर चढ्यो मिले लरत मजार ।
स्वान-महिष-मानव लरैं, येऊ अशुभ विचार ॥२॥
एक शूद्र दो वैश्य असार, तीन विप्र अरु क्षत्री चार ।
नव नारी जो सम्मुख आवै, तो मति चलियो शगुन बतावै ॥३॥

२ श्वान को शकुन (शुभ)—
दक्षिण पग तें स्वान दक्षिण अंग खुजावई ।
नैन कूख कर कान रिद्धि-वृद्धि-जय-सुख करै ॥१॥
स्वान दाहिने पावतें, नवै ताज निज सीस ।
राज्यलाभ अरु उदरसुख, कंठ-गुदा-धन दीस ॥२॥

---

१ आगे पाके दाढ़े भानो, जोदि डाके माथ ।
भोरा पाके ग्वाली भानो, जोदि भोग्ने जाग ॥
—चनना फरायत

हृदयकंध आदर अधिक, नाक महासुखकार ।
पीठ सुवाहन लाभ है, ठोडी सुयश अपार ॥३॥

० **अशुभ**—

जो इन अगन स्वान, खनै खाज पग वाम सो ।
तो फल अशुभ बखान, काज न कीजै अपशकुन ॥१॥
गमन समै जो स्वान निज, फर-फरायदे कान ।
महा अशुभफल काज को, शकुनशास्त्र परमान ॥२॥
स्वान धुनै जो अग, अथवा लौटे भूमि पर ।
तो निज कारज भग, अति ही अशगुन जानिये ॥३॥

३ **स्वान एवं शृगाल आदि के शकुन** (शुभ)—

डावो कुत्तो, डावो श्याल, डावो खर भूकै असराल ।
डावो धूघू घम-घम करै तो, लकारो राज्य विभीषण करै ॥१॥

० **शुभाशुभ**

बायें गीदड शबदतें, मनबछित पावत ।
आगे दहिने पीठ पै, महाअशुभ दरसत ॥२॥

० **अशुभ**—

बाया भला न दाहिना, रोगी रीक्ष सुनार ।
चहुँ दिशि बोलै गीदरी, निशि मे अशुभ विचार ॥३॥

४ **मृग के शकुन** (शुभ)—

मृग बायें तै दाहिने, आवै जो तत्काल ।
लक्ष्मी की प्राप्ति करै, चलते प्रात काल ॥१॥
दाहिने तै बायें हिरण आवै जो सुउताल ।
तो ततछिन ही सुख लहै, चलते सध्याकाल ॥२॥
मृगमाला कहुँ दाहिने, ह्वै करि कढै तुरन्त ।
धन-गन-भूमि बहु मिलै, आदर करै महत ॥३॥

० कुभ करेवो कोचरी, हनूमत ने हिरणा ।
एता लीजै जीमणा दिन ऊगया निरणा ॥४॥

४ शशक के शकुन (शुभाशुभ)—

जो बोले बाये समा मीठे सुर सुप्रसन्न ।
तो सब शुभ फल जानिये प्राप्त करै घर अन्न ॥ ॥
भयकारी है सस्मा दहिने, आगे बोलत रोगहि हने ।
दरशनिषेध निपट निरधारै, ऐसे प्राणी शगुन विचारै ॥२॥

६ काक के शकुन (शुभ)—

गमन समै जो दाहिने, देखि परै कहुँ काग ।
धन गुन कीरति बहु मिलै, बटै बहुत-सो माख । १॥

अशुभ—

वायस सूखे वृक्ष पर, सूरज सोहै होई ।
करै विलाप कठोर तब, अति दुखदाई सोइ ॥२॥

७ काली चिडिया आदि के शकुन (शुभ)—

काली चिडिया-उल्लू-स्याना, गाग्भ-गीदड काग बखाना ।
जो चलते ये बायें चलहीं, तो धन लक्ष्मी प्राप्ति मिलहीं ॥१॥
बायें तीतर प्रातहि बोलै, गमन समै अति सुखद अमोलै ।
दुपहर तें जो बोलै दहिने, तो प्रानी सुख पावै सुघने ॥२॥
नीलयस तोरन करै, जो बहु दरशन देहि ।
प्राणी पहुचे कुशल सू मनवाछित फल लेहि ॥३॥
दहिने से बायें तरफ, आवै अतिहि उताल ।
सांभ हि रूपारेल तो, सुत प्रापति ततकाल ।४॥

शुभाशुभ—

सां गीणी परभात नभा मल्हागी[1] सुखद ।
मल्हागी परभात, नभा सांगीणी सुखद ॥४॥

---

१ रूपारेल (स्याम चिडिया) जा दायें से बायें जाता सांगीणी एव बायें से दायें जाने वाली को मल्हागी या ... कहा जाता है ।

८ गौन समै पछी रटै, फलित व्रिरछ पैर वैठि ।
भरी दिशा मे तो भलो, अशकुन नाख ऐंठि ॥१॥
उत्तर अरु ईशान, पूरब प्रात भरी दिशा ।
साज भरी दिशि जान, दक्षिण नैर्ऋत पश्चिमे ॥२॥

९ **नकुल आदि के शकुन** (शुभ)-

जो कहु नकुल सुदरशन पावै, होय काज मपति मिलि जावै ।
मब विधि कुशल आव घर नोके, सवे मनोरथ पूरै जोके ॥१॥
वकुल-मोर सुखकार, इनको दरशन शकुन शुभ ।
कुक्कुर पिक शुकसार, बाये वोलै तो भले ॥२॥

शुभाशुभ—

काली चिडिया वामदिशि, बोलै तो सुखकार ।
सूर साप अरु गोह को, दर्शन दुखद अपार ॥३॥



२२ शकुनज्ञ एवं उनकी आश्चर्यजनक बातें

१ दादूजी महाराज एक जाट के खेत में ठहरे हुये थे। वे ज्योंही जाने लगे, चिड़िया ने अपशकुन किये। जाट ने कहा—भगवन् कुछ देर रुक जाइये। शकुन ठीक नहीं है। दादूजी नहीं रुके और चलते समय कहने लगे—

> दादू! दुनिया झूठ है, झूठ चिडी का सूण।
> लिखणवाला लिख गया, तो मेटणवाला कूण॥

विदा होकर थोड़ी-सी दूर गए कि रास्ते में चोर-डाकू मिले। उन्होंने दादूजी के कपड़े और टोपी (सोने की थी) छीन लिए। दादूजी ने वापस आकर जाट को सारा हाल सुनाया और बोले—

> दादू! दुनिया सांच है, सांच चिडी का सूण।
> दो घडी पछे चालता, तो टोपी लेता कूण॥

—श्री कालुगणि से श्रुत

२ फलसूंड के भाटी राजपूत कहीं जा रहे थे। रास्ते में एक पथिक शकुन अच्छे न होने से इधर-उधर भटकता हुआ रह रहा था—"आगे जाऊँ तो मां मरे, और पीछे जाऊं तो मैं मरूं।" भाटी राजपूत ने कहा—"फेंक दे—फेंक दे!" उसने रोटियों से भरा थैला फेंक दिया, उसमें से एक सांप निकला।

● किसी व्यक्ति की सांडनी चोरी गई। उसने ठाकुर से फरियाद की। वे राइके (खोजी) को साथ लेकर खोजने चले। रास्ते में सांप मिला, वापस लौटे। प्रातः फिर रवाना हुए, रास्ते में सांप फण फैलाए बैठा था। ठाकुर ने मुंह फेर कर राइके के एक लाठी मारी। वही चोर था, उसने सांडनी ला सौंपी।

○ एक वरात जा रही थी । स्वर्ण चिडिया वोली, एक शकुनज्ञ क्षत्रिय ने कहा—जिसको व्याहने जा रहे हैं, वह लडकी गर्भवती है। लोगो ने पूछा—इसका क्या सवूत ? शकुनज्ञ का उत्तर था कि जिस टहनी पर चिडिया वैठी है, उसको चीर कर देखो ! यदि उसमे कीडा (लट) हो तो समझ लेना कि कन्या सगर्भा है। विस्मित लोगो ने टहनी को चीरा तो लट निकली । सच्चाई की परीक्षा के लिए वरात आगे गई एव पता लगाया तो लडकी गर्भवती निकली ।

○ एक सैनिक (जिसकी शादी अभी हुई थी) ससुराल जा रहा था । वीच मे वहू का चचा (जो शकुनज्ञ था) कहने लगा—शकुन के अनुसार आप कल शाम तक मर जाए गे । सैनिक घवराकर (पास की ढाणी मे) ससुर के पास पहुचा ।

हाल सुनकर ससुर (वह भी अद्भुत शकुनज्ञ था) ने कहा—तुम सुवह विलाई-आख वाली गाय का दूध लेकर चुपचाप चले जाना एव भाई के घर के दाहिने द्वार की वाड पर—वह दूध डालकर—"तुम्हारे शकुन तुम्हे ही देता हू" यों कहकर फौरन लौट आना । वाड से आग की ज्वाला निकलेगी एव पकडो-पकडो ! कहकर मेरा भाई पीछे दौडेगा, लेकिन शीघ्रता से भाग आना । दामाद ने उक्त विधि की एव चचा ससुर मर गया ।

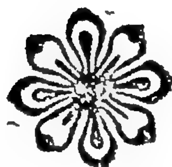
—वाड़मेर निवासी हस्तीमल जी से श्रुत

३ ऐसी दतकथा है कि जन्मते वच्चे को यदि पक्षियों का ऐंठा हुआ पानी (कई जगह वर्तन मे पानी भर कर एक छीके पर रखा जाता है, और पक्षी आ-आ कर उसमे पानी पिया करते हैं, वह) पिला दिया जाय तो वच्चा पक्षियो की भाषा समझने लग जाता है ।

○ वीकानेर नरेश के पास एक आदमी पक्षियो की भाषा समझने वाला था । उसने एक दिन महाराज से कहा कि कमेडी (कवूतर से मिलता-जुलता पक्षी) कह रही है कि कल सवेरे यदि जोधपुर महाराज झारी का पानी (जिसमे महारानी का जहर डाला हुआ होगा) पी लेंगे तो तत्काल मर

जायेंगे उन्हें बचाना हो तो कोई जाकर बचाओ। बीकानेर नरेश को पहले तो विश्वास नही हुआ, फिर विशेष आग्रह देखकर वायुवेग से चलने वाली अपनी साडनी दी। साथ एक पत्र भी दिया (उसमे लिखा था कि यदि इसकी बात झूठ निकले तो इसे वही मार दिया जाय)। वह शीघ्राति-शीघ्र चला और दिन निकलने से पहले ही जोधपुर पहुचकर महाराज को पत्र दे दिया। महाराज ने महारानी को बुलाकर कहा—पिओ इस झारी का जल। वह पीने मे इन्कार हुई। धमकाने से सब बात कह दी। पत्रलाने वाले को इनाम और महारानी को मौत की सजा दी गई।

—श्रुति के आधार पर



२३ जादूगर एवं उनके आश्चर्य

१ **जादूगर**—जादूगर असभव वातो को सभव करके दिखाता हुआ मालूम होता है। वह एक खाली दीखनेवाले हैट से एक खरगोश निकालकर दिखा सकता है, एक वडे से पिजडे को गायव कर सकता है, एक मजवूत जजीर को तोडकर वाहर निकल सकता है या एक आदमी को आरे से काटकर दो टुकडे हुआ दिखा सकता है।

अनेक जादूगर वहुत मशहूर हो चुके हैं। इनमे सवसे मशहूर हाउदिनी था। उसका एक खेल पाच टन के एक हाथी को गायव कर देना था।

—**विश्वकोष भाग ६, पृष्ठ ३८**

२ **जादूगर पी० सी० सरकार**—इनका पूरा नाम प्रतुलचन्द्र सरकार था। २३ फरवरी, १९१३ को अशोकपुर जिला मैमनसिंह (वगाल) मे भगवान-चन्द्र सरकार के घर इनका जन्म हुआ। पिता वाजीगरी एव खेती का धधा करते थे। इन्होंने कलकत्ता से वी० ए० पास करके जादू (इन्द्रजाल) की विद्या पढी। विश्वविख्यात जादूगर हुए। खेल दिखाने के लिए ये ९ वार अमेरिका, ३६ वार यूरोप एव ११ वार जापान गये। इन्हे १९६४ मे भारत सरकार ने "पद्मश्री" का अलंकरण दिया। इनके खेल अद्भुत थे। ये मोटर या हाथी जैसी वडी चीज को भी गायव करके दिखा देते थे। आरे से आदमी के दो टुकडे कर देते, लेकिन खून की एक वूंद भी नही निकलती। आखो पर पट्टी वाधकर मोटर-साइकिल चला देते एव वोर्ड पर रेखाचित्र बना देते। आदमी को फासी के तख्ते पर खडा करके ज्योंही फासी दी जाती, सरकार गोली दागते, गोली दागने के साथ ही वह आदमी गायब हो जाता और फासी वाली रस्सी मे सिर्फ एक चोटी लटकती रह जाती। थोडी देर वाद सभा मे से मुस्कराता हुआ वह आदमी प्रकट हो जाता।

ये एक छोटा-सा पानी का कमंडल रखते और उसमे से बार-बार पानी गिराते ही रहते, किंतु वह कभी खाली नही होता। इनका कहना था कि राजा भोज, भानुमती रानी और राजा विक्रमादित्य भी जादू विद्या के विशेषज्ञ थे। (जादू के खेल को भानुमती का खेल भी कहते हैं।)

— बालभारती, जून १९७१ के आधार से

३ धागे का बाग—जोधपुर नरेश ने जादूगर का खेल करवाया। उसने अनार का बाग लगाकर सबको अनारें खिलाईं। "जादूगर को मार देने से उसकी बनाई हुई चीजें रह सकती हैं" ऐसी सलाह देने से राजा ने जादूगर का गला कटवा दिया एवं वह बाग स्थिर रह गया।

जादूगर की स्त्री गर्भवती थी, पुत्र हुआ एवं जादू विद्या सीखकर बाप का वैर लेने जोधपुर आया। राजा की आज्ञा से खेल शुरु हुआ। जादूगर ने अपनी विद्या से खरबूजे एवं चाकू बनाकर राजा के सिवा बुरी सलाह देने वाले मुतसद्दियों के हाथों में पकड़ा दिये। ज्योंही खरबूजों पर चाकू रखे, सबके सिर कट गए। जादूगर ने कहा—राजन्! इन दुष्टों ने मेरे पिता को मरवाया था, अतः मैंने उसका बदला लिया है। राजा हमारे लिये अवध्य है, इसलिये आपको छोड़ा है। क्रुद्ध होकर राजा ने उसे पकड़ना चाहा लेकिन उसने सबके देखते-देखते एक फुकणी आकाश में फेंकी और उसके धागे को पकड़कर आकाश में चला गया एवं अदृश्य हो गया।

० सबकी घड़ी में ९ बज गये—पटियाला नरेश ने जादूगर का खेल करवाया। समय रात को नौ बजे का था। जादूगर कुछ देर से आया। राजा आदि ने उस पर ऐतराज किया। किसी ने ९।१०, किसी ने ९।१२, किसी ने ९।१४ एवं किसी ने ९।१५ मिनट बतलाए। जादूगर ने कहा—आप असत्य बोल रहे हैं, देखिए हुजूर अपनी-अपनी घड़ी। विस्मित राजा ने ज्यों ही घड़ियां देखीं, सबके ठीक नौ बजे थे। उपस्थित दर्शकों के आश्चर्य का पार न रहा एवं सभी ने क्षमा मांगकर खेल दिखाने की प्रार्थना की। हंसकर जादूगर ने कहा—बस, हो गया आज का खेल तो खत्म।

० मालेरकोटला (पंजाब) के जादूगर एक भैंस के गुदा-द्वार से घुसकर

मलद्वार से निकल रहा था। लोग देखकर ताज्जुव हो रहे थे। इतने मे घास का भारा लिए हुए एक मनुष्य वहाँ आ खडा हुआ (घास सिर पर हो तो जादू का कोई असर नही होता) और लोगो की मूर्खता पर हसने लगा। जादूगर समझ गया एव धक्का मारकर उसका घास नीचे गिरवा दिया। वस, उस पर भी जादू का असर हो गया।

—श्रुति के आधार पर

४ एक जादूगर ने एक वच्चे को छावडी मे डाला एव अदृश कर दिया। फिर उस छावडी मे से वच्चे को सर्प-युगल के रूप मे दिखाया, फिर वच्चे को प्रकट करके उसके जीभ आदि काट कर दिखाए।

—सन् १९६६, नवम्बर ३०, रानियां गाव मे लोगो ने यह खेल देखा था।

५ **आवाज के जादूगर**—(वाणी के ऐन्द्रजालिक) अक्सर आवाज के इन जादूगरो के पास एक गुडिया या नकली मनुष्याकृति रहती है। उनके तमाशे का कमाल यह होता है कि आवाज उस नकली मनुष्याकृति के मुह से आती हुई लगती है। वोलते समय इनके ओठ नही हिलने चाहिए। 'प' या 'व' से शुरू होने वाले शब्दो का उच्चारण कर पाना ऐन्द्रजालिक के लिए वहुत कठिन होता है, क्योकि ओठो को हिलाए विना इन अक्षरो का उच्चारण नही हो सकता। इनके मुह से 'वहना' शब्द 'कहना' की तरह निकलता है। एक अच्छा ऐन्द्रजालिक किसी कोने मे इस अन्दाज से देखता है जैसे आवाज उसी ओर से आ रही है। देखने मे लोग भी ऐन्द्रजालिक को न देखकर उसी दिशा मे देखने लगते हैं। इस तरह ये लोग लोगो को वेवकूफ बना देते हैं।

—विश्वकोष भाग ५।१९



२४ ज्योतिष की जानकारी

१ उस विद्या या शास्त्र का नाम ज्योतिष है, जिसके द्वारा आकाशस्थित ग्रह, नक्षत्र आदि की गति, परिणाम, दूरी आदि का निश्चय किया जाता है।

—नालंदा विशाल शब्दसागर

२ ज्योतिष का ज्ञान करने वालों को आदित्य आदि सात वार, प्रतिपदा आदि सोलह तिथियां, चैत्र आदि बारह मास, मेष आदि बारह राशियां, सूर्य आदि नव ग्रह, अश्विनी आदि २७ नक्षत्र, विष्कंभ आदि सत्ताईस योग एवं बव आदि आठ करण अवश्य याद होने चाहिये।

३ होडाचक्र के साथ वार तिथि आदि—

० (१) आदित्य, (२) सोम, (३) मंगल, (४) बुध, (५) बृहस्पति, (६) शुक्र, (७) शनैश्चर—ये सात वार हैं।

० (१) प्रतिपदा, (२) द्वितीया, (३) तृतीया, (४) चतुर्थी, (५) पंचमी, (६) षष्ठी, (७) सप्तमी, (८) अष्टमी, (९) नवमी, (१०) दशमी, (११) एकादशी, (१२) द्वादशी, (१३) त्रयोदशी, (१४) चतुर्दशी, (१५) अमावस्या, (१६) पूर्णिमा ये १६ तिथियां हैं।

० (१) चैत्र, (२) वैसाख, (३) ज्येष्ठ, (४) आषाढ़, (५) श्रावण (६) भाद्रपक्ष, (७) आश्विन, (८) कार्तिक, (९) मार्गशीर्ष, (१०) पौष, (११) माघ, (१२) फाल्गुन—ये बारह मास—महीने हैं।

० (१) वसंत (२) ग्रीष्म, (३) वर्षा, (४) शरद्, (५) हेमन्त, (६) शिशिर—ये छः ऋतुएं हैं।

० (१) दक्षिणायन, (२) उत्तरायन—ये दो अयन हैं।

(१) मेष, (२) वृषभ, (३) मिथुन, (४) कर्क, (५) सिंह, (६) कन्या,

(७) तुला, (८) वृश्चिक, (९) धनु, (१०) मकर, (११) कुम्भ, (१२) मीन—ये बारह राशियां है।

- (१) सूर्य, (२) चन्द्र, (३) मगल, (४) बुध, (५) बृहस्पति, (६) शुक्र, (७) शनि, (८) राहु, (९) केतु—ये नौ ग्रह हैं।
- (१) अश्विनी, (२) भरणी, (३) कृत्तिका, (४) रोहिणी, (५) मृगशिरा, (६) आर्द्रा, (७) पुनर्वसु (८) पुष्य, (९) आश्लेषा, (१०) मघा, (११) पूर्वाफाल्गुनी, (१२) उत्तराफाल्गुनी, (१३) हस्त, (१४) चित्रा, (१५) स्वाती, (१६) विशाखा, (१७) अनुराधा, (१८) ज्येष्ठा, (१९) मूल, (२०) पूर्वाषाढा, (२१) उत्तराषाढा, (२२) अभिजित्, (२३) श्रवण, (२४) धनिष्ठा, (२५) शतभिषा, (२६) पूर्वाभाद्रपदा, (२७) उत्तराभाद्रपदा, (२८) रेवती—ये अट्ठाईस नक्षत्र हैं।

(उत्तराषाढा का चतुर्थ चरण, श्रवण के आदि का पन्द्रहवा भाग मिलकर अभिजित् नक्षत्र होता है। मुख्य सत्ताईस नक्षत्र ही हैं।)

- (१) विष्कभ, (२) प्रीति, (३) आयुष्मान्, (४) सौभाग्य, (५) शोभन, (६) अतिगण्ड, (७) सुकर्मा, (८) धृति, (९) शूल, (१०) गण्ड, (११) वृद्धि, (१२) ध्रुव, (१३) व्याघात, (१४) हर्षण, (१५) वज्र, (१६) सिद्धि, (१७) व्यतिपात, (१८) वरीयान्, (१९) परिघि, (२०) शिव, (२१) सिद्ध, (२२) साध्य, (२३) शुभ, (२४) शुक्ल, (२५) ब्रह्म, (२६) ऐन्द्र, (२७) वैधृति—ये २७ योग हैं।
- बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज और विष्टि—ये सात करण हैं।

४ **चन्द्रमा का निवास—**

मेषे च सिहे धनुषीन्द्रभागे,
वृषे च कन्या मकरे च याम्ये।
युग्मे तुलायां च घटे प्रतीच्या,
कर्कालिमीने दिशि चोत्तरस्याम्।

—होडाचक्र

मेष-सिंह-धनु, इन राशियो मे पूर्व की ओर, वृष-कन्या-मकर, इन राशियो के दक्षिण की ओर, मिथुन-तुला-कुम्भ, इन राशियो मे पश्चिम की ओर तथा कर्क-वृश्चिक-मीन, इन राशियो मे उत्तर की ओर चन्द्रमा का निवास होता है।

५ चन्द्रनिवास का फल—

सम्मुखे त्वर्थलाभ स्याद्, दक्षिणे सुखसम्पद ।
पृष्ठतो मरण चैव, वामे चन्द्रे धनक्षय· ॥
—होडाचक्र

सम्मुख चन्द्रमा से धन का लाभ, दाहिने हाथ की ओर हो तो सम्पत्ति, बाए हाथ की ओर हो तो धन की हानि और पीछे की ओर हो तो मृत्यु होती है।

६ राशियो के स्वामी—

मेष-वृश्चिकयोर्भौम, शुक्रो वृषतुलाधिप· ।
बुध· कन्यामिथुनयो, प्रोक्त कर्कस्य चन्द्रमा ।
जीवो मीन-धनु स्वामी, शनिर्मकर-कुम्भयो ।
सिंहस्याधिपति सूर्य। कथितो गणकोत्तमै ॥
—होडाचक्र

मेष-वृश्चिक का स्वामी मगल, वृष-तुला का पति शुक्र कन्या-मिथुन का स्वामी बुध, कर्क का स्वामी चन्द्रमा, मीन और धन का स्वामी बृहस्पति, मकर-कुम्भ का स्वामी शनि और सिंह का पति सूर्य है।

७ ग्रहो का राशि भोग—

मास शुक्रो बुध सूर्य·, सार्धमास महीसुत· ।
गुरुरब्द तम· सार्ध, शनि सार्धाब्दकद्वयम् ॥
तथा सपादद्विदिव, राशौ तिष्ठति चन्द्रमा· ।
ग्रहाणा राशिजो भोग, एवमुक्तो विचक्षणै ॥
—होडाचक्र

शुक्र, बुध एव सूर्य एक महीना, मगल डेढ महीना, वृहस्पति एक वर्ष, राहु डेढ वर्ष और शनि अढाई वर्ष तथा चन्द्रमा सवा दो दिन तक एक राशि पर रहता है। ग्रहो का राशिभोग पडितो ने इसी तरह कहा है।

८ घातक चन्द्र—

चन्द्रभूतग्रहा नेत्र-रसादग्वह्निसागरा. ।
वेदसिद्धिशिवार्का स्यु-र्घातचन्द्रा क्रमान्नृणाम् ॥
रोगे मृत्युरणे भङ्गो, यात्राकाले तु बन्धनम् ।
विवाहे विधवा नारी, घातचन्द्रफलं त्विदम् ॥

—होडाचक्र

एक १, पाच ५, नव ६, दो २, छ ६, दस १०, तीन ३, सात ७, चार ४, आठ ८, ग्यारह ११, बारह १२, ये चन्द्रमा मेष आदि राशियो वाले मनुष्य के लिए क्रमश घातक होते हैं। जैसे—मेष राशि वाले को पहला चन्द्रमा, वृष वाले को ५वा, इसी क्रम से आगे भी जान लेना चाहिये। घातक चन्द्रमा मे रोग हो तो मृत्यु, युद्ध मे जावे तो भय, यात्राकाल मे बन्धन और विवाह मे स्त्री विधवा हो. यह घातक चन्द्रमा का फल है।

६ जन्मादिराशिस्थित चन्द्र का शुभाशुभ फल—

आद्ये चन्द्र श्रिय कुर्याद् मनोहर्षं द्वितीयके ।
तृतीये धनसम्पत्तिश्चतुर्थे कलहागमम् ॥
पञ्चमे ज्ञानवृद्धिश्च, षष्ठे सम्पत्तिमुत्तमाम् ।
सप्तमे राजसम्मानं मरणं चाष्टमे तथा ॥
नवमे धर्मलाभं च, दशमे मानसेप्सितम् ।
एकादशे सर्वलाभ, द्वादशे हानिमेव च ॥

—होडाचक्र

प्रथम चन्द्रमा मे लक्ष्मी की प्राप्ति, दूसरे चन्द्रमा मे मन को आनन्द, तीसरे मे धन-सम्पत्ति, चौथे मे कलह, पाचवें मे ज्ञानवृद्धि, छठे मे सुख-सम्पत्ति, सातवे मे राजसम्मान, आठवें मे मरण, नवे मे धर्मलाभ, दशवें मे मनचाहा काम, ग्यारहवें मे सब तरह से लाभ और बारहवें मे हानि होती है।

१० यात्रा मे नक्षत्रों की शुभाशुभता—

(क) अनुराधात्रय हस्तो, मृगाश्वौ वादितिद्वयम् ।
यात्राया रेवती शस्ता, निद्याऽऽद्रभिरणीद्वयम् ॥
मघोत्तरा विशाखा च, सार्पश्चान्ये च मध्यमा ।
सर्वदिग्गमने हस्त, पूपा च श्रवणो मृग ॥
सर्वसिद्धिकर पुष्यो, विद्याया च गुरुर्यथा ।

अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, हस्त, मृगशिरा, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, रेवती—ये नक्षत्र शुभ हैं। आर्द्रा, भरणी, कृतिका मघा, उत्तरा, विशाखा, अश्लेषा निन्दित हैं। अन्य नक्षत्र यात्रा मे मध्यम हैं। हस्त, रेवती, श्रवण, मृगशिरा, ये नक्षत्र सब दिशा की यात्रा मे शुभ हैं। पुष्य सब बातो को सिद्ध करने वाला है, जैसे—विद्या मे गुरु (बृहस्पति)।

(ख) प्रवेशे अश्विनी नैव, प्रयाणेऽशनि-रोहिणी ।
गुरु-पुष्य विवाहे च (दीक्षाया), सर्वथा परिवर्जयेत् ॥
—होड़ाचक्र

प्रवेश मे अश्विनी नक्षत्र हो तो प्रवेश न करे, शनि के दिन रोहिणी हो तो प्रयाण न करे। गुरु के दिन पुष्य हो तो विवाह अथवा दीक्षा का परित्याग करे।

११ नन्दादि तिथिया एव सिद्धियोग—

नन्दा भद्रा जया रिक्ता, पूर्णाश्च तिथय क्रमात् ।
वारत्रय समावर्त्य, तिथय प्रतिपन्मुखा ॥१॥
नन्दा शुक्रे बुधे भद्रा, शनौ रिक्ता कुजे जया ।
गुरौ पूर्णा तिथिर्ज्ञेया, सिद्धियोगा शुभावहा ॥२॥
—होड़ाचक्र

प्रतिपदा, षष्ठी एकादशी नन्दा। द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी भद्रा। तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी जया। चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी रिक्ता। पचमी, दशमी, पूर्णिमा, पूर्णा कहलाती हैं। शुक्र को नन्दा, बुध को भद्रा, शनि

को रिक्ता, मगल को जया, बृहस्पति को पूर्णा तिथि हो तो शुभ को बढाने वाला सिद्धियोग होता है।

१२ अमृतसिद्धियोग—

हस्तः सूर्ये मृग सोमवारे भौमे त
बुधे मैत्री पुरौ पुष्य, रेवती
रोहिणी रविपुत्रे च, वं
असावमृतसिद्धिस्तु, योग प्रोक्त

रविवार को हस्त नक्षत्र, सोमवार को
बुध को अनुराधा, गुरुवार को पुष्य,
के दिन रोहिणी नक्षत्र, ये सब प्रकार
को अमृतसिद्धियोग कहते हैं।

१३ मृत्युयोग—

नन्दा सूर्ये च भौमे च,
बुधे जया गुरौ रिक्ता

को नन्द

१४

(क)

एत

(ख) अर्का
याम्ये गुर

रविवार के दिन उत्तरदिशा मे, सोमवार को वायु दिशा में, मगलवार को पश्चिम दिशा मे, बुधवार को नैऋंनकोण मे, बृहस्पति को दक्षिण-दिशा मे, शुक्र को अग्निकोण मे और शनि को पूर्व दिशा मे कालयोग रहता है। कालयोग मे सम्मुख गमन नही करना चाहिए।

१५ ज्वालामुखी योग—

एकम मूल पाचम भरणी, आठम, कृतिका नवम रोहिणी।
दसम अश्लेषा सुन ले भइया। ए पांच जोग ज्वालामुखी कहिया।

१६ यात्राविचार—

पिता पुत्रौ न गच्छेतां, न गच्छेतां च भ्रातरौ।
नवाङ्गनास्त्रयो विप्रा, न गच्छेयुस्तथैव च॥

पिता-पुत्र को या दो भाइयो को साथ नहीं जाना चाहिए, नौ स्त्रियो को तथा तीन ब्राह्मणो को साथ नही जाना चाहिए।

० रवि तुलचन्द्र गमन न कीजे, वृश्चिक सोम पाय न दीजे।
वैरी अर्थ कर्क अगार, बुध-जीव मीन को काल।
शुक्रे मकर लाभ ना होय, सिंहे शनि चालै नहि कोय॥१॥
सात वार पट् चन्द्रमा, जो नर जाणे भेव।
ते नर पडे न कष्ट मे, इम भाखै सहदेव॥२॥



को रिक्ता, मगल को जया, वृहस्पति को पूर्णा तिथि हो तो शुभ को वढाने वाला सिद्धियोग होता है।

१२ **अमृतसिद्धियोग**—

हस्तः सूर्ये मृग सोमवारे भौमे तथाश्विनी ।
बुधे मैत्री पुरौ पुष्य, रेवती भृगुनन्दने ॥१॥
रोहिणी रविपुत्रे च, सर्वसिद्धिप्रदायिका ।
असावमृतसिद्धिस्तु, योग प्रोक्त पुरातनै ॥२॥

—होडाचक्र

रविवार को हस्त नक्षत्र, सोमवार को मृगाशिरा, मगल को अश्विनी, वुध को अनुराधा, गुरुवार को पुष्य, शुक्रवार को रेवती और शनिवार के दिन रोहिणी नक्षत्र, ये सव प्रकार की सिद्धि को देने वाले है। इसी को अमृतसिद्धियोग कहते हैं।

१३ **मृत्युयोग**—

नन्दा सूर्ये च भौमे च, भद्रा भार्गवचन्द्रयो ।
वुधे जया गुरौ रिक्ता, शनौ पूर्णा च मृत्युदा ॥

—होडाचक्र

रवि और मगलवार को नन्दा तिथि, सोम और शुक्रवार को भद्रा तिथि वुधवार को जया तिथि, गुरुवार को रिक्ता तिथि, और शनि को पूर्णा तिथि हो तो मृत्युयोग होता है।

१४ **कालयोग**—

(क) पडवा थावर परिहरो, बीज तिथी भृगुवार।
तीजे त्यागो सुरगुरु, चौथ दिने बुधवार॥
पाचम मगल सोम छठ, सातम वरजो भान ।
एता ले चालो मती, कालयोग परमाण॥

—राजस्थानी दोहे

(ख) अर्कोत्तरे वायुदिशा च सोमे, भौमे प्रतीच्या बुध नैर्ऋते च ।
याम्ये गुरौ वह्निदिशां च शुक्रे, मन्दे च पूर्वे प्रवदन्ति कालम् ॥

—होडाचक्र

रविवार के दिन उत्तरदिशा मे, सोमवार को वायु दिशा मे, मगलवार को पश्चिम दिशा मे, बुधवार को नैऋंतकोण मे, वृहस्पति को दक्षिण-दिशा मे, शुक्र को अग्निकोण मे और शनि को पूर्व दिशा मे कालयोग रहता है। कालयोग मे सम्मुख गमन नही करना चाहिए।

१५ ज्वालामुखी योग—

एकम मूल पाचम भरणी, आठम, कृतिका नवम रोहिणी।
दसम अश्लेषा सुन ले भइया ! ए पाँच जोग ज्वालामुखी कहिया।

१६ यात्राविचार—

पिता पुत्रौ न गच्छेता, न गच्छेता च भ्रातरौ।
नवाङ्गनास्त्रयो विप्रा, न गच्छेयुस्तथैव च॥

पिता-पुत्र को या दो भाइयो को साथ नही जाना चाहिए, नौ स्त्रियो को तथा तीन ब्राह्मणो को साथ नही जाना चाहिए।

० रवि तुलचन्द्र गमन न कीजे, वृश्चिक सोम पाय न दीजै।
वैरी अर्थ कर्क अगार, बुध-जीव मीन को काल।
शुक्रे मकर लाभ ना होय, सिहे शनि चालै नहि कोय॥१॥
सात वार पट् चन्द्रमा, जो नर जाणे भेव।
ते नर पडै न कष्ट मे, इम भाखै सहदेव॥२॥



२५ ज्योतिषियों की चमत्कारी बातें

१ कई ज्योतिषी हस्तरेखा से, कई कुण्डली एव कई प्रश्न के आधार पर भूत-भविष्य की घटनाएँ यथातथ्य रूप से वतला देते हैं। अगर उनके गणित और फलित के ज्ञान मे गडवडी न हो तो वातें प्राय अक्षरश सत्य निकलती हैं।

० ज्योतिषशास्त्र मे कई-कई गणित तो इतने अद्‌भुत हैं, जिनके आधार पर यह कहा जा सकता है कि स्त्री के गर्भ मे बालक है या बालिका ! अथवा यह भी वताया जा सकता है कि पहले पति की मृत्यु होगी या पत्नी की ? परीक्षण के वाद यह निष्कर्ष निकला कि प्राय ८०-९० प्रतिशत उत्तर सही होते हैं।

—धनमुनि

२ हस्तरेखाविशेषज्ञ रुघराज जी भण्डारी— जोधपुर के दीवान श्री उत्तमचन्दजी मेहता के विशेष आग्रह पर उनका हाथ देखकर भण्डारी जी ने कहा—आज से २७ वे दिन आपको दीवान पद से हटा दिया जायेगा। २४वें दिन महाराज मानसिंह जी ने कडी-कठी आदि देकर उन्हे सम्मानित किया। उन्होने मजाक करते हुए भण्डारी जी से कहा—कहा गया आपका ज्योतिष ? भण्डारी जी ने उत्तर दिया—अभी तीन दिन वाकी हैं। सत्ताईसवें दिन दीवान साहव पिजस मे बैठकर किले से आ रहे थे। भण्डारीजी से भेंट हुई और वे हसकर कहने लगे भण्डारीजी ! आज सत्ताईसवाँ दिन है। भण्डारी जी वोले—अभी दिन अस्त नही हुआ है। वस इतने मे ही पीछे से राजसिपाही दौडता हुआ आया और उन्हे वापस ले गया। किले मे पहुचते ही महाराज ने उनको दीवान पद से हटा दिया।

भेद पाकर नरेश ने भण्डारीजी को अपना हाथ दिखाया एवं दीवान बनाना चाहा। वे बोले—हस्तरेखा के अनुसार मेरी आयु बहुत कम है और कुल का क्षय होने वाला है, अतः मैं दीवान नहीं बनता।

कुछ समय के बाद तीन ही दिनो मे उनके यहां १४ मौतें हुई, उनमे वे भी शान्त हो गए। पीछे केवल एक पुत्र डेढ साल का, तेजराज नाम का रहा।

—हनवतराज जी भण्डारी (जोधपुर) से श्रुत

३ वि० स० १९८५ मे मध्याह्न १ बजे के लगभग तोलारामजी पारख (चूरू) ने प्रश्नकुण्डली के आधार पर मुनि श्री सक्तमलजी ने कहा—आज शाम तक आपका विहार हो जाएगा, बात सही निकली।

० वि० स० २००३, मन्नालाल जी नवलखा ने मुझे वर्षकुण्डली के आधार से कहा—इस वर्ष आपका चौमासा दक्षिण में होगा। आचार्यश्री ने महोत्सव के समय चातुर्मास हामी फरमाया। लेकिन उसी रात को बदलकर बंबई की तरफ कह दिया।

० वि० स० २०२७ मे सुजानगढ निवासी श्री गुलाबचन्दजी जोशी ने मेरा वर्षफल देखकर कहा—आपके सिंघाड़े से दो साधु जल्दी बदलने वाले हैं, प्रयत्न करने पर भी नहीं रह सकेंगे, (दूसरा साधु पहले से विशेष साताकारी मिलेगा), आपका चौमासा इस साल छोटे क्षेत्र मे होगा। लेकिन वहा आपका प्रभाव विशेष रहेगा।

दूसरे ही दिन पूनममुनि (जो दो साल से साथ थे) बदले गए। नथमुनि (जो २५ साल से मदनमुनि के साथ थे) मुझे मिले और टोहाना (जहां श्रद्धा के लगभग २५ घर हैं) चातुर्मास हुआ एवं आशातीत सफल रहा।

—धनमुनि

४ मुनसरिफ दसाणीजी के पूछने पर फौजमल जी पगारिया (लाट) ने कहा—एक साल मे आपका दो सेर वजन घट जाएगा। पौने दो सेर घटा।

० फोजमलजी पगारिया के पूछने पर एक ज्योतिषी ने मेह-अधेरी रात मे हाथ की चार अगुलिया पकडने के आधार पर कहा—१२ बजकर दस मिनट हुए हैं। वरसते मेह मे पास के मन्दिर मे जाकर पूछा तो १२ वजकर १३ मिनट थे। (तीन मिनट का रास्ता था)।

—फोजमलजी पगारिया से श्रुत

५ **प्रतापसिंह** (कोठारिया वाले) अहमदाबाद मे हस्तरेखा के आधार से भविष्य वताते थे एव लोगो की लाइन लग जाती थी। वे हर हफ्ते १॥-२ हजार का मनिआर्डर करवाते। पोस्टऑफिस वालो ने शिकायत की। पुलिसवाले पकडकर उन्हें थाने मे ले गए एव मार-पीट करने लगे। उन्होने अपनी सच्ची वात कही। थानेदार नही माना एव अपनी गुप्त वात पूछी—प्रतापसिंह ने कहा—आपने कल ही १४०० रुपये रिश्वत के लिए हैं एव अमुक स्त्री से व्यभिचार किया है। थानेदार ने पैर पकडे एव उन्हे छोड दिया।

—हासी में श्रुत

६ **रोशननाथ**—(पटेलनगर दिल्ली) के पास भिवानी-निवासी **सोहन पसारी** आदि चार आदमी गये। प्रश्न पूछने पर एक से कहा—तेरी स्त्री अब जल्दी ही मर जायेगी—उसे एक महीने तक एक-एक केला खिलाओ तो बच सकती है। नही खिलाया गया एव मर गई। दूसरे से कहा—दोनो भाई मिलकर काम करोगे तो ठीक रहेगा। तीसरे से कहा—तू महा व्यभिचारी हैं—रसोईदारिन एव वर्तन मलनेवाली से भी नही टलता। चौथा विना पूछे ही रवाना हो गया। वह भी ऐसा ही था।

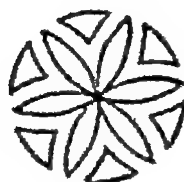
—भिवानी मे श्रुत

७ **भविष्यवक्ता जान डिक्सन**—उसने कैनेडी की हत्या, भारत का विभाजन, चीन के लाल होने आदि के वारे मे काफी समय पूर्व ही भविष्य-वाणी कर दी थी। जीन डिक्सन ने स्वय व्यक्तिगत रूप से

राष्ट्रपति कैनेडी को सलाह दी थी कि वह दक्षिण के दौरे पर न जाये, क्योंकि वहा उनकी हत्या हो सकती है। कैनेडी ने उनकी बात को हसी मे उडा दिया, पर बाद मे जीन डिक्सन की भविष्यवाणी सच निकली।

जीन डिक्सन का कहना था कि वह एक काच की गेंद अपने सामने रख कर उनमे भविष्य के साफ दृश्य देख सकता है।

—शशिकान्त शर्मा (हिन्दुस्तान—५।११।७३)



वायु

१ **पाच प्रकार की वायु**—(१) प्राण, (२) अपान, (३) समान, (४) उदान, (५) व्यान ।

(१) **प्राणवायु**—यह सारे शरीर पर नियन्त्रण करती है । नासिका, हृदय, नाभि और पैर के अगूठे तक जाती है । इसका वर्ण हरा है ।

(२) **अपानवायु**—यह मल-मूत्र और गर्भ वगैरह को बाहर निकालती है । गर्दन के पीछे की नाडियाँ, पीठ, गुदा तथा पैर का पिछला हिस्सा इसके स्थान हैं । इसका वर्ण काला है ।

(३) **समानवायु**—यह खाये-पिये आहार को उचित परिमाण मे यथास्थान पहुचाती है । हृदय, नाभि और सारी सधिया इसके स्थान हैं । इसका रग सफेद है ।

(४) **उदानवायु**—यह रस वगैरह को ऊपर की ओर ले जाती है । इसका हृदय, कठ, तालु, भोहो का मध्यभाग और मस्तक है तथा रग लाल है ।

(५) **व्यान वायु**—यह सब जगह व्याप्त रहती है । इसका रग इन्द्रधनुष सरीखा है ।

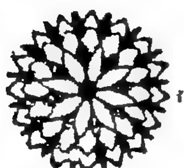
२ **वायु-विजय से लाभ**—प्राणवायु को जीतने पर जठराग्नि तेज हो जाती है । श्वासोच्छ्वास दीर्घ और गम्भीर हो जाते हैं । सभी प्रकार की वायु पर विजय प्राप्त होती है । शरीर हल्का मालूम पडता है ।

समान और अपानवायु को वश मे कर लेने पर घाव और फोडे वगैरह जल्दी भर जाते हैं । हड्डी वगैरह टूट जाय तो जल्दी सध जाती है । जठराग्नि बढती है । बीमारी जल्दी नष्ट होती है ।

उदान के वश मे होने पर अर्चिरादि मार्ग मे अपनी इच्छानुसार उत्क्रांति अर्थात् जीव का ऊर्ध्वगमन होता है। कीचड, पानी, काटे वगैरह किसी वस्तु से नुकसान नहीं पहुचता।

व्यान को जीत लेने पर शर्दी-गर्मी से कष्ट नही होता, शरीर की कांति बढ़ती है और वह स्वस्थ रहता है।

—जैनसिद्धान्त-बोलसग्रह, भाग २, पृष्ठ ३०५-३०६



रेलगाड़ी एवं मोटरें

१ **रेलगाड़ी**—रेल इंजन के निर्माता जार्ज **स्टीफेन्सन** थे। इनका जन्म इंगलैंड के एक छोटे से गाव मे हुआ था। बाप की गरीबी के कारण विशे पढ न सके। १४ वर्ष की आयु मे ८ आने रोज पर बाप के साथ कारखा मे काम करने लगे। क्रमश मिस्तरी एव इंजीनियर बने। उस समय त इंजन पडे-पडे ही काम करते थे। सन् १८१८ मे इन्होने एक इंज बनाया, जिसने प्रति घंटा ४ मील की गति से चलकर आठ डिब्बे खीचे सन् १८२० मे चेस्टर-लिवर पुल के बीच रेलगाडी चली। उसकी गति प्रति घंटा ३० मील थी। फिर अन्य देशो मे भी रेलगाडी का प्रचा हुआ। यह लगभग १५० वर्ष से चल रही है।

—**नवभारत, १८ अप्रैल, १९६**

२ **भारतीय रेलवे**—भारत मे रेलवे सरकारी क्षेत्र मे है। कुल रेल लाइ ५८,३०० किलोमीटर हैं। एशिया मे यह सबसे बडी लाइन है औ दुनिया में इसका स्थान छठा है। भारतीय रेलवे नौ क्षेत्रो (जोनो) विभक्त है। जैसे—

१ दक्षिणी, २ मध्य, ३ पश्चिमी, ४ उत्तरी, ५ उत्तर-पूर्वी ६ उत्तर-पूर्वीसीमा, ७ पूर्वी, ८ दक्षिण-पूर्वी, ९ मध्य-दक्षिणी इन सबके ऊपर रेलवे बोर्ड है। जिसका कार्यालय नई दिल्ली मे है भारतीय रेलें प्रतिवर्ष लगभग ६० लाख सवारिया व ५-६ ला टन माल ढोती हैं। हर रोज लगभग १०,००० रेलगाडियां ६,००० रेलवे स्टेशनो से गुजरती है। (भारतीय रेलो की पूंजी ४०० करोड रुपये की है और इनमे १४ लाख से ज्यादा स्त्री-पुरुष काम कर है।)

(ख) रेलवे के पास इस वक्त (१९६७ तक) ६,४२५ (भाप) ५६ (डीजल) और ४०२ (बिजली) ब्राडगेज पर चलने वाले इंजन थे

सवारी-गाड़ियों के डिब्बों की संख्या २४,२३१ और मालगाड़ी के डिब्बों की संख्या २,६१,९३४ ब्राडगेज और ९१,७२२ मीटरगेज थी।

(ग) यदि सब रेलों के यात्रीगाड़ी के डिब्बों को एक साथ जोड़ा जाय तो १२५ मील लम्बी रेल तैयार हो जायगी।

(घ) १६ अप्रैल सन् १८५३ को पहली भारतीय रेलवे बम्बई-थाना के बीच १३ मील चली।

(ङ) सन् १९०५ में भारत भाग में लार्ड कर्जन के समय रेलवे बोर्ड की स्थापना हुई।

(च) सन् १९२५ को बिजली की पहली रेलगाड़ी विक्टोरिया टर्मिनस बम्बई और कुर्ला के बीच चली।

(छ) चितरंजन लोकोमोटिव वर्क्स (रेलवे इंजन बनाने के कारखाने) का विधिवत उद्घाटन सन् १९५१ जनवरी २६ को किया गया।

(ज) पिछले दस वर्षों में १,७०० नई गाड़ियाँ चलाई गईं।

(झ) १९६६-६७ में प्रतिदिन रेलवे की कुल आय २,१०,००,००० रुपये हुई।

—भारतज्ञानकोष, १९७०-७१ तथा ७१-७२

३ मोटर-गाड़ियाँ—भारत में १९४७ में २,११,९४६ मोटर गाड़ियाँ थीं। १९५० में इनकी संख्या २,९४,७२६ हो और १९६१ में ६,७५,८२१ हो गईं। मार्च १९६४ में २,५०,९९२ मोटर साइकिलें व मोटररिक्शा, ३१,५२८ जीप, निजी कारें, टैक्सियाँ ३,७५,३२४ मोटरबसें, ६५,०६२ सार्वजनिक मोटर गाड़ियाँ, मालवाहक ट्रक २,१६,९९३ और ५०,१४७ विविध प्रकार की गाड़ियाँ थीं। १९६- के अन्त में लगभग दस लाख मोटर गाड़ियों का अनुमान था।

—भारत ज्ञानकोष १९७१-७२

१ प्राचीन भारत मे शासक लोग अपने पत्र-व्यवहार के लिए निजी व्यवस्थाएँ रखते थे। भारत मे इस प्रकार की सबसे पहली व्यवस्था १४वीं सदी मे मुहम्मद-बिन-तुगलक ने बनाई। मुगलो के समय हरकारे की सुन्दर व्यवस्था हुई। अकबर ने मुख्य-मुख्य सडको पर दस-दस मील की दूरी पर हरकारो और ऊटो या घोडो की व्यवस्था की। १८वी सदी की अस्थिरता मे यह व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गई। क्लाइव ने सन् १७६६ में कपनी की डाक के लिए नियमित व्यवस्था की। १८३७ मे स्थानीय सरकारो के मातहत सार्वजनिक डाक की व्यवस्था की गई तथा सभी निजी व्यवस्थाएं मिटा दी गई। १८५४ मे इडियन इम्पीरियल पोस्ट की स्थापना हुई। सर्वप्रथम जो डाकटिकट जारी किए गए वे तीन तरह के थे सफेद कागज पर बिना रग का एमबास डिजाइन, सफेद कागज पर नीले रग का एमबास डिजाइन और सिन्दूरी रग पर एमबास डिजाइन। डाक-टिकट सबसे पहले १८२५ मे सिंध मे जारी किए गए थे। वर्तमान डाक-प्रणाली की व्यवस्था १८९८ के एक्ट ६ के अनुसार है।

२ तार—परीक्षणात्मक तार लगाने का सर्वप्रथम सम्मान भारत मे इण्डियन मेडिकल सर्विस के एक डाक्टर को है, जिसने १८३९ मे कलकत्ता से डायमड हारबर तक २१ मील लबा तार लगाया था। यह तार ७००० फुट नदी पार करके जाता था। उस समय दुनिया मे यह सबसे बडी तार-लाइन थी। सरकारी तार इन दोनो स्थानो—कलकत्ता-डायमड हारबर के बीच १८५१ मे लगा। नवम्बर, १८५३ मे दूरवर्ती स्थानो मे कलकत्ता से आगरा तक तार लगाने की व्यवस्था की गई। पहला सदेश २४ मार्च, १८५४ मे भेजा गया। बाद मे इस लाइन को बबई और पेशावर तक बढाया गया। मार्च, १८६७ मे १४,९०० मील तक तार लगा।

—भारतज्ञानकोष १९७१-७२

१ तीन की संख्या में विशेषता—तीन की संख्या में यह विशेषता है कि उसे गुणने पर वह दो बार तो बढ़ती है और तीसरी बार मूल रूप में आ जाती है। जैसे—

३×२=६

३×३=९

३×४=१२—१+२=३

३×५=१५—१+५=६

३×६=१८—१+८=९

३×७=२१—२+१=३

२ तीन-तीन चीजें—

- जर, जोरू ने जमीन—ए त्रण कजियाना घर !
- उत्पत्ति, स्थिति ने प्रलय—ए त्रण जगत ना नेम !
- फन्तुं, वल्तु ने तल्तु—ए त्रण जातनां ब्राह्मण !
- धार, अणी अने घुवाणो—ए त्रण जातनां हथियार !
- जोगी, जोगी ने चटेलातुं—ए त्रणे फोगटिया !
- वैद, वेश्या ने वकील—ए त्रणे नगदिया !
- भींत, भाभो ने भण्डार—ए त्रण सवार ना नाश।

—गुजराती कहावतें

३ तीन चीजें तीन चीजो के बिना नही रह सकती—दौलत बिना सौदागरी के, इल्म बिना बहस के और बादशाहत बिना दहशत के।

—गुलिस्तां

४ तीन मुक्ति के मार्ग—

हरड-बेहडे-आवला, त्रिफला हरै त्रिदोष।
ज्ञान-दर्श-चारित्र त्रय, देत मनुज को मोक्ष ॥१॥
मेदा-सक्कर-घीय से, सीरो बणै सटाक।
ज्ञान-दर्श-चारित्र तें, मिटे कर्म की छाक ॥२॥
तेल-बत्ती-दीपक मिलत, अन्धकार को नास।
ज्ञान-दर्श-चारित्र तें, मिले मोक्ष को वास ॥३॥
दाम-ठाम-हिय तीन तें, बधै विणज-व्यापार।
ज्ञान-दर्श-चारित्र तिहुं, करदे भवजल पार ॥४॥
जल-वायु-अरु अग्नि त्रय करे यन्त्र-विस्तार।
ज्ञान-दर्श-चारित्र तें, छूटे आत्मविकार ॥५॥
नीम-गिलोय-चिरायता, ज्वरनाशक ये तीन।
ज्ञान-दर्श-चारित्र तिम, राग-द्वेष-क्षयलीन ॥६॥
मसि-कागज-अरु लेखिनी, लिखे जु मन का भाव।
ज्ञान-दर्श,चारित्र तें, समझे आत्म-स्वभाव ॥७॥
वर्षा-धरती-बीज तें, होवे शाख सवाय।
ज्ञान दर्श।चारित्र तें, क्रोडां अघ कट जाय ॥८॥

—मरुधर केसरी—ग्रथावली पृष्ठ ५८६

५ तीन अमूल्य रत्न—देव अरिहत, गुरु निर्ग्रंथ, और धर्म केवलि-प्ररूपित।

६ नौ की सख्या—नौ की सख्या अक्षय है। इसका चाहे जितनी ही सख्या से गुणा कर लिया जाय, नौ के नौ ही रहेंगे। जैसे—

९ × २ = १८ — १ + ८ = ९

९ × ३ = २७ — २ + ७ = ९

९ × ४ = ३६ — ३ + ६ = ९

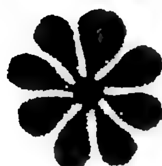
९ × ५ = ४५ — ४ + ५ = ९

९ × ६ = ५४ — ५ + ४ = ९

९ × ७ = ६३ — ६ + ३ = ९

९ × ८ = ७२ — ७ + २ = ९

९ × ९ = ८१ — ८ + १ = ९



३० प्रकीर्णक

१ **प्रकाश**—सूर्य का प्रकाश सबसे पहला है, सूर्य के अभाव मे चन्द्रमा प्रकाश करता है, उसके अभाव मे ग्रह, नक्षत्र, तारा एव दीप आदि प्रकाश देते हैं। इन सब के अभाव मे शब्द, गन्ध एव स्पर्श आदि भी प्रकाश करते हैं। जैसे घोर अन्धकार मे शब्द के सहारे इच्छित स्थान मिल सकता है, गन्ध के सहारे व्यक्ति फूलो के पास पहुच सकता है एव स्पर्श के सहारे पीठ पर लगी हुई वस्तु का निश्चय कर सकता है।

—व्याख्यान के मसालो से

२ **उपचार**—अत्यन्त भिन्न शब्दो मे भी सदृशता की विशेषता के कारण उनकी भिन्नता की उपेक्षा करना यानि किसी अपेक्षा से उन्हे एक मानना उपचार कहलाता हैं।

—मोक्षप्रकाश, २२५ पृष्ठ टिप्पण

३ **भारतीय जनगणना**—मोहन-जोदडो और हडप्पा की खुदाई से पता चला है कि भारत मे जनगणना का इतिहास ईसा के जन्म से तीसरी-चौथी सहस्राब्दि पूर्व का है लेकिन नियमित जनगणना १८७२ से ही शुरू हुई है।

— भारतीय जनगणना एक अवलोकन
निबध-लेखक एस० सी० श्री वास्तव

४ **बहानाबाजी**—

(क) ए बैड वर्क मैन क्वारल्स विथ हिज टूल्स।

—अंग्रेजी कहावत

नाच न जाने आगन टेढा।

(ख) नाचवु नहि त्यारे आंगण वांकु, लखनुं नहि त्यारे लेखण नो वांक।

—पंजाबी कहावत

५ एक के पीछे एक—

० घोडी पाछल वछेरु, भेंस पाछल पाडी ने, गाय पाछल वाछरो।

० लिंबोली हाले त्यारे पूंछडी पण हाले, मियां चोले त्यारे दाढी पण हाले। बावो नाच्यो एटले बावली पण नाची।

—गुजराती कहावतें

६ (क) सम हैव दी हैप, सम स्ट्रीक इन दी गैप।

—अंग्रेजी कहावत

किसी का घर जले और कोई तापे।

(ख) मियाजी री दाढी बलै र लोग तापण नै जावै।

—राजस्थानी कहावत

७ (क) तुरकणीरै कातयोड़ा मे ही फिदटका। (ऊन का गुच्छा)

(ख) गाल-थापड़ो कितोक आतरो।

(ग) आई ही छाछनै र बण बैठी घरकी धणियाणी।

(घ) कदेई सुपनो सांचो करणो क नहीं।

(ङ) पागड़ो गई आगड़ो मिट जिलामत चाहीजै।

(च) ना चैत घटै र ना वैसाख बधै!

६ ना सावण सूको ना भादवै हर्यो।

(ज) सूखी कादू है जद ग्रा डांग पकड़णी चाहीजै।

(झ) आगा नै सूतै नो स जिमावणा पड़ै।

—राजस्थानी कहावतें

८ सब बोझों मोटी, कहा करेगा कोई।

—हिन्दी कहावत

९ सर्वोत्ता मूर्खिपदं ग्रंथिका.। —संस्कृत कहावत

० हाथी रा पग मे सगला रा पग आ गया ।

—राजस्थानी कहावत

१० क्षणे-क्षणे यन्नवतामुपैति, तदेव रूप रमणीयताया ।

—शिशुपालवध ४।१७

क्षण-क्षण मे किसी वस्तु को जो नवीनता प्राप्त होती है, वही उसकी रमणीयता का स्वरूप है ।

११ बीडी सीडी सीर सडापा, थोडा खाले रहे कलापा ।

० अड भैण ! अडनी, सुखाले रहे हडनी ।

—पजाबी कहावतें

(अलग रहना पसद करने वाली वहनो का यह चितन है ।)

१२ माचै मोटी खोड, प्रथम तो पायो नही ।

—राजस्थानी कहावत

१३ चोर पिछाणै चानणो, मोर पिछाणै मेह,
पाव पिछाणै पगरखी, नैण पिछाणै मेह ।

० काणों काणाणे आवियो, जाचवा काणो,
काणे काणो मागियो, दे काणा ! काणो ।

—राजस्थानी दोहे

[एक काना चारण काणाणे गाव मे काने ठाकुर से काना घोडा लेने के लिये आया और मागा ।]

१४ **रामशब्द की महिमा—**

रा उच्चरता मुख थकी, पाप पलाई जाय ।
मति फिर आवै तेह थी, मनो किवाडी थाय ।।

राम शब्द मे दो अक्षर हैं—रा और मा । 'रा' का उच्चारण किया जाता है, तब मुँह खुल जाता है एव हृदय का पाप बाहर निकल जाता है । ज्योही पाप वापस आने लगता है 'म' वोल दिया जाता है एव मुँह वन्द हो जाता है । अत पाप वाहर का वाहर ही रह जाता है ।

—श्री कालुगणी से श्रुत

१५ राक्षस-वानर आदि—रामायण मे आये हुए राक्षस-वानर और रीछ मनुष्य ही थे । राक्षसी आदि विद्या या अन्य कारणो से उनके राक्षस आदि नाम पड़े हो, ऐसी समावना है । जैसे आज भी जापानीज यलो मंकी—(जापानी पीले वन्दर), रूसियन बेर—(रूसियन भालू), ब्रिटिश लाइन (ब्रिटिश सिंह) और चाइनीज क्रोकोडायल (चीनी मगरमच्छ) कहे जाते हैं ।

—अध्ययन के आधार पर

१६ माला के मन के—

जाति	मन के	जाति	मन के
जैन	१०८	यहूदी	९९ व ३२
बौद्ध	१०८	ईसाई	९९
जापानी बौद्ध	११२	पारसी	१०
हिन्दू	१०८	रोमन साधु	१००
मुसलमान	१०१ या ९९	रोमन कैथोलिक सम्प्रदाय	१५०

—रविवारीय धिरवमित्र मई १३, १९७३

(माला के मनको या रूम्य सन्दर्भ ग्रंथो मे समझना चाहिये ।)

●

३१ रामायण में प्रयुक्त किए जाने वाले भाषा-श्लोक

१ स्वयंवर के समय सीता की उक्ति—

मो मन मे निशचे सजनी ! यह, तात हुते प्रण मेरो महा है ।
रीत पतिव्रत राख चुकी, मुख भाख चुकी अपना दुलहा है ।।
सुन्दर स्वाम सुजान शिरोमणि, मो मन मे रमि राम रहा है ।
चाप निगोडो अभी जर जाओ, चढे तो चढो न चढे तो कहा है ।।

२ सूपर्णखा द्वारा सीता की प्रशसा—

इन्द्र की परी है केधो घरी है विधाता आप,
चन्द्रमा तें चीर काढी सीर अमी पान की ।
कचन वरन तनु रच न दिखात खोड,
सावन की तीज मानू बीज आसमान की ।
रूप को बखान भ्रात ! बात तें कह्यो न जात,
करत प्रशसा मेघा भ्रमत सुरान की ।
स्वरग पाताल-लोक मर्त्यलोक ढूढ देख्यो,
कामिनी न दूजी ऐसी जैसी भ्रात जानकी ।।

३ राम के सन्मुख हनुमान की उक्ति—

कहो ! उडू आकाश, इन्द्र-इन्द्रासन पाडू ।
कहो ! पैसू पाताल, शेष-सिर भार उतारूं ।।
कहो ! बाहु बल करी, देव-दानव सब दट्टू ।
कहो ! खड्ग ले हाथ, शीश दस रावण कट्टू ।।
तुम प्रसाद रघुनाथ जी ! मैं बन्दर इतनी करूं ।
उठाय लक रावण सहित, दक्षिण की उत्तर धरू ।।

४ लंका में हनुमान—

कूदत फलंग फला जग पेच-पेचनपै,
मलफ मलंग वीर प्रवल निधान को।
कहै घनश्याम रामदूत, अंजनी को पूत,
फैलत-फैलात-फेर फादत उद्यान को।
ढाक गए छज्जे दरवज्जे, वो दिवाल कोट,
बागन मरोड़-तोड़ करत तोफान को।
आए बली बंका-दसकंध, लाय शंका जब,
लंका पर आग लग्यो ऊको हनुमान को।

५ रावण को मन्दोदरी की फिटकार—

तोर डारे लंका के कपाट मार लातन से,
खबर न पड़ी है अजौं जबर जवान की।
देखत कहा हो अब हिम्मत दिखाओ क्यों न,
हिम्मत चलाओ क्यों न, बीसन भुजान की।
बैन-बैन कहती यों मंदोदरी रावण से,
अब ना बचोगे फेट लगी हनुमान की।
जानकी चकोर रत लायो नाथ जानके या,
जानकी न लायो है सियानों पर जानकी॥

६ राम-हनुमान का संवाद—

एहो हनु! तुम जानत हो, कहो! जानकी है कितनी दिन माहीं?
हे प्रभु! नाथ फकत बिना, उन रावण के वश की परछाहीं।
बीतत है [illegible] राम सों, [illegible] न छुटे हमसे बिछुराई।
प्राण बसे पद-पंकज में, अरु आवत है परिमानन नाहीं।

७ लंका गिर जाने पर मंदोदरी रावण से यह कहती है—

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

लक ही घिरानी सैन्य अमित परानी खेत,
होय रे सचेत ! अभिमानी ! नही जानी तै ।
भने लिखमेश कवि, रानी विलखानी हाय,
रे-रे शठ ! नार क्यो विरानी घर आनी तै ?

८ लक्ष्मण के शक्ति लगने पर राम का कथन—

मात को मोह न द्रोह दुमात को,
तात को सोह न मृत्यु भए को ।
राज का लोह न प्राण को थोह न,
बधु-विछोह न औधि रहे को ।
ना कोई जीव मैं आवत केशव !
सोच न लक में सीत रहे को ।
ता रनभूमि मे राम कहे मोहि,
सोच विभीषन भूप कहे को ॥

० हनुमान का उत्तर—

निज मात से जाय मिलाय देऊं, भ्रत-राज गमाय रसातल को ।
जाय दुनीचल लाय सजीवनी, देऊ उठाय महाबल को ॥
दसकध कु मार विभीषण-राजतिलक्क जु देऊ महीथल को ।
दशरत्थ को प्रान-विछोह भयो, सौ तो दाव नही अपने बल को ।

९ मरते समय रावण का पश्चात्ताप—

धरणी धरब्रह्म ड, शेष को भार उतारू ।
चद करू निकलक, जाय जमपुर को मारू ॥
पैसू जाय पाताल, तिहा बलि-बधन तोडू ।
अमृतकु ड उठाय, लाय सागर मे वोरू ।
कियो होत करतार कौ, मनको कियो न होइयो ।
दसकध प्राण छूटत कहै, आरभ्यो यू ही रह्यो ॥

—भाषाश्लोक सागर

परिशिष्ट

अस्पृश्यता के बीज

भाग ८ और ९ में

प्रयुक्त ग्रंथ एवं व्यक्ति नाम सूची

ग्रन्थ सूची

१ अगुत्तरनिकाय
२ अणुव्रत (मासिक)
३ अत्रिसहिता
४ अत्रिस्मृति
५ अथर्ववेद
६ अध्यात्म रामायण
७ अनुयोगद्वारसूत्र
८ अभिज्ञान शाकुन्तल
० (शाकु तल)
९ अभिधानचिन्तामणी
० (हैमकोष)
१० अमर उजाला (दैनिक)
११ अर्चना और आलोक
१२ आकलैंड (दैनिक)
१३ आचाराग सूत्र
१४ आत्मविकास
१५ आत्मानुशासन
१६ आपस्तम्ब-धर्मसूत्र
१७ आवश्यकसूत्र
१८ इतिहासतिमिरनाशक
१९ इतिहाससमुच्चय
२० इवन्वतूता लिखित—
० भारतयात्रा विषयक पुस्तक
२१ उत्तराध्ययन टीका
२२ उत्तराध्ययन निर्यु क्ति
२३ उत्तराध्ययनसूत्र
२४ उपदेश सुमनमाला
२५ उर्दू शेर
२६ ऋग्वेद
२७ ऋषिभाषित
२८ ऐतरेयब्राह्मण
२९ ओघनिर्यु क्ति
३० औपपातिकसूत्र
३१ कथासरित्-सागर
३२ कमलनाहटा का सग्रह
३३ कल्याण-गोअक
३४ कल्याण-सत्कथाअक
३५ कविताकौमुदी
३६ कहावतें—
(क) अंग्रेजी कहावत
(ख) इटालियन ,,
(ग) ईरानी ,,
(घ) उर्दू ,,
(ङ) गुजराती कहावत
(च) चीनी ,,
(छ) जर्मनी ,,
(ज) जापानी
(झ) पजाबी ,,
(ञ) पारसी ,,
(ट) बगला ,,
(ठ) मराठी ,,
(ड) राजस्थानी ,,
(ढ) सस्कृत ,,
(ण) हिन्दी ,,
३७ किसनबावनी
३८ कुरान शरीफ

३९ कुमारसम्भव
४० कौटलीय-अर्थशास्त्र
४१ गरुडपुराण
४२ गीता (श्रीमद्भगवद्गीता)
४३ गीताञ्जलि
४४ गुजराती पद्य
४५ गुलिस्ताँ
४६ गोपथब्राह्मण
४७ [illegible]
४८ चन्द्रचरित्र (संस्कृत)
४९ चन्द राजानो रास
५० चरकसंहिता
५१ चाणक्यनीति
५२ चाणक्यसूत्र
५३ चीनी सुभाषित
५४ चेतना (मासिक)
५५ छान्दोग्य-उपनिषद्
५६ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्र
५७ [illegible]
५८ जातक
५९ जापानी लो[illegible]था
६० जीवनादर्श
६१ जैनत्व की झाँकी
६२ जैनभारती (मासिक)
६३ जैनसिद्धान्त बोलसंग्रह
६४ ज्ञानसार
६५ हिन्दी मिलाप (दैनिक)
६६ तत्त्वामृत
६७ ताओ उपनिषद (ताओ तेह किंग)
६८ तालमुद
६९ तैत्तिरीय-आरण्यक
७० तैत्तिरीय-उपनिषद्
७१ तैत्तिरीय-ब्राह्मण
७२ त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र
७३ दक्षस्मृति
७४ दशकुमारचरित्र
७५ दशवैकालिकसूत्र
७६ दशाश्रुतस्कन्ध सूत्र
७७ दोहा-द्विशती
७८ दोहा-सन्दोह
७९ दोहे
क—राजस्थानी दोहे
ख—हिन्दी दोहे
८० धम्मपद
८१ धर्म के नाम पर
८२ [illegible]
८३ धर्मरत्नप्रकरण
८४ धर्मसार
८५ नवभारतटाइम्स (दैनिक)
८६ [illegible]-नयदर्शन
८७ नवनीत (मासिक)
८८ निरुक्त
८९ निशीथचूर्णि
९० नीतिवाक्यामृत
९१ नीति[illegible]माला
९२ नीतिविचार

९३ नैषध (नैषधीयचरित्र)
९४ न्यायशास्त्र
९५ पचतन्त्र
९६ पचास्तिकाय
९७ पजावी कविता
९८ पजावी पद्य
९९ पद्मपुराण
१०० पराशरसहिता
१०१ पातजलयोगदर्शन
१०२ पुरानी बाइबिल (नीतिवचन)
१०३ प्रज्ञापना सूत्र
१०४ प्रशमरति
१०५ प्राचीन चरित्रकोष
१०६ प्राचीन-सग्रह
१०७ बाइविल
१०८ बालभारती
१०९ बृहत्कल्प-भाष्य
११० बोधिचर्यावतार
१११ ब्रह्मवैवर्तपुराण
११२ ब्रह्मानन्दगीता
११३ भगवतीसूत्र
११४ भर्तृहरि-वैराग्यशतक
११५ भर्तृहरि-नीतिशतक
११६ भर्तृहरि-श्रृगारशतक
११७ भविष्यपुराण
११८ भारतज्ञानकोष
११९ भारतसरकार द्वारा प्रकाशित-पत्रिका
१२० भाषाश्लोकसागर
१२१ भिक्षुन्यायकर्णिका
१२२ मनुस्मृति
१२३ महानिशीथसूत्र
१२४ महापुराण
१२५ महाभारत
१२६ मानो न मानो
१२७ मार्कण्डेयपुराण
१२८ मुण्डकोपनिषद्
१२९ मुतालुल सादीन
१३० मुद्राराक्षस-नाटक
१३१ मृच्छकटिक
१३२ मेघदूत
१३३ मोरली दी आरमामेंट
१३४ मौनवाणी
१३५ यजुर्वेद
१३६ यज्ञरहस्य
१३७ याज्ञवल्क्यस्मृति
१३८ योगवाशिष्ठ
१३९ योगशास्त्र
१४० योगशिखोपनिषद्
१४१ योगसूत्र
१४२ रघुवश
१४३ रश्मिमाला
१४४ रामचरितमानस
१४५ रामजशरसायण
१४६ राष्ट्रदूत (दैनिक)
१४७ रूपक

१९९ सेक्स्वल लाइफ डर्रानिङ
० दि वर्ल्डवार
२०० स्कन्दपुराण
२०१ स्थानाग-टीका
२०२ स्थानाग-सूत्र
२०३ स्याद्वादमजरी
२०४ स्वप्नवासवदत्ता
२०५ हजरत बुखारी और मुस्लिम
२०६ हरिजनसेवक
२०७ हरिभद्रीयाष्टक-टीका
२०८ हितोपदेश
२०९ हिन्दीमिलाप (दैनिक)
२१० हिन्दुस्तान (दैनिक)
२११ हिन्दुस्तान (साप्ताहिक)
२१२ होडाचक्र

व्यक्ति नाम सूची

१ अगस्त्य मुनि
२ अरविन्दघोष
३ अरस्तु (जरथुस्त्र)
४ अर्बुथ नॉट (जान अर्बुथ नाट)
५ अल्काट (एल्काट)
६ आदम स्मिथ
७ आइंस्टिन
८ आस्टिन मैले
९ ओलवर गोल्डस्मिथ
० (गोल्डस्मिथ)
१० ओविद
११ ए० एन० चैपिन
१२ इन्दरचन्द नवलखा
१३ एपिक्टेट्स
१४ इमर्सन
१५ इमा अल्लाओ
१६ ईसा
१७ उर्दा
१८ उपमवादी
१९ उमास्वाति
२० ऊ गाट
२१ एडिसन
२२ एडिसन
२३ एनन
२४ एफ. एल. फोर्मन्स
२५ ए. लिनी
२६ एरियन यूनानी
२७ कन्फ्यूसियस (कागफ्यूत्सी)
२८ कबीर
२९ कर्मवादी
३० कवि उदयराज
३१ कवि उमरदान
३२ कवि ऋद्धुलाल
३३ कवि कालीदास
३४ कवि कृष्णदास
३५ कवि केशव
३६ कवि क्षेमेन्द्र
३७ कवि गिरधर
३८ कवि ग्वाल
३९ कवि जगतदास
४० कवि दीप
४१ कवि देवीदास
४२ कवि मधु
४३ कवि भर्तृहरी
४४ कवि भूधरदास
४५ कवि मान
४६ कवि मोहन
४७ कवि रणजीत
४८ कवि रतन
४९ कविराज हनुमानदास
५० कवि राम
५१ कवि वृन्द

५२ कवि वेताल
५३ कवि सग्रामदास
५४ कवि सहदेव
५५ कवि सुन्दरदास
५६ कवि सूर्यमल
५७ कवि हस
५८ कारनट
५९ कार्डिनल
६० कार्लाइल
६१ कालवादी
६२ किग्सले
६३ कूपर
६४ कैलाश जैन
६५ कोल्टन
६६ खलील जिब्रान
६७ गगादानजी चारण
६८ गाधी
६९ गिलपिल
७० गुरु वशिष्ठ
७१ गेटे
७२ ग्लेडस्टन
७३ चाणक्य (कौटिल्य)
७४ चिलो
७५ चीकागो के डा सेन
६ चेम्फर्ड
७७ चेस्टर फिल्ड
७८ जयाचार्य
७९ जवाहरलाल नेहरू
८० जह्रोर्रस्किन (रस्किन)
८१ जान एस सी एबट
८२ जानब्राईट
८३ जानलोक
८४ जॉन स्टुआर्ट मिल
८५ जार्ज इलियट
८६ जार्ज हार्वर्ट
८७ जे वी हालैंड
८८ जे रान्ड
८९ टी० एल० वास्वानी
९० टेलीटस
९१ टैगोर (रवीन्द्रनाथ टैगोर)
९२ डान्टन
९३ डॉ० एल्फ्रेड
९४ डॉ० करेले
९५ डॉ० जे एच केलोग
९६ डा० डौग्लास मेकडोनल्ड
९७ डा० फोर्ड एम डी
९८ डा० रेन्टोल
९९ डा० लुकास शेम्पोनीअर
१०० डा० विलियमलेम्व
१०१ डा० विलियम वोस
१०२ डा० वोन नुरडन
१०३ डा० सर जेम्स सिर्यर—एम० डी० एफ० आर० ओ० पी०
१०४ डा० स्पैंस
१०५ डिजराइली
१०६ डैनियल विक्टर
१०७ तिरुवल्लुवर
१०८ तोमर
१०९ थामसपेन
११० थामसफूलर